

425

प्राणि। अ



श्रीः  
भगवत्पाणिनिमुनिप्रणीतः

# अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

वार्तिक-गणपाठ-धातुपाठ-लिङ्गानुशासन-विमर्श-सूत्रसूचीसहितः

डॉ० रमाशङ्कर मिश्र







श्रीः

भगवत्पाणिनिमुनिप्रणीतः

## अष्टाध्यायीसूत्रपाठः

चार्तिक-गणपाठ-धातुपाठ-लिङ्गानुशासन-  
विमर्श-सूत्रसूचीसहितः

सङ्कलयिता सम्पादकश्च-

डॉ० रमाशङ्कर मिश्रः

आचार्य (नव्यव्याकरण, साहित्य, वेदान्त)

एम.ए. (संस्कृत) विद्यावारिधि (पी-एच.डी.), वाचस्पति (डी.लिट्.)

श्रीहरदेवदास नथमल वैरोलिया आदर्श संस्कृत

महाविद्यालय, टेढ़ीनीम, वाराणसी।

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कलकत्ता, बंगलौर,  
वाराणसी, पुणे, पटना



425  
135

: १९९७

© मोतीलाल बनारसीदास

बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली ११० ००७  
८, महालक्ष्मी चैम्बर, वार्डेन रोड, मुम्बई ४०० ०२६  
१२०, रायपेट्टा हाई रोड, मैलापुर, चेन्नई ६०० ००४  
सनाज प्लाजा, सुभाष नगर, पुणे ४११ ००२  
१६ सेन्ट मार्क्स रोड, बंगलौर ५६० ००१  
८ केमेक स्ट्रीट, कलकत्ता ७०० ०१७  
अशोक राजपथ, पटना ८०० ००४  
चौक, वाराणसी २२१ ००१

मूल्य: रु० ८५

श्री नरेन्द्र प्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड,  
दिल्ली-११० ००७ द्वारा प्रकाशित तथा जैनेन्द्र प्रकाश जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस,  
ए-४५, नारायणा फेज-१, नई दिल्ली-११० ०२८ द्वारा मुद्रित



श्रीः

## प्रास्ताविकम्

परस्परतपःसम्पत्कलायितपरस्परौ ।

प्रपञ्चमातापितरौ प्राञ्चौ जायापती स्तुमः ।।

विदन्त्येवेदं निखिलशास्त्रपारावारपारदृश्वानो महात्मानो विद्वांसो यद् वेदार्थप्रतिपादकेषु सुप्रथितेषु षट्सु वेदाङ्गेषु व्याकरणमेव प्राधान्यं भजते । तद्यथा—

छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते ।

ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ।।

शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।

तस्मात् साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ।।

(पाणिनीय शिक्षा ४१-४२)

प्रधाने कृतो यत्नः फलवान् भवतीति धिया महर्षि-पाणिनिप्रणीत-स्याष्टाध्यायीसूत्रपाठस्य सङ्कलने सम्पादने चास्माकं प्रवृत्तिर्जाता ।

महर्षेः पाणिनेः सूत्राणि अष्टभिरध्यायैर्गुम्फितत्वाद् 'अष्टाध्यायी' नाम्ना व्यपदिश्यन्ते । अस्यामष्टाध्याय्यां लौकिकवैदिकोभयविधशब्दप्रक्रियाविलासो राजते । अत्र प्रत्यध्यायं चत्वारः पादाः अनुस्यूताः सन्ति । प्रथमेऽध्याये संज्ञानां परिभाषाणां च वर्णनं चकास्ति । विभक्त्यर्थाः समासाश्च द्वितीयेऽध्याये समुपनिबद्धाः सन्ति । तृतीयेऽध्याये धातुभ्यो विहिताः प्रत्ययाः संशोभन्ते । तद्धितप्रत्ययाः तुर्यपञ्चमाध्याययोः समुपवर्णिताः विद्यन्ते । प्रकृति-सम्बन्धिकार्यव्याजेन तिङ्सन्धिस्वरादीनां निरूपणं षष्ठेऽध्याये समवलोक्यते । अङ्गाधिकारस्थो विषयः सप्तमेऽध्याये संदृश्यते । प्रत्ययसम्बन्धिन्यशेषाणि कार्याण्यपि तत्रैव निरूपितानि । द्वित्वसम्बन्धि-विधानान्यष्टमाध्यायस्य प्रथमे चरणे स्थानानि दधते । अष्टमाध्यायस्यावशिष्टेषु द्वितीय-तृतीय-चतुर्थपादेषु द्वित्वस्वरसन्धिषत्वणत्वविधायकानि सूत्राणि समावेशितानीति ज्ञेयम् ।



पाणिनीयशास्त्रस्य प्राचीनोऽध्यायप्रकारस्तु सूत्रपाठक्रमानुसार्येवाऽऽसी-  
दित्यत्र नास्ति संशीतिः। सूत्रपाठक्रममनुसृत्य व्याकरणाध्ययनं भवतिस्म-  
इत्यस्मिन् विषये काशिकातः प्राचीना वृत्तिग्रन्थास्तद्व्याख्यानग्रन्थाश्च प्रमाणत्वेन  
वर्तन्ते। वैक्रमाब्दस्यैकादशशताब्द्यां यथाप्रक्रियं पाणिनीयसूत्राणि सङ्कलय्य  
पठनपाठनक्रमस्यारम्भः समजनि। कालक्रमेण क्रमोऽयमुत्तरोत्तरं विस्तरं पूर्णताञ्च  
संप्राप्तः।

याथातथ्येन सूत्रार्थसम्पादने महाभाष्याद्याकरग्रन्थेषु पुरातनप्रक्रियाग्रन्थेषु  
च पाणिन्यष्टकस्य सूत्रपौर्वापर्यक्रममनुसृत्यैव सर्वत्र समानरूपेण पतञ्जलि-  
प्रभृतिभिर्निर्वाहः कृतोऽवलोक्यते। तथापि प्रक्रियाग्रन्थेषु कार्यकालपक्षाग्रहेण  
सूत्राणि विभिन्नप्रकरणेषु विकीर्णानि संदृश्यन्ते। एतावता विभिन्नप्रकरणेषु  
पठितानां सूत्राणां पारस्परिकं ज्ञानं महता क्लेशेन संजायते। अष्टाध्याय्यां  
सर्वाणि प्रकरणानि वैज्ञानिकेन विधिना सुसम्बद्धानि विद्यन्ते। तेन हेतुना  
तत्तत्प्रकरणस्य ज्ञानं सुतरामनायासेन यथाक्रमं भवति। अपरञ्चाष्टाध्याय्यां  
'विप्रतिषेधे परं कार्यम्' 'असिद्धवदत्राभात्' 'पूर्वत्रासिद्धम्' इत्याद्यधिकार-  
सूत्राणां प्रकरणेषु सूत्रक्रमज्ञानमन्तरा न कोऽप्यन्यः पन्था वर्तते। तत्र सूत्राणां  
क्रमिकत्वस्य ज्ञानमवश्यमपेक्षते। यतः सूत्राणां पौर्वापर्यज्ञानमन्तरा 'पूर्वम्'  
'परम्' 'आभात्' 'त्रिपादी' 'सपादसप्ताध्यायी' 'बाध्यबाधकभावश्च' इत्यादि  
ज्ञानं न कथमपि सम्भवितुमर्हति।

एतन्निखिलं चेतसि विभाव्य छात्राणां जिज्ञासूनाञ्च हितसंसाधनदृशा  
प्रस्तुतोऽयमुपक्रमः। अस्मिन् संस्करणे यथास्थानं वार्तिक-गणपाठ-धातुपाठ-  
लिङ्गानुशासनप्रभृतयश्चैते विषयाः समुपन्यस्ताः सन्ति। कस्य सूत्रस्य पदस्य  
वा अनुवृत्तिः कुत्रपर्यन्तं गच्छतीति शङ्कानिरसनधिया 'विमर्श' इति शीर्षकेण  
मातृभाषायां यत्नः कृतोऽस्ति। आशासे अनेन विधिना व्याकरणाध्येतारश्छात्राः  
स्वल्पेनैव प्रयासेन स्वाभीष्टं लप्स्यन्ते। पुस्तकस्यास्य प्रणयनावसरे  
सत्परामर्शदानार्थं श्रीजनार्दनपाण्डेयमहोदयानां पादपङ्कजेषु प्रणतिततिं सम-  
र्पयामि। पाण्डुलिपिनिर्माणप्रसङ्गे साहाय्यदानार्थं समुत्तीर्णसाहित्याचार्यपरीक्षं



श्रीचन्द्रशेखरमिश्रं शुभाशिषा संयुनज्मि। प्रकाशनदायित्वमङ्गीकरणार्थं 'मोतीलाल बनारसीदास' इतिसंस्थानस्य सञ्चालकेभ्यः शतशः साधुवादान् वितरामि।

पुनश्च ग्रन्थेऽस्मिन्नशुद्धिनिरासाय सुतरामुद्योगे विहितेऽपि चेतश्चाञ्चल्या-  
दल्पप्रज्ञत्वात् प्रमादाधिक्याच्चाधुनाप्यशुद्धयोऽवशिष्टा भवेयुरिति सम्भावयामः।  
आशास्महे करुणावरुणालया विद्वांसस्ताः संसूच्य—

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

इति सूक्तेः सार्थकतामापादयन्तो मामनुग्रहीष्यन्तीति निवेद्य  
विरमामीतिशम्।

विदुषां विधेयः—

डॉ० रमाशङ्कर मिश्रः

गुरु पूर्णिमा २०५४ वि०  
सी०के० ६४/३६ ए, हीरापुरा,  
जालपादेवी रोड़, वाराणसी



...  
...  
...  
...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

...  
...

## विषयसूची

अष्टाध्यायी सूत्राणि	१-१७६
प्रथमोऽध्यायः	१-१६
द्वितीयोऽध्यायः	१७-३२
तृतीयोऽध्यायः	३३-५७
चतुर्थोऽध्यायः	५८-८९
पञ्चमोऽध्यायः	९०-११५
षष्ठोऽध्यायः	११६-१४४
सप्तमोऽध्यायः	१४५-१६१
अष्टमोऽध्यायः	१६२-१७६
धातुपाठः	१७७-२०३
लिङ्गानुशासनम्	२०४-२०८
सूत्रानुक्रमणी	२०९-२७२



Table

Year	1880	1890	1900	1910	1920	1930	1940	1950	1960	1970	1980	1990	2000
Population	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Area	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Volume	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Weight	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Length	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Width	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Height	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Depth	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Temperature	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Pressure	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Humidity	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Wind Speed	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Cloud Cover	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Precipitation	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Solar Radiation	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Evaporation	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Transpiration	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Albedo	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Surface Temperature	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Air Temperature	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Soil Temperature	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Water Temperature	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Ice Thickness	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Snow Depth	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate (mm/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate (mm/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate (mm/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate (cm/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate (cm/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate (cm/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate (m/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate (m/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate (m/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate (km/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate (km/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate (km/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate (mi/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate (mi/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate (mi/yr)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate (mi/century)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate (mi/century)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate (mi/century)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate (mi/millennium)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate (mi/millennium)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate (mi/millennium)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate (mi/decade)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate (mi/decade)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate (mi/decade)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate (mi/year)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate (mi/year)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate (mi/year)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate (mi/day)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate (mi/day)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate (mi/day)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate (mi/hour)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate (mi/hour)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate (mi/hour)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate (mi/minute)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate (mi/minute)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate (mi/minute)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Rise Rate (mi/second)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Fall Rate (mi/second)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700
Sea Level Change Rate (mi/second)	100	150	200	250	300	350	400	450	500	550	600	650	700

॥ श्रीरस्तु ॥

॥ सवार्तिकगणाष्टाध्यायीसूत्रपाठः ॥

येनाक्षरसमाम्नायमधिगम्य महेश्वरात्।  
कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः॥

येन धौता गिरः पुंसां विमलैः शब्दवारिभिः।  
तमश्चाज्ञानजं भिन्नं तस्मै पाणिनये नमः॥

वाक्यकारं वररुचिं भाष्यकारं पतञ्जलिम्।  
पाणिनिं सूत्रकारं च प्रणतोऽस्मि मुनित्रयम्॥



अइउण्। ऋलृक्। एओङ्। ऐऔच्। हयवरट्।  
 लण्। जमडणनम्। झभञ्। घढधष्।  
 जबगडदश्। खफछठथचटतव्।  
 कपय्। शषसर्। हल्।  
 इति प्रत्याहारसूत्राणि॥

### प्रथमोऽध्यायः

#### प्रथमः पादः

- |   |   |
|---|---|
| १. वृद्धि <sup>१</sup> रादैच्             | १०. नाज्झलौ                                 |
| २. अदेङ् गुणः                             | ११. ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् <sup>२</sup> |
| ३. इको गुणवृद्धी <sup>३</sup>             | १२. अदसो मात्                               |
| ४. न <sup>४</sup> धातुलोप आर्धधातुके      | १३. शे                                      |
| ५. किङिति च                               | १४. निपात <sup>५</sup> एकाजनाङ्             |
| ६. दीधीवेवीटाम्                           | १५. ओत् <sup>६</sup>                        |
| ७. हलोऽनन्तराः संयोगः                     | १६. संबुद्धौ शाकल्यस्येतावनाषे <sup>७</sup> |
| ८. मुखनासिकावचनोऽनुनासिकः                 | १७. उञः                                     |
| ९. तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् <sup>८</sup> | १८. उँ                                      |
| (वा०) ऋलृवर्णयोर्मिथः                     | १९. ईदूतौ च सप्तम्यर्थे                     |
| सावर्ण्यं वाच्यम्                         | २०. दाधा घ्वदाप्                            |

#### विमर्श

१-इस सूत्र से 'वृद्धिः' पद की अनुवृत्ति १।१।३। में जाती है। २-इस सूत्र से 'गुणः' की अनुवृत्ति १।१।३। तक जाती है। ३-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति १।१।६। तक जाती है। ४-यहाँ से 'न' पद की अनुवृत्ति १।१।६। तक जाती है। ५-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति १।१।१०। तक जाती है। ६-यहाँ से 'प्रगृह्यम्' पद की अनुवृत्ति १।१।१९ तक तथा 'ईदूदेत्' पद की अनुवृत्ति १।१।१२। तक जाती है। ७-यहाँ से 'निपात' पद की अनुवृत्ति १।१।१५। तक जाती है। ८-'ओत्' की अनुवृत्ति १।१।१६। तक जाती है। ९. यहाँ से 'शाकल्यस्य' 'इतौ' 'अनाषे' की अनुवृत्ति १।१।१७। तक जायेगी।

२१. आद्यन्तवदेकस्मिन्

२२. तरप्तमपौ घः

२३. बहुगणवतुडति संख्या<sup>१</sup>२४. षान्ता षट्<sup>२</sup>

२५. डति च

२६. क्तवतू निष्ठा

२७. सर्वादीनि सर्वनामानि<sup>३</sup>

(ग.सू.) सर्व विश्व उभ उभय डतर डतम अन्य अन्यतर इतर त्वत् त्व नेम सम सिम। 'पूर्व<sup>१</sup>परावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम्' 'स्व<sup>२</sup>मज्ञातिधनाख्यायाम्। 'अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः<sup>३</sup>। त्यद् तद् यद् एतद् इदम् अदस् एक द्वि युष्मद् अस्मद् भवतु किम्।।इति सर्वादिः।।१।।

२८. विभाषा दिक्समासे बहुव्रीहौ

२९. न<sup>४</sup> बहुव्रीहौ३०. तृतीयासमासे<sup>५</sup>३१. द्वन्द्वे<sup>६</sup> च३२. विभाषा जसि<sup>७</sup>

३३. प्रथमचरमतयाल्पार्धकतिपयनेमाश्च

३४. पूर्वपरावरदक्षिणोत्तरापराधराणि व्यवस्थायामसंज्ञायाम्

३५. स्वमज्ञातिधनाख्यायाम्

३६. अन्तरं बहिर्योगोपसंव्यानयोः

(वा.) अपुरीति वक्तव्यम्

(वा.) विभाषाप्रकरणे तीयस्य

डित्सूपसंख्यानम्

३७. स्वरादिनिपातमव्ययम्<sup>८</sup>

(ग.सू.) स्वर अन्तर प्रातर अन्तो-दात्ताः। पुनर् सनुत् उच्चैस् नीचैस् शनैस् ऋधक् ऋते युगपत् आरात् (अन्तिकात्) पृथक्-आद्युदात्ताः। ह्रस्व श्वस् दिवा रात्रौ सायम् चिरम् मनाक् ईषत् (शंश्वत्) जोषम् तूष्णीम् बहिस् अधस् (अवस्) समया निकषा स्वयम् मृषा नक्तम् नञ् हेतौ (हे है) इद्धा अद्धा सामि-अन्तोदात्ताः।। 'वत्' बत सनत् सनात् तिरस्-आद्युदात्ताः। अन्तरा-अन्तो-दात्तः। (अन्तरेण) मक् ज्योक् योक् नक् कम् शम् सना सहसा श्रद्धा अलम् स्वधा वषट् विना नाना स्वस्ति अन्यत् अस्ति उपांशु क्षमा विहायसा दोषा मुधा दिष्ट्या वृथा मिथ्या। 'क्त्वातोसुन्कसुनः, कृन्मकार-संध्यक्षरान्तः, 'अव्ययीभावश्च'। पुरा मिथो मिथस् (प्रायस् मुहुस्) प्रबाहुकम् (प्रवाहिका) आर्यहलम् अभीक्ष्णम् साकम् सार्धम् सत्रम् समम् नमस् हिरुक्। तसिलादयस्तद्धिता एधाच्यन्ताः, शस्तसी, कृत्वसुच, सुच, आस्थालौ, च्यर्थाश्च, (अथ) अम्, आम्, प्रताम् (प्रतान्) प्रशान्-आकृतिगणोऽयम्।

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'संख्या' पद की अनुवृत्ति १।१।२५। तक जाती है। २-'षट्' पद की अनुवृत्ति १।१।२५ तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'सर्वनामानि' पद की अनुवृत्ति १।१।३६। तक तथा 'सर्वादीनि' पद की अनुवृत्ति १।१।३२। तक जाती है। ४-'न' पद की अनुवृत्ति १।१।३२। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'समासे' पद की अनुवृत्ति १।१।३२। तक जाती है। ६-'द्वन्द्वे' पद की अनुवृत्ति १।१।३२ तक जायेगी। ७-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति १।१।३६ तक जायेगी। ८-इस सूत्र से 'अव्ययम्' पद की अनुवृत्ति १।१।४१। तक जाती है।



- तेनान्येऽपि। तथाहि माङ् श्रम् कामम् ४९. षष्ठी स्थाने<sup>३</sup> योगा  
 (प्रकामम्) भूयस् परम् साक्षात् साचि (सावि) ५०. स्थानेऽन्तरतमः  
 सत्यम् मङ्क्षु संवत अवश्यम् सपदि प्रादुस् ५१. उरण्परः  
 आविस् अनिशम् नित्यम् नित्यदा सदा (वा०) लपर इति वक्तव्यम्।  
 अजस्मन् सन्ततम् उषा ओम् भूर् भुवर् इटिति ५२. अलोऽन्त्यस्य<sup>३</sup>  
 तरसा सुष्ठु कु अञ्जसा अ मिथु (अमिथु) ५३. डिच्च  
 विथक् भाजक् अन्वक् चिराय चिरम् चिररात्राय ५४. आदेः परस्य  
 चिरस्य चिरेण चिरात् अस्तम् आनुषक् अनुषक् ५५. अनेकालिशित्सर्वस्य  
 अनुषट् अमन्स् (अम्भस्) अम्भर (अम्भर्) ५६. स्थानिवदादेशो<sup>४</sup>ऽनल्विधौ  
 स्थाने वरम् दुष्टु बलात् शु अर्वाक् शुदि ५७. अचः परस्मिन्पूर्वविधौ<sup>५</sup>  
 वादि इत्यादि। तसिलादयः प्राक्पाशापः। शस्त्र- ५८. न पदान्तद्विर्वचनवरेयलोपस्वर-  
 भृतयः प्राक्समासान्तेभ्यः। मान्तः कृत्वोऽर्थः। सवर्णानुस्वारदीर्घजश्चविधिषु  
 तसिवती। नानाजाविति-इति स्वरादिः॥२॥ (वा०) स्वरदीर्घयलोपेषु लोपा-  
 ३८. तद्धितश्चासर्वविभक्तिः जादेशो न स्थानिवत्।  
 ३९. कृन्मेजन्तः (वा०) क्विलुगुपधात्वचङ्पर-  
 ४०. क्त्वातोऽनुन्कसुनः निर्हासकुत्वेषूपसंख्यानम्।  
 ४१. अव्ययीभावश्च (वा०) पूर्वत्रासिद्धे न स्थानिवत्।  
 ४२. शि सर्वनामस्थानम्<sup>६</sup> (वा०) तस्य दोषः संयोगादि-  
 ४३. सुडनपुंसकस्य लोपलत्वणत्वेषु।  
 ४४. न वेति विभाषा ५९. द्विर्वचनेऽचि  
 ४५. इग्यणः संप्रसारणम् ६०. अदर्शनं<sup>६</sup> लोपः  
 ४६. आद्यन्तौ टकितौ ६१. प्रत्ययस्य लुक्श्लुलुपः  
 ४७. मिदचोऽन्त्यात्परः ६२. प्रत्ययलोपे प्रत्ययलक्षणम्<sup>७</sup>।  
 (वा०) अन्त्यात्पूर्वो मस्जेरनुषङ्ग- (वा०) वर्णाश्रये नास्ति प्रत्यय-  
 संयोगादिलोपार्थम् लक्षणम्।  
 ४८. एच इग्नस्वादेशे ६३. न लुमताऽङ्गस्य

### विमर्श

१- इस सूत्र से 'सर्वनामस्थानम्' पद की अनुवृत्ति १।१।४३ तक जायेगी। २- 'स्थाने' पद की अनुवृत्ति १।१।५१ तक तथा 'षष्ठी' पद की अनुवृत्ति १।१।५५ तक जाती है। ३- यहां से 'अलः' की अनुवृत्ति १।१।५४ तक तथा 'अन्त्यस्य' की अनुवृत्ति १।१।५३ तक जाती है। ४- यहां से 'स्थानिवदादेशः' की अनुवृत्ति १।१।५९ तक जायेगी। ५. यहां से 'अचः' पद की अनुवृत्ति १।१।५९। तक तथा 'परस्मिन्' 'पूर्वविधौ' इन दो पदों की अनुवृत्ति १।१।५८। तक जायेगी। ६- यहां से 'अदर्शनं' पद की अनुवृत्ति १।१।६१ तक जाती है। इस सूत्र में 'न वेति विभाषा' (१।१।४४) से मण्डूकप्लुतगति द्वारा 'इति' की अनुवृत्ति आती है। ७- इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति १।१।६३ तक जाती है।

- (वा०) उत्तरपदत्वे चापदादि-  
विधौ।
६४. अचोऽन्त्यादि टि
६५. अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा  
(वा०) नानर्थकेऽलोऽन्त्यविधि-  
रनभ्यासविकारे।
६६. तस्मिन्निति<sup>१</sup> निर्दिष्टे पूर्वस्य
६७. तस्मादित्युत्तरस्य
६८. स्वं रूपं<sup>२</sup> शब्दस्याशब्दसंज्ञा  
(वा०) अर्थवद्ग्रहणे नानर्थकस्य  
ग्रहणम्।
६९. अणुदित्सवर्णस्य<sup>३</sup> चाप्रत्ययः
७०. तपरस्तत्कालस्य
७१. आदिरन्त्येन सहेता
७२. येन विधिस्तदन्तस्य  
(वा०) यस्मिन्विधिस्तदादाव-  
त्यग्रहणे।  
(वा०) समासप्रत्ययविधौ  
प्रतिषेधः।
- (वा०) उगिद्वर्णग्रहणवर्जम् ।
- (वा०) सुसर्वाधीदिवच्छब्देभ्योजनपदस्य।
- (वा०) ऋतोवृद्धिमद्विधावयवानाम्।
- (वा०) पदाङ्गाधिकारे तस्य च तदुत्तर-  
पदस्य च।
- (वा०) तन्मध्यपतितस्तद्ग्रहणेन  
गृह्याते।
- (वा०) अनिन्स्मत्ग्रहणान्यर्थवता  
चानर्थकेन च तदन्तविधिं  
प्रयोजयन्ति।
- (वा०) प्रत्ययग्रहणे चापञ्चम्याः।
७३. वृद्धिर्यस्याचामादिस्तद्वृद्धम्<sup>४</sup>  
(वा०) वा नामधेयस्य।
७४. त्यदादीनि च
७५. एङ् प्राचां देशे  
(वा०) शैषिकेष्विति वक्तव्यम्।  
(वृद्धिराद्यन्तवदव्ययीभावः प्रत्य-यस्य-  
लुक्पञ्चदश)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे प्रथमस्याध्यायस्य प्रथमः पादः।



### विमर्श

१-इस सूत्र में भी 'इति' शब्द अर्थनिर्देश के लिए है। इस सूत्र से 'निर्दिष्टे' पद की अनुवृत्ति १।१।६७ तक जाती है। २-यहां से 'स्वं रूपं' पद की अनुवृत्ति १।१।७२ तक जायेगी। ३-यहां से 'सवर्णस्य' पद की अनुवृत्ति १।१।७० तक जाती है। ४-यहां से 'वृद्धम्' पद की अनुवृत्ति १।१।७५ तक तथा 'यस्याचामादिः' की अनुवृत्ति १।१।७५ में ही जाती है।



## द्वितीयः पादः

- |  |   |
|--|---|
| १. गाङ्कुटादिभ्योऽञ्जिण्डित् <sup>१</sup> ।      | १३. वा गमः  |
| (वा०) व्यचेः कुटादित्वमनसि।                      | १४. हनः सिच् <sup>१०</sup>                          |
| २. विज इट् <sup>२</sup>                          | १५. यमो <sup>११</sup> गन्धने                        |
| ३. विभाषोणोः                                     | १६. विभाषोपयमने                                     |
| ४. सार्वधातुकमपित् <sup>३</sup>                  | १७. स्थाध्वोरिच्च                                   |
| ५. असंयोगाल्लिट्कित् <sup>४</sup>                | १८. न क्त्वा सेट् <sup>१२</sup>                     |
| (वा०) ऋदुपधेभ्यो लिटः कित्त्वं                   | १९. निष्ठा <sup>१३</sup> शीङ्स्विदिमिदिक्ष्विदिधृषः |
| गुणात्पूर्वविप्रतिषेधेन।                         | २०. मृषस्तितिक्षायाम्                               |
| ६. इन्धिभवतिभ्यां च                              | २१. उदुपधाद्वावादिकर्मणोरन्यतरस्याम्                |
| (वा०) श्रन्धिग्रन्धिदग्धिस्वञ्जीनां              | २२. पूङः क्त्वा <sup>१४</sup> च                     |
| लिटः कित्त्वं वा।                                | २३. नोपधात्थफान्ताद्वा <sup>१५</sup>                |
| ७. मृडमृदगुधकुषक्लिशवदवसः क्त्वा <sup>५</sup>    | २४. वञ्चि-लुञ्ज्यृतश्च                              |
| ८. रुदविदमुषग्रहिस्वपिप्रच्छः संश्च <sup>६</sup> | २५. तृषिमृषिकृशः काश्यपस्य                          |
| ९. इको झल् <sup>७</sup>                          | २६. रलो व्युपधाद्भलादेः संश्च                       |
| १०. हलन्ताच्च <sup>८</sup>                       | २७. ऊकालोऽङ्गस्वदीर्घप्लुतः <sup>१६</sup>           |
| ११. लिङ्सिचावात्मनेपदेषु <sup>९</sup>            | २८. अचश्च   |
| १२. उश्च   | २९. उच्चैरुदात्तः                                   |

## विमर्श

१-इस सूत्र में गाङ् से इङ् धातु का आदेश 'गाङ्' गृहीत किया गया है। कुटादिगण भी 'कुट कौटिल्ये' इस तुदादि गण के धातु से प्रारम्भ कर 'कूङ् शब्दे' तक जानना चाहिए। यहां से 'डित्' की अनुवृत्ति १।२।१४ तक जाती है। २-'इट्' की अनुवृत्ति १।२।१३ तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'अपित्' की अनुवृत्ति १।२।५ तक जायेगी। ४-इस सूत्र से 'लिट्' की अनुवृत्ति १।२।६ तक तथा 'कित्' की अनुवृत्ति १।२।२६ तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'क्त्वा' की अनुवृत्ति १।२।८ तक जायेगी। ६-यहां से 'सन्' की अनुवृत्ति १।२।१० तक जाती है। ७-इस सूत्र से 'इकः' की अनुवृत्ति १।२।११ तक तथा 'झल्' की अनुवृत्ति १।२।१३ तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'हलन्तात्' की अनुवृत्ति १।२।११ तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'लिङ्सिचौ' की अनुवृत्ति १।२।१३ तक तथा 'आत्मनेपदेषु' की १।२।१७ तक जाती है। १०-'सिच्' की अनुवृत्ति १।२।१७ तक जायेगी। ११-'यमः' की अनुवृत्ति १।२।१६ तक जाती है। १२-इस सूत्र से 'न' 'सेट्' की अनुवृत्ति १।२।२६ तक जाती है। १३-'निष्ठा' की अनुवृत्ति १।२।२२ तक जाती है। १४-'क्त्वा' की अनुवृत्ति १।२।२६ तक जाती है। १५-इस सूत्र से 'वा' की अनुवृत्ति १।२।२६ तक जाती है। १६-इस सूत्र से 'ह्रस्वदीर्घप्लुतः' की अनुवृत्ति १।२।२८ तक तथा 'अच्' की १।२।३१ तक जाती है।

३०. नीचैरनुदात्तः (वा०) निपातस्यानर्थकस्य प्राति-  
 ३१. समाहारः स्वरितः पदिकसंज्ञा वक्तव्या।  
 ३२. तस्यादित उदात्तमर्थह्रस्वम् ४६. कृतद्धितसमासाश्च  
 ३३. एकश्रुति<sup>१</sup> दूरात्संबुद्धौ ४७. ह्रस्वो नपुसंके प्रातिपदिकस्य<sup>२</sup>  
 ३४. यज्ञकर्मण्य<sup>३</sup> जपन्यूङ्क्षसामसु ४८. गोस्त्रियोरुपसर्जनस्य<sup>४</sup>  
 ३५. उच्चैस्तरां वा वषट्कारः (वा०) ईयसो बहुव्रीहेनेति  
 ३६. विभाषा छन्दसि वाच्यम्।  
 ३७. न सुब्रह्मण्यायां स्वरितस्य तूदात्तः<sup>५</sup> ४९. लुक्तद्धितलुकि<sup>६</sup>  
 ३८. देवब्रह्मणोरनुदात्तः ५०. इद् गोण्याः  
 ३९. स्वरितात्संहितायामनुदात्तानाम्<sup>७</sup> ५१. लुपि युक्तवद् व्यक्तिवचने<sup>८</sup>  
 ४०. उदात्तस्वरितपरस्य सन्नतरः<sup>९</sup> (वा०) समास उत्तरपदस्य बहु-  
 ४१. अपृक्त एकाल्प्रत्ययः वचनस्य लुपः।  
 ४२. तत्पुरुषः समानाधिकरणकर्म- ५२. विशेषणानां चाजातेः  
 धारयः (वा०) हरीतक्यादिषु व्यक्तिः।  
 ४३. प्रथमानिर्दिष्टं समास उपस- (वा०) खलतिकादिषु वचनम्।  
 र्जनम्<sup>१०</sup> (वा०) मनुष्यलुपि प्रतिषेधः।  
 ४४. एकविभक्ति चापूर्वनिपाते ५३. तदशिष्यं<sup>११</sup> संज्ञाप्रमाणत्वात्  
 (वा०) एक विभक्तावषष्ठ्यन्त- ५४. लुब्धोगाप्रख्यानात्  
 वचनम् ५५. योगप्रमाणे च तदभावेऽदर्शनं  
 ४५. अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्राति- स्यात्  
 पदिकम्<sup>१२</sup>

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'एकश्रुति' की अनुवृत्ति १।२।३९ तक जायेगी। २-यहां से 'यज्ञकर्मणि' की अनुवृत्ति १।२।३५ तक जायेगी। ३-इस सूत्र से 'स्वरितस्य' की अनुवृत्ति १।२।३८ तक जाती है। ४-'अनुदात्तानाम्' की अनुवृत्ति १।२।४० तक जाती है। ५-'सन्नतर' यह अनुदात्ततर की संज्ञा है। ६-यहां 'समासे' इस पद से "समास विधान करने वाला सूत्र" यह अर्थ ग्रहण करना है। "समास उपसर्जनम्" की अनुवृत्ति १।२।४४ तक जाती है। ७-'प्रातिपदिकम्' की अनुवृत्ति १।२।४६ तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'ह्रस्वः' 'प्रातिपदिकस्य' की अनुवृत्ति १।२।४८ तक जाती है। ९-इस सूत्र में 'स्त्री' शब्द से "स्त्रियाम्" (४।१।३) के अधिकार में कहे गये टाप्, डाप्, चाप्, डीप्, डीष्, डीन्, स्त्री प्रत्यय लिये गये हैं, न कि 'स्त्री' शब्द ग्रहण किया गया है। यहां से 'स्त्री' तथा 'उपसर्जनस्य' की अनुवृत्ति १।२।४९ तक जाती है। १०-इस सूत्र से 'तद्धितलुकि' की अनुवृत्ति १।२।५० तक जाती है। ११-इस 'अशिष्य' सूत्र की अनुवृत्ति १।२।५२ तक जाती है। १२-यहां से 'अशिष्यम्' की अनुवृत्ति १।२।५७ तक जाती है।



५६. प्रधानप्रत्ययार्थवचनमर्थस्यान्य- ६६. स्त्री पुंवच्च  
प्रमाणत्वात्। ६७. पुमान्स्त्रिया  
५७. कालोपसर्जने च तुल्यम् ६८. भ्रातृपुत्रौ स्वसृदुहितृभ्याम्  
५८. जात्याख्यायामेकस्मिन्बहुवचन- ६९. नपुंसकमनपुंसकेनैकवच्चा-  
मन्यतरस्याम्<sup>१</sup> स्यान्यतरस्याम्<sup>२</sup>  
(वा०) संख्याप्रयोगे प्रतिषेधः। ७०. पिता मात्रा  
५९. अस्मदो द्वयोश्च<sup>३</sup> ७१. श्वशुरः श्वश्र्वा  
(वा०) सविशेषणस्य प्रतिषेधः। ७२. त्यदादीनि सर्वैर्नित्यम्  
६०. फल्गुनीप्रोष्ठपदानां च नक्षत्रे<sup>३</sup> (वा०) त्यदादितः शेषे पुंनपुंस-  
६१. छन्दसि पुनर्वस्वोरेकवचनम्<sup>४</sup> कतो लिङ्गवचनानि।  
६२. विशाखयोश्च (वा०) अद्वन्द्वतत्पुरुषविशेषणा-  
६३. तिष्यपुनर्वस्वोर्नक्षत्रद्वन्द्वे बहु-  
वचनस्य द्विवचनं नित्यम् ७३. ग्राम्यपशुसङ्घेष्वतरुणेषु स्त्री  
६४. सरूपाणामेकशेष<sup>५</sup> एकविभक्तौ (वा०) अनेकशफेष्विति वक्तव्यम्।  
(वा०) विरूपाणामपि समानार्थ- (गाङ्गुटाद्युदुपधादपृक्तश्छन्दसि पुन-  
कानामेकशेषो वक्तव्यः। र्वस्वोस्त्रयोदश)  
६५. वृद्धो यूना तल्लक्षणश्चेदेव  
विशेषः<sup>६</sup>

इति पाणिनीयसूत्रपाठे प्रथमस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः।



### विमर्श

१-इस सूत्र से 'एकस्मिन्' की अनुवृत्ति १।२।५९ तक तथा 'बहुवचनम्' की अनुवृत्ति १।२।६० तक, एवं 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति १।२।६२ तक जाती है। २-यहां से द्वयोः की अनुवृत्ति १।२।६१ तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'नक्षत्रे' की अनुवृत्ति १।२।६२ तक जाती है। ४-यहां से 'छन्दसि' 'एकवचनम्' की अनुवृत्ति १।२।६२ तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'एकशेषः' की अनुवृत्ति १।२।७३ तक जाती है। ६-यहां से 'वृद्धो यूना' की अनुवृत्ति १।२।६६ तक तथा 'तल्लक्षणश्चेदेव विशेषः' की अनुवृत्ति १।२।६९ तक जाती है। ७-इस सूत्र से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति १।२।७१ तक जाती है।

## तृतीयः पादः

(वा०) परस्परोपपदाच्चेति

वक्तव्यम्।

१. भूवादयो धातवः

२. उपदेशोऽजनुनासिक इत्<sup>१</sup>

३. हलन्त्यम्

४. न विभक्तौ तुस्माः

५. आदि<sup>२</sup>र्जिटुडवः६. षः प्रत्ययस्य<sup>३</sup>

७. चुटू

(वा०) इर इत्संज्ञा वक्तव्या।

८. लशक्वतद्धिते

९. तस्य लोपः

१०. यथासंख्यमनुदेशः समानाम्

११. स्वरितेनाधिकारः

१२. अनुदात्तङित आत्मनेपदम्<sup>४</sup>१३. भावकर्मणोः<sup>५</sup>१४. कर्तरि कर्मव्यतिहारे<sup>६</sup>१५. न<sup>७</sup> गतिहिंसार्थेभ्यः

(वा०) हसादीनामुपसंख्यानम्।

(वा०) हरतेरप्रतिषेधः।

१६. इतरेतरान्योऽन्योपपदाच्च

१६. नेर्विशः

१८. परिव्यवेभ्यः क्रियः

१९. विपराभ्यां जेः

२०. आङो<sup>८</sup> दोऽनास्यविहरणे

(वा०) स्वाङ्गकर्मकाच्चेति

वक्तव्यम्।

२१. क्रीडोऽनुसंपरिभ्यश्च

(वा०) समोऽकूजने।

(वा०) आगमेः क्षमायाम्।

(वा०) शिक्षेर्जिज्ञासायाम्।

(वा०) किरतेर्हषजीविकाकुलाय-

करणेषु।

(वा०) हरतेर्गतताच्छील्ये।

(वा०) आङि नुप्रच्छयोः

(वा०) आशिषि नाथः।

(वा०) शप उपालम्भने।

२२. समवप्रविभ्यः स्थः<sup>९</sup>

(वा०) आङः प्रतिज्ञायाम्।

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'उपदेशे' तथा 'इत्' की अनुवृत्ति १।३।८। तक जाती है। २-यहां से 'आदिः' की अनुवृत्ति १।३।८। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'प्रत्ययस्य'-की अनुवृत्ति १।३।८। तक जाती है। ४-यहां से 'आत्मनेपदम्' का अधिकार १।३।७७ तक जाता है। ५-भाव तथा कर्म में चार बातें कर्तृवाच्य से विशेष होती हैं। (क) आत्मनेपद जो इसी (१।३।१३) सूत्र से होता है। (ख) यक् सार्वधातुके यक् (३।१।६७) से होता है। (ग) चिण्-चिण् भावकर्मणोः (३।१।६६) से होता है। (घ) चिण्वद्भाव-स्य सिच् - - चिण्वदिट् च (६।४।६२) से होता है। ६-यहां से कर्मव्यतिहारे की अनुवृत्ति १।३।१६ तक जाती है। ७-इस सूत्र से 'न' की अनुवृत्ति १।३।१६ तक जाती है। ८-यहां से 'आङः' की अनुवृत्ति १।३।२१ तक जाती है। ९-इससूत्र से 'स्थः' की अनुवृत्ति १।३।२६ तक जाती है।



२३. प्रकाशनस्थेयाख्ययोश्च ३३. अधेः प्रसहने  
 २४. उदोऽनूर्ध्वकर्मणि ३४. वेः<sup>४</sup> शब्दकर्मणः  
 (वा०) ईहायामिति वक्तव्यम्। ३५. अकर्मकाच्च  
 २५. उपात्मन्त्रकरणे ३६. संमाननोत्सञ्जनाचार्यकरणज्ञान-  
 (वा०) उपादेवपूजासंगतिकरण- भृतिविगणनव्ययेषु नियः<sup>५</sup>  
 मित्रकरणपथिष्विति वक्तव्यम्। ३७. कर्तृस्थे चाशरीरे कर्मणि  
 (वा०) वा लिप्सायामिति ३८. वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः<sup>६</sup>  
 वक्तव्यम्। ३९. उपपराभ्याम्  
 २६. अकर्मकाच्च<sup>७</sup> ४०. आङ् उद्गमने  
 २७. उद्विभ्यां तपः (वा०) ज्योतिरुद्गमन इति वक्तव्यम्।  
 (वा०) स्वाङ्गकर्मकाच्च। ४१. वेः पादविहरणे  
 २८. आङो यमहनः ४२. प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्  
 (वा०) स्वाङ्गकर्मकाच्च। ४३. अनुपसर्गाद्वा  
 २९. समो गम्यृच्छिभ्याम् ४४. अपह्रवे ज्ञः<sup>८</sup>  
 (वा०) विदिप्रच्छिस्वरतीनामुप- ४५. अकर्मकाच्च  
 संख्यानम्। ४६. संप्रतिभ्यामनाध्याने  
 (वा०) अर्तिश्रुदृशिभ्यश्च। ४७. भासनोपसंभाषाज्ञानयत्नविमत्युप-  
 (वा०) उपसर्गादस्यत्यूहोर्वा मन्त्रणेषु वदः<sup>९</sup>  
 वचनम्। ४८. व्यक्तवाचां समुच्चारणे<sup>१०</sup>  
 ३०. निसमुपविभ्यो ह्रः<sup>१</sup> ४९. अनोरकर्मकात्  
 ३१. स्पर्धायामाढः ५०. विभाषा विप्रलापे  
 ३२. गन्धनावक्षेपणसेवनसाहसिक्य- ५१. अवाद् ग्रः<sup>११</sup>  
 प्रतियत्नप्रकथनोपयोगेषु कृजः<sup>१२</sup> ५२. समः प्रतिज्ञाने  
 ५३. उदश्चरः<sup>१३</sup> सकर्मकात्

### विवर्ण

१-यहां से 'अकर्मकात्' की अनुवृत्ति १।३।२९ तक जाती है। २-इस सूत्र से 'ह्रः' की अनुवृत्ति १।३।३१ तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'कृजः' की अनुवृत्ति १।३।३५ तक जाती है। ४-यहां से 'वेः' की अनुवृत्ति १।३।३५ तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'नियः' की अनुवृत्ति १।३।३७ तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'क्रमः' की अनुवृत्ति १।३।४३ तक जायेगी तथा 'वृत्तिसर्गतायनेषु' की अनुवृत्ति १।३।३९ तक जायेगी। ७-इससूत्र से 'ज्ञः' की अनुवृत्ति १।३।४६ तक जायेगी। ८-यहां से 'वदः' की अनुवृत्ति १।३।५० तक जायेगी। ९-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति १।३।५० तक जाती है। १०-यहां से 'ग्रः' की अनुवृत्ति १।३।५२ तक जाती है। ११-इस सूत्र से 'चरः' पद की अनुवृत्ति १।३।५४ तक जाती है।

५४. समस्तृतीयायुक्तात्<sup>१</sup>  
 ५५. दाणश्च सा चैच्चतुर्थ्यर्थे  
 (वा०) अशिष्टव्यवहारे दाणः प्रयोगे  
 चतुर्थ्यर्थे तृतीया भवतीति  
 वक्तव्यम्।  
 ५६. उपाद्यमः स्वकरणे  
 ५७. ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः<sup>२</sup>  
 ५८. ना<sup>३</sup> नोज्ञः  
 ५९. प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः  
 ६०. शदेः शितः<sup>४</sup>  
 ६१. प्रियतेर्लुङ्लिङोश्च  
 ६२. पूर्ववत्सनः  
 ६३. आम्रप्रत्ययवत्कृजोऽनुप्रयोगस्य  
 ६४. प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु  
 (वा०) स्वराद्यन्तोपसृष्टादिति वक्तव्यम्।  
 ६५. समः क्षणुवः  
 ६६. भुजोऽनवने  
 ६७. णै<sup>५</sup>रणौ यत्कर्म णौ चेत्स कर्ता-  
 ऽनाध्याने  
 ६८. भीस्म्योर्हेतुभये  
 ६९. गृधिवज्ज्याः प्रलम्भने<sup>६</sup>  
 ७०. लियः संमाननशालीनीकरणयोश्च  
 ७१. मिथ्योपपदात्कृजोऽभ्यासे  
 ७२. स्वरितजितः कर्त्रभिप्राये  
 क्रियाफले<sup>७</sup>  
 ७३. अपाद्वदः  
 ७४. णिचश्च  
 ७५. समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे  
 ७६. अनुपसर्गाज्जः  
 ७७. विभाषोपपदेन प्रतीयमाने  
 ७८. शेषात्कर्तरि परस्मैपदम्<sup>८</sup>  
 ७९. अनुपराभ्यां कृजः  
 ८०. अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः  
 ८१. प्राद्वहः  
 ८२. परेर्मृषः  
 ८३. व्याङ्परिभ्यो रमः<sup>९</sup>  
 ८४. उपाच्च  
 ८५. विभाषाऽकर्मकात्  
 ८६. बुधयुधनशजनेङ्गुदुसुभ्यो णेः<sup>१०</sup>  
 ८७. निगरणचलनार्थेभ्यश्च  
 (वा०) अदेः प्रतिषेधः।  
 ८८. अणावकर्मकाच्चित्तवत्कर्तृकात्  
 ८९. न पादम्याङ्यमाङ्यस-  
 परिमुहरुचिन्तितिवदवसः  
 (वा०) पादिषु धेट उपसंख्यानम्।  
 ९०. वा<sup>११</sup> क्यषः  
 ९१. द्युद्धयो लुङि  
 ९२. वृद्धयः स्यसनोः<sup>१२</sup>  
 ९३. लुटि च क्लृपः  
 (भूवादयः क्रीडोऽनुवेः पादप्रियतेः  
 प्राद्वहस्त्रयोदश।)

इतिपाणिनीयसूत्रपाठे प्रथमस्याध्यायस्य तृतीयः पादः।

### विमर्श

१-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति १।३।५५। तक जायेगी। २-यहाँ से 'सनः' की अनुवृत्ति १।३।५९। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से 'न' की अनुवृत्ति १।३।५९। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'शितः' की अनुवृत्ति १।३।६१। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'णेः' की अनुवृत्ति १।३।७१। तक जाती है। ६-यहाँ से 'प्रलम्भने' की अनुवृत्ति १।३।७०। तक जाती है। ७-यहाँ से 'कर्त्रभिप्राये क्रियाफले' की अनुवृत्ति १।३।७७। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से 'परस्मैपदम्' की अनुवृत्ति पाद के अन्त १।३।९३। तक जाती है। ९-यहाँ से 'रमः' की अनुवृत्ति १।३।८५। तक जायेगी। १०-इस सूत्र से 'णेः' की अनुवृत्ति १।३।८९। तक जाती है। ११-यहाँ से 'वा' की अनुवृत्ति १।३।९३। तक जाती है। १२-यहाँ से 'स्यसनोः' की अनुवृत्ति १।३।९३ तक जाती है।



## चतुर्थः पादः

- |  |                                      |
|--|--------------------------------------|
| १. आकडारादेका संज्ञा <sup>१</sup>        | (वा०) नभोऽङ्गिरोमनुषां वत्युप-       |
| २. विप्रतिषेधे परं कार्यम्               | संख्यानम्।                           |
| ३. यू स्याख्यौ नदी <sup>२</sup>          | (वा०) वृषण् वस्वश्चयोः।              |
| (वा०) प्रथमलिङ्गग्रहणं च                 | १९. तसौ मत्वर्थे                     |
| ४. नेयडुवड्स्थानावस्त्री <sup>३</sup>    | २०. अयस्मयादीनि छन्दसि               |
| ५. वा <sup>४</sup> ऽऽमि                  | (वा०) उभयसंज्ञान्यपीती वक्तव्यम्     |
| ६. डिति ह्रस्वश्च <sup>५</sup>           | २१. बहुषु बहुवचनम्                   |
| ७. शेषो <sup>६</sup> ध्यसखि              | २२. द्व्येकयोर्द्विवचनैकवचने         |
| ८. पतिः <sup>७</sup> समास एव             | २३. कारके <sup>१३</sup>              |
| ९. षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा                 | २४. ध्रुवमपायेऽपादानम् <sup>१४</sup> |
| १०. ह्रस्वं <sup>८</sup> लघु             | (वा०) जुगुप्साविरामप्रमा-            |
| ११. संयोगे गुरु <sup>९</sup>             | दार्थानामुपसंख्यानम्                 |
| १२. दीर्घं च                             | २५. भीत्रार्थानां भयहेतुः            |
| १३. यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि-           | २६. पराजेरसोढः                       |
| प्रत्ययेऽङ्गम्                           | २७. वारणानार्थानामीप्सितः            |
| १४. सुप्तिङन्तं पदम् <sup>१०</sup>       | २८. अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति        |
| ५. नः क्ये                               | २९. आख्यातोपयोगे                     |
| १६. सिति च                               | ३०. जनिकर्तुः <sup>१५</sup> प्रकृतिः |
| १७. स्वादिष्वसर्वनामस्थाने <sup>११</sup> | ३१. भुवःप्रभवः                       |
| १८. यचि भम् <sup>१२</sup>                |                                      |

## विमर्श

१-‘कडाराः कर्मधारये’ इस सूत्र के पहले इसका अधिकार जानना चाहिए। २-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति १।४।६। तक जायेगी। ३-इस अशेष सूत्र की अनुवृत्ति भी १।४।६। तक जायेगी। ४-इस सूत्र से ‘वा’ की अनुवृत्ति १।४।६। तक जाती है। ५-यहां से ‘ह्रस्वः’ की अनुवृत्ति १।४।७। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से ‘धि’ की अनुवृत्ति १।४।९। तक जाती है। ७-यहां से ‘पतिः’ की अनुवृत्ति १।४।९। तक जायेगी। ८-यहां से ‘ह्रस्वः’ की अनुवृत्ति १।४।११। तक जाती है। ९-यहां से ‘गुरु’ की अनुवृत्ति १।४।१२। तक जाती है। १०-इस सूत्र से ‘पदम्’ की अनुवृत्ति १।४।१७। तक जायेगी। ११-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति १।४।१८। तक जाती है। १२-यहां से ‘भम्’ की अनुवृत्ति १।४।२० तक जाती है। १३-इस सूत्र का अधिकार १।४।५५। तक जाता है। १४-इससूत्र से ‘अपादानम्’ की अनुवृत्ति १।४।३१। तक जायेगी। १५-यहां से ‘कर्तुः’ की अनुवृत्ति १।४।३१। तक जाती है।

३२. कर्मणा यमभिप्रैति स संप्रदानम्<sup>१</sup> (वा०) वसेरश्यर्थस्य प्रतिषेधः।  
 (वा०) क्रियया यमभिप्रैति स ४९. कर्तुरीप्सिततमं कर्म<sup>७</sup>  
 संप्रदानम् ५०. तथायुक्तं चानीप्सितम्  
 (वा०) कर्मणः करणसंज्ञा संप्रदा- ५१. अकथितं च  
 नस्य च कर्मसंज्ञा वक्तव्या। (वा०) अकर्मकधातुभिर्योगे देशः  
 ३३. रुच्यर्थानां प्रीयमाणः कालो भावो गन्तव्योऽध्वा  
 ३४. श्लाघ-हुङ्-स्था-शपां ज्ञीप्स्य- च कर्मसंज्ञक इति वाच्यम्।  
 मानः ५२. गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थशब्द-  
 ३५. धारेरुत्तमर्णः कर्मकर्मकाणामणि कर्ता स णौ<sup>८</sup>  
 ३६. स्पृहेरीप्सितः (वा०) जल्पतिप्रभृतीनामुपसंख्यानम्।  
 ३७. क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति (वा०) दृशेश्च।  
 कोपः<sup>२</sup> (वा०) अदिखाद्योर्न  
 ३८. क्रुधद्रुहेरुपसृष्टयोः कर्म (वा०) नीवह्योर्न  
 ३९. राधीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः (वा०) नियन्तृकर्तृकस्य वहेरनिषेधः  
 ४०. प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता<sup>३</sup> (वा०) भक्षेरहिंसार्थस्य न।  
 ४१. अनुप्रतिगृणश्च (वा०) शब्दायतेर्न।  
 ४२. साधकतमं करणम्<sup>४</sup> ५३. हक्रोरन्यतरस्याम्  
 ४३. दिवः कर्म च (वा०) अभिवादिदृशोरात्मनेपदे  
 ४४. परिक्रयणे संप्रदानमन्यतरस्याम् वेति वाच्यम्।  
 ४५. आधारोऽधिकरणम् ५४. स्वतन्त्रः कर्ता<sup>५</sup>  
 ४६. अधिशीङ्स्थासां कर्म<sup>६</sup> ५५. तत्प्रयोजको हेतुश्च  
 ४७. अभिनिविशश्च ५६. प्राग्रीश्वरान्निपाताः<sup>१०</sup>  
 ४८. उपान्वध्याङ्-वसः

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'संप्रदानम्' की अनवृत्ति १।४।४१ तक जाती है। २-यहां से 'यं प्रति कोपः' की अनवृत्ति १।४।३८। तक जायेगी। ३-यहां से 'पूर्वस्य कर्ता' की अनवृत्ति १।४।४१। तकजाती है। ४-इस समस्त सूत्र की अनवृत्ति १।४।४४।तक जाती है। ५-यहाँ से 'आधारः' की अनवृत्ति १।४।४८। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'कर्म' पद की अनवृत्ति १।४।४८। तक जायेगी। ७-यहां से 'कर्म' की अनवृत्ति १।४।५३। तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'अणि कर्ता स णौ' की अनवृत्ति १।४।५३ तक जायेगी। ९-यहां से 'कर्ता' की अनवृत्ति १।४।५५तक जाती है। १०-यहां से 'निपाताः' का अधिकार 'विभाषा कृजि' (१।४।९८।) तक जाता है।



५७. चादयोऽसत्वे<sup>१</sup>

(वा०) श्रच्छब्दस्योपसंख्यानम्।

३. च वा ह (अह) एव एवम् नूनम् शश्वत् युपत् (युगपत्) (भूयस्) सूपत् कूपत् कुवित् नेत् चेत् चण् कच्चित् यत्र तत्र नह हन्त माकिम् (माकीम्) माकिर् नकिम् (नकीम्) नकिर् (आकिम्) माङ् नञ् तावत् यावत् त्वा त्वे त्वै (द्वैरै)रे श्रौषट् वौषट् वषट् स्वाहा स्वधा ओम् तथा (तथाहि) खलु किल अथ सु (सुष्ठु) स्म अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ आदह उञ् उकञ् वेलायाम् मात्रायाम् यथा यत् तत् किम् पुरा वधा (वध्वा) धिक् हाहा हे है (हहे) पाट् प्याट् आहो उताहो हो अहो नो (नौ) अथो ननु मन्ये मिथ्या असि ब्रूहि तु नु इति इव वत् वात् वन वत (सम्) वशम् शिकम् दिकम् सनुकम् छंवट् (छंवट्) शङ्के शुकम् खम् सनात् सनतर् नहिकम् सत्यम् ऋतम् अद्ध इद्धा नोचेत् नचेत् नहि जातु कथम् कुतः कुत्र अव अनु हा हे (है) आहोस्वित् शम् कम् खम् दिष्ट्या पशु वट् सह (अनुषट्) आनुषक् अङ्ग फट् ताजक् (भाजक्) अये अरे बाट् (चाटु) कुम् खुम् घुम् अम् ईम् सीम् सिम् सि वै। 'उपसर्ग-विभक्तिस्वरप्रतिरूपकाश्च निपाताः' १६. आकृतिगणोऽयम्॥ इति चादयः॥

५८. प्रादयः<sup>२</sup>

४. प्र परा अप सम् अनु अव निस् निर् दुस् दुर् वि आङ् नि अधि अपि अति सु उद् अभि प्रति परि उप-इति प्रादयः॥

(वा०) मरुच्छब्दस्योपसंख्यानम्।

५९. उपसर्गाः क्रियायोगे<sup>३</sup>

६०. गति<sup>४</sup> श्र

(वा०) कारिकाशब्दस्योपसंख्यानम्।

(वा०) पुनश्च नसौ छन्दसि।

(वा०) दुः षत्वणत्वयोरुपसर्गत्वप्रति-  
षेधो वक्तव्यः।

६१. ऊर्यादिच्चिडाचश्र

५. ऊरी उररी तन्थी ताली आताली वेताली धूली धूसी शकला संशकला ध्वंसकला भ्रंसकला गुलुगुधा सजूस् फल फली विल्की आल्की आलोष्ठी केवाली केवासी सेवासी (पर्याली) शेवाली वर्षाली अत्यूमशा वश्मशा (मस्मसा) मसमसा औषट् (श्रौषट्) वौषट् वषट् स्वाहा स्वधा बन्धा प्रादुस् अत् आविस् ॥ इत्यूर्यादयः ॥

६२. अनुकरणं चानितिपरम्

६३. आदरानादरयोः सदसती

६४. भूषणेऽलम्

६५. अन्तरपरिग्रहे

(वा०) अन्तः शब्दस्याङ्गिविधिणत्वेषूप-  
सर्गत्वं वाच्यम्।

६६. कणेमनसी श्रद्धाप्रतीघाते

६७. पुरोऽव्ययम्<sup>५</sup>

६८. अस्तं च

६९. अच्छ गत्यर्थवदेषु

७०. अदोऽनुपदेशे

## विमर्श

१-यहां से 'असत्वे' की अनुवृत्ति १।४।५८। तक जाती है। २-इस सूत्र की अनुवृत्ति १।४।६०। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'क्रिया-योगे' की अनुवृत्ति १।४।७९। तक जाती है। ४-यहां से 'गतिः' की अनुवृत्ति १।४।७९। तक जाती है। ५-यहां से 'अव्ययम्' की अनुवृत्ति १।४।६९। तक जायेगी।

७१. तिरोऽन्तर्धौ <sup>१</sup>	८४. अनु <sup>२</sup> लक्षणे
७२. विभाषा कृजि <sup>३</sup>	८५. तृतीयार्थे
७३. उपाजेऽन्वाजे	८६. हीने <sup>४</sup>
७४. साक्षात्प्रभृतीनि च	८७. उपोऽधिके च
६. साक्षात् मिथ्या चिन्ता भद्रा रोचना आस्था	८८. अपपरी वर्जने
अमा अद्धा प्राजर्या प्राजरूहा बीजर्या बीजरूहा	८९. आङ् मर्यादावचने
संसर्गार्थे लवणम् उष्णम् शीतम् उदकम्	(वा०) आङ्मर्यादाभिविध्योरिति-
आर्द्रम् अग्नौ वशे विकसने प्रसहने प्रतपने	वक्तव्यम्।
प्रादुस् नमस्—आकृतिगणोऽयम्॥ इति	९०. लक्षणेत्थंभूताख्यानभागवीप्सासु <sup>१०</sup>
साक्षात्प्रभृतयः॥	प्रतपर्यन्तवः
(वा) च्यर्थ इति वक्तव्यम्।	९१. अभिरभागे
७५. अनत्याधान <sup>३</sup> उरसिमनसी	९२. प्रतिः प्रतिनिधिप्रतिदानयोः
७६. मध्ये पदे निवचने च	९३. अधिपरी अनर्थकौ
७७. नित्यं <sup>४</sup> हस्ते पाणावुपयमने	९४. सुः पूजायाम् <sup>११</sup>
७८. प्राध्वं बन्धने	९५. अतिरतिक्रमणे च
७९. जीविकोपनिषदावौपम्ये	९६. अपिः पदार्थसंभावनान्ववसर्ग
८०. ते प्राग्धातोः <sup>५</sup>	गर्हासमुच्चयेषु
८१. छन्दसि <sup>६</sup> परेऽपि	९७. अधि <sup>१२</sup> रीश्वरे
८२. व्यवहिताश्च	९८. विभाषा कृजि
८३. कर्मप्रवचनीयाः <sup>७</sup>	९९. लः <sup>१३</sup> परस्मैपदम्

### विमर्श

१-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति १।४।७२। तक जायेगी। २-इस सूत्र से 'विभाषा' की अनुवृत्ति १।४।७६। तक तथा 'कृजि' की अनुवृत्ति १।४।७९। तक जायेगी। ३-यहां से 'अनत्याध्याने' की अनुवृत्ति १।४।७६। तक जाती है। ४-यहां से 'नित्यम्' की अनुवृत्ति १।४।७९। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'ते धातोः' की अनुवृत्ति १।४।८२। तक जायेगी। ६-यहां से 'छन्दसि' की अनुवृत्ति १।४।८२। तक जायेगी। ७-इस सूत्र का अधिकार १।४।९८। तक जायेगा ८-यहां से 'अनुः' की अनुवृत्ति १।४।८६। तक जायेगी। ९-यहां से 'हीने' की अनुवृत्ति १।४।८७। तक जायेगी। १०-यहां से 'लक्षणेत्थं' भूताख्यान-भाग-वीप्सासु' की अनुवृत्ति १।४।९२। तक जाती है। ११-इस सूत्र से 'पूजायाम्' की अनुवृत्ति १।४।९५। तक जायेगी। १२-यहां से 'अधिः' की अनुवृत्ति १।४।९८। तक जाती है। १३-इस सूत्र में 'लः' पद में आदेश की अपेक्षा से षष्ठी है, अतः 'लस्य' (३।४।७७) से लकारों के स्थान में जो तिप्तस्झि (३।४।७८) सूत्र से आदेश होते हैं, उनका ग्रहण किया गया है। 'लटः शतृशानचाव' (३।२।१२४) से लट् के स्थान में शतृ, शानच् होते हैं। अतः शतृ की यहां परस्मैपद संज्ञा हो गयी है। 'क्वसुश्च' ३।२।१०७। से लट् के स्थान में क्वसु आदेश हुआ है, अतः वह भी लादेश है।



१००. तडानावात्मनेपदम् <sup>१</sup>	१०६. प्रहासे च मन्योपपदे मन्यतेरु-
१०१. तिङ्स्त्रीणि त्रीणि <sup>२</sup> प्रथम-	तम एकवच्च
मध्यमोत्तमाः	१०७. अस्मद्युत्तमः
१०२. तान्येकवचनद्विवचनबहु-	१०८. शेषे प्रथमः
वचनान्येकशः <sup>३</sup>	१०९. परः संनिकर्षः संहिता
१०३. सुपः <sup>४</sup>	११०. विरामोऽवसानम्
१०४. विभक्तिश्च	(आ कडाराद्वहुष्वनुप्रतिगृण
१०५. युष्मद्युपपदे समानाधिकरणे	ऊर्यादिच्छन्दसि तिङो दश॥)
स्थानिन्यपि मध्यमः <sup>५</sup>	

इति पाणिनीयसूत्रपाठे प्रथमस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायश्च।



### विमर्श

१-तङ् में 'त' से लेकर 'महिङ्' के डकार पर्यन्त प्रत्याहार का ग्रहण है तथा आन से शानच्, कानच् का। यह पूर्व सूत्र का अपवाद है। २-इस सूत्र से 'तिङ्स्त्रीणि त्रीणि' पद की अनुवृत्ति १।४।१०४ तक जाती है। ३-यहां से 'एकवचनद्विवचनबहुवचनान्येकशः' की अनुवृत्ति १।४।१०३ तक जाती है। ४-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति १।४।१०४ तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'उपपदे समानाधिकरणे स्थानिन्यपि' की अनुवृत्ति १।४।१०८ तक तथा 'युष्मदि मध्यमः' की १।४।१०६ तक जाती है।

## अथ द्वितीयोऽध्यायः

### प्रथमः पादः

- |   |  |
|---|--|
| १. समर्थः पदविधिः                             | ८. यावदवधारणे                                  |
| २. सुबा <sup>१</sup> मन्त्रिते पराङ्गवत्स्वरे | ९. सुप्रतिना मात्रार्थे                        |
| (वा०) षष्ठ्यामन्त्रितकारकवचनम्                | १०. अक्षशलाकासंख्याः परिणा                     |
| (वा०) सुबन्तस्य पराङ्गवद्भावे                 | ११. विभाषा <sup>६</sup>                        |
| समानाधिकरणस्योपेक्षणमनन्तरत्वात्।             | १२. अपपरिबहिरञ्चवः पञ्चम्या <sup>७</sup>       |
| (वा०) पूर्वाङ्गवच्चेति वक्तव्यम्।             | १३. आङ्मर्यादाभिविध्योः                        |
| (वा०) अव्ययानां न।                            | १४. लक्षणे <sup>८</sup> नाभिप्रती आभिमुख्ये    |
| (वा०) अव्ययीभावस्य त्विष्यते।                 | १५. अनुर्य <sup>९</sup> त्समया                 |
| ३. प्राक्कडारात्समासः <sup>२</sup>            | १६. यस्य चायामः                                |
| ४. सह सुपा <sup>३</sup>                       | १७. तिष्ठद्गुप्रभृतीनि च                       |
| (वा०) इवेन समासो विभक्त्यलोपश्च               | ७. तिष्ठद्गु वहद्गु आयतीगवम् खलेयवम्           |
| ५. अव्ययीभावः <sup>४</sup>                    | खलेबुसम् लूनयवम् लूयमानयवम् पूतयवम्            |
| ६. “अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धि-                | पूयमानयवम् संहतयवम् संहियमाणयवम्               |
| वृद्धयर्थाभावात्ययासंप्रतिशब्द-               | संहतबुसम् संहियमाणबुसम् समभूमि                 |
| प्रादुर्भावपश्चाद्यथानुपूर्व्ययौगपद्य-        | समपदाति सुषमम् विषमम् दुःषमम् निःषमम्          |
| सादृश्यसंपत्तिसाकल्यान्तवचनेषु                | अपसमम् आयतीसमम् (प्रोढम्) पापसमम्              |
| ७. यथाऽसादृश्ये                               | पुण्यसमम् प्राहणम् प्रथम् प्रमृगम् प्रदक्षिणम् |
|   | (अपरदक्षिणम्) संप्रति असंप्रति। ‘इच्चत्ययः     |
|   | समासान्तः’ इति तिष्ठद्गुप्रभृतयः॥              |

### विमर्श

१-इस सूत्र से ‘सुप्’ का अधिकार २।२।२९। तक जायेगा। २-‘समासः’ का अधिकार २।२।३८। तक जाता है। ३-इसका अधिकार २।२।२२। तक जानना चाहिए। ४-यह भी अधिकारसूत्र है। इसका अधिकार २।१।२१। तक समझना चाहिए। ५-इससूत्र से ‘अव्ययम्’ की अनुवृत्ति २।१।८। तक जाती है। ६-यहां से ‘विभाषा’ का अधिकार २।२।२९। तक जाता है। ७-‘पञ्चम्या’ की अनुवृत्ति २।१।१३। तक जाती है। ८-इस सूत्र से ‘लक्षणेन’ की अनुवृत्ति २।१।१६। तक जाती है। ९-यहां से ‘अनुः’ की अनुवृत्ति २।१।१६। तक जायेगी।



१८. पारे मध्ये षष्ठ्या वा  
 १९. संख्या<sup>१</sup>वंश्येन  
 २०. नदीभिश्च<sup>२</sup>  
 २१. अन्यपदार्थे च संज्ञायाम्  
 २२. तत्पुरुषः<sup>३</sup>  
 २३. द्विगुश्च  
 २४. द्वितीया<sup>४</sup> श्रितातीतपतित-  
 गतात्यस्तप्राप्तापन्नैः  
 (वा०) गम्यादीनामुपसंख्यानम्।  
 २५. स्वयं तेन<sup>५</sup>  
 २६. खट्वा क्षेपे  
 २७. सामि  
 २८. कालाः<sup>६</sup>  
 २९. अत्यन्तसंयोगे च  
 ३०. तृतीया<sup>७</sup> तत्कृतार्थेन गुणवचनेन  
 ३१. पूर्व-सदृश-समोनार्थ-कलह-  
 निपुण-मिश्र-श्लक्ष्णैः  
 (वा०) अवरस्योपसंख्यानम्।  
 ३२. कर्तृकरणे<sup>८</sup> कृता बहुलम्  
 ३३. कृत्यैरधिकार्थवचने  
 ३४. अत्रेन व्यञ्जनम्  
 ३५. भक्ष्येण मिश्रीकरणम्  
 ३६. चतुर्थी तदर्थार्थ-बलि-हित-  
 सुख-रक्षितैः  
 (वा०) अर्थेन नित्यसमासो विशेष्य-  
 लिङ्गता चेति वक्तव्यम्।  
 ३७. पञ्चमी<sup>९</sup> भयेन  
 (वा०) भयभीतभीतिभीभिरिति  
 वक्तव्यम्।  
 (वा०) भयनिर्गतजुगुप्सुभिरिति  
 वक्तव्यम्।  
 ३८. अपेतापोढमुक्तपतितापत्रस्तैरल्पशः  
 ३९. स्तोकान्तिकदूरार्थकृच्छ्राणि तेन  
 ४०. सप्तमी<sup>१०</sup> शौण्डैः  
 ८. शौण्ड धूर्त कितव व्याड प्रवीण संवीत  
 अन्तर अधि पटु पण्डित कुशल चपल  
 निपुण-इति शौण्डादयः।।  
 ४१. सिद्धशुष्कपक्वबन्धैश्च  
 ४२. ध्वाङ्क्षेण क्षेपे  
 ४३. कृत्यैर्ऋणे  
 ४४. संज्ञायाम्  
 ४५. तेना<sup>११</sup> होरात्रावयवाः  
 ४६. तत्र

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'संख्या' की अनुवृत्ति २।१।२०। तक जाती है। २-यहां से 'नदीभिः' की अनुवृत्ति २।१।२१। तक जाती है। ३-यह अधिकार और संज्ञा सूत्र है। यहां से २।१।२२। तक जो समास कहेंगे, उसकी तत्पुरुष संज्ञा जाननी चाहिए। ४-यहां से 'द्वितीया' की अनुवृत्ति २।१।२९। तक जाती है। ५-'तेन' की अनुवृत्ति २।१।२८। तक जाती है। ६-यहां से 'कालाः' की अनुवृत्ति २।१।२९। तक जायेगी। ७-'तृतीया' की अनुवृत्ति २।१।३५। तक जायेगी। ८-'कर्तृकरणे' की अनुवृत्ति २।१।३३। तक जाती है। ९-यहां से 'पञ्चमी' की अनुवृत्ति २।१।३९। तक जाती है। १०-इस सूत्र से 'सप्तमी' की अनुवृत्ति २।१।४८। तक जायेगी। ११-यहां से 'तेन' की अनुवृत्ति २।१।४७। तक जायेगी।

४७. क्षेपेः

४८. पात्रे समितादयश्च

९. पात्रेसमिताः पात्रेबहुलाः उदुम्बरमशकः  
(उदुम्बरमशकाः) उदुम्बरकृमिः कूपकच्छपः  
अवटकच्छपः कूपमण्डूकः कुम्भमण्डूकः  
उदपानमण्डूकः नगरकाकः नगरवायसः  
मातरिपुरुषः पिण्डीशूरः पितरिशूरः गेहेशूरः  
गेहेनर्दी गेहेक्ष्वेडी गेहेविजिती गेहेव्याडः  
गेहेमेही (गेहेदाही) गेहेदृप्तः गेहेधृष्टः गर्भेदृप्तः  
आखनिकबकः गोष्ठेशूरः गोष्ठेविजिती  
गोष्ठेक्ष्वेडी गोष्ठेपटुः गोष्ठेपण्डितः गोष्ठे-  
प्रगल्भः कर्णेतिरिति रा कर्णेचुरुबुरा। आकृति-  
गणोऽयम् ॥ इति पात्रेसमितादयः ॥

४९. पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनव-  
केवलाः समानाधिकरणेन

५०. दिक्संख्ये संज्ञायाम्

५१. तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च

(वा०) द्वन्द्वतत्पुरुषयोरुत्तरपदे

नित्यसमासवचनम्

(वा०) उत्तरपदेन परिमाणिना द्विगोः

सिद्धये बहूनां तत्पुरुषस्यो-

पसंख्यानम्।

५२. संख्यापूर्वो द्विगुः

५३. कुत्सितानि कुत्सनैः

५४. प्रापाणके कुत्सितैः

५५. उपमानानि सामान्यवचनैः

५६. उपमितं व्याघ्रादिभिः सामान्या-  
प्रयोगे

१०. व्याघ्र सिंह ऋक्ष ऋषभ चन्दन वृक  
बृष वराह हस्तिन् तरु कुञ्जर रुरु पृषत्  
पुण्डरीक पलाश कितव इति व्याघ्रादयः ॥  
आकृतिगणोऽयम्। तेन-मुखपद्मम् मुखकमलम्  
करकिसलयम् पार्थिवचन्द्रः इत्यादि।

५७. विशेषणं विशेष्येण बहुलम्

५८. पूर्वापरप्रथमचरमजघन्य-

समानमध्यमध्यमवीराश्च

५९. श्रेण्यादयः कृतादिभिः

११. श्रेणि (ऊक) एक पूग कुन्दुम (मुकुन्द)  
(राशि) निचय (विशेष) निधन (विधान)  
(पर) इन्द्र देव मुण्ड भूत श्रमण वदान्य  
अध्यापक अभिरूपक ब्राह्मण क्षत्रिय (विशिष्ट)  
पटु पण्डित कुशल चपल निपुण कृपण  
इत्येते श्रेण्यादयः ॥

१२. कृत मित मत भूत उक्त (युक्त) समाज्ञात  
समाम्नात समाख्यात संभावित (संसेवित)  
अवधारित अवकल्पित निराकृत उपकृत  
उपाकृत (दृष्ट कलित दलित उदाहृत विश्रुत  
उदित)-आकृतिगणोऽयम् ॥ इति कृतादयः ॥

(वा०) श्रेण्यादिषु च्व्यर्थवचनम्।

६०. तेन नञ्विशिष्टेनानञ्

(वा०) शाकपार्थिवादीनां सिद्धये

उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम्।

१३. (वा० १३१४)। शाकपार्थिव कुतप-  
सौश्रुत अजातौल्वलि-आकृतिगणोऽयम् ॥  
कृतापकृत भुक्तविभुक्त पीतविपीत गतप्रत्यागत

विमर्श

१-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति २।१।४८। तक जायेगी। २-इस सूत्र से 'समानाधिकरणेन' की अनुवृत्ति पाद के अन्त २।१।७२। तक जाती है। ३-यहां से 'दिकसंख्ये' की अनुवृत्ति २।१।५१। तक जाती है। ४-यहां से 'कुत्सनैः' की अनुवृत्ति २।१।५४। तक जाती है। ५-यहां से 'विशेषणं विशेष्येण' की अनुवृत्ति २।१।५८। तक जायेगी।



यातानुयात क्रयाक्रयिका पुटापुटिका  
फलाफलिका (मानोन्मानिका) -इति  
शाकपार्थिवादयः॥

६१. सन्महत्परमोत्तमोत्कृष्टाः पूज्यमानैः

६२. बृन्दारकनागकुञ्जरैः पूज्यमानम्

६३. कतरकतमौ जातिपरिप्रश्ने

६४. किं क्षेपे

६५. पोटा-युवति-स्तोक-कतिपय-

गृष्टि-धेनु-वशा-बेहद-बष्कयणी-

प्रवक्तु-श्रोत्रियाध्यापक-धूर्तैर्जातिः<sup>१</sup>

६६. प्रशंसावचनैश्च

६७. युवा खलतिपलितवलिनजरतीभिः

६८. कृत्यतुल्याख्या अजात्या

६९. वर्णों वर्णेन

७०. कुमारः श्रमणादिभिः

१४. श्रमणा प्रव्रजिता कुलटा गर्भिणी तापसी  
दासी बन्धकी अध्यापक अभिरूपक  
पण्डित पटु मृदु कुशल चपल निपुण-इति  
श्रमणादयः॥

७१. चतुष्पादो गर्भिण्या

(वा०) चतुष्पाज्जातिरिति वक्तव्यम्।

७२. मयूरव्यंसकादयश्च

१५. मयूरव्यंसक छात्रव्यंसक कम्बोजमुण्ड  
यवनमुण्ड छन्दसि। हस्तेगृह्य (हस्तगृह्य)  
पादेगृह्य (पादगृह्य) लाङ्गुलेगृह्य (लाङ्गूलगृह्य)  
पुनर्दाय। 'एहीडादयोऽन्यपदार्थे' १८। एहीडं  
वर्तते। एहियवं वर्तते। एहिवाणिजा क्रिया।

अपेहिवाणिजा प्रेहिवाणिजा एहिस्वागता  
अपेहिस्वागता एहिद्वितीया अपेहिद्वितीया  
प्रेहिद्वितीया एहिकटा अपेहिकटा प्रेहिकटा  
आहरकटा प्रेहिकर्दमा प्रोहिकर्दमा विधमचूडा  
उद्धमचूडा (उद्धरचूडा) आहरचेला आहर-  
वसना (आहरसेना) आहरवनिता (आहर-  
विनता) कृन्तविचक्षणा उद्धरोत्सृजा उद्धराव-  
सृजा उद्धम-विधमा उत्पचनिपचा उत्पतनिपता  
उच्चावचम् उच्चनीचम् आचोपचम् आचपरा-  
चम् नखप्रचम् निश्चप्रचम् अकिञ्चन  
स्नात्वाकालक पीत्वास्थिरक भुक्त्वासुहित  
प्रोष्यपापीयान् उत्पत्यपाकला निपत्यरोहिणी  
निषण्णश्यामा अपेहिप्रघसा एहिविघसा  
इहपञ्चमी इहद्वितीया। 'जहि कर्मणा  
बहुलमाभीक्ष्ये' १९। कर्तरि चाभिदधाति।  
जहिजोडः (जहिजोडम्) जहिस्तम्बम्  
(जहिस्तम्बः) (उज्जहिस्तम्बम्)। 'आख्यात-  
माख्यातेन क्रियासातत्ये' २०। अशनीतपिबता  
पचतभृज्जता खादतमोदता खादतवमता  
(खादताचमता) आहरनिवपा आहरनिष्करा  
(आवपनिष्करा) उत्पचविपचा भिन्धिलवणा  
कृन्धिविचक्षणा पचलवणा पचप्रकूटा-  
आकृतिगणोऽयम्। तेन अकुतोभयः कान्दि-  
शीकः (कान्देशीकः) आहोपुरुषा आहोपुरुषिका  
अहमहमिका यदृच्छा एहिरेयाहिरा  
उन्मृजावमृजा द्रव्यान्तरम् अवश्यकार्यम्॥  
इति मयूरव्यंसकादयः॥

(समर्थोऽन्यपदार्थे च सिद्धशुष्कसन्मह-  
द्द्वादशः॥)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे द्वितीयस्याध्यायस्य प्रथमः पादः।



विमर्श

१-इस सूत्र-से 'जातिः' की अनुवृत्ति २।१।६६। तक जाती है।

## द्वितीयः पादः

१. पूर्वापराधरोत्तरमेकदेशिनैकाधिकरणे<sup>१</sup>
२. अर्धं नपुंसकम्
३. द्वितीयतृतीयचतुर्थतुर्याण्यन्यतरस्याम्<sup>२</sup>
४. प्राप्तापन्ने च द्वितीयया
५. कालाः परिमाणिना
६. नञ्
७. ईषदकृता  
(वा०) ईषद्वृणवचनेनेति वक्तव्यम्।
८. षष्ठी<sup>३</sup>  
(वा०) कृद्योगा च षष्ठी समस्यत इति वक्तव्यम्
९. याजकादिभिश्च
१०. न<sup>४</sup> निर्धारणे  
(वा०) प्रतिपदविधाना च षष्ठी न समस्यत इति वक्तव्यम् ।
११. पूरणगुणसुहितार्थसदव्ययतत्त्वसमानाधिकरणे
१२. केन<sup>५</sup> च पूजायाम्
१३. अधिकरणवाचिना च
१४. कर्मणि च
१५. तृजकाभ्यां<sup>६</sup> कर्तरि
१६. कर्तरि च
१७. नित्यं<sup>७</sup> क्रीडाजीविकयोः
१८. कुगतिप्रादयः  
(वा०) कर्मप्रवचनीयानां प्रतिषेधः।
- (वा०) प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया।
- (वा०) अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया।
- (वा०) अवादयः कृष्टाद्यर्थे तृतीयया।
- (वा०) पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या।
- (वा०) निरादयः क्रान्ताद्यर्थे पञ्चम्या।
- (वा०) इवेन विभक्त्यलोपः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं च।
१९. उपपदम्<sup>८</sup> तिङ्
२०. अमैवाव्ययेन<sup>९</sup>

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'एकदेशिनैकाधिकरणे' की अनुवृत्ति २।२।३। तक जायेगी। २-यहां से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति २।२।४। तक जाती है। ३-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति २।२।१७। तक जाती है। ४-यहां से 'न' की अनुवृत्ति २।२।१६। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'केन' की अनुवृत्ति २।२।१३। तक जायेगी। ६-यहां से 'तृजकाभ्याम्' की अनुवृत्ति २।२।१७। तक जायेगी। ७-इस सूत्र से 'नित्यम्' की अनुवृत्ति २।२।१९। तक जाती है। ८-यहां से 'उपपदम्' की अनुवृत्ति २।२।२२। तक जायेगी। ९-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति २।२।२१। तक जाती है।



२१. तृतीयाप्रभृतीन्यन्यतरस्याम्<sup>१</sup>

२२. क्त्वा च

२३. शेषो बहुव्रीहिः<sup>२</sup>

२४. अनेक<sup>३</sup>मन्यपदार्थे

(वा०) प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो  
वा चोत्तरपदलोपः।

(वा०) नञोऽस्त्यर्थानां वाच्यो वा  
चोत्तरपदलोपः।

२५. संख्ययाव्ययासन्नादूराधिक-  
संख्याः संख्येये

२६. दिङ्नामान्यन्तराले

२७. तत्र तेनेदमिति सरूपे

२८. तेन सहेति तुल्ययोगे

(वा०) सर्वनाम्नो वृत्तिमात्रे पुंवद्भावो  
वक्तव्यः।

२९. चार्थे द्वन्द्वः

३०. उपसर्जनं पूर्वम्<sup>४</sup>

३१ राजदन्तादिषु परम्

१७. राजदन्तः अग्रेवणम् लिप्तवासितम्  
नग्नमुषितम् सिकत्संभृष्टम् मृष्टलुञ्चितम्  
अवक्लिन्नपक्वम् अर्पितोप्तम् उप्तगाढम्  
उलूखलमुसलम् तण्डुलकिण्वम् दृषदुपलम्  
आरङ्गवायनि (आरगवायनबन्धकी)  
चित्ररथबाह्वीकं अवन्त्यशमकं शूद्रार्यं

स्नातकराजानौ विष्वक्सेनार्जुनौ अक्षिभ्रुवम्  
दारगवम् शब्दार्थौ धर्मार्थौ कामार्थौ अर्थशब्दौ  
अर्थधर्मौ अर्थकामौ बैकारिमतं गाजवाजम्  
(गोजवाजं) गोपालधानिपूलासम् (गोपालधानी-  
पूलासम्) पूलासकारण्डं (पूलासककुरण्डम्)  
स्थूलासम् (स्थूलपूलासम्) उशीरबीजं  
(जिज्ञास्थि) सिञ्जास्थम् (सिञ्जाश्वत्थं) चित्र-  
स्वाती (चित्रास्वाती) भार्यापती दम्पती जम्पती  
जायापती पुत्रपती पुत्रपशू केशश्मश्रू शिरोबीजु  
(शिरोबीजम्) शिरोजानु सर्पिर्मधुनी मधुसर्पिषी  
(आद्यन्तौ) अन्तादी गुणवृद्धी वृद्धिगुणौ-  
इति राजदन्तादयः।।

३२. द्वन्द्वे<sup>५</sup> घि

३३. अजाद्यदन्तम्

३४. अल्पाच्तरम्

(वा०) अनेकप्राप्तावेकस्य  
नियमोऽनियमः शेषे।

(वा०) ऋतुनक्षत्राणामानुपूर्व्येण  
समानाक्षराणाम्।

(वा०) अभ्यर्हितं च।

(वा०) लघ्वक्षरम्।

(वा०) वर्णानामानुपूर्व्येण।

(वा०) भ्रातुश्च ज्यायसः।

(वा०) संख्याया अल्पीयस्याः।

(वा०) धर्मादिषूभयम्।

३५. सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ<sup>६</sup>

### विमर्श

१-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति २।२।२२। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'बहुव्रीहिः' का अधिकार २।२।२८। तक समझना चाहिए। ३-यहाँ से 'अनेकम्' की अनुवृत्ति २।२।२९। तक जायेगी। ४-इस सूत्र से 'उपसर्जनम्' की अनुवृत्ति २।२।३१। तक तथा 'पूर्वम्' की अनुवृत्ति २।३।३८। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'द्वन्द्वे' की अनुवृत्ति २।२।३४। तक जाती है। ६-यहाँ से 'बहुव्रीहौ' की अनुवृत्ति २।२।३७। तक जायेगी।

(वा०) सर्वनामसंख्ययोरुपसंख्यानम्।

(वा०) वा प्रियस्य।

(वा०) गड्वादिभ्यः परा सप्तमी।

३६. निष्ठा<sup>१</sup>

(वा०) जातिकालसुखादिभ्यः

परा निष्ठा।

(वा०) प्रहरणार्थेभ्यश्च परे निष्ठा-

सप्तम्यौ।

३७. वा<sup>२</sup>ऽऽहिताग्न्यादिषु

१८. आहिताग्नि जातपुत्र जातदन्त जातश्मश्रु  
तैलपीत घृतपीत (मद्यपीत) ऊढभार्य गतार्थ-  
आकृतिगणोऽयम्॥ तेन। गडुकण्ठ अस्युद्यत  
(अरभुद्यत) दण्डपाणि-भृतयोऽपि॥  
इत्याहिताग्न्यादयः॥

३८. कडाराः कर्मधारये

१९. कडार गडुल खज्ज खोड काण कुण्ठ  
खलति गौर वृद्ध भिक्षुक पिङ्ग पिङ्गुल (पिङ्गल)  
तड तनु (जठर) बधिर मठर कज्ज बर्वर -  
इति कडारादयः॥

(पूर्वापराधरोत्तरं तृतीयाप्रभृतीन्यष्टादश॥)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे द्वितीयस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः।



### विमर्श

१-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति २।२।३७। तक जायेगी। २-यहां से 'वा' की अनुवृत्ति २।२।३८। तक जाती है।



## तृतीयः पादः

१. अनभिहिते<sup>१</sup>  
(वा०) तिङ्कृतद्धितसमासैः परि-  
संख्यानम्।
२. कर्मणि द्वितीया<sup>२</sup>  
(वा०) उभसर्वतसोः कार्या धिगुपर्यादिषु  
त्रिषु। द्वितीयाप्रेडितान्तेषु  
ततोऽन्यत्रापि दृश्यते।।
- (वा०) अभितः परितः समया-  
निकषाहाप्रतियोगेऽपि।
३. तृतीया च होश्छन्दसि
४. अन्तरान्तरेण युक्ते
५. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे<sup>३</sup>
६. अपवर्गे तृतीया
७. सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये
८. कर्मप्रवचनीययुक्ते<sup>४</sup> द्वितीया
९. यस्मादधिकं यस्य चेश्वरवचनं तत्र  
सप्तमी
१०. पञ्चम्य<sup>५</sup> पाङ्परिभिः
११. प्रतिनिधिप्रतिदाने च यस्मात्
१२. गत्यर्थकर्मणि द्वितीयाचतुर्थ्यौ  
चेष्टायामनध्वनि
१३. चतुर्थी<sup>६</sup> संप्रदाने  
(वा०) तादर्थ्ये चतुर्थी वक्तव्या।
- (वा०) कल्पि संपद्यमाने च।
- (वा०) उत्पातेन ज्ञापिते च।
- (वा०) हितयोगे च
१४. क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि  
स्थानिनः<sup>७</sup>
१५. तुमर्थाच्च भाववचनात्
१६. नमः स्वस्तिस्वाहास्वधालं वषड्-  
योगाच्च
- (वा०) अलमिति पर्याप्त्यर्थग्रहणम्।
१७. मन्यकर्मण्यनादरे विभाषाऽप्राणिषु  
(वा०) अप्राणिष्वित्यपनीय नौकाकान्न-  
शुकसृगालवर्जेष्विति वाच्यम्।
२०. नौ काक अत्र शुक शृगाल-इति  
नावादयः।।
१८. कर्तृकरणयोस्तृतीया<sup>८</sup>  
(वा०) प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्।
२१. (वा० १४६८)। प्रकृति प्राय गोत्र  
सम विषम द्विद्रोण पञ्चक साहस्र - इति  
प्रकृत्यादयः।।
१९. सहयुक्तेऽप्रधाने
२०. येनाङ्गविकारः
२१. इत्थंभूतलक्षणो

### विमर्श

१-इस समस्त सूत्र का अधिकार पाद के अन्त २।३।७३। तक जाता है। २-इस सूत्र से 'द्वितीया' की अनुवृत्ति २।३।५। तक तथा 'कर्मणि' की अनुवृत्ति २।३।३। तक जायेगी। ३-यहां से 'कालाध्वनोः' की अनुवृत्ति २।३।७। तक तथा 'अत्यन्तसंयोगे' की अनुवृत्ति २।३।६। तक जायेगी। ४-इस सूत्र से 'कर्मप्रवचनीययुक्ते' की अनुवृत्ति २।३।११। तक जाती है। ५- यहाँ से 'पंचमी' की अनुवृत्ति २।३।११। तक जायेगी। ६-यहां से 'चतुर्थी' की अनुवृत्ति २।३।१७। तक जाती है। ७-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति २।३।१५। तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'तृतीया' की अनुवृत्ति २।३।२५। तक जाती है।

२२. संज्ञोऽन्यतरस्यां कर्मणि

२३. हेतौ<sup>१</sup>

(वा०) निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां  
प्रायदर्शनम्।

२४. अकर्तर्यृणे पञ्चमी<sup>२</sup>

२५. विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्

२६. षष्ठी हेतुप्रयोगे<sup>३</sup>

२७. सर्वनाम्नस्तृतीया च

२८. अपादाने पञ्चमी<sup>४</sup>

(वा०) ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च

(वा०) यतश्चाध्वकालनिमानं तत्र पञ्चमी  
तद्युक्तादध्वनः प्रथमासप्तम्यां  
कालात्सप्तमी च वक्तव्या।

२९. अन्यारादितरते दिक्छब्दा-  
ञ्चूतरपदाजाहियुक्ते

३०. षष्ठ्यतसर्थ<sup>५</sup>प्रत्ययेन

३१. एनपा द्वितीया<sup>६</sup>

३२. पृथग्विनानानाभिस्तृतीया<sup>७</sup>ऽन्य-  
तरस्याम्

३३. करणे च स्तोकाल्पकृच्छ्रकति-  
पयस्यासत्त्ववचनस्य

३४. दूरान्तिकार्थैः<sup>८</sup> षष्ठ्यन्यतर-  
स्याम्<sup>९</sup>

३५. दूरान्तिकार्थेभ्यो द्वितीया च

३६. सप्तम्य<sup>१०</sup>धिकरणे च

(वा०) क्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युप-  
संख्यानम्।

(वा०) साध्वसाधुप्रयोगे च।

(वा०) अर्हाणां कर्तृत्वेऽनर्हाणा-  
मकर्तृत्वे तद्वैपरीत्ये च।

(वा०) निमितात्कर्मसंयोगे।

३७. यस्य च भावेन भावलक्षणम्<sup>११</sup>

३८. षष्ठी<sup>१२</sup> चानादरे

३९. स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षि-  
प्रतिभूप्रसूतैश्च

४०. आयुक्तकुशलाभ्यां चासेवायाम्

४१. यतश्च निर्धारणम्<sup>१३</sup>

४२. पञ्चमी विभक्ते

४३. साधुनिपुणाभ्यामर्चायां सप्तम्य<sup>१४</sup>-  
प्रतेः

(वा०) अप्रत्यादिभिरिति वक्तव्यम्।

### विमर्श

१-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति २।३।२७। तक जाती है। २-यहां से 'पञ्चमी' की अनुवृत्ति २।३।२५। तक जायेगी। ३-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति २।३।२७। तक जायेगी। ४-यहां से 'पञ्चमी' की अनुवृत्ति २।३।३५। तक जाती है। ५-अतसुच् के अर्थ में विहित, 'दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच्' (५।३।२८।) के अधिकार में कहे हुए प्रत्यय अतसर्थ प्रत्यय कहलाते हैं। ६-इस सूत्र से 'द्वितीया' की अनुवृत्ति २।३।३२। तक जाती है। ७-यहां से 'तृतीया' की अनुवृत्ति २।३।३३। तक जायेगी। ८-यहां से 'षष्ठ्यन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति २।३।३५। तक जायेगी। ९-यहां से 'दूरान्तिकार्थेभ्यः' की अनुवृत्ति २।३।३६। तक जाती है। १०-इस सूत्र से 'सप्तमी' की अनुवृत्ति २।३।४१। तक जायेगी। ११-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति २।३।३८। तक जायेगी। १२-यहां से 'षष्ठी' की अनुवृत्ति २।३।४१। तक जायेगी। १३-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति २।३।४२। तक जाती है। १४-यहां से 'सप्तमी' की अनुवृत्ति २।३।४५। तक जायेगी।



२२. प्रति-परि-अनु-एते प्रत्यादयः।	६१. प्रेष्यब्रुवोर्हविषो देवतासंप्रदाने
४४. प्रसितोत्सुकाभ्यां तृतीया <sup>१</sup> च	(वा०) हविषोऽप्रस्थितस्य।
४५. नक्षत्रे च लुपि	६२. चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि <sup>२</sup>
४६. प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचन- मात्रे प्रथमा <sup>३</sup>	(वा०) षष्ठ्यर्थे चतुर्थी।
४७. संबोधने च <sup>३</sup>	६३. यजेश्च करणे
४८. सामन्त्रितम्	६४. कृत्वोऽर्थप्रयोगे कालेऽधिकरणे
४९. एकवचनं संबुद्धिः	६५. कर्तृकर्मणोः कृति
५०. षष्ठी शेषे <sup>४</sup>	(वा०) गुणकर्मणि वेध्यते।
५१. ज्ञोऽविदर्थस्य करणे	६६. उभयप्राप्तौ कर्मणि
५२. अधीगर्थदयेशां कर्मणि <sup>५</sup>	(वा०) स्त्रीप्रत्यययोरकाकारयोर्नायं नियमः।
५३. कृञः प्रतियत्ने	(वा०) शेषे विभाषा।
५४. रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः	६७. क्तस्य <sup>६</sup> च वर्तमाने
(वा०) अज्वरिसन्ताप्योरिति वक्तव्यम्।	६८. अधिकरणवाचिनश्च
५५. आशिषि नाथः	६९. न <sup>१०</sup> लोकाव्ययनिष्ठाखलर्थतृनाम्
५६. जासिनिप्रहणनाटक्राथपिषां हिंसायाम्	(वा०) उक्तप्रतिषेधे कमेर्भाषायाम- प्रतिषेधः
५७. व्यवहपणोः <sup>६</sup> समर्थयोः	(वा०) अव्ययप्रतिषेधे तोसुन्कसुनोर- प्रतिषेधः।
५८. दिवस्तदर्थस्य <sup>७</sup>	(वा०) द्विषः शतुर्वा।
५९. विभाषोपसर्गे	७०. अकेनोर्भविष्यदाधमर्णयोः
६०. द्वितीया ब्राह्मणे	

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'तृतीया' की अनुवृत्ति २।३।४५। तक जाती है। २-यहां से 'प्रथमा' की अनुवृत्ति २।३।४९। तक जायेगी। ३-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति २।३।४९। तक जायेगी। ४-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति पाद के अन्त २।३।७३। तक जायेगी। यहां ज्ञातव्य है कि जिन-जिन सूत्रों में 'शेषे' अधिकार लगेगा, वहां 'अनभिहिते' का अधिकार नहीं लगेगा। ५-यहां से 'कर्मणि' की अनुवृत्ति २।३।६१। तक जायेगी। ६-यहां से 'व्यवहपणोः' की अनुवृत्ति २।३।५८। तक जायेगी। ७-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति २।३।६०। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से 'बहुलं छन्दसि' की अनुवृत्ति २।३।६३। तक जायेगी। ९-यहां से 'क्तस्य' की अनुवृत्ति २।३।६८। तक जायेगी। १०-यहां से 'न' की अनुवृत्ति २।३।७०। तक जाती है।

७१. कृत्यानां कर्तरि वा

७२. तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां तृतीयान्य-  
तरस्याम्<sup>१</sup>

७३. चतुर्थी चाशिष्यायुष्यमद्रभद्र-  
कुशलसुखार्थहितैः

(अनभिहित इत्यंभूतयतश्च प्रेष्य-  
ब्रुवोस्त्रयोदश।)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे द्वितीयस्याध्यायस्य तृतीयः पादः।



**विमर्श**

११-यहां से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति २।३।७३। तक जायेगी।



## चतुर्थः पादः

१. द्विगुरेकवचनम्<sup>१</sup>  
 २. द्वन्द्वश्च<sup>२</sup> प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्  
 ३. अनुवादे चरणानाम्  
 (वा०) स्थेणोर्लुङीति वक्तव्यम्।

४. अध्वर्युक्रतुरनपुंसकम्  
 ५. अध्ययनतोऽविप्रकृष्टाख्यानाम्  
 ६. जातिरप्राणिनाम्  
 ७. विशिष्टलिङ्गो नदीदेशोऽग्रामाः

८. क्षुद्रजन्तवः

९. येषां च विरोधः शाश्वतिकः

१०. शूद्राणामनिरवसितानाम्

११. गवाश्चप्रभृतीनि च

२३. गवाश्च गवाविकम् गवैडकम् अजाविकम्  
 (अजैडकम्) कुब्जवामनम् कुब्जकिरातम्  
 पुत्रपौत्रम् श्वचण्डालम् स्त्रीकुमारम् दासी-  
 माणवकम् शाटीपटीरम् शाटीप्रच्छदम्  
 शाटीपट्टिकम् उष्ट्रखरम् उष्ट्रशशम् मूत्रशकृत्  
 मूत्रपुरीषम् यकृन्मेदः मांसशोणितम् दर्भशरम्  
 दर्भपूतीकम् अर्जुनशिरीषम् अर्जुनपुरुषम्  
 तृणोपलम् (तृणोलपम्) दासीदासम् कुटाकुटम्  
 भागवती-भागवतम्। इति गवाश्चप्रभृतीनि॥

१२. विभाषा<sup>३</sup> वृक्षमृगतृणधान्यव्यञ्जन-  
 पशुशकुन्यश्वबडवपूर्वापराधरोत्तराणाम्

(वा०) बहुप्रकृतिः फलसेनावनस्पति-  
 मृगशकुनिक्षुद्रजन्तुधान्यतृणानाम्।

१३. विप्रतिषिद्धं चानधिकरणवाचि

१४. न<sup>४</sup> दधिपयआदीनि

२४. दधिपयसी सर्पिर्मधुनी मधुसर्पिषी  
 ब्रह्माप्रजापती शिववैश्रवणौ स्कन्दविशाखौ  
 परिव्राजकौशिकौ (परिव्राट्कौशिकौ)  
 प्रवर्गयोपसदौ शुक्लकृष्णौ इध्माबर्हिषी  
 दीक्षातपसी (श्रद्धातपसी मेधातपसी)  
 अध्ययनतपसी उलूखलमुसले आद्यवसाने  
 श्रद्धामेधे ऋक्सामे वाङ्मनसे-इति दधि-  
 पयआदीनि॥

१५. अधिकरणैतावत्त्वे<sup>५</sup> च

१६. विभाषा समीपे

१७. स नपुंसकम्<sup>६</sup>

१८. अव्ययीभावश्च

१९. तत्पुरुषोऽनञ्कर्मधारयः<sup>७</sup>

२०. संज्ञायां कन्थोशीनरेषु

२१. उपज्ञोपक्रमं तदाद्याचिख्यासायाम्

२२. छाया बाहुल्ये

२३. सभा<sup>८</sup> राजाऽमनुष्यपूर्वा

२४. अशाला च

२५. विभाषा सेनासुराच्छायाशाला-  
 निशानाम्

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'एकवचनम्' की अनुवृत्ति २।४।१७। तक जायेगी। २-यहां से 'द्वन्द्वः' की अनुवृत्ति २।४।१६। तक जायेगी। ३-यहां से 'विभाषा' की अनुवृत्ति २।४।१३। तक जाती है। ४-यहां से 'न' की अनुवृत्ति २।४।१५। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'अधिकरणैतावत्त्वे' की अनुवृत्ति २।४।१६। तक जाती है। ६-यहां से 'नपुंसकम्' की अनुवृत्ति २।४।२५। तक जायेगी। ७-इस सूत्र का अधिकार २।४।२५। तक समझना चाहिए। ८-यहां से 'सभा' की अनुवृत्ति २।४।२४। तक जाती है।

२६. परवल्लिङ्गं द्वन्द्वतत्पुरुषयोः  
(वा०) द्विगुप्राप्तापन्नालंपूर्वगति-  
समासेषु प्रतिषेधो वक्तव्यः।

२७. पूर्व<sup>१</sup>वदश्वबडवौ

२८. हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च छन्दसि

२९. रात्राहाहाः पुंसि

(वा०) अनुवाकादयः पुंसि।

(वा०) संख्यापूर्वं रात्रं क्लीबम्।

३०. अपथं नपुंसकम्<sup>२</sup>

(वा०) पुण्यसुदिनाभ्यामहः क्लीबतेष्टा

(वा०) पथः संख्याव्ययादेः।

(वा०) अकारान्तोत्तरपदो द्विगुः

स्त्रियामिष्टः।

(वा०) आबन्तो वा।

(वा०) अनो नलोपश्च वा द्विगुः

स्त्रियाम्।

(वा०) पात्राद्यन्तस्य न।

(वा०) सामान्ये नपुंसकम्।

३१. अर्धर्चाः पुंसि च

२५. अर्धर्चं गोमय कषाय कार्षापण कुतप  
कुसप (कुणप) कपाट शङ्ख गूथ यूथ ध्वज  
कबन्ध पद्म गृह सरक कंस दिवस यूष  
अन्धकार दण्ड कमण्डलु मण्ड भूत द्वीप  
घूत चक्र धर्म कर्मन् मोदक शतमान यान  
नख नखर चरण पुच्छ दाडिम हिम रजत  
सक्तु पिधान सार पात्र घृत सैन्धव औषध  
आढक चषक द्रोण खलीन पात्रीव षष्टिक

वारबाण (वारवारण) प्रोथ कपित्थ [शुष्क]  
शाल शील शुक्ल (शुल्क) शीधु कवच  
रेणु (ऋण) कपट शीकर मुसल सुवर्ण वर्ण  
पूर्व चमस क्षीर कर्ष आकाश अष्टापद मङ्गल  
निधन निर्यास जृम्भ वृत्त पुस्त बुस्त  
क्ष्वेडित शृङ्ग निगड (खल) मूलक मधु मूल  
स्थूल शराव नाल वप्र विमान मुख प्रग्रीव  
शूल वज्र कटक कण्टक (कर्पट) शिखर  
कल्क (वल्कल) नटमक (नाटमस्तक) वलय  
कुसुम तृण पङ्क कुण्डल किरिट (कुमुद)  
अर्बुद अङ्गुश तिमिर आश्रय भूषण इक्कस  
(इष्वास) मुकुल वसन्त तटाक (तडाग) पिटक  
विटङ्क विडङ्ग पिण्याक माष कोश फलक  
दिन दैवत पिनाक समर स्थाणु अनीक उपवास  
शाक कर्पास (विशाल) चषाल (चखाल)  
खण्ड दर विटप (रण बल मक) मृणाल  
हस्त आर्द्र हल (सूत्र) ताण्डव गाण्डीव  
मण्डप पटह सौध योध पार्श्व शरीर फल  
(छल) पुर (पुरा) राष्ट्र अम्बर बिम्ब कुट्टिम  
मण्डल (कुक्कुट) कुडप ककुद खण्डल तोमर  
तोरण मञ्चक पञ्चक पुङ्ख मध्य (बाल) छाल  
वल्मीक वर्ष वस्त्र वसु देह उद्यान उद्योग  
स्नेह स्तेन (स्तन स्वर) संगम निष्क क्षेम  
शूक क्षत्र पवित्र (यौवन कलह) मालक  
(पालक) मूषिक (मण्डल वल्कल) कुज  
(कुञ्ज) विहार लोहित विषाण भवन अरण्य  
पुलिन दृढ आसन ऐरावत तीर्थ लोमन  
(लोमश) तमाल लोह दण्डक शपथ प्रतिसर  
दारु धनुस् मान वर्चस्क कूर्च तण्डक मठ  
सहस्र ओदन प्रवाल शकट अपराहण नीड  
शकल तण्डुल-इत्यर्धर्चादिः।।

३२. इदमोऽन्वादेशोऽशनुदात्त<sup>३</sup>स्तृतीयादौ

### विमर्श

१-यहां से 'पूर्ववत्' की अनुवृत्ति २।४।२८। तक जाती है। २-यहां से 'नपुंसकम्' की अनुवृत्ति २।४।३१। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से 'इदमोऽन्वादेशे' और 'अनुदात्तः' की अनुवृत्ति २।४।३४। तक तथा 'अश्' की अनुवृत्ति २।४।३३। तक जायेगी।



३३. एतदस्त्र<sup>१</sup>-तसोस्त्र-तसौ-चानु-  
दातौ  
३४. द्वितीयाटौस्वेनः  
(वा०) अन्वादेशे नपुंसके एनद्वक्तव्यः  
३५. आर्धधातुके<sup>२</sup>  
३६. अदो<sup>३</sup>जग्धिल्यपि किति  
३७. लुङ्सनोर्धस्त्व  
(वा०) घस्त्व भावेऽच्युपसंख्यानम्।  
३८. घञपो<sup>४</sup>श्च  
३९. बहुलं छन्दसि  
४०. लिट्यन्यतरस्याम्<sup>५</sup>  
४१. वेजो वयिः  
४२. हनो वध<sup>६</sup>लिङि  
४३. लुङि<sup>७</sup> च  
४४. आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्  
४५. इणो<sup>८</sup> गा लुङि  
(वा०) इण्वदिक इति वक्तव्यम्।

४६. णौ गमिरबोधने<sup>९</sup>  
४७. सनि<sup>१०</sup> च  
४८. इङ<sup>११</sup>श्च  
४९. गाङ्<sup>१२</sup> लिटि  
५०. विभाषा<sup>१३</sup> लुङ्लुङोः  
५१. णौ च संश्रुडोः  
५२. अस्तेर्भूः  
५३. ब्रुवो वचिः  
५४. चक्षिङः ख्याञ्<sup>१४</sup>  
(वा०) वर्जने प्रतिषेधः।  
(वा०) असनयोश्च।  
५५. वा<sup>१५</sup> लिटि  
५६. अजे<sup>१६</sup>र्व्यघञपोः  
(वा०) घञपोः प्रतिषेधे क्य  
उपसंख्यानम्  
(वा०) वलादावार्धधातुके वेष्यते।  
५७. वा यौ  
५८. ण्य-क्षत्रिया-ऽऽर्ष-जितो यूनि  
लुग<sup>१७</sup>णिजोः

### विमर्श

१-यहां से 'एतदः' की अनुवृत्ति २।४।३४। तक जाती है। २-इस सूत्र का अधिकार २।४।५७। तक जानना चाहिए। ३-यहां से 'अदः' की अनुवृत्ति २।४।४०। तक जायेगी। ४-यहां से 'घञपोः' की अनुवृत्ति २।४।३९। तक जाती है। ५-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति २।४।४१। तक जायेगी। ६-यहां से 'हनो वध' की अनुवृत्ति २।४।४४। तक जाती है। ७-यहां से 'लुङि' की अनुवृत्ति २।४।४४। तक जायेगी। ८-यहां से 'इणः' की अनुवृत्ति २।४।४७। तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'गमिः' की अनुवृत्ति २।४।४८। तक तथा 'अबोधने' की अनुवृत्ति २।४।४७। तक जायेगी। १०-यहां से सनि की अनुवृत्ति २।४।४८। तक जायेगी। ११-इस सूत्र से 'इङः' की अनुवृत्ति २।४।५१। तक जायेगी। १२-यहां से 'गाङ्' की अनुवृत्ति २।४।५१। तक जाती है। १३-यहां से 'विभाषा' की अनुवृत्ति २।४।५१। तक जायेगी। १४-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति २।४।५५। तक जाती है। १५-यहां से 'वा' की अनुवृत्ति २।४।५६। तक जाती है। १६-यहां से 'अजेः' की अनुवृत्ति २।४।५७। तक जायेगी। १७-इस सूत्र से 'यूनि' की अनुवृत्ति २।४।६१। तक तथा 'लुक्' की अनुवृत्ति २।४।८३। तक जाती है।

५९. पैलादिभ्यश्च

२६. पैल शालङ्कि सात्यकि सात्यंकामि राहवि रावणि औदञ्चि औदव्रजि औदमेधि औदव्यञ्जि (औदमज्जि) औदभृज्जि दैवस्थानि पैङ्गलौदायनि राहक्षति (राह क्षति) भौलिङ्गि राणि औदन्यि औद्राहमानि औज्जिहानि औदशुद्धि 'तद्राजाच्चाणः' (तद्राज) आकृतिगणोऽयम् इति पैलादिः॥

६०. इजः प्राचाम्

६१. न तौल्वलिभ्यः

२७. तौल्वलि धारणि पारणि रावणि दैलीपि दैवति वार्कलि नैवति (नैवकि) दैवमित्रि (दैवमति) दैवयज्ञि चाफट्टकि बैल्वकि वैकि (वैङ्कि) आनुहारति (आनुराहति) पौष्करसादि आनुरोहति आनुति प्रादोहनि नैमिश्रि प्राडाहति बान्धकि वैशीति आसिनासि आहिंसि आसुरि नैमिषि आसिबन्धकि पौष्पि कारेणुपालि बैकर्णि वैरकि वैहति-इति तौल्वल्यादिः॥

६२. तद्राजस्य बहुषु तेनैवास्त्रियाम्

६३. यस्कादिभ्यो गोत्रे

२८. यस्क लह्य द्रुह्य अयस्थूण (अयः स्थूण) तृणकर्ण सदामत्त कम्बलहार बहियोग कर्णाढक पर्णाढक पिण्डीजङ्घ बकसस्थ (बकसक्थ) विश्रि कुद्रि अजबस्ति मित्रयु रक्षोमुख जङ्घारथ उत्कास कटुक मथक (मन्थक) पुष्करट् (पुष्करसद्) विषपुट उपरिमेखल क्रोष्टुकमान (क्रोष्टुमान) क्रोष्टुपाद क्रोष्टुमाय शीर्षमाय खरप पदक वर्षुक भलन्दन भडिल भण्डिल भण्डित- एते यस्कादयः॥

६४. यजजोश्च

(वा०) यजादीनामेकस्य द्वयोर्वा तत्पुरुषे षष्ठ्या उपसंख्यानम्।

६५. अत्रिभृगुकुत्सवसिष्ठगोत-  
माङ्गिरोभ्यश्च

६६. बह्वच इजः प्राच्यभरतेषु

६७. न गोपवनादिभ्यः

२९. गोपवन शेयु (शिग्रु) बिन्दु भाजन अश्ववतान श्यामाक (श्योमाक) श्यामक श्यापर्ण-बिदाघन्तर्गणोऽयं गोपवनादिः॥

६८. तिककितवादिभ्यो द्वन्द्वे

३०. तिककितवाः वङ्गभण्डीरथाः उपकल-  
मकाः पफकनरकाः बकनखगुदपरिणद्धाः उब्जककुभाः लङ्कशान्तमुखाः उत्तरशलङ्कटाः कृष्णाजिनकृष्णसुन्दराः भ्रष्टककपिष्ठलाः अग्निवेशदशेरुकाः-एते तिककितवादयः॥

६९. उपकादिभ्योऽन्यतरस्यामद्वन्द्वे

३१. उपक लमक भ्रष्टक कपिष्ठल कृष्णाजिन कृष्णसुन्दर चूडारक आडारक गडुक उदङ्क सुधायुक अबन्धक पिङ्गलक पिष्टक सुपिष्ट (सुपिष्ठ) मयूरकर्ण खरीजङ्घ शलाथल पतञ्जल पदञ्जल कठेरणि कुषीतक कशकृत्स्न (काशकृत्स्न) निदाघ कलशीकण्ठ दामकण्ठ कृष्णपिङ्गल कर्णक पर्णक जटिरक बधिरक जन्तुक अनुलोम अनुपद प्रतिलोम अपजग्ध प्रतान अनभिहित कमक वराटक लेखाभ्र कमन्दक पिञ्जूलक वर्णक मसूरकर्ण मदाघ कबन्तक कमन्तक कदामत्त दामकण्ठ-एते उपकादयः॥

विमर्श

१-इस सूत्र से 'बहुषु तेनैव' की अनुवृत्ति २।४।७०। तक तथा 'अस्त्रियाम्' की अनवृत्ति २।४।६५। तक जायेगी। २-यहां से 'गोत्रे' की अनुवृत्ति २।४।७०। तक जाती है।



७०. आगस्त्यकौण्डिन्ययोरगस्ति-  
कुण्डिनच्  
७१. सुपो धातुप्रातिपदिकयोः  
७२. अदिप्रभृतिभ्यः शपः<sup>१</sup>  
७३. बहुलं<sup>२</sup> छन्दसि  
७४. यङोऽचि च  
७५. जुहोत्यादिभ्यः श्लुः<sup>३</sup>  
७६. बहुलं छन्दसि  
७७. गातिस्थाधुपाभूभ्यः सिचः  
परस्मैपदेषु<sup>४</sup>  
(वा०) गापोर्ग्रहणे इप्पिबत्योर्ग्रहणम्। तौत्वलिभ्य आमः पञ्च।)
७८. विभाषा<sup>५</sup> घ्राधेट्शाच्छासः  
७९. तनादिभ्यस्तथासोः  
८०. मन्त्रे घसह्वरणशवृदहाद्वृक्कृगमि-  
जनिभ्यो लेः<sup>६</sup>  
८१. आमः  
८२. अव्ययादाप्सुपः<sup>७</sup>  
८३. नाव्ययीभावादतोऽ<sup>८</sup>म्वपञ्चम्याः  
८४. तृतीयासप्तम्योर्बहुलम्  
८५. लुटः प्रथमस्य डारौरसः  
(द्विगुरुपज्ञोपक्रमं वेजो वयिर्न

इति पाणिनीयसूत्रपाठे द्वितीयस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायश्च।



### विमर्श

१-इस सूत्र से 'अदिप्रभृतिभ्यः' की अनुवृत्ति २।४।७३। तक तथा 'शपः' की अनुवृत्ति २।४।७६। तक जाती है। २-यहां से 'बहुलम्' की अनुवृत्ति २।४।७४। तक जाती है। ३-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति २।४।७६। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'सिचः' की अनुवृत्ति २।४।७९। तक तथा 'परस्मैपदेषु' की अनुवृत्ति २।४।७८। तक जायेगी। ५-यहां से 'विभाषा' की अनुवृत्ति २।४।७९। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'लेः' की अनुवृत्ति २।४।८१। तक जायेगी। ७-यहां से 'सुपः' की अनुवृत्ति २।४।८४। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से 'अव्ययीभावादतोऽम्' की अनुवृत्ति २।४।८४। तक जायेगी।

## अथ तृतीयोऽध्यायः

### प्रथमः पादः

१. प्रत्ययः<sup>१</sup> (वा०) आचारेऽवगल्भक्लीबहोदेभ्यः  
 २. परश्च<sup>२</sup> विकल्पा वक्तव्यः।  
 ३. आद्युदात्तश्च<sup>३</sup> १२. भृशादिभ्यो भुव्य<sup>४</sup>च्चे लोपश्च हलः  
 ४. अनुदात्तौ सुप्तिता ३२. भृश शीघ्र चपल मन्द पण्डित उत्सुक  
 ५. गुप्तिज्जिदभ्यः सन्<sup>५</sup> सुमनस् दुर्मनस् अभिमानस् उन्मनस् रहस्  
 ६. मान्बधदान्शान्भ्यो दीर्घश्चाभ्यासस्य रोहत् रेहत् संश्वत् तृपत् शश्वत् भ्रमत् वेहत्  
 ७. धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां शुचिस् शुचिवर्चस् अण्डरवर्चस् ओजस्  
 वा<sup>६</sup> सुरजस् अरजस्-एते भृशादयः॥  
 (वा०) आशङ्कायां सन्वक्तव्यः। १३. लोहितादिडाज्भ्यः क्यष्  
 ८. सुप आत्मनः क्यच्<sup>७</sup> ३३. लोहित चरित नील फेन मद्र हरित  
 (वा०) मान्तादव्ययाच्च क्यच् न। दास मन्द-लोहितादिराकृतिगणः॥  
 ९. काम्यच्च (वा०) लोहितडाज्भ्यः क्यष्वचनम्।  
 १०. उपमानादाचारे<sup>८</sup> (वा०) भृशादिष्वितराणि।  
 (वा०) अधिकरणाच्चेति वक्तव्यम्। १४. कष्टाय क्रमणे  
 ११. कर्तुः क्यङ्<sup>९</sup>सलोपश्च (वा०) सत्रकक्षकष्टकृच्छ्रगहनेभ्यः  
 कण्वचिकीर्षायामिति वक्तव्यम्।

### विमर्श

१-इस सूत्र का अधिकार यहां से प्रारम्भ होकर पञ्चमाध्याय की समाप्ति पर्यन्त अर्थात् ५।४।१६०। तक जाता है। २-इस सूत्र का भी अधिकार ५।४।१६०। तक जाता है। ३-इस सूत्र का भी अधिकार ५।४।१६०। तक जायेगा। ४-इस सूत्र से 'सन्' की अनुवृत्ति ३।१।७। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'वा' की अनुवृत्ति ३।१।२२। तक तथा 'कर्मणः' की अनुवृत्ति ३।१।१०। तक और 'इच्छायाम्' की अनुवृत्ति ३।१।९। तक जाती है। ६-यहाँ से 'सुपः' की अनुवृत्ति ३।१।११। तक तथा 'आत्मनः' की ३।१।९। तक और 'क्यच्' की अनुवृत्ति ३।१।१०। तक जायेगी। ७-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ३।१।११। तक जायेगी। ८-यहाँ से 'क्यङ्' की अनुवृत्ति ३।१।१८। तक जाती है। ९-यहाँ से 'अच्चेः' और 'भुवि' की अनुवृत्ति ३।१।१३। तक जायेगी।



१५. कर्मणो<sup>१</sup> रोमन्थतपोभ्यां वर्तिचरोः २२. धातोरेकाचो हलादेः क्रिया-  
 (वा०) हनुचलन इति वक्तव्यम्। समभिहारे यङ्<sup>३</sup>  
 (वा०) तपसः परस्मैपदं च। (वा०) सूचिसूत्रिमूत्र्यट्यत्यंशूणोतिभ्यो  
 १६. बाष्पोष्मभ्यामुद्रमने यङ्वाच्यः।  
 (वा०) फेनाच्चेति वक्तव्यम्। २३. नित्यं<sup>४</sup> कौटिल्ये गतौ  
 १७. शब्दवैरकलहाभ्रकण्वमेघेभ्यः २४. लुपसदचरजपजभदहदशगृभ्यो  
 करणे<sup>२</sup> भावगर्हायाम्  
 (वा०) सुदिनदुर्दिननीहारेभ्यश्च। २५. सत्यापपाशरूपवीणातूलश्लोक-  
 १८. सुखादिभ्यः कर्तृवेदनायाम् सेनालोमत्वचवर्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो  
 ३४. सुख दुःख तृप्त कृच्छ्र अस्र आस्र णिच्<sup>५</sup>  
 अलीक प्रतीप करुण कृपण सोढ इत्येतानि २६. हेतुमति च  
 सुखादीनि। (वा०) तत्करोति तदाचष्टे।  
 १९. नमोवरिवश्चित्रङः क्यच् (वा०) आख्यानात्कृतस्तदाचष्टे कृल्लु-  
 (वा०) नमसः पूजायाम्। कप्रकृतिप्रत्यापत्तिः प्रकृतिवच्च  
 (वा०) वरिवसः परिचर्यायाम्। कारकम्।  
 (वा०) चित्रङ आश्चर्ये। (वा०) प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे बहुलम्।  
 २०. पुच्छभाण्डचीवराणिङ् (वा०) धातुरूपं च।  
 (वा०) भाण्डात्समाचयने। (वा०) कर्तृकरणाद्धात्वर्थे।  
 (वा०) चीवरादार्जने परिधाने च। (वा०) ( बहुलमेतन्निदर्शनम् )  
 (वा०) पुच्छादुदसने व्यसने पर्यसने (वा०) णिङङ्गान्निरसने।  
 च। २७. कण्ड्वादिभ्यो यक्  
 २१. मुण्डमिश्रश्लक्ष्णलवणव्रतवस्त्र- ३५. कण्डूञ् मन्तु हणीङ् वल्गु असु (मनस्)  
 हलकलकृततूस्तेभ्यो णिच् महीङ् लाट् लेट् इरस् इरञ् (इरञ्) दुवस्  
 (वा०) हलिकल्योरत्वनिपातनं सन्व- उषस् वेट मेधा कुषुभ (नमस्) मगध तन्तस्  
 द्भावप्रतिषेधार्थम्।

### विमर्श

१-यहां से 'कर्मणः' की अनुवृत्ति ३।१।२१। तक जायेगी। २-इस सूत्र से 'करणे' की अनुवृत्ति ३।१।२१। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'धातोः' का अधिकार ३।१।९०। तक जाता है। इसी प्रकार इसी सूत्र से 'यङ्' की अनुवृत्ति ३।१।२४। तक जाती है। ४-यहां से 'नित्यम्' की अनुवृत्ति ३।१।२४। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'णिच्' की अनुवृत्ति ३।१।२६। तक जाती है।

पम्पस् (पपस्) सुख दुःख (भिक्ष चरण  
चरम अवर) सपर अरर (अरर्) भिषज्  
भिष्णुज् (अपर आर) इषुध वरण चुरण  
तुरण भुरण गद्गद एला केला खेला (वेला  
शेला) लिट् लोट् लेखा (लेख) रेखा द्रवस्  
तिरस् अगद उरस् तरण (तरिण) पयस्  
संभूयस सम्बर-आकृतिगणोऽयम्॥ इति  
कण्डवादिः॥

२८. गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः

२९. ऋतेरीयङ्

३०. कमेर्णिङ्

३१. आयादय आर्धधातुके वा

३२. सनाद्यन्ता धातवः

३३. स्यतासी लृलुटोः

३४. सिब्वहुलं लेटि

(वा०) सिब्वहुलं छन्दसि णिद्वक्तव्यः।

३५. कास्प्रत्ययादाममन्त्रे लिटि<sup>१</sup>

(वा०) कास्यनेकाजग्रहणं कर्तव्यम्।

३६. इजादेश्च गुरुमतोऽनुच्छः

३७. दयायासश्च

३८. उषविदजागृभ्योऽन्यतरस्याम्<sup>२</sup>

३९. भीहीभृहुवां श्लुवच्च

४०. कृञ्चानुप्रयुज्यते लिटि

४१. विदांकुर्वन्त्वित्यन्यतरस्याम्<sup>३</sup>

४२. अभ्युत्सादयां प्रजनयांचिकयां र-  
मयामकः पावयाक्रियाद्विदामक्र-  
त्रिति छन्दसि

४३. च्लि<sup>४</sup>लुडि

४४. च्लेः<sup>५</sup> सिच्

(वा०) स्पृशमृशकृषतृपटृपां च्लेः  
सिज्वा वक्तव्यः

४५. शल इगुपधादनिटः क्सः<sup>६</sup>

४६. श्लिष आलिङ्गने

४७. न दृशः

४८. णिश्रिद्रुसुभ्यः कर्तरि चङ्<sup>७</sup>

(वा०) कमेश्च्लेश्चङ्वक्तव्यः।

४९. विभाषा<sup>८</sup> धेट्श्च्योः

५०. गुपेश्छन्दसि<sup>९</sup>

५१. नोनयतिध्वनयत्येलयत्यर्दयतिभ्यः

५२. अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्<sup>१०</sup>

५३. लिपिसिचिह्नश्च<sup>११</sup>

५४. आत्मनेपदेष्वन्यतरस्याम्

५५. पुषादिद्युताद्यलदितः परस्मैपदेषु<sup>१२</sup>

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'आम्' की अनुवृत्ति ३।१।४०। तक तथा 'अमन्त्रे लिटि' की ३।१।३९। तक जायेगी। २-यहां से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ३।१।३९। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ३।१।४२। तक जायेगी। ४-इस सूत्र से 'लुडि' की अनुवृत्ति ३।१।६६। तक जाती है। ५-यहां से 'च्लेः' की भी अनुवृत्ति ३।१।६६। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'क्सः' की अनुवृत्ति ३।१।४७। तक जाती है। ७-यहां से 'चङ्' की अनुवृत्ति ३।१।५१। तक तथा 'कर्तरि' की अनुवृत्ति ३।१।६१। तक जाती है। ८-यहां से 'विभाषा' की अनुवृत्ति ३।१।५०। तक जायेगी। ९-यहां से 'छन्दसि' की अनुवृत्ति ३।१।५१। तक जायेगी। १०-यहां से 'अङ्' की अनुवृत्ति ३।१।५९। तक जाती है। ११-इस सूत्र से 'लिपिसिचिह्नः' की अनुवृत्ति ३।१।५४। तक जायेगी। १२-इस सूत्र से 'परस्मैपदेषु' की अनुवृत्ति ३।१।५४। तक जाती है। यहां दिवादिगणीय 'पुष पुष्टौ' धातु से लेकर 'गृधु अभिकांक्षायाम्' तक पुषादि गण तथा भ्वादि के 'द्युत दीप्तौ' से लेकर 'कृपू सामर्थ्ये' तक द्युतादि धातुएँ परिगणित की गई हैं।



५६. सतिशास्त्यतिभ्यश्च	७२. संयसश्च
५७. इरितो वा <sup>१</sup>	७३. स्वादिभ्यः श्नुः <sup>११</sup>
५८. जृस्तम्भुमुचुम्लुचुमुचुग्लुचुग्लु- ञ्चुश्चिभ्यश्च	७४. श्रुवः शृ च
५९. कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि	७५. अक्षोऽन्यतरस्याम् <sup>१२</sup>
६०. चिण्ते <sup>१३</sup> पदः	७६. तनूकरणे तक्षः
६१. दीपजनबुधपूरितायिप्यायिभ्योऽन्य- तरस्याम् <sup>३</sup>	७७. तुदादिभ्यः शः
६२. अचः कर्मकर्तरि <sup>४</sup>	७८. रुधादिभ्यः शनम्
६३. दुहश्च	७९. तनादिकृञ्य उः <sup>१३</sup>
६४. न <sup>५</sup> रुधः	८०. धिन्विकृण्व्योर च
६५. तपोऽनुतापे च	८१. क्र्यादिभ्यः श्ना <sup>१४</sup>
६६. चिण्भावकर्मणोः <sup>६</sup>	८२. स्तन्भुस्तुन्भुस्कन्भुस्कुन्भुस्कुञ्यः श्नुश्च
६७. सार्वधातुके <sup>७</sup> यक्	८३. हलः शनः <sup>१५</sup> शानज्झौ
६८. कर्तरि <sup>८</sup> शप्	८४. छन्दसि <sup>१६</sup> शायजपि
६९. दिवादिभ्यः श्यन् <sup>९</sup>	८५. व्यत्ययो बहुलम्
७०. वा <sup>१०</sup> भ्राशभ्लाशभ्रमुक्रमुक्ल- मुत्रसित्रुटिलषः	८६. लिङ्याशिष्यङ्
७१. यसोऽनुपसर्गात्	(वा०) दृशेरग्वक्तव्यः।
	८७. कर्मवत्कर्मणा <sup>१७</sup> तुल्यक्रियः (वा०) सकर्मकाणां प्रतिषेधो वक्तव्यः।

### विमर्श

१-यहाँ से 'वा' की अनुवृत्ति ३।१।५८। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'चिण्' की अनुवृत्ति ३।१।६५। तक तथा 'ते' की ३।१।६६। तक जाती है। ३-यहाँ से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ३।१।६३। तक जायेगी। ४-यहाँ से 'कर्मकर्तरि' की अनुवृत्ति ३।१।६५। तक जायेगी। ५- यहाँ से 'न' की अनुवृत्ति ३।१।६५। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'भावकर्मणोः' की अनुवृत्ति ३।१।६७। तक जायेगी। ७-इस सूत्र से 'सार्वधातुके' की अनुवृत्ति ३।१।८२। तक जाती है। ८-यहाँ से 'कर्तरि' की अनुवृत्ति ३।१।८८। तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'श्यन्' की अनुवृत्ति ३।१।७२। तक जायेगी। १०-इस सूत्र से 'वा' की अनुवृत्ति ३।१।७२। तक जाती है। ११-यहाँ से 'श्नुः' की अनुवृत्ति ३।१।७६। तक जायेगी। १२-यहाँ से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ३।१।७६। तक जाती है। १३-यहाँ से 'उः' की अनुवृत्ति ३।१।८०। तक जायेगी। १४-यहाँ से 'श्ना' की अनुवृत्ति ३।१।८२। तक जाती है। १५-इस सूत्र से 'शनः' की अनुवृत्ति ३।१।८४। तक जाती है। १६-यहाँ से 'छन्दसि' की अनुवृत्ति ३।१।८६। तक जाती है। १७-यहाँ से 'कर्मवत्' की अनुवृत्ति ३।१।९०। तक जाती है।

(वा०) दुहिपच्योर्बहुलं सकर्मकयोः।	९८. पोरदुपधात्
(वा०) सृजियुज्योः श्यंस्तु।	९९. शकिसहोश्च
(वा०) सृजेः श्रद्धोपपन्ने कर्तर्येवेति वाच्यम्।	१००. गदमदचरयमश्चानुपसर्गे (वा०) चरेराडि चागुरौ।
(वा०) भूषाकर्मकिरादिसनां चान्य- त्रात्मनेपदात्।	१०१. अवद्यपण्यवर्या गर्हपणित- व्यानिरोधेषु
८८. तपस्तपःकर्मकस्यैव	१०२. वह्नां करणम्
८९. न दुहस्नुनमां यक्चिणौ	१०३. अर्यः स्वामिवैश्ययोः
(वा०) यक्चिणोः प्रतिषेधे हेतुमणिणच् श्रिब्रूजामुपसंख्यानम्	१०४. उपसर्या काल्या प्रजने १०५. अजर्यं संज्ञतम्
(वा०) यक्चिणोः प्रतिषेधे णिश्र- न्धिग्रन्थिब्रूजात्मनेपदाकर्मकाणामुपसंख्यानम्	१०६. वदः सुपि क्यप्च <sup>६</sup> १०७. भुवो भावे <sup>७</sup>
९०. कुषिरञ्जोः प्राचांश्यन्परस्मैपदं च	१०८. हनस्त च
९१. धातोः <sup>१</sup>	१०९. एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्
९२. तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्	(वा०) आङ्पूर्वादञ्जेः संज्ञायामुप- संख्यानम्
९३. कृदतिङ् <sup>३</sup>	(वा०) शसिदुहिगुहिभ्यो वा।
९४. वाऽसरूपोऽस्त्रियाम्	११०. ऋदुपधाच्च क्लृपिचृतेः
९५. कृत्याः <sup>४</sup> (प्राङ्ण्वुलः)	१११. ई च खनः
९६. तव्यत्तव्यानीयरः	११२. भृजोऽसंज्ञायाम्
(वा०) केलिमर उपसंख्यानम् ।	(वा०) समश्च बहुलम्।
(वा०) वसेस्तव्यत्कर्तरि णिच्च	११३. मृजेर्विभाषा
९७. अचो यत् <sup>५</sup>	११४. राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्यकुप्यकृष्ट- पच्याव्यथ्याः
(वा०) तकिशसिचितयतिजनिभ्योय- द्वाच्यः।	(वा०) हनो वा यद्वधश्च वक्तव्यः।
(वा०) हनो वा यद्वधश्च वक्तव्यः।	११५. भिद्योद्भ्यौ नदे

### विमर्श

१-इस सूत्र का अधिकार तृतीय अध्याय की समाप्ति पर्यन्त अर्थात् ३।४।११७। तक जाता है। २-यहाँ से 'तत्र' की अनुवृत्ति ३।१।९४। तक जाती है। ३-इससूत्र का अधिकार ३।४।७७। के पूर्व तक जानना चाहिए। ४-इस सूत्र का अधिकार ३।१।१३३। तक जाता है। ५-यहाँ से 'यत्' की अनुवृत्ति ३।१।१०६। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'सुपि' की अनुवृत्ति ३।१।१०८। तक तथा 'क्यप्' की अनुवृत्ति ३।१।१२१। तक जायेगी। ७-इस सूत्र से 'भावे' की अनुवृत्ति ३।१।१०८। तक जायेगी।



११६. पुष्यसिध्यौ नक्षत्रे  
 ११७. विपूयविनीयजित्या मुञ्ज-  
 कल्कहलिषु  
 ११८. प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः<sup>१</sup>  
 (वा०) छन्दसीति वक्तव्यम्।  
 ११९. पदास्वैरिबाह्यापक्ष्येषु च  
 १२०. विभाषाकृवृषोः  
 १२१. युग्यं च पत्रे  
 १२२. अमावस्यदन्यतरस्याम्  
 १२३. छन्दसि निष्टक्यदेवहूयप्रणी-  
 योत्रीयोच्छिष्यमर्यस्तर्थाध्वर्यखन्यखा-  
 न्यदेवयज्यापृच्छ्यप्रतिषीव्यब्रह्मवा-  
 द्यभाव्यस्ताव्योपचाय्यपृडानि  
 (वा०) हिरण्य इति वक्तव्यम्।  
 १२४. ऋहलोर्ण्यत्<sup>२</sup>  
 (वा०) पाणौ सृजेर्ण्यत्।  
 (वा०) समवपूर्वाच्च।  
 (वा०) लपिदभिभ्यां चेति वक्तव्यम्।  
 १२५. ओरावश्यके  
 १२६. आसुयुवपिरपित्रपिचमश्च  
 १२७. आनाय्योऽनित्ये  
 १२८. प्रणाय्योऽसंमतौ  
 १२९. पाय्यसान्नाय्यनिकाय्यधाय्या  
 मानहविर्निवाससामिधेनीषु  
 १३०. क्रतौ कुण्डपाय्यसंचाय्यौ

१३१. अग्नौ<sup>३</sup> परिचाय्योपचाय्यसमूह्याः  
 १३२. चित्याग्निचित्ये च  
 १३३. ण्वुल्लृचौ  
 १३४. नन्दिग्रहिपचादिभ्यो ल्युणिन्यचः  
 ३६. 'नन्दिवाशिमादिदूषिसाधिवर्धिशो-  
 भिरोचिभ्यो ण्यन्तेभ्यः संज्ञायाम्' २२। नन्दनः  
 वाशनः मदनः दूषणः साधनः वर्धनः शोभनः  
 रोचनः। 'सहितपिदमः संज्ञायाम्' २३। सहनः  
 तपनः दमनः जल्पनः रमणः दर्पणः संक्रन्दनः  
 संकर्षणः संहर्षणः जनार्दनः यवनः मधुसूदनः  
 विभीषणः लवणः चित्तविनाशनः कुलदमनः  
 (शत्रुदमनः) इति नन्द्यादिः।  
 ३७. ग्राही उत्साही उद्दासी उद्धासी स्थायी  
 मन्त्री संमर्दी । 'रक्षश्रुवपशां नौ २४। निरक्षी  
 निश्रावी निवापी निशायी। 'याचृव्याह-  
 संव्याहब्रजवदवसां प्रतिषिद्धानाम्' २५।  
 अयाची अव्याहारी असंव्याहारी अब्राजी  
 अवादी अवासी। 'अचामचित्तकर्तृका-  
 णाम्' २६। अकारी अहारी अविनायी (विशायी  
 विषायी) 'विशयी विषयी देशे' २७। विशयी  
 विषयी देशः। 'अभिभावी भूते' २८। अपराधी  
 उपरोधी परिभवी परिभावी ।। इति ग्रहादिः।।  
 ३८. पच वच वप वद चल पत नट् भषट्  
 प्लवट् चरट् गरट् तरट् चोरट् गाहट् सूरट्  
 देवट् (दोषट्) जर (रज) मर (मद) क्षम  
 (क्षय) सेव मेष कोप (कोष) मेध नर्त व्रण  
 दर्श सर्प (दम्भ दर्प) जारभर श्वपच।। इति  
 पचादिराकृतिगणः।।  
 १३५. इगुपधज्ञाप्रोकिरः कः<sup>४</sup>

### विमर्श

१-यहाँ से 'ग्रहेः' की अनुवृत्ति ३।१।११९। तक जाती है। २-यहाँ से 'ण्यत्' की अनुवृत्ति ३।१।१३१। तक जायेगी। इस सूत्र में 'ऋहलोः' में पञ्चम्यर्थ में षष्ठी है। ३-इस सूत्र से 'अग्नौ' की अनुवृत्ति ३।१।१३२। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'कः' की अनुवृत्ति ३।१।१३६। तक जायेगी।

१३६. आतश्चोपसर्गे<sup>१</sup> १४३. विभाषा ग्रहः<sup>६</sup>  
 १३७. पात्राध्माधेट्दृशः शः<sup>२</sup> १४४. गेहे कः  
 (वा०) घ्रः संज्ञायां न। १४५. शिल्पिनि<sup>७</sup> ष्वुन्  
 १३८. अनुपस<sup>३</sup>र्गाल्लिम्पविन्दधा- (वा०) नृतिखनिरञ्जिभ्य इति वक्तव्यम्  
 रिपारिवेद्युदेजिचेतिसातिसाहिभ्यश्च १४६. ग<sup>४</sup>स्थकन्  
 (वा०) नौ लिम्पेः। १४७. ण्युट्<sup>९</sup>च  
 (वा०) गवादिषु विन्देः संज्ञायामुप- १४८. हश्च ब्रीहिकालयोः  
 संख्यानम्। १४९. प्रुसृत्वः समभिहारे वुन्<sup>१०</sup>  
 १३९. ददातिदधात्योर्विभाषा<sup>४</sup> (वा०) साधुकारिण्युपसंख्यानम् ।  
 १४०. ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः<sup>५</sup> १५०. आशिषि च  
 (वा०) तनोतेर्ण उपसंख्यानम्। (प्रत्ययो मुण्डविदां दीपजन-  
 १४१. श्याद्-व्यधास्तु संस्रवतीणवसा क्रय्यादिभ्योऽवद्ययुग्यं च श्याद्वयधा  
 वह-लिह-शिलष-श्वसश्च दश।।)  
 १४२. दुन्योरनुपसर्गे

इति पाणिनीयसूत्रपाठे तृतीयस्याध्यायस्य प्रथमः पादः।



### विमर्श

१-इस सूत्र से 'उपसर्गे' की अनुवृत्ति ३।१।१३७। तक जाती है। २-यहाँ से 'शः' की अनुवृत्ति ३।१।१३९। तक जायेगी। ३-यहाँ से 'अनुपसर्गात्' की अनुवृत्ति ३।१।१४०। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'विभाषा' की अनुवृत्ति भी ३।१।१४०। तक जायेगी। ५-इस सूत्र में 'ज्वल् इति' में इति शब्द आदि अर्थ का वाचक है। यहाँ से 'णः' की अनुवृत्ति ३।१।१४३। तक जाती है। ६-यहाँ से 'ग्रहः' की अनुवृत्ति ३।१।१४४। तक जायेगी। ७-यहाँ से 'शिल्पिनि' की अनुवृत्ति ३।१।१४७। तक जाती है। ८-यहाँ से 'गः' की अनुवृत्ति ३।१।१४७। तक जाती है। ९-यहाँ से 'ण्युट्' की अनुवृत्ति ३।१।१४८। तक जायेगी। १०-यहाँ से 'वुन्' की अनुवृत्ति ३।१।१५०। तक जायेगी।



## द्वितीयः पादः

१. कर्मण्यण्<sup>१</sup>  
(वा०) शीलिकामिभक्ष्याचरिभ्यो णः।  
(वा०) ईक्षिभ्यिभ्यां चेति वक्तव्यम्।
२. ह्रावामश्च
३. आतोऽनुपसर्गे कः<sup>२</sup>  
(वा०) कविधौ सर्वत्र प्रसारणिभ्यो डः।
४. सुपि<sup>३</sup> स्थः
५. तुन्दशोकयोःपरिमृजापनुदोः  
(वा०) आलस्यसुखाहरणयोरिति वक्तव्यम्।  
(वा०) कप्रकरणे मूलविभुजादिभ्य उपसंख्यानम्।
३९. (वा १९९२)। मूलविभुज नखमुच काकगुह कुमुद महीघ्न कुघ्न गिघ्न-आकृतिगणोऽयम्।। इति मूलविभुजादयः।।
६. प्रे दाज्ञः
७. समि ख्यः
८. गापोष्टक्  
(वा०) पिबतेः सुराशीध्वोरिति वक्तव्यम्।  
(वा०) बहुलं तणि।
९. हरतेरनुद्यमनेऽच्<sup>४</sup>  
(वा०) शक्तिलाङ्गलाङ्कुशयष्टितोमर-घटघटीधनुषु ग्रहेरुपसंख्यानम्।  
(वा०) सूत्रे च धार्येऽर्थे।
१०. वयसि च
११. आङि ताच्छील्ये
१२. अर्हः
१३. स्तम्बकर्णयो रमिजपोः  
(वा०) हस्ति सूचकयोरिति वक्तव्यम्।
१४. शमि धातोः संज्ञायाम्  
(वा०) शमि संज्ञायां धातुग्रहणं कृजो हेत्वादिषु टप्रतिषेधार्थम्।
१५. अधिकरणे<sup>५</sup> शेतेः  
(वा०) पार्श्वादिषूपसंख्यानम्।
४०. (वा १९९९)। पार्श्व उदर पृष्ठ उत्तान अपमूर्धन् -इति पार्श्वादिः।।  
(वा०) दिग्धसहपूर्वाच्चेति वक्तव्यम्  
(वा०) उत्तानादिषु कर्तृषु।  
(वा०) गिरौ डश्छन्दसि।
१६. चरेष्टः<sup>६</sup>
१७. भिक्षासेनादायेषु च

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'कर्मणि' की अनुवृत्ति ३।२।५८। तक तथा 'अण्' की अनुवृत्ति ३।२।२। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'कः' की अनुवृत्ति ३।२।७। तक जायेगी। ३-यहाँ से 'सुपि' की अनुवृत्ति ३।२।८३। तक जाती है। ४-यहाँ से 'हरतेः' की अनुवृत्ति ३।२।११। तक तथा 'अच्' की अनुवृत्ति ३।२।१५। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'अधिकरणे' की अनुवृत्ति ३।२।१६। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'टः' की अनुवृत्ति ३।२।२३। तक तथा 'चरेः' की अनुवृत्ति ३।२।१७। तक जाती है।

१८. पुरोऽग्रतोऽग्रेषु सतैः<sup>१</sup> ३२. वहाग्रे लिहः  
 १९. पूर्वे कर्तरि ३३. परिमाणे पचः<sup>२</sup>  
 २०. कृजो<sup>३</sup> हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु ३४. मितनखे च  
 २१. दिवाविभानिशाप्रभाभास्करान्ता- ३५. विध्वरुषोस्तुदः  
 नन्तादिबहुनान्दीकिलिपिलिबिलिभक्तिकर्तृ- ३६. असूर्यललाटयोर्दृशितपोः  
 चित्रक्षेत्रसंख्याजङ्घाबाह्वर्यत्तद्धनुरुरुषु ३७. उग्रम्पश्येरम्मदपाणिन्धमाश्च  
 (वा०) किंयत्तद्बहुषु कृजोऽज्विधानम्। ३८. प्रियवशे वदः खच्<sup>४</sup>  
 २२. कर्मणि भृतौ (वा०) गमेः सुपि वाच्यः।  
 २३. न शब्द-श्लोक-कलह-गाथा- ३९. विहायसो विह इति वाच्यम्।  
 वैर-चाटु-सूत्र-मन्त्र-पदेषु (वा०) खच्च डिद्धा वाच्यः।  
 २४. स्तम्बशकृतोरिन्<sup>५</sup> (वा०) डे च विहायसो विहादेशो  
 (वा०) ब्रीहिवत्सयोरिति वक्तव्यम्। वक्तव्यः।  
 २५. हरतेर्दृतिनाथयोः पशौ ४०. द्विषत्परयोस्तापेः  
 २६. फलेग्रहिरात्मभरिश्च ४१. वाचि यमो व्रते  
 २७. छन्दसि वनसनरक्षिमथाम् ४२. पूः सर्वयोर्दारिसहोः  
 २८. एजेः खश्<sup>६</sup> (वा०) भगे च दारेरिति काशिका।  
 (वा०) वातशुनीतिलशर्धेष्वजधेटुद- ४३. सर्वकूलाभ्रकरीषेषु कषः  
 जहातिभ्य उपसंख्यानम्। ४४. मेघर्तिभयेषु कृजः<sup>७</sup>  
 २९. नासिकास्तनयोर्ध्माधेटोः<sup>८</sup> ४५. क्षेमप्रियमद्रेऽण्च  
 (वा०) स्तने धेटः। ४६. आशिते भुवः करणभावयोः  
 (वा०) नासिकायां धमश्च। ४७. संज्ञायां<sup>९</sup> भृ-तृ-वृ-जि-धारि-  
 (वा०) घटिखारीखरीषूपसंख्यानम्। सहितपि-दमः  
 ३०. नाडीमुष्टयोश्च  
 ३१. उदि कूले रुजिवहोः

### विमर्श

१-यहाँ से 'सतैः' की अनुवृत्ति ३।२।१९। तक जाती है। २-यहाँ से 'कृजः' की अनुवृत्ति ३।२।२४। तक जायेगी। ३-इस सूत्रसे 'इन्' की अनुवृत्ति ३।२।२७। तक जायेगी। ४-यहाँ से 'खश्' की अनुवृत्ति ३।२।३७। तक जाती है। ५-यहाँ से 'ध्माधेटोः' की अनुवृत्ति ३।२।३०। तक जायेगी। ६-यहाँ से 'पचः' की अनुवृत्ति ३।२।३४। तक जाती है। ७-यहाँ से 'खच्' की अनुवृत्ति ३।२।४७। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से 'कृजः' की अनुवृत्ति ३।२।४४। तक जायेगी। ९-यहाँ से 'संज्ञायाम्' की अनुवृत्ति ३।२।४७। तक जाती है।



४७. गमश्च<sup>१</sup>४८. अन्तात्यन्ताध्वदूरपारसर्वानन्तेषु  
डः<sup>२</sup>(वा०) डप्रकरणे सर्वत्रपन्नयोरुप-  
संख्यानम्।

(वा०) उरसो लोपश्च।

(वा०) सुदुरोरधिकरणे।

(वा०) निसो देशे।

(वा०) अन्यत्रापि दृश्यत इति वक्तव्यम्

४९. आशिषि हनः<sup>३</sup>(वा०) दारावाहनोऽणन्तस्य च टः  
संज्ञायाम्।

(वा०) चारौ वा।

(वा०) कर्मणि समि च।

५०. अपे क्लेशतमसोः

५१. कुमारशीर्षयोर्णिनिः

५२. लक्षणे जायापत्योष्ठक्<sup>४</sup>

५३. अमनुष्यकर्तृके च

५४. शक्तौ हस्तिकवाटयोः

५५. पाणिघताडधौ शिल्पिनि

(वा०) राजघ उपसंख्यानम्।

५६. आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्ध-

प्रियेषु च्यर्थेष्वच्चौ<sup>५</sup> कृजः करणे ख्युन्

५७. कर्तरि भुवः खिष्णुचखुकजौ

५८. स्पृशोऽनुदके विवन्<sup>६</sup>५९. ऋत्विग्दधृक्स्त्रिगिदगुष्णिगञ्चयुजि-  
कृञ्चां च

६०. त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ्च

(वा०) समानान्ययोश्चेति वक्तव्यम्

(वा०) दृशोः क्सश्चेति वक्तव्यम्।

६१. सत्सूद्विषद्रुहदुहयुजविदभिदच्छि-  
दजिनीराजामुपसर्गेऽपि<sup>७</sup> क्विप्६२. भजो णिवः<sup>८</sup>६३. छन्दसि<sup>९</sup> सहः६४. वहश्च<sup>१०</sup>६५. कव्यपुरीषपुरीष्येषु ज्युट्<sup>११</sup>

६६. हव्येऽनन्तः पादम्

६७. जनसनखनक्रमगमो विट्<sup>१२</sup>६८. अदोऽ<sup>१३</sup> नन्ने

६९. क्रव्ये च

७०. दुहः कब्धश्च

७१. मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो

णिवन्<sup>१४</sup>

### विमर्श

१-यहाँ से 'गमः' की अनुवृत्ति ३।२।४८। तक जायेगी। २-यहाँ से 'डः' की अनुवृत्ति ३।२।५०। तक जाती है। ३-यहाँ से 'हनः' की अनुवृत्ति ३।२।५५। तक जाती है। ४-यहाँ से 'टक्' प्रत्यय की अनुवृत्ति ३।२।५४। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'आढ्यसुभगस्थूलपलितनग्नान्धप्रियेषु च्यर्थेष्वच्चौ' की अनुवृत्ति ३।२।५७। तक जाती है। ६-यहाँ से 'विवन्' की अनुवृत्ति ३।२।६०। तक जायेगी। ७-यहाँ से 'उपसर्गेऽपि' की अनुवृत्ति ३।२।७७। तक जायेगी। ८-यहाँ से 'णिव' की अनुवृत्ति ३।२।६४। तक जायेगी। ९-'छन्दसि' की अनुवृत्ति ३।२।६७। तक जाती है। १०-यहाँ से 'वहः' की अनुवृत्ति ३।२।६६। तक जायेगी। ११-यहाँ से 'ज्युट्' की अनुवृत्ति ३।२।६६। तक जायेगी। १२-यहाँ से 'विट्' की अनुवृत्ति ३।२।६९। तक जाती है। १३-'अदः' की भी अनुवृत्ति ३।२।६९। तक जायेगी। १४-यहाँ से 'मन्त्रे णिवन्' की अनुवृत्ति ३।२।७२। तक जाती है।

(वा०) श्वेतवहादीनां डस् पदस्येति वक्तव्यम्।	८४. भूते <sup>७</sup>
(वा०) अवया श्वेतवाः पुरोडाश्च।	८५. करणे यजः
७२. अवे यजः <sup>१</sup>	८६. कर्मणि हनः <sup>८</sup>
७३. विजुपे छन्दसि <sup>२</sup>	८७. ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप् <sup>९</sup>
७४. आतो मनिन्वनिब्वनिपश्च <sup>३</sup>	८८. बहुलं छन्दसि
७५. अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते	८९. सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृजः
७६. क्विप्च <sup>४</sup>	९०. सोमे सुजः
७७. स्थः क च	९१. अग्नौ चेः <sup>१०</sup>
७८. सुप्यजातौ णिनि <sup>५</sup> स्ताच्छील्ये	९२. कर्मण्यग्न्याख्यायाम्
(वा०) णिङ्विधौ साधुकारिण्युप- संख्यानम्।	९३. कर्मणीनिविक्रियः
(वा०) ब्रह्मणि वदः।	(वा०) कुत्सितग्रहणं कर्तव्यम्।
७९. कर्तर्युपमाने	९४. दृशेः क्वनिप् <sup>११</sup>
८०. व्रते	९५. राजनि युधिकृजः <sup>१२</sup>
८१. बहुलमाभीक्ष्ये	९६. सहे च
८२. मनः <sup>६</sup>	९७. सप्तम्यां जनेर्डः <sup>१३</sup>
८३. आत्ममाने खश्च	९८. पञ्चम्यामजातौ
	९९. उपसर्गे <sup>१४</sup> च संज्ञायाम्
	१००. अनौ कर्मणि

### विमर्श

१-‘यजः’ की अनुवृत्ति ३।२।७३। तक जाती है। २-यहाँ से ‘छन्दसि’ की अनुवृत्ति ३।२।७४। तक तथा ‘क्विप्’ की ३।२।७५। तक जाती है। ३-इस सूत्र से ‘मनिन्वनिब्वनिपः’ की अनुवृत्ति ३।२।७५। तक जायेगी। ४-यहाँ से ‘क्विप्’ की अनुवृत्ति ३।२।७७। तक जाती है। ५-यहाँ से ‘णिनिः’ की अनुवृत्ति ३।२।८६। तक तथा ‘सुपि’ की अनुवृत्ति ३।२।८३। तक जायेगी। ६-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ३।२।८३। तक जाती है। ७-इस सूत्र का अधिकार ‘वर्तमाने लट्’ (३।२।१२३।) से पूर्व तक अर्थात् ३।२।१२२। तक जाता है। ८-यहाँ से ‘हनः’ की अनुवृत्ति ३।२।८८। तक तथा ‘कर्मणि’ की अनुवृत्ति ३।२।९५। तक जाती है। ९-यहाँ से ‘क्विप्’ की अनुवृत्ति ३।२।९२। तक जायेगी। १०-यहाँ से ‘चेः’ की अनुवृत्ति ३।२।९२। तक जायेगी। ११-‘क्वनिप्’ की अनुवृत्ति ३।२।९६। तक जाती है। १२-‘युधिकृजः’ की भी अनुवृत्ति ३।२।९६। तक जाती है। १३-‘जनेर्डः’ की अनुवृत्ति ३।२।१०१। तक जायेगी। १४-इस सूत्र से ‘उपसर्गे’ की अनुवृत्ति ३।२।१००। तक जाती है।



१०१. अन्येष्वपि दृश्यते	११७. प्रश्ने चासन्नकाले
(वा०) अन्येभ्योऽपि दृश्यते।	११८. लट् स्मे <sup>८</sup>
१०२. निष्ठा	११९. अपरोक्षे च
(वा०) आदिकर्मणि निष्ठा वक्तव्या।	१२०. ननौ पृष्टप्रतिवचने <sup>९</sup>
१०३. सुयजोर्द्वनिप्	१२१. नन्वोर्विभाषा <sup>१०</sup>
१०४. जीर्यतेरतृन्	१२२. पुरि लुङ्चास्मे
१०५. छन्दसि <sup>१</sup> लिट्	१२३. वर्तमाने <sup>११</sup> लट्
१०६. लिटः कानज्वा <sup>२</sup>	१२४. लटः शतृशानचाव <sup>१२</sup> प्रथमा-
१०७. क्वसु <sup>३</sup> श्च	समानाधिकरणे
१०८. भाषायां सदवसश्रुवः	१२५. संबोधने च
१०९. उपेयिवाननाश्चाननूचानश्च	१२६. लक्षणहेत्वोः क्रियायाः
११०. लुङ्	१२६. तौ सत्
१११. अनद्यतने <sup>४</sup> लङ्	१२८. पूङ्ग्यजोः शानन्
११२. अभिज्ञावचने लट् <sup>५</sup>	१२९. ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु
११३. न यदि	चानश्
११४. विभाषा साकाङ्क्षे	१३०. इङ्धार्योः शत्र <sup>१३</sup> कृच्छ्रिणि
११५. परोक्षे लिट् <sup>६</sup>	१३१. द्विषोऽमित्रे
(वा०) अत्यन्तापह्नवे लिङ् वक्तव्यः।	१३२. सुजो यज्ञसंयोगे
११६. हशश्चतोलङ् च <sup>७</sup>	१३३. अर्हः प्रशंसायाम्

### विमर्श

१-यहाँ से 'छन्दसि' की अनुवृत्ति ३।२।१०७। तक जायेगी। २-यहाँ से 'लिटः' 'वा' की अनुवृत्ति ३।२।१०९। तक जाती है। ३-'क्वसुः' की अनुवृत्ति ३।२।१०८। तक जाती है। ४-यहाँ से 'अनद्यतने' की अनुवृत्ति ३।२।११९। तक तथा मण्डूकप्लुतगति से ३।२।१२२। में भी जायेगी। ५-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ३।२।११४। तक जाती है। ६-यहाँ से 'परोक्षे' की अनुवृत्ति ३।२।११८। तक तथा 'लिट्' की अनुवृत्ति ३।२।११७। तक जायेगी। ७-'लङ्' की अनुवृत्ति ३।२।११७। तक जाती है। ८-यहाँ से 'लट्' की अनुवृत्ति ३।२।१२२। तक तथा 'स्मे' की ३।२।११९। तक जायेगी। ९-'पृष्टप्रतिवचने' की अनुवृत्ति ३।२।१२१। तक जाती है। १०-यहाँ से 'विभाषा' की अनुवृत्ति ३।२।१२२। तक जायेगी। ११-'वर्तमाने' की अनुवृत्ति ३।३।१। तक जाती है। १२-यहाँ से 'लटः शतृ-शानचौ' की अनुवृत्ति ३।२।१२६। तक जायेगी। १३-इस सूत्र से 'शतृ' की अनुवृत्ति ३।२।१३३। तक जायेगी।

१३४. आ क्वेस्तच्छील-तद्धर्म-  
तत्साधुकारिषु<sup>१</sup>
१३५. तृन्  
(वा०) तृन्विधावृत्तिषु चानुपसर्गस्य।  
(वा०) नयतेः षुक्।  
(वा०) त्विषेदेवतायामकारश्चोपधाया-  
अनिट्त्वं च।  
(वा०) क्षदेश्च युक्ते  
(वा०) छन्दसि तृच्च
१३६. अलंकृज्जिराकृज्प्रजनोत्पचो-  
त्पतोन्मदरुच्यपत्रपवृतुवृधुसहचर  
इष्णुच्<sup>२</sup>
१३७. गेश्छन्दसि<sup>३</sup>
१३८. भुवश्च<sup>४</sup>
१३९. ग्लाजिस्थश्च गस्नुः
१४०. त्रसिगृधिधृषिषिपेः कुः
१४१. शमित्यष्टाभ्यो घिनुण्<sup>५</sup>
१४२. संपृचानुरुधाड्यमाड्यसपरि-  
सृसंसृजपरिदेविसंज्वरपरिक्षिपपरिरट-  
परिवदपरिदहपरिमुहदुषद्विषदुहदुहयुजा-  
क्रीडविविचत्यजरजभजातिचरापचरा-  
मुषाभ्याहनश्च
१४३. वौ<sup>६</sup> कषलसकत्थस्रम्भः
१४४. अपे च लषः
१४५. प्रे लपसृद्रुमथवदवसः
१४६. निन्दहिंसक्तिशखादविनाश-  
परिक्षिपपरिरटपरिवादिव्याभाषासुयो  
वुज्<sup>७</sup>
१४७. देविकुशोश्चोपसर्गे
१४८. चलनशब्दार्थादकर्मकाद्युच्<sup>८</sup>
१४९. अनुदात्तेतश्च हलादेः
१५०. जुचङ्क्रम्यदन्द्रम्यसृगृधिज्वल-  
शुचलषपतपदः
१५१. क्रुधमण्डार्थेभ्यश्च
१५२. न<sup>९</sup> यः
१५३. सूददीपदीक्षश्च
१५४. लषपतपदस्थाभूवृषहनकम-  
गमशृभ्य उकज्
१५५. जल्पभिक्षकुट्टलुण्टवृडः षाकन्
१५६. प्रजोरिनिः<sup>१०</sup>
१५७. जिट्टक्षिविश्रीण्वमाव्यथाभ्यम-  
परिभूप्रसूभ्यश्च
१५८. स्पृहिगृहिपतिदयिनिद्रातन्द्रा-  
श्रद्धाभ्य आलुच्

### विमर्श

१-इस सूत्र का अधिकार ३।२।१७८। तक जाता है। २-यहाँ से 'इष्णुच्' की अनुवृत्ति ३।२।१३८। तक जाती है। ३-'छन्दसि' की भी अनुवृत्ति ३।२।१३८। तक जाती है। ४-यहाँ से 'भुवः' की अनुवृत्ति ३।२।१३९। तक जायेगी। ५-यहाँ से 'घिनुण्' की अनुवृत्ति ३।२।१४५। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'वौ' की अनुवृत्ति ३।२।१४४। तक जाती है। ७-यहाँ से 'वुज्' की अनुवृत्ति ३।२।१४८। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से 'अकर्मकात्' की अनुवृत्ति ३।२।१४९। तक तथा 'युच्' की ३।२।१५३। तक जाती है। ९-यहाँ से 'न' की अनुवृत्ति ३।२।१५३। तक जाती है। १०-यहाँ से 'इनिः' की अनुवृत्ति ३।२।१५७। तक जायेगी।



१५९. दाधेट्सिशदसदो रुः	१७४. भियः क्कुवलुकनौ
१६०. सृषस्यदः क्कमरच्	(वा०) क्कुक्कन्नपि वक्तव्यः।
१६१. भञ्जभासमिदो घुरच्	१७५. स्थेशभासपिसकसो वरच् <sup>५</sup>
१६२. विदिभिदिच्छिदेः कुरच्	१७६. यश्च यडः
१६३. इण्णशजिसर्तिभ्यः क्वरप् <sup>१</sup>	१७७. भ्राजभासधुर्विद्युतो जिपृजु-
१६४. गत्वरश्च	ग्रावस्तुवः क्विप् <sup>६</sup>
१६५. जागुरूकः <sup>२</sup>	१७८. अन्येभ्योऽपि दृश्यते
१६६. यजजपदशां यडः	(वा०) क्विब्बचिप्रच्छयायतस्तुकट-
१६७. नमिकम्पिस्म्यजसकमहिंसदीपो	प्रजुश्रीणां दीर्घोऽसंप्रसारणं च।
रः	(वा०) द्युतिगमिजुहोतीनां द्वे च।
१६८. सनाशंसभिक्ष उः <sup>३</sup>	(वा०) जुहोतेदीर्घश्च।
१६९. विन्दुरिच्छुः	(वा०) दृणातेर्ह्रस्वश्च।
१७०. क्याच्छन्दसि <sup>४</sup>	(वा०) ध्यायतेः संप्रसारणं च।
१७१. आदृगमहनजनः किकिनौ लिट्	१७९. भुवः <sup>७</sup> संज्ञान्तरयोः
च	१८०. विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम्
(वा०) भाषायां धाञ्कृसृगेमिज-	(वा०) डुप्रकरणे मितद्ब्रादिभ्य उप-
निनमिभ्यः।	संख्यानम्।
(वा०) सासहिवावहिचाचलिपा-	१८१. धः कर्मणि घृन् <sup>८</sup>
पतीनामुपसंख्यानम्।	१८२. दाम्नीशसयुजस्तुतुदसिसि-
१७२. स्वपितृषोर्नजिङ्	चमिहपतदशनहः करणे <sup>९</sup>
(वा०) धृषेश्चेति वाच्यम्।	१८३. हलसूकरयोः पुवः
१७३. शृवन्द्योरारुः	१८४. अर्तिलूधूसूखनसहचर इत्रः <sup>१०</sup>

### विमर्श

१-यहाँ से 'क्वरप्' की अनुवृत्ति ३।२।१६४। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'ऊकः' की अनुवृत्ति ३।२।१६६। तक जाती है। ३-यहाँ से 'उः' की अनुवृत्ति ३।२।१७०। तक जायेगी। ४-यहाँ से 'छन्दसि' की अनुवृत्ति ३।२।१७१। सूत्र में जायेगी। ५-यहाँ से 'वरच्' की अनुवृत्ति ३।२।१७६। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'क्विप्' की अनुवृत्ति ३।२।१७९। तक जाती है। ७-यहाँ से 'भुवः' की अनुवृत्ति ३।२।१८०। तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'घृन्' की अनुवृत्ति ३।२।१८३। तक जायेगी। ९-यहाँ से 'करणे' की अनुवृत्ति ३।२।१८६। तक जाती है। १०-यहाँ से 'इत्रः' की अनुवृत्ति ३।२।१८६। तक जायेगी।

१८५. पुवः<sup>१</sup> संज्ञायाम्  
 १८६. कर्तरि चर्षिदेवतयोः  
 १८७. जीतः क्तः<sup>२</sup>

१८८. मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च  
 (कर्मणि दिवापूः सर्वसत्सूबहुलमन्येष्वपि  
 नन्वोः शमिति भञ्जभासधः कर्मण्यष्टौ।)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे तृतीयस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः।




---

विमर्श

१-‘पुवः’ की अनवृत्ति ३।२।१८६। तक जायेगी। २-यहाँ से ‘क्तः’ की अनुवृत्ति ३।२।१८८। तक जाती है।



## तृतीयः पादः

१. उणादयो<sup>१</sup> बहुलम्  
 २. भूतेऽपि दृश्यन्ते  
 ३. भविष्यति<sup>२</sup> गम्यादयः  
 ४१. गमी आगमी भावी प्रस्थायी प्रतिरोधी  
 प्रतियोधी प्रतिबोधी प्रतियायी प्रतियोगी-एते  
 गम्यादयः॥  
 ४. यावत्पुरानिपातयोर्लट्<sup>३</sup>  
 ५. विभाषा<sup>४</sup> कदाकह्योः  
 ६. किंवृत्ते लिप्सायाम्  
 ७. लिप्स्यमानसिद्धौ च  
 ८. लोट्थलक्षणे<sup>५</sup> च  
 ९. लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके  
 १०. तुमुन्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्<sup>६</sup>  
 ११. भाववचनाश्च  
 १२. अण्कर्मणि च  
 १३. लट् शेषे<sup>७</sup> च  
 १४. लृटः सद्वा  
 १५. अनद्यतने लुट्  
 १६. पदरुजविशस्पृशो घञ्<sup>८</sup>  
 (वा०) स्पृश उपतापे।  
 १७. सृ स्थिरे  
 (वा०) व्याधिमत्स्यबलेषु चेति वाच्यम्  
 १८. भावे<sup>९</sup>  
 १९. अकर्तरि च कारके संज्ञायाम्<sup>१०</sup>  
 २०. परिमाणाख्यायां सर्वेभ्यः  
 (वा०) दारजासौ कर्तरि णिलुक् च।  
 २१. इडश्च  
 (वा०) अपादाने स्त्रियामुपसंख्यानम्  
 तदन्ताच्च वा डीष्।  
 (वा०) शृवायुवर्णानिवृत्तेषु।  
 २२. उपसर्गे रुवः  
 २३. समि युद्बुदुवः  
 २४. श्रिणीभुवोऽनुपसर्गे  
 २५. वौ क्षुश्रुवः  
 २६. अवोदोर्नियः  
 २७. प्रे-द्बु-स्तु-स्रुवः  
 २८. निरभ्योः पूल्वोः  
 २९. उन्त्योर्ग्रः<sup>११</sup>  
 ३०. कृ धान्ये  
 ३१. यज्ञे समि स्तुवः  
 ३२. प्रे स्त्रो<sup>१२</sup>ऽयज्ञे

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'उणादयः' की अनुवृत्ति ३।३।३। तक जाती है। २-यहाँ से 'भविष्यति' की अनुवृत्ति ३।३।१५। तक जायेगी। ३-'लट्' की अनुवृत्ति ३।३।९। तक जायेगी। ४-'विभाषा' की अनुवृत्ति ३।३।९। तक जाती है। ५-यहाँ से 'लोडर्थलक्षणे' की अनुवृत्ति ३।३।९। तक जाती है। ६-यहाँ से 'क्रियायां क्रियार्थायाम्' की अनुवृत्ति ३।३।१४। तक जाती है। ७-'शेषे' की अनुवृत्ति ३।३।१४। तक जायेगी। ८-'घञ्' की अनुवृत्ति ३।३।५५। तक जाती है। ९-इस सूत्रका अधिकार ३।३।११२। तक जायेगा। १०-इस सूत्र का भी अधिकार ३।३।११२। तक जायेगा। ११-इस सूत्र से 'उन्त्योः' की अनुवृत्ति ३।३।३०। तक जाती है। १२-यहाँ से 'स्त्रो' की अनुवृत्ति ३।३।३४। तक जायेगी।

३३. प्रथने वा <sup>१</sup> वशब्दे	५३. रश्मौ च
३४. छन्दोनाम्नि च	५४. वृणोतेराच्छादने
३५. उदि ग्रहः <sup>२</sup>	५५. परौ भुवोऽवज्ञाने
३६. समि मुष्टौ	५६. एरच्
३७. परिन्योर्नीणोर्घूताभ्रेषयोः	(वा०) भयादीनामुपसंख्यानं नपुंसकै
३८. परावनुपात्यय इणः	क्तादिनिवृत्यर्थम्।
३९. व्युपयोः शेतेः पर्याये	(वा०) जवसवौ छन्दसि वक्तव्यौ।
४०. हस्तादाने चे <sup>३</sup> रस्तेये	५७. ऋदोरप् <sup>१</sup>
४१. निवासचितिशरीरोपसमाधाने-	५८. ग्रहवृद्धनिश्चिगमश्च
प्वादेश्च कः <sup>४</sup>	(वा०) वशिरण्योश्चोपसंख्यानम्।
४२. सङ्गे चानौत्त्राधये	(वा०) घञर्थे कविधानम्।
४३. कर्मव्यतिहारे णच् स्त्रियाम्	५९. उपसर्गेऽदः <sup>१०</sup>
४४. अभिविधौ भाव इनुण्	६०. नौ ण च
४५. आक्रोशेऽवन्योर्ग्रहः <sup>५</sup>	६१. व्यधजपोरनुपसर्गे <sup>११</sup>
४६. प्रे लिप्सायाम्	६२. स्वनहसोर्वा <sup>१२</sup>
४७. परौ यज्ञे	६३. यमः समुपनिविषु च
४८. नौ वृ धान्ये	६४. नौ <sup>१३</sup> गदनदपठस्वनः
४९. उदि श्रयतियौतिपूदुवः	६५. क्वणो वीणायां च
५०. विभाषा <sup>६</sup> ऽऽडिं रुप्लुवोः	६६. नित्यं पणः परिमाणे
५१. अवे ग्रहो <sup>७</sup> वर्षप्रतिबन्धे	६७. मदोऽनुपसर्गे
५२. प्रे <sup>८</sup> वणिजाम्	६८. प्रमदसंमदौ हर्षे

### विमर्श

१-यहाँ से 'वौ' की अनुवृत्ति ३।३।३४। तक जाती है। २-'ग्रहः' की अनुवृत्ति ३।३।३६। तक जायेगी। ३-'चेः' की अनुवृत्ति ३।३।४२। तक जाती है। ४-यहाँ से 'आदेश्च कः' की अनुवृत्ति ३।३।४२। तक जायेगी। ५-'ग्रहः' की अनुवृत्ति ३।३।४७। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'विभाषा' की अनुवृत्ति ३।३।५५। तक जायेगी। ७-'ग्रहः' की अनुवृत्ति ३।३।५३। तक जाती है। ८-'प्रे' की अनुवृत्ति ३।३।५४। तक जाती है। ९-यहाँ से 'अप्' की अनुवृत्ति ३।३।८७। तक जाती है। १०-'अदः' की अनुवृत्ति ३।३।६०। तक जाती है। ११-यहाँ से 'अनुपसर्गे' की अनुवृत्ति ३।३।६५। तक जायेगी। १२-'वा' की अनुवृत्ति ३।३।६५। तक जायेगी। १३-'नौ' की अनुवृत्ति ३।३।६५। तक जाती है।



६९. समुदोरजः पशुषु  
 ७०. अक्षेषु ग्लहः  
 ७१. प्रजने सतैः  
 ७२. ह्रः संप्रसारणं च<sup>१</sup> न्यभ्युपविषु  
 ७३. आङि युद्धे  
 ७४. निपानमाहावः  
 ७५. भावेऽनुपसर्गस्य<sup>२</sup>  
 ७६. हनश्च<sup>३</sup> वधः  
 ७७. मूर्तौ घनः<sup>४</sup>  
 ७८. अन्तर्घनो देशे  
 ७९. अगारैकदेशे प्रघणः प्रघाणश्च  
 ८०. उद्धनोऽत्याधानम्  
 ८१. अपघनोऽङ्गम्  
 ८२. करणे<sup>५</sup>ऽयोविदुषु  
 ८३. स्तम्बे क च  
 ८४. परौ घः  
 ८५. उपघ्न आश्रये  
 ८६. सङ्घोद्धौ गणप्रशंसयोः  
 ८७. निघो निमितम्  
 ८८. ड्वितः क्त्रः  
 ८९. द्वितोऽथुच्  
 ९०. यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्  
 ९१. स्वपो नन्  
 ९२. उपसर्गे घोः किः<sup>६</sup>  
 ९३. कर्मण्यधिकरणे च  
 ९४. स्त्रियां क्तिन्<sup>७</sup>  
 (वा०) निष्ठायां सेट् इति वक्तव्यम्।  
 ९५. स्थागापापचो भावे<sup>८</sup>  
 (वा०) श्रुयजीषिस्तुभ्यः करणे।  
 (वा०) ग्लाम्लाज्याहाभ्यो निः।  
 ९६. मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा  
 उदात्तः<sup>९</sup>  
 ९७. ऊतियूतिजूतिसातिहेतिकीर्तयश्च  
 ९८. व्रजयजोभावे क्यप्<sup>१०</sup>  
 ९९. संज्ञायां समजनिषदनिपतमनविद-  
 पुञ्शीङ्भृजिणः  
 १००. कृञः श<sup>११</sup> च  
 १०१. इच्छा  
 (वा०) परिचर्यापरिसर्यामृगयाटाट्या-  
 नामुपसंख्यानम्  
 (वा०) जागर्तैरकारो वा।  
 १०२. अ<sup>१२</sup>प्रत्ययात्  
 १०३. गुरोश्च हलः  
 (वा०) निष्ठायां सेट् इति वक्तव्यम्  
 १०४. षिद्धिदादिभ्योऽङ्<sup>१३</sup>

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'ह्रः संप्रसारणम्' की अनुवृत्ति ३।३।७५। तक जाती है। २-यहाँ से 'भावेऽनुपसर्गस्य' की अनुवृत्ति ३।३।७६। तक जायेगी। ३-'हनः' की अनुवृत्ति ३।३।८७। तक जाती है। ४-यहाँ से 'घनः' की अनुवृत्ति ३।३।८३। तक जाती है। ५-'करणे' की अनुवृत्ति ३।३।८४। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'घोः किः' की अनुवृत्ति ३।३।९३। तक जाती है। ७-इस सूत्र से 'स्त्रियाम्' की अनुवृत्ति ३।३।११२। तथा 'क्तिन्' की अनुवृत्ति ३।३।९७। तक जाती है। ८-'भावे' की अनुवृत्ति ३।३।९६। तक जायेगी। ९-'उदात्तः' की अनुवृत्ति ३।३।१००। तक जाती है। १०-'क्यप्' की भी अनुवृत्ति ३।३।१००। तक जाती है। ११-यहाँ से 'श' की अनुवृत्ति ३।३।१०१। तक जायेगी। १२-'अ' की अनुवृत्ति ३।३।१०३। तक जायेगी। १३-इस सूत्र से 'अङ्' की अनुवृत्ति ३।३।१०६। तक जाती है।

४२. ('भिदा विदारणे' २९) (छिदा (वा०) संपदादिभ्यः क्विप् ।  
 द्वैधीकरणे' ३०) विदा। क्षिपा। ('गुहा ४३. (वा. २२३३)। संपद् विपद् आपद्  
 गिर्योषधयोः' ३१) श्रद्धा। मेधा गोधा। ('आरा प्रतिपद् परिषद्-एते संपदादयः।।  
 शस्त्र्याम्' ३२) हारा। ('कारा बन्धने' ३३) १०९. संज्ञायाम्  
 क्षिया। ('तारा ज्योतिषि' ३४) ('धारा प्रपातने' ११०. विभाषाख्यानपरिप्रश्नयोरिञ्च  
 ३५) रेखा चूडा पीडा वपा वसा मृजा। १११. पर्यायार्हणोत्पत्तिषु ण्वुच्  
 'क्रपेः संप्रसारणं च' ३६। कृपा। इति ११२. आक्रोशे नज्यनिः  
 भिदादिः।। ११३. कृत्यल्युटो बहुलम्  
 (वा०) क्रपेः संप्रसारणं च। ११४. नपुंसके भावे<sup>३</sup> क्तः  
 १०५. चिन्तिपूजिकथिकुम्बिचर्चश्च ११५. ल्युट्<sup>३</sup> च  
 १०६. आतश्चोपसर्गे ११६. कर्मणि च येन संस्पर्शात्कर्तुः  
 १०७. ण्यासश्रन्थो युच् शरीरसुखम्  
 (वा०) घट्टिवन्दिविदिभ्यश्चेति वाच्यम्। ११७. करणाधिकरणयोश्च<sup>४</sup>  
 (वा०) इषेरनिच्छार्थस्य। ११८. पुंसि संज्ञायां घः<sup>५</sup> प्रायेण  
 (वा०) परेर्वा। ११९. गोचरसंचरवहत्रजव्यजापण-  
 १०८. रोगाख्यायां ण्वुल्<sup>६</sup>हुलम् निगमाश्च  
 (वा०) धात्वर्थनिर्देशे ण्वुल् । १२०. अवे तृ-स्त्रोर्घञ्<sup>६</sup>  
 (वा०) इकृशितपौ धातुनिर्देशे । १२१. हलश्च  
 (वा०) वर्णात्कारः। (वा०) घञ्विधाववहाराधारावाया-  
 (वा०) रादिफः। नामुपसंख्यानम्।  
 (वा०) मत्वर्थाच्छः। १२२. अध्यायन्यायोद्यावसंहाराश्च  
 (वा०) इणजादिभ्यः। १२३. उदङ्घोऽनुदके  
 (वा०) इञ् वपादिभ्यः। १२४. जालमानायः  
 (वा०) इत्कृष्यादिभ्यः।

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'ण्वुल्' की अनुवृत्ति ३।३।११०। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'नपुंसके भावे' की अनुवृत्ति ३।३।११६। तक जायेगी। ३-'ल्युट्' की अनुवृत्ति ३।३।११७। तक जायेगी। ४-यहाँ से 'करणाधिकरणयोः' की अनुवृत्ति ३।३।१२५। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'घः' की अनुवृत्ति ३।३।११९। तक तथा 'पुंसि संज्ञायां' की अनुवृत्ति ३।३।१२५। तक एवं 'प्रायेण' की ३।३।१२१। तक जाती है। ३।३।११९। में 'प्रायेण' सम्बन्धित नहीं होता है। ६-'घञ्' की अनुवृत्ति ३।३।१२५। तक जाती है।



१२५. खनो घ च  
(वा०) खनेईडरेकेकबका वाच्याः।
१२६. ईषद्-दुः-सुषु कृच्छाकृ-  
च्छार्थेषु खल्<sup>१</sup>
१२७. कर्तृकर्मणोश्च भूकृजोः  
(वा०) कर्तृकर्मणोश्च्यर्थयोरिति  
वाच्यम्।
१२८. आतो युच्<sup>२</sup>
१२९. छन्दसि<sup>३</sup> गत्यर्थेभ्यः
१३०. अन्येभ्योऽपि दृश्यते  
(वा०) भाषायां शासियुधिदृशि-  
धृषिमृषिभ्यो युज्वाच्यः।
१३१. वर्तमानसामीप्ये वर्तमानवद्वा<sup>४</sup>
१३२. आशंसायां<sup>५</sup> भूतवच्च
१३३. क्षिप्रवचने लट्
१३४. आशंसावचने लिङ्
१३५. नानद्यतनवत्<sup>६</sup> क्रियाप्रबन्ध-  
सामीप्ययोः
१३६. भविष्यति मर्यादावचने-  
ऽवरस्मिन्<sup>७</sup>
१३७. कालविभागे चानहोरात्राणाम्<sup>८</sup>
१३८. परस्मिन्विभाषा
१३९. लिङ्निमित्ते लङ् क्रियातिपत्तौ<sup>९</sup>
१४०. भूते<sup>१०</sup> च
१४१. वोताप्योः<sup>११</sup>
१४१. गर्हायां लङ्<sup>१२</sup> पिजात्वोः
१४३. विभाषा कथमि लिङ् च
१४४. किंवृत्ते लिङ्लटौ<sup>१३</sup>
१४५. अनवक्लृप्त्यमर्षयोर<sup>१४</sup> किंवृत्ते-  
ऽपि
१४६. किंकिलास्त्यर्थेषु लट्
१४७. जातुयदोर्लिङ्<sup>१५</sup>
- (वा०) यदायद्योरुपसंख्यानम्।
१४८. यच्चयत्रयोः<sup>१६</sup>

### विमर्श

१-यहाँ से 'ईषद्दुःसुषु कृच्छाकृच्छार्थेषु' की अनुवृत्ति ३।३।१३०। तक तथा 'खल्' की अनुवृत्ति ३।३।१२७। तक जायेगी। २-'युच्' की अनुवृत्ति ३।३।१३०। तक जाती है। ३-'छन्दसि' की भी अनुवृत्ति ३।३।१३०। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'वर्तमानवद्वा' की अनुवृत्ति ३।३।१३२। तक जायेगी। ५-'आशंसायाम्' की अनुवृत्ति ३।३।१३३। तक जाती है। ६-'नानद्यतनवत्' की अनुवृत्ति ३।३।१३८। तक जाती है। ७-यहाँ से ' भविष्यति ' की अनुवृत्ति ३।३।१३९। तक, 'मर्यादावचने' की ३।३।१३८। तक एवं 'अवरस्मिन्' की ३।३।१३७। तक जायेगी। ८-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ३।३।१३८। तक जाती है। ९-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ३।३।१४१। तक जायेगी। १०-'भूते' की अनुवृत्ति ३।३।१४१। तक जाती है। ११-'उताप्योः समर्थयोर्लिङ्' (३।३।१५२।) सूत्र से पूर्व तक विकल्प से लङ् प्रत्यय का विधान होता है अर्थात् इस सूत्र का अधिकार ३।३।१५१। तक जाता है। 'वा+आ' को सवर्ण दीर्घ होकर 'वा' बना पुनः वा+उताप्योः यहाँ आद् गुणः (६।१।८४।) लगकर वोताप्योः बना है। यहाँ पर आङ् मर्यादा में है, अभिविधि में नहीं। १२-यहाँ से 'गर्हायाम्' की अनुवृत्ति ३।३।१४४।, तथा 'लट्' की अनुवृत्ति ३।३।१४३। तक जायेगी। १३-'लिङ्लटौ' की अनुवृत्ति ३।३।१४५। तक जाती है। १४-यहाँ से 'अनवक्लृप्त्यमर्षयोः' की अनुवृत्ति ३।३।१४८। तक जायेगी। १५-'लिङ्' की अनुवृत्ति ३।३।१५०। तक जाती है। १६-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ३।३।१५०। तक जाती है।

१४९. गर्हायां च	१६२. लोट् <sup>१</sup> च
१५०. चित्रीकरणे <sup>१</sup> च	१६३. प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु <sup>१</sup> कृत्याश्च
१५१. शेषे लृडयदौ	१६४. लिङ् चोर्ध्वमौहूर्तिके <sup>१</sup>
१५२. उताप्योः समर्थयोर्लिङ् <sup>३</sup>	१६५. स्मे लोट् <sup>१</sup>
१५३. कामप्रवेदनेऽकच्चिति	१६६. अधीष्टे च
१५४. संभावनेऽलमिति चेत्सिद्धा- प्रयोगे <sup>३</sup>	१६७. कालसमयवेलासु <sup>१</sup> तुमुन्
१५५. विभाषा <sup>४</sup> धातौ संभावनवचने- ऽयदि	१६८. लिङ्यदि <sup>१</sup>
१५६. हेतुहेतुमतोर्लिङ्	१६९. अर्हे कृत्यतृचश्च
१५७. इच्छार्थेषु <sup>५</sup> लिङ्लौटौ	१७०. आवश्यकधमर्णयो <sup>५</sup> णिनिः
(वा०) कामप्रवेदन इति वक्तव्यम्।	१७१. कृत्याश्च <sup>१</sup>
१५८. समानकर्तृकेषु <sup>६</sup> तुमुन्	१७२. शकि लिङ् च
१५९. लिङ् <sup>७</sup> च	१७३. आशिषि <sup>७</sup> लिङ्लोटौ
१६०. इच्छार्थेभ्यो विभाषा वर्तमाने	१७४. क्तिच् तौ च संज्ञायाम्
१६१. विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्ट- संप्रश्नप्रार्थनेषु <sup>८</sup> लिङ्	१७५. माङि लुङ् <sup>८</sup>
	१७६. स्मोत्तरे लङ् च
	(उणादय इडो निवासवय-धजपोरपघन इच्छा हलश्च वोताप्यो-विधिषोडश।)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे तृतीयस्याध्यायस्य तृतीयः पादः।



### विमर्श

१-‘चित्रीकरणे’ की अनुवृत्ति ३।३।१५१। तक जायेगी। २-इस सूत्र से ‘लिङ्’ की अनुवृत्ति ३।३।१५५। तक जाती है। ३-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ३।३।१५५। तक जायेगी। ४-‘विभाषा’ की अनुवृत्ति ३।३।१५६। तक जाती है। ५-‘इच्छार्थेषु’ की अनुवृत्ति ३।३।१५९। तक जाती है। ६-यहाँ से ‘समानकर्तृकेषु’ की भी अनुवृत्ति ३।३।१५९। तक जायेगी। ७-‘लिङ्’ की अनुवृत्ति ३।३।१६०। तक जायेगी। ८-‘विधिनिमन्त्रणामन्त्रणाधीष्टसंप्रश्नप्रार्थनेषु’ की अनुवृत्ति ३।३।१६२। तक जायेगी। ९-‘लोट्’ की अनुवृत्ति ३।३।१६३। तक जायेगी। १०-‘प्रैषातिसर्गप्राप्तकालेषु’ की अनुवृत्ति ३।३।१६५। तक जाती है। ११-यहाँ से ‘ऊर्ध्वमौहूर्तिके’ की अनुवृत्ति ३।३।१६५। तक जाती है। १२- इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ३।३।१६६। तक जाती है। १३-यहाँ से ‘कालसमयवेलासु’ की अनुवृत्ति ३।३।१६८। तक जायेगी। १४-यहाँ से ‘लिङ्’ की अनुवृत्ति ३।३।१६९। तक जायेगी। १५-इस सूत्र से ‘आवश्यकधमर्णयोः’ की अनुवृत्ति ३।३।१७१। तक जायेगी। १६-‘कृत्याः’ की अनुवृत्ति ३।३।१७२। तक जायेगी। १७-यहाँ से ‘आशिषि’ की अनुवृत्ति ३।३।१७५। तक जाती है। १८-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ३।३।१७६। तक जायेगी।



## चतुर्थः पादः

- |  |   |
|--|---|
| १. धातुसंबन्धे <sup>१</sup> प्रत्ययाः  | १५. अवचक्षे च   |
| २. क्रियासमभिहारे लोट् लोटो हिस्वौ<br>वा च तध्वमोः <sup>२</sup>  | १६. भावलक्षणे <sup>३</sup> स्थेण्कृज्वदिचरि-<br>हुतमिजनिभ्यस्तोसुन् |
| ३. समुच्चयेऽन्यतरस्याम्  | १७. सृपितृदोः कसुन्   |
| ४. यथाविध्यनुप्रयोगः <sup>४</sup> पूर्वस्मिन्  | १८. अलंखत्वोः प्रतिषेधयोः प्राचां<br>क्त्वा <sup>५</sup>            |
| ५. समुच्चये सामान्यवचनस्य  | १९. उदीचां माडो व्यतीहारे   |
| ६. छन्दसि <sup>६</sup> लुङ्लङ्लिटः   | २०. परावरयोगे च   |
| ७. लिङ्थे <sup>७</sup> लेट् <sup>८</sup>   | २१. समानकर्तृकयोः पूर्वकाले <sup>९</sup>                            |
| ८. उपसंवादाशङ्कयोश्च   | २२. आभीक्ष्ण्ये णमुल् <sup>१०</sup>                                 |
| ९. तुमर्थे <sup>११</sup> सेसेनसेऽसेन्क्सेकसेनध्यै<br>अध्यैन्कध्यैकध्यैन्शध्यैशध्यैन्तवैत-<br>वेङ्तवेनः | २३. न यद्यनाकाङ्क्षे  |
| १०. प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै  | २४. विभाषाऽग्रेप्रथमपूर्वेषु  |
| ११. दृशे विख्ये च  | २५. कर्मण्याक्रोशे कृजः <sup>१२</sup> खमुज्                         |
| १२. शकि णमुल्कमुलौ   | २६. स्वादुमि णमुल् <sup>१३</sup>                                    |
| १३. ईश्वरे तोसुन्कसुनौ   | २७. अन्यथैवंकथमित्थंसु सिद्धा-<br>प्रयोगः <sup>१४</sup> श्चेत्      |
| १४. कृत्यार्थे <sup>१५</sup> तवैकेन्केन्यत्वनः   | २८. यथातथयोरसूयाप्रतिवचने   |
|  | २९. कर्मणि <sup>१६</sup> दृशिविदोः साकल्ये                          |

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'धातुसंबन्धे' की अनुवृत्ति ३।४।६। तक जाती है। २-यहाँ से 'लोट् लोटो हिस्वौ वा च तध्वमोः' की अनुवृत्ति ३।४।३। तक जाती है। ३-'अनुप्रयोगः' की अनुवृत्ति ३।४।५। तक जाती है। ४-यहाँ से 'छन्दसि' की अनुवृत्ति ३।४।१७। तक जायेगी। ५-'लेट्' की अनुवृत्ति ३।४।८। तक जायेगी। ६-यहाँ से 'तुमर्थे' की अनुवृत्ति ३।४।१३। तक जायेगी। ७-'कृत्यार्थे' की अनुवृत्ति ३।४।१५। तक जाती है। ८-'भावलक्षणे' की अनुवृत्ति ३।४।१७। तक जाती है। ९-यहाँ से 'क्त्वा' की अनुवृत्ति ३।४।२४। तक जाती है। १०-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ३।४।२६। तक जायेगी। ११-इस सूत्र से 'आभीक्ष्ण्ये' की अनुवृत्ति ३।४।२३। तक तथा 'णमुल्' की अनुवृत्ति ३।४।२४। तक जायेगी। १२-इस सूत्र से 'कृजः' की अनुवृत्ति ३।४।२८। तक जाती है। १३-यहाँ से 'णमुल्' की अनुवृत्ति ३।४।५८। तक जायेगी। १४-'सिद्धाप्रयोगः' की अनुवृत्ति ३।४।२८। तक जाती है। १५-'कर्मणि' की अनुवृत्ति ३।४।३६। तक जायेगी।

३०. यावति विन्दजीवोः  
 ३१. चर्मोदरयोः पूरेः<sup>१</sup>  
 ३२. वर्षप्रमाण<sup>२</sup> ऊलोपश्चास्यान्य-  
 तरस्याम्  
 ३३. चेले क्नोपेः  
 ३४. निमूलसमूलयोः कषः  
 ३५. शुष्कचूर्णरूक्षेषु पिषः  
 ३६. समूलाकृतजीवेषु हन्कृञ्ग्रहः  
 ३७. करणे<sup>३</sup> हनः  
 ३८. स्नेहने पिषः  
 ३९. हस्ते वर्तिग्रहोः  
 ४०. स्वे पुषः  
 ४१. अधिकरणे बन्धः<sup>४</sup>  
 ४२. संज्ञायाम्  
 ४३. क<sup>५</sup>त्रोर्जीवपुरुषयोर्नाशिवहोः  
 ४४. ऊर्ध्वे शुषिपूरोः  
 ४५. उपमाने कर्मणि च  
 ४६. कषादिषु यथाविध्यनुप्रयोगः  
 ४७. उपदंशस्तृतीयायाम्<sup>६</sup>  
 ४८. हिंसार्थानां च समानकर्मकाणाम्  
 ४९. सप्तम्यां<sup>७</sup> चोपपीडरुधकर्षः  
 ५०. समासतौ  
 ५१. प्रमाणे च  
 ५२. अपादाने परीप्सायाम्<sup>८</sup>  
 ५३. द्वितीयायां<sup>९</sup> च  
 ५४. स्वाङ्गे<sup>१०</sup> ऽध्रुवे  
 ५५. परिक्लिश्यमाने च  
 ५६. विशिपतिपदिस्कन्दां व्याप्य-  
 मानासेव्यमानयोः  
 ५७. अस्यतितृषोः क्रियान्तरे कालेषु  
 ५८. नाम्न्यादिशिग्रहोः  
 ५९. अव्ययेऽयथाभिप्रेताख्याने कृजः  
 क्त्वाणमुलौ<sup>११</sup>  
 ६०. तिर्यच्यपवर्गे  
 ६१. स्वाङ्गे तस्प्रत्यये कृभ्वोः<sup>१२</sup>  
 ६२. नाधार्थप्रत्यये च्यर्थे  
 ६३. तूष्णीमि भुवः<sup>१३</sup>  
 ६४. अन्वच्यानुलोम्ये  
 ६५. शकधृषज्ञागलाघटरभलभक्रम-  
 सहार्हास्त्यर्थेषु तुमुन्<sup>१४</sup>  
 ६६. पर्याप्तिवचनेष्वलमर्थेषु

### विमर्श

१-यहाँ से 'पूरेः' की अनुवृत्ति ३।४।३२। तक जाती है। २-'वर्षप्रमाणे' की अनुवृत्ति ३।४।३३। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'करणे' की अनुवृत्ति ३।४।४०। तक जायेगी। ४-यहाँ से 'बन्धः' की अनुवृत्ति ३।४।४२। तक जाती है। ५-'कत्रोः' की अनुवृत्ति ३।४।४५। तक जाती है। ६-'तृतीयायाम्' की अनुवृत्ति ३।४।५१। तक जायेगी। ७-इस सूत्र से 'सप्तम्याम्' की अनुवृत्ति ३।४।५१। तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'परीप्सायाम्' की अनुवृत्ति ३।४।५३। तक जाती है। ९-यहाँ से 'द्वितीयायाम्' की अनुवृत्ति ३।४।५८। तक जायेगी। १०-'स्वाङ्गे' की अनुवृत्ति ३।४।५५। तक जाती है। ११-यहाँ से 'कृजः' की अनुवृत्ति ३।४।६०। तक तथा 'क्त्वाणमुलौ' की ३।४।६४। तक जाती है। १२-'कृभ्वोः' की अनुवृत्ति ३।४।६२। तक जाती है। १३-'भुवः' की अनुवृत्ति ३।४।६४। तक जाती है। १४-यहाँ से 'तुमुन्' की अनुवृत्ति ३।४।६६। तक जायेगी।



६७. कर्तरि<sup>१</sup> कृत्  
 ६८. भव्यगेयप्रवचनीयोपस्थानीय-  
 जन्याप्लाव्यापात्या वा  
 ६९. लः कर्मणि च भावे चाकर्मकेभ्यः<sup>२</sup>  
 ७०. तयोरेव कृत्यक्तखलर्थाः  
 ७१. आदिकर्मणि क्तः कर्तरि<sup>३</sup> च  
 ७२. गत्यर्थकर्मक-श्लष-शीङ्-स्थास-  
 वस-जन-रुह-जीर्यतिभ्यश्च  
 ७३. दाशगोघ्नौ संप्रदाने  
 ७४. भीमादयोऽपादाने  
 ४४. भीम भीष्म भयानक वहचर (वह चरु)  
 प्रस्कन्दन प्रतपन (प्रपतन) समुद्र सुव स्रक्  
 वृष्टि (दृष्टि) रक्षः संकसुक (शङ्कु सुक) मूर्ख  
 खलति-आकृतिगणोऽयम् ।। इति भीमादिः ।।  
 ७५. ताभ्यामन्यत्रोणादयः  
 ७६. क्तोऽधिकरणे च ध्रौव्यगति-  
 प्रत्यवसानार्थेभ्यः  
 ७७. लस्य<sup>४</sup>  
 ७८. तिप्तस्झिसिप्थस्थमिब्वस्मस्तातां-  
 झथासाथांध्वमिड्वहिमहिङ्  
 ७९. टित<sup>५</sup> आत्मेनपदानां टेरे  
 ८०. थासः से  
 ८१. लिट<sup>६</sup> स्तझयोरेशिरेच्  
 ८२. परस्मैपदानां णलतुसुस्थल-  
 थुसणल्वमाः<sup>७</sup>  
 ८३. विदो लटो<sup>८</sup> वा  
 ८४. ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः  
 ८५. लोटो<sup>९</sup> लङ्वत्  
 ८६. एरुः  
 ८७. सेह्यपिच्च<sup>१०</sup>  
 ८८. वा छन्दसि  
 ८९. मेरिः  
 ९०. आमेतः<sup>११</sup>  
 ९१. सवाभ्यां वामौ  
 ९२. आडुत्तमस्य<sup>१२</sup> पिच्च  
 ९३. एत ऐ  
 ९४. लेटो<sup>१३</sup> ऽडाटौ  
 ९५. आत ऐ<sup>१४</sup>  
 ९६. वै<sup>१५</sup> तोऽन्यत्र  
 ९७. इतश्च लोपः<sup>१६</sup> परस्मैपदेषु

### विमर्श

१-‘कर्तरि’ की अनुवृत्ति ३।४।६९। तक जायेगी। २-यहाँ से ‘कर्मणि भावे चाकर्मकेभ्यः’ की अनुवृत्ति ३।४।७२। तक जायेगी। ३-यहाँ से ‘क्तः कर्तरि’ की अनुवृत्ति ३।४।७२। तक जाती है। ४-इस सूत्र का अधिकार ३।४।११७। तक जाता है। ५-यहाँ से ‘टितः’ की अनुवृत्ति ३।४।८०। तक जाती है। ६-‘लिटः’ की अनुवृत्ति ३।४।८२। तक जायेगी। ७-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ३।४।८४। तक जायेगी। ८-‘लटो वा’ की अनुवृत्ति ३।४।९३। तक जाती है। ९-यहाँ से ‘लोटः’ की अनुवृत्ति ३।४।९३। तक जाती है। १०-‘सेह्यपित्’ की अनुवृत्ति ३।४।८८। तक जाती है। ११-‘एतः’ की अनुवृत्ति ३।४।९१। तक जाती है। १२-‘उत्तमस्य’ की अनुवृत्ति ३।४।९३। तक जायेगी। १३-इस सूत्र से ‘लेटः’ की अनुवृत्ति ३।४।९८। तक जाती है। १४-यहाँ से ‘ऐ’ की अनुवृत्ति ३।४।९६। तक जायेगी। १५-‘वा’ की अनुवृत्ति ३।४।९८। तक जाती है। १६-‘लोपः’ की अनुवृत्ति ३।४।१००। तक जाती है।

९८. स उत्तमस्य <sup>१</sup>	१०९. सिज <sup>६</sup> भ्यस्तविदिभ्यश्च
९९. नित्यं डितः <sup>२</sup>	११०. आतः <sup>७</sup>
१००. इतश्च	१११. लङः शाकटायनस्यैव <sup>८</sup>
१०१. तस्थस्थमिपां तान्तन्तामः	११२. द्विषश्च
१०२. लिङः <sup>३</sup> सीयुट्	११३. तिङ्शित्सार्वाधातुकम्
१०३. यासुट्परस्मैपदेषूदात्तो <sup>४</sup> डिच्च	११४. आर्धधातुकं <sup>९</sup> शेषः
१०४. किदाशिषि	११५. लिट् च
१०५. झस्य रन्	११६. लिङाशिषि
१०६. इटोऽत्	११७. छन्दस्युभयथा
१०७. सुट् तिथोः	(धातुसंबन्धे समानाधिकरणे स्वाङ्गे
१०८. झेर्जुस् <sup>५</sup>	लिटस्तस्थस्थमिपां सप्तदश।।)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे तृतीयस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायश्च।



### विमर्श

१-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ३।४।९९। तक जायेगी। २-यहाँ से 'नित्यम्' की अनुवृत्ति ३।४।१००। तक तथा 'डितः' की ३।४।१०१। तक जायेगी। ३-यहाँ से 'लिङः' की अनुवृत्ति ३।४।१०८। तक जाती है। ४-'यासुट्परस्मैपदेषूदात्तः' की अनुवृत्ति ३।४।१०४। तक जाती है। ५-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ३।४।११२। तक जाती है। ६-'सिजः' की अनुवृत्ति ३।४।११०। तक जाती है। ७-'आतः' की अनुवृत्ति ३।४।१११। तक जायेगी। ८-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ३।४।११२। तक जायेगी। ९-यहाँ से 'आर्धधातुकम्' की अनुवृत्ति ३।४।११७। तक जाती है।



## अथ चतुर्थोऽध्यायः

### प्रथमः पादः

- |  |   |
|--|---|
| १. ड्याप्रातिपदिकात् <sup>१</sup>  | (वा०) वनो न हश इति वक्तव्यम्।   |
| २. स्वौजसमौट्छष्टाभ्याम्भिस्ङेभ्या-<br>भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्ङसोसाम्ङ्योस्सुप्  | (वा०) बहुलं छन्दसि।<br>(वा०) बहुव्रीहौ वा।  |
| ३. स्त्रियाम् <sup>२</sup>   | ८. पादोऽन्यतरस्याम्   |
| ४. अजाद्यतष्टाप्   | ९. टाबृचि   |
| ४५. अजा एडका कोकिला चटका अश्वा<br>मूषिका बाला होढा पाका वत्सा मन्ता बिलाता<br>पूर्वापिहाणा (पूर्वापहाणा) अपरापहाणां।<br>(‘सम्’स्त्राजिनशणपिण्डेभ्यः फलात्’ ३७)<br>(‘स’दच्काण्डप्रान्तशतैकेभ्यःपुष्पात्’ ३८)<br>(‘शूद्रा चामहतपूर्वा जातिः’ ३९) क्रुञ्चा<br>उष्णिहा देवविशा । ज्येष्ठा कनिष्ठा मध्यमा<br>पुंयोगेऽपि।(मूला <sup>३</sup> त्रजः’ ४०) दंष्ट्रा (‘त्रिफला<br>त्र्यनीका द्विगौ’ ४१)-एतेऽजादयः।। | १०. न <sup>४</sup> षट्स्वस्त्रादिभ्यः<br>४६. स्वसृ दुहितृ ननानृ यातृ मातृ तिसृ<br>चतसृ इति स्वस्त्रादिः।।<br>११. मनः<br>१२. अनो बहुव्रीहेः<br>१३. डाबुभाभ्यामन्यतरस्याम्<br>१४. अनुपर्सजनात् <sup>५</sup><br>१५. टिड्ढाणज्द्वयसज्दध्नज्मात्रच्त-<br>यष्ठक्ठञ्क्वरपः<br>(वा०) नञ्सन्जीककख्युंस्तरुण-<br>तलुनानामुपसंख्यानम्।<br>१६. यजश्च <sup>६</sup><br>(वा०) आपत्यग्रहणं कर्तव्यम्।<br>१७. प्राचां ष्फ <sup>७</sup> तद्धितः |
| (वा०) शूद्रा चामहतपूर्वा जातिः।  |   |
| ५. ऋन्नेभ्यो ङीप् <sup>३</sup>   |   |
| ६. उगितश्च   |   |
| (वा०) धातोरुगितः प्रतिषेधः।  |   |
| (वा०) अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्   |   |
| ७. वनो र च   |   |

### विमर्श

१-इस समस्त सूत्र का अधिकार ५।४।१६०। तक जाता है। २-इस सूत्र का अधिकार ‘समर्थानां प्रथमाद्वा’ (४।१।८२।) से पूर्व तक जायेगा। इस ‘स्त्रियाम्’ के अधिकार में ‘ड्याप्रातिपदिकात्’ इस सम्पूर्ण सूत्र का अधिकार होने पर भी केवल प्रातिपदिकात् का ही आगे के स्त्रीप्रत्यय विधायक सूत्रों में सम्बन्ध बैठता है, ‘ड्याप्’ का नहीं, क्योंकि ङी आप् का विधान तो इन्हीं सूत्रों से होता है। ३-इस सूत्र से ‘ङीप्’ की अनुवृत्ति ४।१।२४। तक जायेगी। ४-‘पादः’ की अनुवृत्ति ४।१।९। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से ‘न’ की अनुवृत्ति ४।१।१२। तक जाती है। ६-इस सूत्र का अधिकार ४।१।८१। तक जाता है। ७-इस सूत्र से ‘यजः’ की अनुवृत्ति ४।१।१८। तक जाती है। ८-इस सूत्र से ‘ष्फ तद्धितः’ की अनुवृत्ति ४।१।१९। तक जायेगी।

- (वा०) आसुरेरुपसंख्यानम्। (वा०) अजसादिष्विति वक्तव्यम्।  
 १८. सर्वत्र लोहितादिकतन्तेभ्यः ३२. अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक्  
 १९. कौरव्यमाण्डूकाभ्यां च (वा०) अन्तर्वत्पतिवदिति गर्भ-  
 २०. वयसि प्रथमे भर्तृसंयोगे।  
 (वा०) वयस्यचरम इति वाच्यम्। ३३. पत्युर्नो<sup>१</sup>यज्ञसंयोगे  
 २१. द्विगोः<sup>२</sup> ३४. विभाषा सपूर्वस्य  
 २२. अपरिमाणबिस्ताचितकम्बल्येभ्यो ३५. नित्यं सपत्न्यादिषु  
 न तद्धितलुकि<sup>३</sup> ४७. समान एक वीर पिण्डश्च (शिरी) भ्रातृ  
 २३. काण्डान्तात्क्षेत्रे भद्र पुत्र दासाच्छन्दसि॥ इति समानादिः॥  
 २४. पुरुषात्प्रमाणेऽन्यतरस्याम् ३६. पूतक्रतोरै<sup>४</sup> च  
 २५. बहुव्रीहेरुधसो<sup>५</sup> डीष् ३७. वृषाकप्यग्निकुसितकुसिदाना-  
 २६. संख्याव्ययादेर्डीप्<sup>६</sup> मुदात्तः<sup>७</sup>  
 २७. दामहायनान्ताच्च ३८. मनोरौ वा<sup>१०</sup>  
 (वा०) वयोवाचकस्यैव हायनशब्दस्य ३९. वर्णादनुदात्ता<sup>११</sup>त्तोपधात्तो नः  
 डीप् णत्वं चेष्यते। (वा०) असितपलितयोर्न।  
 २८. अन उपधालोपिनो<sup>१२</sup>ऽन्यतरस्याम् (वा०) छन्दसि क्नमेके।  
 २९. नित्यं संज्ञाच्छन्दसोः<sup>६</sup> (वा०) पिशङ्गादुपसंख्यानम्।  
 ३०. केवलमामकभागधेयपापापर- ४०. अन्यतो डीष्<sup>१२</sup>  
 समानार्यकृतसुमङ्गलभेषजाच्च ४१. षिद्-गौरादिभ्यश्च  
 ३१. रात्रेश्चाजसौ ४८. गौर मत्स्य मनुष्य शृङ्ग पिङ्गल हय  
 गवय मुकय ऋष्य (पुट तूण) द्रुण द्रोण

### विमर्श

१-‘द्विगोः’ की अनुवृत्ति ४।१।२४। तक जायेगी। २-इस सूत्र से ‘न तद्धितलुकि’ की अनुवृत्ति भी ४।१।२४। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से ‘बहुव्रीहेः’ की अनुवृत्ति ४।१।२९। तक तथा ‘ऊधसः’ की अनुवृत्ति ४।१।२६। तक जाती है। ४-इस सूत्र से ‘संख्याव्ययादेः’ की अनुवृत्ति ४।१।२७। तक तथा ‘डीप्’ की अनुवृत्ति ४।१।३९। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से ‘अन उपधालोपिनः’ की अनुवृत्ति ४।१।२९। तक जायेगी। ६-‘संज्ञाच्छन्दसोः’ की अनुवृत्ति ४।१।३१। तक जाती है। ७-इस सूत्र से ‘पत्युर्नः’ की अनुवृत्ति ४।१।३५। तक जाती है। ८-इस सूत्र से ‘ऐ’ की अनुवृत्ति ४।१।३८। तक जायेगी। ९-‘उदात्तः’ की भी अनुवृत्ति ४।१।३८। तक जायेगी। १०-इस सूत्र से ‘वा’ की अनुवृत्ति ४।१।३९। तक जाती है। ११-इस सूत्र से ‘वर्णादनुदात्तात्’ की अनुवृत्ति ४।१।४०। तक जाती है। १२-इस सूत्र से ‘डीष्’ की अनुवृत्ति ४।१।६५। तक जायेगी।



हरिण कोकण (काकण) पटर उणक [आमल] (आमलक) कुवल बिम्ब बदर फर्करक (कर्कर) तर्कर शर्कार पुष्कर शिखण्ड सलद शष्कण्ड सनन्द सुषम सुषव अलिन्द गडुल षाण्डश आढक आनन्द आश्वत्थ सृपाट आखक (अपच्चिक) शष्कुल सूर्य (सूर्म) शूर्प सूच यूष (पूष) यूथ सूप मेथ वल्लक धातक सल्लक मालक मालत साल्वक वेतस वृक्ष (वृस) अतस [उभय] भृङ्ग मह मठ छेद पेश मेद श्वन् तक्षन् अनडुही अनड्वाही। 'एषणः करणे' ४२। देह देहल काकादन गवादन तेजन रजन लवण औद्राहमानि (आद्राहमानि) गौतम (गोतम्) [पारक] अयस्थूण (अयःस्थूण) भौरिकि भौलिकि भौलिङ्गियान मेध आलम्बि आलजि आलब्धि आलक्षि केवाल आपक आरट नट टोट नोट मूलाट शातन [पोतन] पातन पाठन (पानठ) आस्तरण अधिकरण अधिकार अग्रहायणी (आग्रहायणी) प्रत्यवरोहिणी [सेचन] 'सुमङ्गलात्संज्ञायाम्' ४३। अण्डर सुन्दर मण्डल मन्थर मङ्गल पट पिण्ड (षण्ड) उर्द गुर्द शम सूद औड (आर्द्र)हृद (हृद) पाण्ड (भाण्डल) भाण्ड (लोहाण्ड) कदर कन्दर कदल तरुण तलुन कल्माष बृहत् महत् (सोम) सौधर्म। 'रोहिणी नक्षत्रे' ४४। 'रेवती नक्षत्रे' ४५। विकल निष्कल पुष्कल। 'कटाच्छ्रोणिवचने' ४६। 'पिप्पल्यादयश्च' ४७। पिप्पली हरितकी (हरीतकी) कोशातकी शमी वरी शरी पृथिवी क्रोष्टु मातामह पितामह-इति गौरादिः॥

४२. जानपदकुण्डगोणस्थलभाजना-  
गकालनीलकुशकामुककबरादृत्यमत्राव-

पनाकृत्रिमाश्राणास्थौल्यवर्णनाच्छादनायो-  
विकारमैथुनेच्छाकेशवेशेषु  
(वा०) नीलादोषधौ प्राणिनि च।

(वा०) संज्ञायां वा।

४३. शोणात्प्राचाम्

४४. वोतो<sup>१</sup> गुणवचनात्

(वा०) गुणवचनात् डीबाद्युदात्तार्थम्

(वा०) खरुसंयोगोपधान।

४५. बह्वादिभ्यश्च<sup>२</sup>

४९. बहु पद्धति अञ्चति अङ्कति अंहति शकटि (शक्ति)। 'शक्तिः शस्त्रे' ४८। शारि वारि रति राधि (शाधि) अहि कपि यष्टि मुनि। 'इतः। प्राण्यङ्गात्' ४९। 'कृदिकारादक्तिनः' ५०। 'सर्वतोऽक्तित्रयादित्येके' ५१। चण्ड अराल कृपण कमल विकट विशाल विशङ्कट भरुज ध्वज। 'चन्द्रभागान्नद्याम्' ५२। (चन्द्रभागा नद्याम्)। कल्याण उदार पुराण अहन् क्रोड नख खुर शिखा बाल शफ गुद-आकृतिगणोऽयम्। तेन भग गल राग इत्यादि। इति बह्वादयः॥

४६. नित्यं छन्दसि<sup>३</sup>

४७. भुवश्च

४८. पुंयोगा<sup>४</sup>दाख्यायाम्

(वा०) पालकान्तान्न।

(वा०) सूर्यदेवतायां चाप्।

४९. इन्द्रवरुणभवशर्वरुद्रमृडहिमार-  
ण्ययवयवनमातुलाचार्याणामानुक्  
(वा०) हिमारण्ययोर्महत्त्वे।

विमर्श

१- 'वा' की अनुवृत्ति ४।१।४५। तक जाती है। २- यहाँ से 'बह्वादिभ्यः' की अनुवृत्ति ४।१।४६। तक जायेगी। ३- इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ४।१।४७। तक जाती है। ४- इस सूत्र से 'पुंयोगात्' की अनुवृत्ति ४।१।४९। तक जायेगी।

- (वा०) यवाद्दोषे। ५६. न<sup>६</sup>क्रोडादिबह्वचः  
 (वा०) यवनाल्लिप्याम्। ५०. क्रोड नख खुर गोखा उखा शिखा  
 (वा०) मातुलोपाध्याययोरानुग्वा। बाल शप गुद-आकृतिगणोऽयम् ।।इति  
 (वा०) मुद्रलाच्छन्दसि लिच्च। क्रोडादयः।।  
 (वा०) आचार्यादणत्वं च। ५७. सहनज्विघमानपूर्वाच्च  
 (वा०) अर्यक्षत्रियाभ्यां वा। ५८. नखमुखात्संज्ञायाम्  
 ५०. क्रीतात्करणपूर्वात्<sup>१</sup> ५९. दीर्घजिह्वी च च्छन्दसि<sup>२</sup>  
 ५१. क्तादल्पाख्यायाम्<sup>३</sup> ६०. दिक्पूर्वपदान्डीप्  
 ५२. बहुव्रीहेश्चान्तोदात्तात्<sup>३</sup> ६१. वाहः  
 (वा०) जातान्तात्। ६२. सख्यशिश्वीति भाषायाम्  
 (वा०) पाणिगृहीती भार्यायाम्। ६३. जाते<sup>४</sup>रस्त्रीविषयादयोपधात्  
 (वा०) बहुलं संज्ञाच्छन्दसोः। (वा०) योपधप्रतिषेधे गवयहयमुकय-  
 (वा०) अन्तोदात्तादबहुनञ्सुकाल- मनुष्यमत्स्यानामप्रतिषेधः।  
 सुखादिपूर्वात्। ६४. पाककर्णपर्णपुष्पफलमूलवालोत्तर-  
 (वा०) जातिपूर्वादिति वक्तव्यम्। पदाच्च  
 ५३. अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वा<sup>५</sup> (वा०) सदच्चाण्डप्रान्तशतैकेभ्यः  
 ५४. स्वाङ्गाच्चोपसर्जनादसंयोगोपधात्<sup>५</sup> पुष्पात्प्रतिषेधः।  
 ५५. नासिकोदरौष्ठजङ्घादन्तकर्ण- (वा०) संभस्त्राजिनशणपिण्डेभ्यः  
 शृङ्गाच्च फलात्।  
 (वा०) पुच्छाच्च। (वा०) मूलान्नजः।  
 (वा०) कबरमणिविषशरेभ्यो नित्यम्। (वा०) श्वेताच्च ।  
 (वा०) उपमानात्पक्षाच्च पुच्छाच्च ६५. इतो मनुष्यजातेः<sup>६</sup>  
 ६६. ऊङुतः<sup>७</sup>

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'करणपूर्वात्' की अनुवृत्ति ४।१।५१। तक जाती है। २-यहाँ से 'क्तान्तात्' की अनुवृत्ति ४।१।५३। तक जायेगी। ३-इस अशेष सूत्र की भी अनुवृत्ति ४।१।५३। तक जायेगी। ४-यहाँ से 'वा' की अनुवृत्ति ४।१।५५। तक जाती है। ५-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ४।१।५८। तक जाती है। ६-यहाँ से 'न' की अनुवृत्ति ४।१।५८। तक जाती है। ७-'च्छन्दसि' की अनुवृत्ति ४।१।६१। तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'जातेः' की अनुवृत्ति ४।१।६४। तक जायेगी। ९-यहाँ से 'मनुष्यजातेः' की अनुवृत्ति ४।१।६६। तक जाती है। १०-इस सूत्र से 'ऊङ्' की अनुवृत्ति ४।१।७२। तक जायेगी।



- (वा०) अप्राणिजातेश्वारज्ज्वादीनामुप-  
संख्यानम्।  
६७. बाह्वन्तात्संज्ञायाम्  
६८. पङ्गोश्च  
(वा०) श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च।  
६९. ऊरुत्तरपदा<sup>१</sup>दौपम्ये  
७०. संहितशफलक्षणवामादेश्च  
(वा०) सहितसहाभ्यां चेति वक्तव्यम्।  
७१. कद्रुकमण्डत्वोश्छन्दसि<sup>२</sup>  
(वा०) गुग्गुलुमधुजतुपतयालूनामिति  
वक्तव्यम्।  
७२. संज्ञायाम्  
७३. शार्ङ्गरवाद्यजो डीन्  
५१. शार्ङ्गरव कापटव गौगुलव ब्राह्मण वैद  
गौतम कामण्डलेय ब्राह्मणकृतेय (आनिचेय)  
आनिधेय आशोकेय वात्स्यायन मौञ्जायन  
कैकस काप्य (काव्य) शैव्य एहि पर्येहि  
आश्मरथ्य औदपान अराल चण्डाल वतण्ड  
भोगवद्गौरिमतोः संज्ञायां घादिषु नित्यं  
ह्रस्वार्थम् ५३। 'नृनरयोर्वृद्धिश्च' ५४। इति  
शार्ङ्गरवादिः।।  
७४. यङश्चाप्<sup>३</sup>  
(वा०) षाद्यञश्चाप् वक्तव्यः।  
७५. आवट्याच्च  
७६. तद्धिताः<sup>४</sup>  
७७. यूनस्तिः  
७८. अणिजोरनार्षयोगुरुपोत्तमयोः  
ष्यङ्गोत्रे<sup>५</sup>  
७९. गोत्रावयवात्  
८०. क्रौड्यादिभ्यश्च  
५२. क्रौडि लाडि व्याडि आपिशलि आपक्षिति  
चौपयत चैटयत (वैटयत) सैकयत वैत्वयत  
सौधातकि 'सूत युवत्याम्' ५५। 'भोज क्षत्रिये'  
५६। यौतकि कौटि भौरिकि भौलिकि  
[शाल्मलि] शालास्थलि कापिष्ठलि गौकक्ष्य-  
इति क्रौड्यादिः।।  
८१. दैवयज्ञिशौचिवृक्षिसात्यमुग्रि-  
काण्डेविद्धिभ्योऽन्यतरस्याम्  
८२. समर्थानां प्रथमाद्वा<sup>६</sup>  
८३. प्राग्दीव्यतोऽण्<sup>७</sup>  
८४. अश्वपत्यादिभ्यश्च

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'ऊरुत्तरपदात्' की अनुवृत्ति ४।१।७०। तक जायेगी। २-'कद्रुकमण्डत्वोः' की अनुवृत्ति ४।१।७२। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'चाप्' की अनुवृत्ति ४।१।७५। तक जाती है। ४-इस सूत्र का अधिकार ५।४।१६०। तक जाता है। ५-इस सूत्र से 'ष्यङ्' की अनुवृत्ति ४।१।८१। तक, 'गोत्रे' की अनुवृत्ति ४।१।८०। तक, तथा 'अणिजोः' की ४।१।७९। तक जायेगी। ६-इस सूत्र का अधिकार ५।२।१४०। तक जाता है। ७-इस सूत्र से 'अण्' प्रत्यय का अधिकार 'तेन दीव्यति खनति' (४।४।२।) से पूर्व तक जायेगा। यहाँ ज्ञातव्य है कि अण् प्रत्यय की उत्पत्ति उत्सर्ग सूत्रों में ही होगी, अपवाद सूत्रों में नहीं। प्राग्दीव्यतः तक जितने अर्थों में प्रत्यय कहे हैं, उनमें मुख्य-मुख्य अर्थनिर्देशक सूत्रों को हम यहाँ पाठकों की सुविधा के लिए परिगणित कर रहे हैं- तस्यापत्यम् (४।२।९२), तेन रक्तं रागात् (४।२।११), संस्कृतं भक्षाः (४।२।१५।), सास्य देवता (४।२।२३।), तस्य समूहः (४।२।३६।), तदधीते तद्वेद (४।२।५८।), तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि (४।२।६६।), तेन निर्वृत्तम् (४।२।६७।), तस्य निवासः (४।२।६८।), अदूरभवश्च (४।२।६९।), तत्र जातः (४।३।२५।), तत्र भवः (४।३।५३।), तस्य व्याख्यान इति च० (४।३।६६।), तेन प्रोक्तम् (४।३।१०१।), तस्येदम् (४।३।१२०।), तस्य विकारः (४।३।१३२।)।

५३. अश्वपति (ज्ञानपति) शतपति धनपति  
गणपति [स्थानपति यज्ञपति] राष्ट्रपति कुलपति  
गृहपति (पशुपति) धान्यपति धन्वपति  
(बन्धुपति धर्मपति) सभापति प्राणपति  
क्षेत्रपति- इत्यश्वपत्यादिः॥

८५. दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्यः  
(वा०) वाङ्मतिपितृमतां छन्दस्युप-  
संख्यानम्।

(वा०) यमाच्चेति काशिकायाम्।

(वा०) पृथिव्या जायौ।

(वा०) देवाद्यजयौ।

(वा०) बहिषष्टिलोपो यञ्च ईकक् च

(वा०) ईकञ् छन्दसि।

(वा०) स्थाम्नोऽकारः।

(वा०) लोम्नोऽपत्येषु बहुष्वकारो  
वक्तव्यः।

(वा०) गोरजादिप्रसङ्गे यत्।

८६. उत्सादिभ्योऽञ्

५४. उत्स उदपान विकर विनद महानद  
महानस महाप्राण तरुण तलुन। बष्कयासे।  
पृथिवी (धेनु) पङ्क्ति जगती त्रिष्टुप् अनुष्टुप्  
जनपद भरत उशीनर ग्रीष्म पीलकुण।  
'उदस्थान देशे' ५७। पृषदंश भल्लकीय  
रथन्तर मध्यंदिन बृहत् महत् सत्वत् कुरु  
पञ्चाल इन्द्रावसान उष्णिह् ककुभ् सुवर्ण  
देव। 'ग्रीष्मादच्छन्दसि' ५८-इत्युत्सादिः॥

८७. स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्सनञौ भवनात्<sup>१</sup>

८८. द्विगोलुगनपत्ये

८९. गोत्रेऽलुगचि<sup>२</sup>

९०. यूनि लुक्<sup>३</sup>

९१. फक्फिजोरन्यतरस्याम्

९२. तस्यापत्यम्<sup>४</sup>

९३. एको गोत्रे

९४. गोत्राद्यून्यस्त्रियाम्

९५. अत इज्<sup>५</sup>

९६. बाह्वादिभ्यश्च

५५. बाहु उपबाहु उपवाकु निवाकु शिवाकु  
वटाकु उपनिन्दु (उपविन्दु) वृषली वृकला  
चूडा बलाका मूषिका कुशला भगला (छगला)  
ध्रुवका [ध्रुवका] सुमित्रा दुर्मित्रा पुष्करसद्  
अनुहरत् देवशर्मन् अग्निशर्मन् [भद्रशर्मन्  
सुशर्मन्] कुनामन् (सुनामन्) पञ्चन् सप्तन्  
अष्टन्। 'अभितौजसः सलोपश्च' ५९।  
सुधावत् उदञ्च शिरस् माष शराविन् मरीची  
क्षेमवृद्धिन् शृङ्खलतोदिन् खरनादिन् नगरमर्दिन्  
प्राकारमर्दिन् लोमन् अजीगर्त कृष्ण युधिष्ठिर  
अर्जुन साम्ब गद प्रद्युम्न राम [उदङ्ग]। 'उदकः  
संज्ञायाम्' ६०। 'संभूयोऽम्भसोः सलोपश्च  
६१-आकृतिगणोऽयम् ॥ तेन सात्वकिः  
जाङ्घिः ऐन्दशर्मिः आजधेनविः इत्यादि। इति  
बाह्वादयः॥

९७. सुधातुरकङ् च

## विमर्श

१-'धान्यानां भवने क्षेत्रे खञ्' (५।२।१।) तक जिन अश्वों में प्रत्यय कहे हैं, उन सब  
अर्थों में स्त्री तथा पुंस् शब्द से यथासङ्ख्य करके नञ् तथा सनञ् प्रत्यय होते हैं। २-  
इस सूत्र से 'अचि' की अनुवृत्ति ४।१।९१ तक जाती है। ३-इस निखिल सूत्र की  
अनुवृत्ति भी ४।१।९१ तक जाती है। ४-इस सूत्र की अनुवृत्ति ४।१।१७६ तक  
जायेगी। ५-इस सूत्र से 'इज्' की अनुवृत्ति ४।१।९७ तक जायेगी।



(वा०) व्यासवरुडनिषादचण्डाल-  
बिम्बानां चेति वक्तव्यम्।

१८. गोत्रे<sup>१</sup> कुञ्जादिभ्यश्चफञ्

५६. कुञ्ज ब्रध्न शङ्ख भस्मन् गण लोमन्  
शठ शाक शुण्डा शुभ विपाश् स्कन्द स्कम्भ  
-इति कुञ्जादिः॥

१९. नडादिभ्यः फक्<sup>२</sup>

५७. नड चर (वर) बक मुञ्ज इतिक इतिश  
उपक (एक) लमक। 'शलङ्कु शलङ्कं च'  
६२। सप्तल वाजप्य तिक। 'अग्निशर्मन्वृष-  
गणे' ६३। प्राण नर सायक दास मित्र द्वीप  
पिङ्गर पिङ्गल किङ्कर किङ्कल (कातर) कातल  
काश्यप (कुश्यप) काश्य काल्य (काव्य)  
अज अमुष्य (अमुष्म)। 'कृष्णरणौ ब्राह्मण-  
वासिष्ठे' ६४। अमित्र लिगु चित्र कुमार।  
'क्रोष्टु क्रोष्टं च' ६५। लोह दुर्ग स्तम्भ  
शिंशपा अग्र तृण शकट सुमनस् सुमत  
मिमत् ऋच् जलंधर अध्वर युगंधर हंसक  
दण्डिन् हस्तिन् (पिण्ड) पञ्चाल चमसिन्  
सुकृत्य स्थिरक ब्राह्मण चटक बदर अश्वल  
खरप लङ्क इन्ध अस्त्र कामुक ब्रह्मदत्त उदुम्बर  
शोण अलोह दण्डप-इति नडादिः॥

१००. हरितादिभ्योऽजः

१०१. यजिजोश्च

१०२. शरद्वच्छुनकदर्भाद्भृगुवत्सा-  
प्रायणेषु

१०३. द्रोणपर्वतजीवन्तादन्यतरस्याम्

१०४. अनृष्यानन्तर्ये विदादिभ्योऽञ्

५८. बिद उर्व कश्यप कुशिक भरद्वाज उपमन्यु  
किलात कन्दर्प (किंदर्भ) विश्वानर ऋषिषेण  
(ऋष्टिषेण) ऋतभाग हर्यश्च प्रियक आपस्तम्ब  
कूचवार शरद्वत् शुनक (शुनक्) धेनु गोपवन  
शिग्रु बिन्दु [भोगक] भाजन [शामिक]  
अश्वावतान श्यामक [श्यावलि] श्यापर्ण  
हरित किंदास बह्मस्क अर्कजूष (अर्कलूष)  
बध्योग विष्णु वृद्ध प्रतिबोध रचित रथीतर  
(रथन्तर) गविष्ठिर निषाद [शबर अलस]  
मठर (मृडाकु) सृपाकु, मृदु, पुनर्भू, पुत्र,  
दुहितृ ननान्द। 'परस्त्री परशुं च' ६६। इति  
विदादिः॥

१०५. गर्गादिभ्यो यञ्<sup>३</sup>

५९. गर्ग वत्स। 'वाजासे' ६७। संकृति अज  
व्याघ्रपात् विदभृत् प्राचीनयोग [अगस्ति]  
पुलस्ति चमस रेभ अग्निवेश शङ्ख शट  
शक एक धूम अवट मनस् धनञ्जय वृक्ष  
विश्वामसु जरमाण लोहित शंसित बभ्रु वल्गु  
मण्डु गण्डु शङ्ख लिगु गुहलु मन्तु मङ्क्षु  
अलिगु जिगीषु मनु तन्तु मनायी सूनु कथक  
कथक ऋक्ष तृक्ष (वृक्ष) [तनु] तरुक्ष तलुक्ष  
तण्ड वतण्ड कपिकत (कपि कत) कुरुकत  
अनुडुह कण्व शकल गोकक्ष अगस्त्य  
कण्डिनी यज्ञवल्क पर्णवल्क अभयजात  
विरोहित वृषगण रहूगण शण्डिल वर्णक  
(चणक) चुलुक मुदगल मुसल जमदग्नि  
पराशर जतूकर्ण (जातूकर्ण) महित मन्त्रित  
अश्मरथ शर्कराक्ष पूतिमाष स्थूरा अदरक  
(अररक) एलाक पिङ्गल कृष्ण (लो) गोलन्द  
अलूक तितिक्ष भिषज (भिषज्) [भिषणज]

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'गोत्रे' की अनुवृत्ति ४।१।१११। तक जाती है। २-'फक्' की अनुवृत्ति ४।१।१०३। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से 'यञ्' की अनुवृत्ति ४।१।१०९। तक जाती है।

भडित भण्डित दल्भ चेकित चिकित्सित  
देवहू इन्द्रहू एकलू पिप्पलू वृहदग्नि [सुलोहिन्]  
सुलाभिन् उक्थ कुटीगु-इति गर्गादिः॥

१०६. मधु-बभ्रोर्ब्राह्मण-कौशिकयोः

१०७. कपिबोधादाङ्गिरसे<sup>१</sup>

१०८. वतण्डाच्च<sup>२</sup>

१०९. लुक्स्त्रियाम्

११०. अश्वादिभ्यः फञ्<sup>३</sup>

६०. अश्व अशमन् शङ्ख शूद्रक विद पुट  
रोहिण खर्जूर (खजूर) [खञ्जार वस्त] पिञ्जूल  
भडिल भण्डिल भडित भण्डित [प्रकृत रामोद]  
क्षान्त [काश तीक्ष्ण गोलाङ्क अर्क स्वर स्फुट  
चक्र श्रविष्ठ] पविन्द पवित्र गोमिन् श्याम  
धूम । धूम्र वाग्मिन् विश्वानर कुट । 'शप  
आत्रेये' ६८ । जन जड खड ग्रीष्म अर्ह  
कित विशम्प विशाल गिरि चपल चुप दासक  
वैल्व (बैल्य) प्राच्य [धर्म्य] आनडुह्य । 'पुसि  
जाते ६९ । अर्जुन [प्रहता] सुमनस् दुर्मनस्  
मन (मनस्) (प्रान्त) ध्वन । 'आत्रेय  
भरद्वाजे' ७० । 'भरद्वाज आत्रेये' ७१ । उत्स  
आतव कितव [वद धन्य पाद] शिव खदिर  
-इत्यश्वादिः॥

१११. भर्गात् त्रैगते

११२. शिवादिभ्योऽण्<sup>४</sup>

६१. शिव प्रोष्ठ प्रोष्ठिक चण्ड जम्भ भूरिदण्ड  
कुठार ककुभ् (ककुभा) अनभिम्लान कोहित  
सुख सन्धि मुनि ककुत्स्थ कहोड कोहड  
कहूय कहय रोध कपिञ्जल (कुपिञ्जल) खञ्जन

वतण्ड तृणकर्ण क्षीरहृद जलहृद परिल  
(पथिक) पिष्ट हैहय (पार्षिका) गोपिका  
कपिलिका जटिलिका बधिरिका मञ्जीरक  
(मजिरक) वृष्णिक खञ्जार खञ्जाल (कर्मार)  
रेख लेख आलेखन विश्रवण रवण वर्तनाक्ष  
ग्रीवाक्ष (विटप पिटक) पिटाक तृक्षाक नभाक  
ऊर्णनाभ जरत्कारु (पृथा उत्क्षेप) पुरोहितिका  
सुरोहितिका सुरोहिका आर्यश्चेत (अर्यश्चेत)  
सुपिष्ट मसुरकर्ण मयूरकर्ण (खर्जुरकर्ण)  
कदूरक तक्षन् ऋष्टिषेण गङ्गा विपाश यरक  
लह्य द्रुह्य अयस्थूण तृणकर्ण (तृण कर्ण )  
पर्ण भलन्दन विरूपाक्ष भूमि इला सपत्नी ।  
'द्व्यचो नद्याः ' ७२ । 'त्रिवेणी त्रिवणं च'  
७३ । इति शिवादिः॥ आकृतिगणः॥

११३. अवृद्धाभ्यो नदीमानुषीभ्यस्तन्ना-  
मिकाभ्यः

११४. ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यश्च

११५. मातुरुत्संख्यासंभद्रपूर्वायाः

११६. कन्यायाः कनीन च

११७. विकर्णशुङ्गच्छगलाद्वत्स-  
भरद्वाजात्रिषु

११८. पीलाया वा

११९. ढक्च मण्डूकात्

१२०. स्त्रीभ्यो ढक्<sup>५</sup>

१२१. द्व्यचः<sup>६</sup>

१२२. इतश्चानिजः

१२३. शुभ्रादिभ्यश्च

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'आङ्गिरसे' की अनुवृत्ति ४।१।१०९। तक जायेगी। २-'वतण्डात्' की अनुवृत्ति भी ४।१।१०९। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से 'फञ्' की अनुवृत्ति ४।१।१११। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'अण्' की अनुवृत्ति ४।१।११९। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'स्त्रीभ्यः' की अनुवृत्ति ४।१।१२१। तक तथा 'ढक्' की ४।१।१२७। तक जायेगी। ६-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ४।१।१२२। तक जायेगी।



६२. शुभ्र विष्ट पुर (विष्टपुर) ब्रह्मकृत शतद्वार शलाथल शलाकाभू लेखाभू (लेखाभ्र) विकास (विकास) रोहिणी रुक्मिणी धर्मिणी दिश् शालूक अजबस्ति शकंधि विमातृ विधवा शुक विश देवतर शकुनि शुक्र उग्र ज्ञातल (रातल ) बन्धकी सूकण्डु विस्त्रि अतिथि गोदन्त कुशाम्ब मकष्टु शाताहर पवष्टुरिक सुनामन् । 'लक्ष्मणश्यामयोर्वीसिष्टे' ७४। गोधा कृकलास अणीब प्रवाहण भरत (भारत) भरम मूकण्डु कर्पूर इतर अन्यतर आलीढ भुदन्त सुदक्ष सुवक्षस् सुदामन् कद्रु तुद अकशाय कुमारिका कुठारिका किशोरिका अम्बिका जिह्वाशिन् परिधि वायुदन्त शकल शलाका खडूर कुबेरिका अशोका गन्धपिङ्गला खडोन्मत्ता अनुदृष्टिन् (अनुदृष्टि) जरतिन् बलीवर्दिन् विग्र बीज श्वन् अश्मन् अश्व अजिर।। इति शुभ्रादिः।। आकृतिगणः।।
१२४. विकर्णकुषीतकात्काश्यपे  
१२५. भ्रुवो वुक्च  
१२६. कल्याण्यादीनामिनङ् च  
६३. कल्याणी सुभगा दुर्भगा बन्धकी अनुदृष्टि अनुसृति (अनुसृष्टि) जरती बलीवर्दी ज्येष्ठा कनिष्ठा मध्यमा परस्त्री-इति कल्याण्यादिः।।  
१२७. कुलटाया वा  
१२८. चटकाया ऐरक्
- (वा०) चटकस्येति वाच्यम्।  
(वा०) स्त्रियामपत्ये लुक्  
१२९. गोधाया ढ्रक्<sup>३</sup>  
१३०. आरगुदीचाम्  
१३१. क्षुद्राभ्यो वा  
१३२. पितृष्वसुश्छण्<sup>३</sup>  
१३३. ढकि लोपः<sup>४</sup>  
१३४. मातृष्वसुश्च  
१३५. चतुष्पाद्भ्यो ढञ्<sup>५</sup>  
१३६. गृष्ट्यादिभ्यश्च  
६४. गृष्टि हृष्टि बलि हलि विश्रि कुद्रि अजवस्ति मित्रयु-इति गृष्ट्यादिः।।  
१३७. राजश्वशुराद्यत्  
(वा०) राज्ञो जातावेवेति वाच्यम्।  
१३८. क्षत्राद्धः  
१३९. कुलात्खः<sup>६</sup>  
१४०. अपूर्वपदादन्यतरस्यां<sup>७</sup> यङ्कजौ  
१४१. महाकूलादञ्खजौ  
१४२. दुष्कुलाङ्कक्  
१४३. स्वसुश्छः<sup>८</sup>  
१४४. भ्रातुर्व्यच्च

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'इनङ्' की अनुवृत्ति ४।१।१२७। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'गोधायाः' की अनुवृत्ति ४।१।१३०। तक तथा 'ढ्रक्' की अनुवृत्ति ४।१।१३१। तक जाती है। ३-यहाँ से 'पितृष्वसुः' की अनुवृत्ति ४।१।१३४। तक जाती है। ४-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ४।१।१३४। तक जाती है। ५-'ढञ्' की अनुवृत्ति ४।१।१३६। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'कुलात्' की अनुवृत्ति ४।१।१४०। तक जाती है। ७-'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ४।१।१४२। तक जायेगी। ८-यहाँ से 'छः' की अनुवृत्ति ४।१।१४४। तक जाती है। ९-'भ्रातुः' की अनुवृत्ति ४।१।१४५। तक जायेगी।

१४५. व्यन्सपत्ने

१४६. रेवत्यादिभ्यष्ठक्<sup>१</sup>

६५. रेवती अश्वपाली मणिपाली द्वारपाली वृकवञ्चिन् वृकबन्धु वृकग्राह कर्णग्राह दण्डग्राह कुक्कुटाक्ष (ककुदाक्ष) [चामरग्राह] इति रेवत्यादिः॥

१४७. गोत्रस्त्रियाः कुत्सने<sup>२</sup>ण च

१४८. वृद्धाट्क्सौवीरेषु बहुलम्<sup>३</sup>

१४९. फेश्छ च

१५०. फाण्टाहतिमिमताभ्यां णफिजौ

१५१. कुर्वादिभ्यो ण्यः<sup>४</sup>

६६. कुरु गर्गर मङ्गुष अजमार रथकार वावदूक। 'सम्राज क्षत्रिये' ७५। कवि मति (विमति) कापिञ्जलादि वाक् वामरथ पितृमत् इन्द्रजाली (इन्द्रलाजी) एंजि वातकि दामोष्णीषि गणकारि कैशोरि कुट शालाका (शालाका) मुर पुर एरका शुभ्र अग्र दर्भ केशिनी। 'वेनाच्छन्दसि' ७६। शूर्पणाय श्यावनाय श्यावरथ शावपुत्र सत्यंकार वडभीकार पथिकार मूढ शकन्धु शङ्ख शाक शालिन् शालीन कर्तृ हर्तृ इन पिण्डी तक्षन्। वामरथस्य कण्वादिवत्स्वरवर्जम् ॥ इति कुर्वादिः॥

१५२. सेनान्तलक्षणकारिभ्यश्च<sup>५</sup>

१५३. उदीचामिञ्

(वा०) तक्ष्णोऽण उपसंख्यानम्।

१५४. तिकादिभ्यः फिज्<sup>६</sup>

६७. तिक कितक (कितव) संज्ञाबालशिख (संज्ञा बाला शिखा) उरश (उरस्) शाठ्य सैन्धव यमुन्द रूप्य ग्राम्य नील अमित्र गौकुक्ष्य [गौकक्ष्य] कुरु देवरथ तैतल औरश (औरस) कौरव्य भौरिकि भौलिकि चौपयत चैटयत शीकयत क्षैतयत वाजवत चन्द्रमस् शुभ गङ्गा वरेण्य सुपामन् आरटव [आरब्ध] वह्मका खल्या [खल्यका] वृष लोमक उदन्य यज्ञ ॥ इति तिकादिः॥

१५५. कौसल्यकार्मार्याभ्यां च

(वा०) वदगुकोसलकर्मारिछागवृषाणां युक्त्वादिष्टस्य।

१५६. अणो द्व्यचः

१५७. उदीचां वृद्धादगोत्रात्<sup>७</sup>

१५८. वाकिनादीनां कुक्च<sup>८</sup>

६८. वाकिन गौधेर कार्कष काक लङ्का। 'चर्मिर्वर्मिर्णोर्नलोपश्च' ७७। इति वाकिनादिः॥

१५९. पुत्रान्तादन्यतरस्याम्

१६०. प्राचामवृद्धात्फिन्बहुलम्

१६१. मनोज्ञातावज्यतौ षुक्च

१६२. अपत्यं पौत्रप्रभृति<sup>९</sup> गोत्रम्

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'ठक्' की अनुवृत्ति ४।१।१४७। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'कुत्सने' की अनुवृत्ति ४।१।१४९। तक तथा 'गोत्रे' की ४।१।१५०। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से 'वृद्धात्' 'ठक्' की अनुवृत्ति ४।१।१४९। तक तथा 'सौवीरेषु बहुलम्' की ४।१।१५०। तक जाती है। ४-'ण्यः' की अनुवृत्ति ४।१।१५२। तक जायेगी। ५-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ४।१।१५३। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'फिज्' की अनुवृत्ति ४।१।१५९। तक जाती है। ७-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ४।१।१५९। तक जाती है। ८-'कुक्' की भी अनुवृत्ति ४।१।१५९। तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'अपत्यं पौत्रप्रभृति' की अनुवृत्ति ४।१।१६५। तक जाती है।



- (वा०) यूनश्च कुत्सायां गोत्रसंज्ञेति  
वाच्यम्।  
१६३. जीवति तु वंश्ये युवा<sup>१</sup>  
(वा०) वृद्धस्य च पूजायाम्।  
१६४. भ्रातरि च ज्यायसि  
१६५. वाऽन्यस्मिन्सपिण्डे स्थ<sup>२</sup>विरतरे  
जीवति  
१६६. जनपदशब्दात्क्षत्रियादञ्<sup>३</sup>  
(वा०) क्षत्रियसमानशब्दाज्जनपदात्तस्य  
राजन्यपत्यवत्।  
(वा०) पूरोरण् वक्तव्यः।  
(वा०) पाण्डोर्द्व्यण्।  
१६७. साल्वेयगान्धारिभ्यां च  
१६८. द्व्यञ्मगधकलिङ्गसूरमसादण्  
१६९. वृद्धेत्कोसलाजादाज्यङ्  
१७०. कुरुनादिभ्यो ण्यः  
१७१. साल्वावयवप्रत्यग्रथकलकूटा-  
श्मकादिञ्
१७२. ते तद्राजाः<sup>४</sup>  
१७३. कम्बोजाल्लुक्<sup>५</sup>  
(वा०) कम्बोजादिभ्य इति वक्तव्यम्।  
६९. कम्बोज चोल केरल शक यवन।।  
इति कम्बोजादिः।।  
१७४. स्त्रियाम्<sup>६</sup>वन्तिकुन्तिकुरुभ्यश्च  
१७५. अतश्च  
१७६. न प्राच्यभर्गादियौधेयादिभ्यः  
७०. भर्ग करुश केकय कश्मीर साल्व  
सुस्थाल उरश (उरस्) कौरव्य।। इति  
भर्गादिः।।  
७१. यौधेय शौक्रेय शौभ्रेय ज्यावाणेय धातेय  
(धौतेय) त्रिगर्त भरत उशीनर।। इति  
यौधेयादिः।  
(ङ्याब्दिगोः णिद्गौरादिवाहो  
दैवयज्ञियजिगोर्द्व्यचो महाकुलान्मनो-र्जातौ  
षोडश।।)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे चतुर्थस्याध्यायस्य प्रथमः पादः।



### विमर्श

१-‘जीवति युवा’ की अनुवृत्ति ४।१।१६५। तक जाती है। २-इस सूत्र के ‘स्थविर’ शब्द में तरप् प्रत्यय इसलिए लगाया गया है कि पद तथा आयु दोनों में जो बूढ़ा हो वही लिया जाय। प्रकृत सूत्र में जो ‘जीवति’ कहा, वह संज्ञी का विशेषण बनता है, तथा जो ‘जीवति’ अनुवृत्ति से आ रहा है, वह सपिण्ड का विशेषण बन जाता है। ३-इस सूत्र से ‘जनपदशब्दात् क्षत्रियात्’ की अनुवृत्ति ४।१।१७६। तक, तथा ‘अञ्’ की अनुवृत्ति ४।१।१६७। तक जाती है। ४-इस सूत्र से ‘तद्राजाः’ की अनुवृत्ति ४।१।१७६। तक जाती है। ५-‘लुक्’ की भी अनुवृत्ति ४।१।१७६। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से ‘स्त्रियाम्’ की अनुवृत्ति ४।१।१७६। तक जाती है।

## द्वितीयः पादः

- |  |  |
|--|--|
| १. तेन रक्तं रागात् <sup>१</sup>               | (वा०) न विद्यायाः।                               |
| २. लाक्षारोचनाट्टक्                            | (वा०) गोत्रादङ्कवत्।                             |
| (वा०) शकलकर्दमाभ्यामुपसंख्यानम्।               | ९. वामदेवाङ्गुयङ्गुयौ                            |
| (वा०) (शकलकर्दमाभ्यामणपीति काशिका।)            | १०. परिवृतो रथः <sup>२</sup>                     |
| (वा०) नील्या अङ्कवत्कव्यः।                     | ११. पाण्डुकम्बलादिनिः                            |
| (वा०) पीतात्कन्वक्तव्यः।                       | १२. द्वैपवैयाघ्रादङ्                             |
| (वा०) हरिद्रामहारजनाभ्यामङ्।                   | १३. कौमारापूर्ववचने                              |
| ३. नक्षत्रेण युक्तः कालः <sup>३</sup>          | १४. तत्रो <sup>४</sup> द्धृतममत्रेभ्यः           |
| ४. लुब <sup>५</sup> विशेषे                     | १५. स्थण्डिलाच्छयितरि व्रते                      |
| ५. संज्ञायां श्रवणाश्वत्थाभ्याम्               | १६. संस्कृतं भक्षाः <sup>६</sup>                 |
| ६. द्वन्द्वाच्छः                               | १७. शूलोखाद्यत्                                  |
| ७. दृष्टं साम <sup>७</sup>                     | १८. दध्नष्टक् <sup>८</sup>                       |
| ८. कलेर्ढक्                                    | १९. उदश्वितोऽन्यतरस्याम्                         |
| (वा०) सर्वत्राग्निकलिभ्यां ढक्कव्यः।           | २०. क्षीराङ्गु                                   |
| (वा०) अस्मिन्नर्थेऽण् डिद्वा वक्तव्यः।         | २१. साऽस्मिन्पौर्णमासीति <sup>९</sup>            |
| (वा०) जातार्थे प्रतिप्रसूतोऽण्वा डिद्वक्तव्यः। | २२. आग्रहायण्यश्वत्थाट्टक् <sup>१०</sup>         |
| (वा०) तीयादीकक् स्वार्थे वाच्यः।               | २३. विभाषा फाल्गुनीश्रवणाकार्तिकी-<br>चैत्रीभ्यः |
|  | २४. साऽस्य देवता <sup>११</sup>                   |

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'तेन' की अनुवृत्ति ४।२।१२। तक तथा 'रक्तं रागात्' की ४।२।२। तक जाती है। २-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ४।२।६। तक जाती है। ३-'लुप्' की अनुवृत्ति ४।२।५। तक जाती है। ४-यहाँ से 'दृष्टं साम' की अनुवृत्ति ४।२।९। तक जाती है। ५-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ४।२।१२। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'तत्र' की अनुवृत्ति ४।२।२०। तक जाती है। ७-इस अशेष सूत्र की अनुवृत्ति ४।२।२०। तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'ठक्' की अनुवृत्ति ४।२।१९। तक जायेगी। ९-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ४।२।२३। तक जाती है। १०-'ठक्' की भी अनुवृत्ति ४।२।२३। तक जाती है। ११-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ४।२।३५। तक जाती है।



२५. कस्येत् (वा०) तिलान्निष्फलात्पिञ्जपेजौ।  
 २६. शुक्राद्धन् (वा०) पिञ्जश्छन्दसि डिच्च।  
 २७. अपोनप्त्रपांनप्तृभ्यां घः ३७. तस्य समूहः  
 २८. छ च ३८. भिक्षादिभ्योऽण्  
 (वा०) छ-प्रकरणे पैङ्गाक्षिपुत्रादिभ्य उपसंख्यानम् ७२. भिक्षा गर्भिणी क्षेत्र करीष अङ्गार  
 (वा०) शतरुद्राद्ध च। (अङ्गार) चर्मिन् (चर्मन्) धर्मिन् सहस्र युवति  
 २९. महेन्द्राद्धाणौ च पदाति पद्धति अथर्वन् (भूत विषय श्रोत्र)।।  
 ३०. सोमाद्व्यण् इति भिक्षादिः।।  
 ३१. वाय्वृतुपित्रुषसो यत् ३९. गोत्रोक्षोष्टोरभ्रराजराजन्यराजपुत्र-  
 ३२. द्यावापृथिवीशुनासीरमरुत्वदग्नी- वत्समनुष्याजाद्वुज्  
 षोमवास्तोष्पतिगृहमेधाच्छ च (वा०) वृद्धाच्चेति वक्तव्यम्।  
 ३३. अग्नेर्दक् ४०. केदाराद्यञ्च  
 ३४. कालेभ्यो भववत् (वा०) गणिकाया यजिति वक्तव्यम्।  
 ३५. महाराजप्रोष्ठपदाद्वज् ४१. ठञ्क्वचिनश्च  
 (वा०) तदस्मिन्वर्तत इति नवयज्ञादिभ्य ४२. ब्राह्मणमाणवबाडवाद्यन्  
 उपसंख्यानम् (वा०) पृष्ठादुपसंख्यानम्।  
 (वा०) पूर्णमासादण्वक्तव्यः। (वा०) वातादूलो वा।  
 ३६. पितृव्यमातुलमातामहपितामहाः ४३. ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्  
 (वा०) पितुर्भ्रातरि व्यन्। (वा०) गजसहायाभ्यां चेति वक्तव्यम्।  
 (वा०) मातुर्दुलच्। (वा०) अह्नः खः क्रतौ।  
 (वा०) मातृपितृभ्यां पितरि डामहच्। (वा०) पश्चा णस् वक्तव्यः  
 (वा०) मातरि षिच्च। ४४. अनुदात्तादेरञ्  
 (वा०) अवेर्दुग्धे सोढदूसमरीसचो ४५. खण्डिकादिभ्यश्च  
 वक्तव्याः। ७३. खण्डिक वडवा। 'क्षुद्रक-डालवात्  
 (क्षुद्रकमालवात्) सेना संज्ञायाम् '७८।

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'अपोनत्त्रपांनप्तृभ्याम्' की अनुवृत्ति ४।२।२८। तक जाती है। २-'छ' की अनुवृत्ति ४।२।२९। तक जायेगी। ३-'यत्' की अनुवृत्ति ४।२।३२। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'तस्य' की अनुवृत्ति ४।२।५४। तक तथा 'समूहः' की अनुवृत्ति ४।२।५१। तक जायेगी। ५-यहाँ से 'वुज्' की अनुवृत्ति ४।२।४०। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'अञ्' की अनुवृत्ति ४।२।४५। तक जायेगी।

भिक्षुक शुक उलूक श्वन् अहन् युगवरत्रा  
(युगवरत्र) हलबन्धा (हलबन्ध) इति  
खण्डिकादिः॥

४६. चरणेभ्यो धर्मवत्

४७. अचित्तहस्तिधेनोष्ठक्

(वा०) धेनोरनञ् इति वक्तव्यम्।

४८. केशाश्वाभ्यां यञ्छावन्यतरस्याम्

४९. पाशादिभ्यो यः<sup>१</sup>

७४. पाश तृण धूम वात अङ्गार (पाटल)

पोत गल पिटक शकट हल (नट) वन

॥इति पाशादिः॥

५०. खलगोरथात्<sup>२</sup>

५१. इनि-त्र-कट्यचश्च

(वा०) खलादिभ्य इनिः।

७५. (वा २७३८)। खलिनी डूकिनी

(डाकिनी) कुदुम्बिनी (कुटुम्बिनी) द्रुमिणी

अङ्किनी गविनी रथिनी कुण्डलिनी ॥इति

खलादिः॥

५२. विषयो देशे<sup>३</sup>

५३. राजन्यादिभ्यो वुञ्

७६. राजन्य आनृत बाध्रव्य शालङ्कायन

दैवयातव (दैवयात) (अब्रीड वरत्रा) जालं-

धरायण (राजायन) तेलु आत्मकामेय

अम्बरीषपुत्र वसाति बैल्ववन शैलूष उदुम्बर

तीव्र बैल्वज आर्जुनायन संप्रिय दाक्षि ऊर्णनाभ

॥इति राजन्यादिः॥आकृतिगणः॥

५४. भौरिक्याद्यैषुकार्यादिभ्यो

विधल्भक्तलौ

७७. भौरिकी भौलिकी चौपयत चौटयत

(चेटयत) काणेय वाणिजक वाणिकाज्य

(वालिकाज्य) सैकयत वैकयत॥ इति

भौरिक्यादिः॥

७८. ऐषुकारि सारस्यायन (सारसायन)

चान्द्रायण द्व्याक्षायण त्र्याक्षायण औडायन

जौलायन खाडायन दासमित्रि दासमित्त्रायण

शौद्रायण दाक्षायण शापण्डायन (शायण्डा-

यन) ताक्ष्यायण शौभ्रायण सौवीर

(सौवीरायण) शपण्ड (शयण्ड) शौण्ड

शयाण्ड (शयाण्ड) वैश्वमानव वैश्वधेनव

(वैश्वध्येनव) नड तुण्डदेव विश्वदेव

(सापिण्ड) इत्यैषुकार्यादिः॥

५५. सोऽस्या<sup>४</sup>दिरिति छन्दसः प्रगाथेषु

(वा०) स्वार्थ उपसंख्यानम्।

५६. संग्रामे प्रयोजनयोद्धृभ्यः

५७. तदस्यां प्रहरणमिति क्रीडायां णः

५८. घञः साऽस्यां क्रियेति जः

५९. तदधीते तद्वेद<sup>५</sup>

६०. क्रतूक्थादि-सूत्रान्ताड्गुक्

७९. उक्थ लोकायत न्याय न्यास पुनरुक्त

निरुक्त निमित्त द्विपदा ज्योतिष अनुपद

अनुकल्प यज्ञ (धर्म) चर्चा क्रमेतर शलक्ष

(शलक्षण) संहिता पदक्रम संघट सङ्घट्ट वृत्ति

परिषद् संग्रह गण (गुण) आयुर्देव (आयुर्वेद)

॥इत्युक्थादिः॥

(वा०) मुख्यार्थात्तूक्थशब्दाड्गुणौ

नेष्येते।

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'यः' की अनुवृत्ति ४।२।५०। तक जाती है। २-यहाँ से 'खलगोरथात्' की अनुवृत्ति ४।२।५१। तक जाती है। ३-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ४।२।५४। तक जाती है। ४-'सोऽस्य' की अनुवृत्ति ४।२।५६। तक जाती है। ५-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ४।२।६६। तक जायेगी।



(वा०) विद्यालक्षणकल्पान्ताच्चेति वक्तव्यम्।	६६. छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि
(वा०) सूत्रान्तात्त्वकल्पादेरेवेष्यते।	६७. तदस्मिन्नस्तीति देशे तन्नाम्नि <sup>२</sup>
(वा०) अङ्गक्षत्रधर्मत्रिपूर्वाद्विद्यान्तान्नेति वक्तव्यम्।	६८. तेन निर्वृत्तम्
(वा०) आख्यानाख्यायिकेतिहास-पुराणेभ्यश्च।	६९. तस्य <sup>३</sup> निवासः
(वा०) सर्वादेः सादेश्च लुक्।	७०. अदूरभवश्च
(वा०) द्विगोश्च।	७१. ओरञ् <sup>४</sup>
(वा०) अनुसूर्लक्ष्यलक्षणे।	७२. मतोश्च बह्वज्जातः
(वा०) इकन्पदोत्तरपदात्।	७३. बह्वचः कूपेषु <sup>५</sup>
(वा०) शतषष्टेष्बिकन् पथः।	७४. उदक्च विपाशः
६१. क्रमादिभ्यो वुन्	७५. सङ्कलादिभ्यश्च
८०. क्रमं पद शिक्षा मीमांसा सामन् -इति क्रमादिः॥	८२. सङ्कल पुष्कल उत्तम उडुप उद्वेप उत्पुट कुम्भ निधान सुदक्ष सुदत्त सुभूत सुपूत सुनेत्र सुमङ्गल सुपिङ्गल सूत सिकत पूतिका (पूतिक) पूलास कूलास पलाश निवेश गवेश (गवेष) गम्भीर इतर आन् अहन् लोमन् वेमन् चरण (वरुण) बहुल सद्योज अभिषिक्त गोभृत् राजभृत् भल्ल मल्ल माल॥इति सङ्कलादिः॥
६२. अनुब्राह्मणादिनिः	७६. स्त्रीषु सौवीरसाल्वप्राक्षु
६३. वसन्तादिभ्यष्ठक्	७७. सुवास्त्वादिभ्योऽण् <sup>६</sup>
८१. वसन्त (ग्रीष्म) वर्षा शरद (शरत्) हेमन्त शिशिर प्रथम गुण चरम अनुगुण अथर्वन् आथर्वण ॥इति वसन्तादिः॥	८३. सुवास्तु (सुवस्तु) वर्णु भण्डु खण्डु सेवालिन् कर्पूरिन् शिखण्डिन् गर्त कर्कश शकटीकर्ण कृष्णकर्ण (कर्क) कर्कन्धुमती गोह अहिसक्थ॥इति सुवास्त्वादिः॥
६४. प्रोक्ताल्लुक् <sup>१</sup>	
६५. सूत्राच्च कोपधात्	

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'लुक्' की अनुवृत्ति ४।२।६५। तक, तथा 'प्रोक्तात्' की अनुवृत्ति ४।२।६६। तक जाती है। २-'देशे तन्नाम्नि' की अनुवृत्ति ४।२।७०। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'तस्य' की अनुवृत्ति ४।२।७०। तक जायेगी। ४-इस सूत्र से 'अञ्' की अनुवृत्ति ४।२।७६। तक जायेगी। अञ् आदि प्रत्यय सामान्यतया 'देशे' तन्नाम्नि' 'निर्वृत्तम्' 'निवासः' और 'अदूरभवः' -इन चारों अर्थों में विहित होने के कारण चातुरर्थिक कहाते हैं। इन चारों अर्थों का अधिकार 'शेषे' (४।२।९२।) के पूर्व तक जाता है। ५-यहाँ से 'कूपेषु' की अनुवृत्ति ४।२।७४। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'अण्' की अनुवृत्ति ४।२।७९। तक जाती है।

७८. रोणी

७९. कोपधाच्च

८०. वृञ्छणकठजिलसेनिरढञ्जय-  
यफक्फिजिञ्ज्यकवठकोऽरीहणकृशा-  
श्चश्यकुमुदकाशतृणप्रेक्षाश्मसखिसंका-  
शबलपक्षकर्णसुतङ्गमप्रगदिन्वराहकुमुदादिभ्यः  
८४अरीहण (अहीरण) द्रुगण द्रुहण भलग  
(भगल) उलन्द किरण सांपरायण क्रौष्टायन  
(क्रौष्टायण) औष्टायण त्रैगर्तायन मैत्रायण  
भास्त्रायण वैमत्तायन (वैमत्तायन) गौमत्तायन  
सौमत्तायन सौसायन धौमत्तायन सौमायन  
ऐन्द्रायण कौद्रायण (कौन्द्रायण) खाडायन  
शाण्डिल्यायन रायस्पोष विपथ विपाश  
उददण्ड (उदञ्चन) खाण्डवीरण वीरण  
काशकृत्स्न कृत्स्न (कशकृत्स्न) जाम्बवत  
शिंशपा रैवत (रेवत) बिल्व सुयज्ञ शिरीष  
बधिर जम्बु खदिर सुशर्मन् (सशर्मन् )  
दलतृ भलन्दन खण्डु कलन (कनल) यज्ञदत्त  
-इत्यरीहणादिः॥

८५. कृशाश्च अरिष्ट अरिश्म वेश्मन् विशाल  
लोमश रोमश रोमक लोमक शबल कूट  
वर्चल सुवर्चल सुकर सूकर प्रातर (प्रतर)  
सदृश पुरग पुराग सुख धूम अजिन विनत  
अवनत कुविद्यास [विकुटय्यास] पराशर अरुस्  
अयस् मौगदल्याकर (मौगदल्य युकर) इति  
कृशाश्वादिः॥

८६. ऋश्य [ऋष्य] न्यग्रोध शर निलीन  
(निवास निवात) निधान निबन्धन (निबन्ध)  
(विबद्ध) परिगूढ (उपगूढ) असनि सित  
मत वेश्मन् उत्तराश्मन् अश्मन् स्थूल बाहू  
खदिर शर्करा अनडुह (अनडुह) अरडु  
परिवंश वेणु वीरण खण्ड दण्ड परिवृत्त  
कर्दम अंशु -इतिऋश्यादिः॥

८७. कुमुद शर्करा न्यग्रोध इक्कट संकट

कङ्कट गर्त बीज परिवाप निर्यास शकट  
कच मधु शिरीष अश्व अश्वत्थ बल्वज यवाष  
कूप विकङ्कट दशग्राम - इति कुमुदादिः॥

८८. काश पाश अश्वत्थ पलाश पीयूषा  
चरण वास नड वन कर्दम कच्छूल कङ्कट  
गुहा बिस तृण कर्पूर बर्बर मधुर ग्रह कपित्थ  
जतु सीपाल -इति काशादिः॥

८९. तृण नड मूल वन पर्ण वर्ण वराण  
बिल पुल फल अर्जुन अर्ण सुवर्ण बल  
चरण बस -इति तृणादिः॥

९०. प्रेक्षा फलका (हलका) बन्धुका ध्रुवका  
क्षिपका न्यग्रोध इक्कट कङ्कट (संकट) कट  
कूप बुक पुक पुट मह परिवाप यवाष ध्रुवका  
गर्त कूपक हिरण्य- इति प्रेक्षादिः॥

९१. अश्मन् यूथ ऊष मीन नद दर्भ बृन्द  
गुद खण्ड नग शिखा कोट पाम कन्द कान्द  
कुल गह्व गुड कुण्डल पीन गुह इत्यश्मादिः॥

९२. सखि अग्निदत्त वायुदत्त सखिदत्त  
(गोपिल) भल्लपाल (भल्ल पाल) चक्र  
चक्रवाक छगल अशोक करवीर वासव वीर  
पूर वज्र कुशीरक शीहर (सीहर) सरक  
सरस समर समल सुरस रोह तमाल कदल  
सप्तल -इति सख्यादिः॥

९३. संकाश कपिल कश्मीर (समीर) सूरसेन  
सरक सूर। 'सुपन्थिन्यन्थ च' यूप (यूथ)  
(अंश) अङ्ग नासा पलित अनुनाश अश्मन्  
कूट मलिन दश कुम्भ शीर्ष चिरन्त (विरत)  
समल सीर पञ्जर पन्थ नल रोमन् लोमन्  
पुलिन सुपरि कटिप सकर्णक वृष्टि तीर्थ  
अगस्ति विकर नासिका -इति संकाशादिः॥

९४. बल चुल नल दल वट लकुल उरल  
पुख (पुल) मूल उलडुल (उल डुल) वन  
कुल-इति बलादिः॥



९५. पक्ष तुक्ष तुष कुण्ड अण्ड कम्बलिका  
वलिक चित्र अस्ति । 'पथिन्यन्य च' । कुम्भ  
सीरक सरक सकल सरस समल अतिश्वन्  
रोमन् लोमन् हस्तिन् मकर लोमक शीर्ष  
निवात पाक सहक (सिहक) अङ्गुश सुवर्णक  
हंसक हिंसक कुत्स बिल खिल यमल हस्त  
कला सकर्णक-इति पक्षादिः॥

९६. कर्ण वसिष्ठ अर्क अर्कलूष द्रुपद  
आनडुह्य पाञ्चजन्य स्फिग (स्फिज्) कुम्भी  
कुन्ती जित्वन् जीवन्त कुलिश आण्डीवत्  
(आण्डीवत) जव जैत्र आकन (आनक)-  
इति कर्णादिः॥

९७. सुतङ्गम मुनिचित विप्रचित महाचित  
महापुत्र स्वन श्वेत गडिक (खडिक) शुक्र  
बिग्र बीजावापिन् (बीज. वापिन्) अर्जुन  
श्वन् अजिर जीव खण्डित कर्ण विग्रह ॥ इति  
सुतङ्गमादिः॥

९८. प्रगदिन् मगदिन् मददिन् कविल खण्डित  
गदित चूडार मडार मन्दार कोविदार -इति  
प्रगद्यादिः॥

९९. वराह पलाशा (पलाश) शेरीष (शिरीष)  
पिनद्ध निबद्ध बलाह स्थूल विदग्ध (विजग्ध)  
विभग्न (निमग्न) बाहु खदिर शर्करा ॥ इति  
वराहादिः॥

१००. कुमुद गोमथ रथकार दशग्राम अश्वत्थ  
शाल्मलि (शिरीष) मुनिस्थल कुण्डल कूट  
मधुकर्ण घासकुन्द शुचिकर्ण -इति  
कुमुदादिः॥

८१. जनपदे लुप्

८२. वरणादिभ्यश्च

१०१. वरणा शृङ्गी शाल्मलि शुण्डी शयाण्डी  
पर्णी ताम्रपर्णी गोद आलिङ्गयायन जालपदी  
(जानपदी) जम्बु पुष्कर चम्पा पम्पा वल्गु  
उज्जयनी गया मथुरा तक्षशिला उरसा गोमती  
वलभी -इति वरणादिः॥

८३. शर्कराया वा

८४. ठक्छौ च

८५. नद्यां मतुप्

८६. मध्वादिभ्यश्च

१०२. मधु बिस स्थाणु बेणु कर्कन्धु शमी  
करीर हिम किशरा शर्याण मरुत् वार्दाली  
शर इष्टका आसुति शक्ति आसन्दी शकल  
शलाका आमिषी इक्षु रोमन् रुष्टि रुष्य  
तक्षशिला खड वट वेट -इति मध्वादिः॥

८७. कुमुदनडवेतसेभ्यो ड्मतुप्  
(वा०) महिषाच्चेति वक्तव्यम्

८८. नडशादाङ्गुलच्

८९. शिखाया वलच्

९०. उत्करादिभ्यश्छः

१०३. उत्कर संफल शफर पिप्पल  
पिप्पलीमूल अशमन् सुवर्ण खलाजिन तिक  
कितव अणक त्रैवण पिचुक अश्वत्थ काश  
क्षुद्र भस्त्रा शाल जन्या अजिर चर्मन् उत्क्रोश  
क्षान्त खदिर शूर्पणाय श्यावनाय नैवाकव  
तृण वृक्ष शाक पलाश विजिगीषा अनेक  
आतप फल संपर अर्क गर्त अग्नि वैराणक  
इडा अरण्य निशान्त पर्ण नीचायक शङ्कर  
अवरोहित क्षार विशाल वेत्र अरीहण खण्ड

विमर्श

१-इस सूत्र से 'लुप्' की अनुवृत्ति ४।२।८३। तक जाती है। २-यहाँ से 'शर्करायाः' की अनुवृत्ति ४।२।८४। तक जाती है। ३-'मत्तुप्' की अनुवृत्ति ४।२।८६। तक जायेगी। ४-इस सूत्र से 'छः' की अनुवृत्ति ४।२।९१। तक जाती है।

वातागर मन्त्रणार्ह इन्द्रवृक्ष नितान्तवृक्ष  
(नितान्तावृक्ष) आर्द्रवृक्ष-इत्युत्करादिः।

९१. नडादीनां कुक्व

१०४. नड प्लक्ष बिल्व वेणु वेत्र वेतस  
इक्षु काष्ठ कपोत तृण। 'कुञ्जा ह्रस्वत्वं  
च' ८०। 'तक्षत्रलोपश्च' ८१। इति नडादिः॥

९२. शेषे<sup>१</sup>

९३. राष्ट्रावारपारादधखौ

(वा०) अवारपाराद्विगृहीताद्विपरीता-  
च्चेति वक्तव्यम्।

९४. ग्रामाद्यखजौ

९५. कत्त्यादिभ्यो ढकञ्<sup>२</sup>

१०५. कत्त्रि उम्भि पुष्कर पुष्कल मोदन  
कुम्भी कुण्डिन नगरी माहिष्मती वर्मती उख्या  
ग्राम। 'कूट्याया यलोपश्च' ८२। इति  
कत्त्यादिः॥

९६. कुलकुक्षिग्रीवाभ्यः श्वास्यलंकारेषु

९७. नद्यादिभ्यो ढक्

१०६. नदी मही वाराणसी श्रावस्ती कौशाम्बी  
वनकौशाम्बी (वनकोशाम्बी) काशपरी  
काशफरी (काशफरी) खादिरी पूर्वनगरी  
पाठा माया शाल्वा दावा सेतकी 'बडवाया  
वृषे' ८३। इति नद्यादिः॥

९८. दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यक्

९९. कापिश्याः ष्फक्<sup>३</sup>

(वा०) बाह्युर्दिपदिभ्यश्चेति वक्तव्यम्।

१००. रङ्गोरमनुष्येऽण्च

१०१. द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत्

१०२. कन्थायाष्ठक्<sup>४</sup>

१०३. वर्णौ वुक्

१०४. अव्ययात्त्यप्<sup>५</sup>

(वा०) अमेह-क्व-तसि-त्रेभ्य एव।

(वा०) त्यन्नेर्ध्रुवे।

(वा०) निसो गते।

(वा०) अरण्याणः।

(वा०) दूरादेत्यः।

(वा०) उत्तरादाहञ्

(वा०) आविष्ट्यस्योपसंख्यां  
छन्दसि।

१०५. ऐषमोह्यःश्चसोऽन्यतरस्याम्

१०६. तीररूपोत्तरपदादञ्ज्यौ

१०७. दिक्पूर्वपदा<sup>६</sup>दसंज्ञायां जः

१०८. मद्भेभ्योऽञ्<sup>७</sup>

१०९. उदीच्यग्रामाच्च बहचोऽन्तो-  
दात्तात्

११०. प्रस्थोत्तरपदपलद्यादिकोपधादण्<sup>८</sup>

१०७. पलदी परिषद् रोमक वाहीक कलकीट

बहुकीट जालकीट कमलकीट कमलकीकर

### विमर्श

१-इस सूत्र का अधिकार 'रैवतिकादिभ्यश्छः' (४।३।१३१। तक जाता है। २-'ढकञ्' की अनुवृत्ति ४।२।९६। तक जायेगी। ३-यहाँ से 'ष्फक्' की अनुवृत्ति ४।२।१००। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'कन्थायाः' की अनुवृत्ति ४।२।१०३। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'त्यप्' की अनुवृत्ति ४।२।१०५। तक जायेगी। ६-'दिक्पूर्वपदात्' की अनुवृत्ति ४।२।१०८। तक जाती है। ७-इस सूत्र से 'अञ्' की अनुवृत्ति ४।२।१०९। तक जायेगी। ८-यहाँ से 'अण्' की अनुवृत्ति ४।२।११३। तक जायेगी।



कमलभिदा गौष्ठी नैकती परिखा शूरसेन  
गोमती पटच्चर उदपान यकृल्लोम- इति  
पलघादिः॥

१११. कण्वादिभ्यो गोत्रे<sup>१</sup>

११२. इज<sup>२</sup>श्च

११३. न द्व्यचः प्राच्यभरतेषु

११४. वृद्धाच्छः<sup>३</sup>

११५. भवतष्ठक्छसौ

११६. काश्यादिभ्यष्ठञ्जिठौ<sup>४</sup>

१०८. काशि चेदि (वेदि) सांयाति संवाह  
अच्युत मोदमान शकुलाद हस्तिकर्षू कुनामन्  
हिरण्य करण गोवासन भारङ्गी अरिन्दम अरित्र  
देवदत्त दशग्राम शौवावतान युवराज उपराज  
देवराज मोदन सिन्धुमित्र दासमित्र सुधामित्र  
सोममित्र छागमित्र साधमित्र (सधमित्र)।  
'आपदादिपूर्वपदात्कालान्तात्' ८४। आपद्  
ऊर्ध्व तत् -इति काश्यादिः॥

११७. बाहीकग्रामेभ्यः<sup>५</sup>श्च

११८. विभाषोशीनरेषु

११९. ओर्देशे ठञ्<sup>६</sup>

१२०. वृद्धात्प्राचाम्<sup>७</sup>

१२१. धन्वयोपधाद्बुज्<sup>८</sup>

१२२. प्रस्थपुरवहान्ताच्च

१२३. रोपधेतोः प्राचाम्

१२४. जनपदतदवध्योः<sup>९</sup>श्च

१२५. अवृद्धादपि<sup>१०</sup> बहुवचनविषयात्

१२६. कच्छाग्निकवक्त्रैर्वृत्तौत्तरपदात्

१२७. धूमादिभ्यश्च

१०९. धूम षडण्ड शशादन अर्जुनाव  
माहकस्थली आनकस्थली माहिषस्थली  
मानस्थली अट्टस्थली मद्रुकस्थली समुद्रस्थली  
दाण्डायनस्थली राजस्थली विदेह राजगृह  
सात्रासाह शष्य मित्रवर्ध (मित्रवर्ध) भक्षाली  
मद्रकूल आजीकूल द्व्यहव (द्व्याहाव) त्र्यहव  
(त्र्याहाव) संस्फीय बर्बर वर्ज्य गर्त आनत  
माठर पाथेय घोष पल्ली आराज्ञी धार्तराज्ञी  
आवय तीर्थ। 'कूलात्सौवीरेषु' ८५।  
'समूद्रात्रावि मनुष्ये च' ८६। कुक्षि अन्तरीप  
द्वीप अरुण उज्जयनी पट्टार दक्षिणापथ  
साकेत- इति धूमादिः॥

१२८. नगरात्कुत्सनप्रावीण्ययोः

१२९. अरण्यान्मनुष्ये

(वा०) पथ्यध्यायन्यायविहारमनुष्य-  
हस्तिष्विति वक्तव्यम्।

(वा०) वा गोमयेषु।

१३०. विभाषा कुरुयुगंधराभ्याम्

### विमर्श

१- 'गोत्रे' की अनुवृत्ति ४।२।११३। तक जाती है। २- इस सूत्र से 'इजः' की अनुवृत्ति ४।२।११३। तक जायेगी। ३- इस सूत्र से 'वृद्धात्' की अनुवृत्ति ४।२।११८। तक जायेगी। ४- इस सूत्र से 'ठञ्जिठौ' की अनुवृत्ति ४।२।११८। तक जाती है। ५- 'बाहीकग्रामेभ्यः' की अनुवृत्ति ४।२।११८। तक जाती है। ६- इस सूत्र से 'ओः ठञ्' की अनुवृत्ति ४।२।१२०। तक तथा 'देशे' की अनुवृत्ति ४।२।१४५। तक जायेगी। ७- 'वृद्धात्' की अनुवृत्ति ४।२।१२६। तक जाती है। ८- इस सूत्र से 'बुज्' की अनुवृत्ति ४।२।१३०। तक जायेगी। ९- इस सूत्र से 'जनपदतदवध्योः' की अनुवृत्ति ४।२।१२५। तक जायेगी। १०- यहाँ से 'अवृद्धादपि' की अनुवृत्ति ४।२।१२६। तक जाती है।

१३१. मद्रवृज्योः कन्  
 १३२. कोपधादण्<sup>१</sup>  
 १३३. कच्छादिभ्यश्च<sup>२</sup>  
 ११०. कच्छ सिन्धु वर्णु गन्धार मधुमत्  
 कम्बोज कश्मीर साल्व कुरु अनुषण्ड द्वीप  
 अनुप अजवाह विजापक कलूतर रङ्गु -  
 इति कच्छादिः॥  
 १३४. मनुष्यतत्स्थयोर्वुज्<sup>३</sup>  
 १३५. अपदातौ साल्वात्<sup>४</sup>  
 १३६. गोयवाग्वोश्च  
 १३७. गर्तोत्तरपदाच्छः<sup>५</sup>  
 १३८. गहादिभ्यश्च  
 १११. गह अन्तस्थ सम विषम। 'मध्य मध्यमं  
 चाण्चरणे' ८७। उत्तम अङ्ग वङ्ग मगध पूर्वपक्ष  
 अपरपक्ष अधमशाख उत्तमशाख एकशाख  
 समानशाख समानग्राम एकग्राम एकवृक्ष  
 एकपलाश इष्वग्र इष्वनीक अवस्यन्दन  
 कामप्रस्थ शाडिकाडायनि (खाडायन) काठेरणि  
 लावेरणि सौमित्रि शैशिरि आसुत् दैवशर्मि  
 आध्यश्चि आनृशसि (आनृशंसि) शौङ्गि श्रौति

आहिंसि आमित्रि व्याडि वैजि आग्निशर्मि  
 भौजि वाराटकि वाल्मिकि (वाल्मीकि)  
 क्षेमवृद्धि आश्वत्थि औद्गाहमानि ऐक बिन्दवि  
 दन्ताग्र हंस तत्वग्र (तन्त्वग्र) उत्तर अन्तर  
 (अनन्तर) 'मुखपार्श्वतसोलोपः' ८८।  
 'जनपरयोः कुक्च' ८९। 'देवस्य च' ९०।  
 'वेणुकादिभ्यश्छण्' ९१। इति गहादिः॥  
 आकृतिगणः॥

१३९. प्राचां कटादेः  
 १४०. राज्ञः क च  
 १४१. वृद्धा<sup>६</sup>दकेकान्तखोपधात्  
 (वा०) अकेकान्तग्रहणे कोपधग्रहणं  
 सौसुकाद्यर्थम्।  
 १४२. कन्थापलदनगरग्रामहदोत्तर-  
 पदात्  
 १४३. पर्वताच्च<sup>७</sup>  
 १४४. विभाषाऽमनुष्ये  
 १४५. कृकणपर्णाद्भारद्वाजे  
 (तेन सास्मिन्ठञ्क्रमदिभ्यो जनपदे  
 द्युप्रागपागधन्ववृद्धात्पञ्च॥)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे चतुर्थस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः।



### विमर्श

१- 'अण्' की अनुवृत्ति ४।२।१३३। तक जाती है। २- 'कच्छादिभ्यः' की अनुवृत्ति ४।२।१३४। तक जायेगी। ३- इस सूत्र से 'मनुष्यतत्स्थयोः' की अनुवृत्ति ४।२।१३५। तक, तथा 'वुज्' की अनुवृत्ति ४।२।१३६। तक जायेगी। ४- 'साल्वात्' की अनुवृत्ति ४।२।१३६। तक जाती है। ५- इस सूत्र से 'छः' की अनुवृत्ति ४।३।१। तक जायेगी। ६- इस सूत्र से 'वृद्धात्' की अनुवृत्ति ४।२।१४२। तकह जाती है। ७- यहाँ से 'पर्वतात्' की अनुवृत्ति ४।२।१४४। तक जाती है।



## तृतीयः पादः

- |                                 |   |
|---------------------------------|---|
| १. युष्मदस्मदोऽन्यतरस्यां खँञ्च | १६. संधिवेलाद्युतुनक्षत्रेभ्योऽण्         |
| २. तस्मिन्नणिं च युष्माकास्माकौ | ११२. सन्धिवेला सन्ध्या अमावास्या त्रयोदशी |
| ३. तवकममकावेकवचने               | चतुर्दशी पञ्चदशी पौर्णमासी प्रतिपत् ।     |
| ४. अर्घाद्यत्                   | ‘संवत्सरात्फलपर्वणोः’ ९२। इति             |
| ५. परावराधमोत्तमपूर्वाच्च       | सन्धिवेलादिः॥                             |
| ६. दिक्पूर्वपदाद्गुञ्च          | १७. प्रावृष एण्यः                         |
| ७. ग्रामजनपदैकदेशादञ्ठञौ        | १८. वर्षाभ्यष्टक्                         |
| ८. मध्यान्मः                    | १९. छन्दसि ठञ्                            |
| (वा०) (आदेशेति वक्तव्यम्)।      | २०. वसन्ताच्च                             |
| (वा०) (अवोधसोलोपश्च)            | २१. हेमन्ताच्च                            |
| ९. अ सांप्रतिके                 | २२. सर्वत्राणच तलोपश्च                    |
| १०. द्वीपादनुसमुद्रं यञ्        | २३. सायंचिरंप्राहणेप्रगेऽव्ययेभ्यष्ट्यु-  |
| ११. कालाद्गुञ्                  | ट्युलौ तुट् च                             |
| १२. श्राद्धे शरदः               | (वा०) चिरपरुत्परारिभ्यस्तनो वक्तव्यः।     |
| १३. विभाषा रोगातपयोः            | (वा०) अग्रादिपश्चाड्मिच्।                 |
| १४. निशाप्रदोषाभ्यां च          | (वा०) अन्ताच्च।                           |
| १५. श्वसस्तुट् च                | २४. विभाषा पूर्वाहणापराहणाभ्याम्          |
|                                 | २५. तत्र जातः                             |

## विमर्श

१-इस सूत्र से ‘युष्मदस्मदोः’ की अनुवृत्ति ४।३।३। तक जाती है। २-‘तस्मिन्नणि’ की अनुवृत्ति ४।३।३। तक जाती है। ३-इस सूत्र से ‘अर्घात्’ की अनुवृत्ति ४।३।७। तक तथा ‘यत्’ की अनुवृत्ति ४।३।६। तक जायेगी। ४-यहाँ से ‘दिक्पूर्वपदात्’ की अनुवृत्ति ४।३।७। तक जाती है। ५- ‘मध्यात्’ की अनुवृत्ति ४।३।९। तक जायेगी। ६-यहाँ से ‘कालात्’ की अनुवृत्ति ४।३।२४। तक तथा ‘ठञ्’ की अनुवृत्ति ४।३।१५। तक जायेगी। ७-यहाँ से ‘शरदः’ की अनुवृत्ति ४।३।१३। तक जाती है। ८-यहाँ से ‘विभाषा’ की अनुवृत्ति ४।३।१५। तक जायेगी। ९-इस सूत्र से ‘वर्षाभ्यः’ की अनुवृत्ति ४।३।१९। तक जाती है। १०-इस सूत्र से ‘छन्दसि’ की अनुवृत्ति ४।३।२१। तक तथा ‘ठञ्’ की अनुवृत्ति ४।३।२२। तक जाती है। ११-‘हेमन्तात्’ की अनुवृत्ति ४।३।२२। तक जायेगी। १२-इस सूत्र से ‘ट्युट्युलौ तुट्’ की अनुवृत्ति ४।३।२४। तक जायेगी। १३-इस सूत्र से ‘तत्र’ की अनुवृत्ति ४।३।५१। तक तथा ‘जातः’ की अनुवृत्ति ४।३।३७। तक जाती है।

२६. प्रावृषष्ठप्  
 १७. संज्ञायां<sup>१</sup> शरदो वुज्  
 २८. पूर्वाहणापराहणाद्रामूलप्रदोषा-  
 वस्कराद्गुन्<sup>२</sup>  
 २९. पथः पन्थ च  
 ३०. अमावास्याया<sup>३</sup> वा  
 ३१. अ च  
 ३२. सिन्ध्वपकराभ्यां<sup>४</sup> कन्  
 ३३. अणञौ च  
 ३४. श्रविष्ठाफल्युन्यनुराधास्वाति-  
 तिष्यपुनर्वसुहस्तविशाखा-  
 षषाढावहुलाल्लुक्<sup>५</sup>  
 (वा०) चित्रावेतीरोहिणीभ्यः स्त्रियामुप-  
 संख्यानम्।  
 (वा०) फल्गुन्यषाढाभ्यां टानौ  
 वक्तव्यौ।  
 (वा०) श्रविष्ठाऽषाढाभ्यां छण्वक्तव्यः।  
 ३५. स्थानान्तगोशालखरशालाच्च  
 ३६. वत्सशालाभिजिदश्वयुक्छतभिषजो  
 वा  
 ३७. नक्षत्रेभ्यो बहुलम्  
 ३८. कृतलब्धक्रीतकुशलाः  
 ३९. प्रायभवः<sup>६</sup>  
 ४०. उपजानूपकर्णोपनीवेष्ठक्  
 ४१. संभूते<sup>७</sup>  
 ४२. कोशाद्गुज्  
 ४३. कालात्सा<sup>८</sup> धुपुष्यत्पच्यमानेषु  
 ४४. उप्ते<sup>९</sup> च  
 ४५. आश्वयुज्या वुज्<sup>१०</sup>  
 ४६. ग्रीष्मवसन्तादन्यतरस्याम्  
 ४७. देयमृणे<sup>११</sup>  
 ४८. कलाप्यश्वत्थयवबुसाद्गुन्  
 ४९. ग्रीष्मावरसमाद्गुन्<sup>१२</sup>  
 ५०. संवत्सराग्रहायणीभ्यां ठञ्च  
 ५१. व्याहरति मृगः  
 ५२. तदस्य सोढम्  
 ५३. तत्र भवः<sup>१३</sup>  
 ५४. दिगादिभ्यो यत्<sup>१४</sup>  
 ११३. दिश् वर्ग पूग गण पक्ष धाय्य मित्र  
 मेधा अन्तर पथिन् रहस् अलीक उखा साक्षिन्  
 देश आदि अन्त मुख जघन मेघ यूथ।

### विमर्श

१-‘संज्ञायाम्’ की अनुवृत्ति ४।३।२८। तक जाती है। २-यहाँ से ‘वुन्’ की अनुवृत्ति ४।३।३०। तक जाती है। ३-‘अमावास्याया’ की अनुवृत्ति ४।३।३१। तक जायेगी। ४-यहाँ से ‘सिन्ध्वपकराभ्याम्’ की अनुवृत्ति ४।३।३३। तक जायेगी। ५-यहाँ से ‘लुक्’ की अनुवृत्ति ४।३।३७। तक जाती है। ६-यहाँ से ‘प्रायभवः’ की अनुवृत्ति ४।३।४०। तक जाती है। ७-इस सूत्र से ‘संभूते’ की अनुवृत्ति ४।३।४२। तक जायेगी। ८-‘कालात्’ की अनुवृत्ति ४।३।५२। तक जायेगी। ९-‘उप्ते’ की अनुवृत्ति ४।३।४६। तक जाती है। १०-यहाँ से ‘वुज्’ की अनुवृत्ति ४।३।४६। तक जाती है। ११-यहाँ से ‘देयमृणे’ की अनुवृत्ति ४।३।५०। तक जाती है। १२-यहाँ से ‘वुज्’ की अनुवृत्ति ४।३।५०। तक जायेगी। १३-इस सूत्र का अधिकार ४।३।७३। तक जाता है। १४-‘यत्’ की अनुवृत्ति ४।३।५५। तक जायेगी।



‘उदकात्संज्ञायाम्’ ९३। ज्ञाय (न्याय) वंश  
केश काल आकाश- इति दिगादिः॥

५५. शरीरावयवाच्च

५६. दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यस्त्यहेर्दञ्

५७. ग्रीवाभ्योऽण्च

५८. गम्भीराञ्ज्यः<sup>२</sup>

(वा०) बहिर्देवपञ्चजनेभ्यश्च

५९. अव्ययीभावाच्च

(वा०) परिमुखादिभ्य एवेष्प्यते।

११४. (वा २८६९)। परिमुख परिहनु  
पर्योष्ठ पर्युलूखल परिसीर उपसीर उपस्थूण  
उपकलाप अनुपथ अनुपद अनुगङ्ग अनुतिल  
अनुसीत अनुसाय अनुसीर अनुमाष अनुयव  
अनुपूप अनुवंश प्रतिशाख-इति परि-  
मुखादिः॥

६०. अन्तः पूर्वपदाट्ठञ्

(वा०) अध्यात्मादेष्टजिष्यते।

११५. (वा २८७२)। अध्यात्म अधिदेव  
अधिभूत-इत्यध्यात्मादिः॥

(वा०) मुखपार्श्वतसोरीयः

(वा०) कुग्जनस्य परस्य च।

(वा०) भवार्थे तु लुग्वक्तव्यः।

६१. ग्रामात्पर्यनुपूर्वात्

६२. जिह्वामूलाङ्गुलेश्छः<sup>५</sup>

६३. वर्गान्ताच्च<sup>६</sup>

६४. अशब्दे यत्खावन्यतरस्याम्

६५. कर्णललाटात्कन्नलंकारे

६६. तस्य व्याख्यान इति च  
व्याख्यातव्यनाम्नः<sup>७</sup>

६७. बह्वचोऽन्तोदात्ताट्ठञ्<sup>८</sup>

६८. ऋतुयज्ञेभ्यश्च

६९. अध्यायेष्वेवर्षेः

७०. पौरोडाशपुरोडाशात्ठन्

७१. छन्दसो यदणौ

७२. द्व्यजृद्-ब्राह्मणर्क्-प्रथमाध्वर-  
पुरश्चरण-नामाख्याताट्ठक्

(वा०) नामाख्यातग्रहणं संघात-  
विगृहीतार्थम्

७३. अणृगयनादिभ्यः

११६. ऋगयन पदव्याख्यान छन्दोमान  
छन्दोभाषा छन्दोविचिति न्याय पुनरुक्त निरुक्त  
व्याकरण निगम वास्तुविद्या क्षत्रविद्या  
अङ्गविद्या विद्या उत्पात उत्पाद उद्याव  
संवत्सर मुहूर्त उपनिषद् निमित्त शिक्षा भिक्षा-  
इत्यृगयनादिः॥

७४. तत आगतः<sup>९</sup>

७५. ठगायस्थानेभ्यः

७६. शुण्डिकादिभ्योऽण्

## विमर्श

१-इस सूत्र से ‘ढञ्’ की अनुवृत्ति ४।३।५७। तक जाती है। २-‘ञ्यः’ की अनुवृत्ति ४।३।५९। तक जायेगी। ३-‘अव्ययीभावात्’ की अनुवृत्ति ४।३।६१। तक जाती है। ४-यहाँ से ‘ठञ्’ की अनुवृत्ति ४।३।६१। जाती है। ५-इस सूत्र से ‘छः’ की अनुवृत्ति ४।३।६३। तक जाती है। ६-‘वर्गान्तात्’ की अनुवृत्ति ४।३।६४। तक जाती है। ७-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ४।३।७३। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से ‘ठञ्’ की अनुवृत्ति ४।३।६९। तक जायेगी। ९-इस सूत्र से ‘ततः’ की अनुवृत्ति ४।३।८४। तक तथा ‘आगतः’ की अनुवृत्ति ४।३।८२। तक जाती है।

११७. शुण्डिक कृकण स्थण्डिल उदपान  
उपल तीर्थ भूमि तृण पर्ण-इति  
शुण्डिकादिः॥

७७. विद्यायोनिबंधेभ्यो<sup>१</sup> वुञ्

७८. ऋतष्ठञ्

७९. पितुर्यच्च

८०. गोत्रादङ्गवत्

८१. हेतुमनुष्येभ्यो<sup>३</sup>ऽन्यतरस्यां रूप्यः

८२. मयट् च

८३. प्रभवति<sup>४</sup>

८४. विदूराञ्यः

८५. तद्गच्छति पथिदूतयोः

८६. अभिनिष्क्रामति द्वारम्

८७. अधिकृत्य कृते ग्रन्थे<sup>५</sup>

(वा०) लुबाख्यायिकाभ्यो बहुलम्।

८८. शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्र-

जननादिभ्यश्छः

(वा०) द्वन्द्वे देवासुरादिभ्यः प्रतिषेधो  
वक्तव्यः।

८९. सोऽस्य<sup>६</sup> निवासः

९०. अभिजनश्च<sup>७</sup>

९१. आयुधजीविभ्यश्छः पर्वते।

९२. शण्डिकादिभ्यो ज्यः

११८. शण्डिक सर्वसेन सर्वकेश शक  
शट रक शङ्ख बोध ।इति शण्डिकादिः॥

९३. सिन्धुतक्षशिलादिभ्योऽणञौ

११९. सिन्धु वर्णु मधुमत् कम्बोज साल्व  
कश्मीर गन्धार किष्किन्धा उरसा दरद (दरद)  
गन्दिका-इति सिन्धादिः॥

१२०. तक्षशिला वत्सोद्धरण कैमंदुर ग्रामणी  
छगल क्रोष्टुकर्ण सिंहकर्ण संकुचित किंनर  
काण्डधार पर्वत अवसान बर्बर कंस ।।इति  
तक्षशिलादिः॥

९४. तुदीसलातुरवर्मतीकूचवाराङ्ग-  
वच्छणढञ्यकः

९५. भक्तिः<sup>८</sup>

९६. अचित्ताददेशकालाङ्क

९७. महाराजाङ्ग

९८. वासुदेवार्जुनाभ्यां वुन्

९९. गोत्रक्षत्रियाख्येभ्यो बहुलं वुञ्

१००. जनपदिनां जनपदवत्सर्वं जन-  
पदेन समानशब्दानां बहुवचने

१०१. तेन प्रोक्तम्<sup>९</sup>

१०२. तित्तिरिवरतन्तुखण्डिको-  
खाच्छण्

१०३. काश्यपकौशिकाभ्यामृषिभ्यां  
णिनिः<sup>१०</sup>

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'विद्यायोनिबंधेभ्यः' की अनुवृत्ति ४।३।७८। तक जाती है। २-'ठञ्' की अनुवृत्ति ४।३।७९। तक जायेगी। ३-'हेतुमनुष्येभ्यः' की अनुवृत्ति ४।३।८२। तक जायेगी। ४-इस सूत्र की अनुवृत्ति ४।३।८४। तक जाती है। ५-यहाँ से 'तद्' की अनुवृत्ति ४।३।८८। तक जाती है। ६-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ४।३।८८। तक जायेगी। ७-इस सूत्र से 'सोऽस्य' की अनुवृत्ति ४।३।१००। तक जाती है। ८-'अभिजनः' की अनुवृत्ति ४।३।९४। तक जायेगी। ९-इस सूत्र की अनुवृत्ति ४।३।१००। तक जायेगी। १०-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ४।३।१११। तक जायेगी। ११-इस सूत्र से 'णिनिः' की अनुवृत्ति ४।३।१०६। तक जाती है।



१०४. कलापिवैशम्पायनान्तेवा-  
सिन्ध्यश्च

१०५. पुराणप्रोक्तेषु ब्राह्मणकल्पेषु

१०६. शौनकादिभ्यश्छन्दसि<sup>१</sup>

१२१. शौनक वाजसनेय शार्ङ्गरव शापेय  
शाप्येय खाडायन स्तम्भ स्कन्ध देवदर्शन  
रज्जुभार रज्जुकण्ठ कठशाठ कषाय तल  
दण्ड पुरुषांसक (अश्वपेज)। इति  
शौनकादिः॥

१०७. कठचरकाल्लुक्

१०८. कलापिनोऽण्

१०९. छगलिनो ढिनुक्

११०. पाराशर्यशिलालिभ्यां भिक्षु-  
नटसूत्रयोः<sup>२</sup>

१११. कर्मन्दकृशाश्वादिनिः

११२. तेनैकदिक्<sup>३</sup>

११३. तसिश्च<sup>४</sup>

११४. उरसो यच्च

११५. उपज्ञाते

११६. कृते<sup>५</sup> ग्रन्थे

११७. संज्ञायाम्<sup>६</sup>

११८. कुलालादिभ्यो वुञ्

१२२. कुलाल वरुड चण्डाल निषाद कर्मार  
सेना सिरिन्ध्र (सिरिध्र) सैरिन्ध्र देवराज पर्वत्  
(परिषत्) वधू मधु रुरु रुद्र अनडुह (अनडुह)  
ब्रह्मन् कुम्भकार श्वपाक। इति कुलालादिः॥

११९. क्षुद्राभ्रमरवटरपादपादञ्

१२०. तस्येदम्<sup>७</sup>

(वा०) पत्राद्वाह्ये।

(वा०) वहेस्तुरणिट् च।

(वा०) अग्नीधः शरणे रण् भत्वं च।

(वा०) समिधामाधाने षेण्यण्।

(वा०) चरणाद्धर्माभ्याययोः।

१२१. रथा<sup>८</sup>द्यत्

१२२. पत्रपूर्वादञ्<sup>९</sup>

१२३. पत्राध्वर्युपरिषदश्च

१२४. हलसीराड्क्

१२५. द्वन्द्वाद्बुन्वैरमैथुनिकयोः

(वा०) वैरे देवासुरादिभ्यः प्रतिषेधः।

१२६. गोत्रचरणाद्बुञ्

१२७. सङ्घाङ्गलक्षणे<sup>१०</sup> ष्वज्यजिजामण्

(वा०) घोषग्रहणमपि कर्तव्यम्।

१२८. शाकलान्

### विमर्श

१-‘छन्दसि’ की अनुवृत्ति ४।३।१११। तक जाती है। २-‘भिक्षुनटसूत्रयोः’ की अनुवृत्ति ४।३।१११। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से ‘तेन’ की अनुवृत्ति ४।३।११९। तक तथा ‘एकदिक्’ की अनुवृत्ति ४।३।११४। तक जायेगी। ४-‘तसिः’ की अनुवृत्ति ४।३।११४। तक जाती है। ५-इस सूत्र से ‘कृते’ की अनुवृत्ति ४।३।११९। तक जाती है। ६-इस सूत्र की अनुवृत्ति ४।३।११९। तक जायेगी। ७-इस सूत्र का अधिकार ४।३।१३१। तक जाता है। ८-इस सूत्र से ‘रथात्’ की अनुवृत्ति ४।३।१२२। तक जाती है। ९-इस सूत्र से ‘अञ्’ की अनुवृत्ति ४।३।१२३। तक जाती है। १०-इस सूत्र से ‘संघाङ्गलक्षणे’ यञः अण् की अनुवृत्ति ४।३।१२८। तक जाती है।



१२९. छन्दोगौक्थिकयाज्ञिकबहुच-  
नटाञ्ज्यः

१३०. न दण्डमाणवान्तेवासिषु

१३१. रैवतिकादिभ्यश्छः

१२३. रैवतिक स्वापिशि क्षैमवृद्धि गौरग्रीव  
(गौरग्रीवि) औदमेधि औदवापि वैजवापि। इति  
रैवतिकादिः॥

१३२. कौपिञ्जलहास्तिपदादण्

१३३. आथर्वणिकस्येकलोपश्च

१३४. तस्य विकारः<sup>१</sup>

१३५. अवयवे<sup>२</sup> च प्राण्योषधिवृक्षेभ्यः

१३६. बिल्वादिभ्योऽण्<sup>३</sup>

१२४. बिल्व ब्रीहि काण्ड मुद्ग मसूर गोधूम  
इक्षु वेणु गवेधुका कर्पासी पाटली कर्कन्धु  
कुटीर। इति बिल्वादिः॥

१३७. कोपधाच्च

१३८. त्रपुजतुनोः षुक्

१३९. ओरञ्<sup>४</sup>

१४०. अनुदात्तादेश्च

१४१. पलाशादिभ्यो वा

१२५. पलाश खदिर शिंशपा स्पन्दन पूलाक  
करीर शिरीष यवास विकङ्कत। इति  
पलाशादिः॥

१४२. शम्याः प्लञ्

१४३. मयड्वैतयोर्भाषायामभक्ष्याच्छा-  
दनयोः<sup>५</sup>

१४४. नित्यं वृद्धशरादिभ्यः

१२६. शर दर्भ मृद् (मृत्) कुटी तृण  
सोम बल्बज। इति शरादिः॥

१४५. गोश्च पुरीषे

१४६. पिष्टाच्च<sup>६</sup>

१४७. संज्ञायां कन्

१४८. ब्रीहेः पुरोडाशे

१४९. असंज्ञायां तिलयवाभ्याम्

१५०. द्व्यचश्छन्दसि<sup>७</sup>

१५१. नोत्वद्वर्ध्निबिल्वात्

१५२. तालादिभ्योऽण्<sup>८</sup>

१२७. 'तालाद्धनुषि' ९४। बार्हिण इन्द्रालिश  
(इन्द्रासिष) इन्द्रादृश इन्द्रायुध चय श्यामाक  
पीयूक्षा। इति तालादिः॥

१५३. जातरूपेभ्यः परिमाणे

१५४. प्राणिरजतादिभ्योऽञ्<sup>९</sup>

१२८. रजत सीस लोह उदुम्बर नीप दारु  
रोहितक बिभीतक पीतदारु तीव्रदारु त्रिकण्टक  
कण्टकार। इति रजतादिः॥

१५५. जितश्च तत्प्रत्ययात्

### विमर्श

१-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति पादान्त अर्थात् ४।३।१६८। तक जायेगी। २-इस सूत्र से 'अवयवे' की अनुवृत्ति ४।३।१६८। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'अण्' की अनुवृत्ति ४।३।१४१। तक जाती है। ४-यहाँ से 'अञ्' की भी अनुवृत्ति ४।३।१४१। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'मयट्' की अनुवृत्ति ४।३।१५१। तक तथा 'भाषायामभक्ष्याच्छादनयोः' की अनुवृत्ति ४।३।१४४। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'पिष्टात्' की अनुवृत्ति ४।३।१४७। तक जाती है। ७-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ४।३।१५१। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से 'अण्' की अनुवृत्ति ४।३।१५३। तक जाती है। ९-यहाँ से 'अञ्' की अनुवृत्ति ४।३।१५५। तक जायेगी।



१५६. क्रीतवत्परिमाणात्

१५७. उष्ट्राद्वुज्

१५८. उमोर्णयोर्वा

१५९. एण्या ढञ्

१६०. गोपयसोर्यत्

१६१. द्रोश्च

१६२. माने वयः

१६३. फले<sup>४</sup> लुक्

१६४. प्लक्षादिभ्योऽण्

१२९. प्लक्ष न्यग्रोध अश्वत्थ इड्दी शिष्ट  
(रुरु) कक्षतु वृहती। इति प्लक्षादिः॥१६५. जम्ब्वा वा<sup>६</sup>१६६. लुप्<sup>७</sup> च

(वा०) फलपाकशुषामुपसंख्यानम्।

१६७. हरीतक्यादिभ्यश्च

१३०. हरीतकी कोशातकी नखरजनी  
शष्कण्डी दाडी दोडी श्वेतपाकी अर्जुनपाकी  
द्राक्षा काला ध्वाक्षा गभीका कण्टकारिका  
पिप्पली चिम्पा (चिञ्चा) शेफालिका- इति  
हरीतक्यादिः॥

१६८. कंसीयपरशव्ययोर्यजजौ लुक्च

(युष्मद्धेमन्तात्संभूते ग्रामाद्धेतुतेन  
रथात्पलाशादिभ्यो द्रोश्चाष्टौ॥)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे चतुर्थस्याध्यायस्य तृतीयः पादः॥

-+-----+

**विमर्श**

१-इस सूत्र से 'वुज्' की अनुवृत्ति ४।३।१५८। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'यत्' की अनुवृत्ति ४।३।१६१। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'द्रोः' की अनुवृत्ति ४।३।१६२। तक जायेगी। ४-यहाँ से 'फले' की अनुवृत्ति ४।३।१६५। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'अण्' की अनुवृत्ति ४।३।१६५। तक जाती है। ६-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति ४।३।१६६। तक जाती है। ७-यहाँ से 'लुप्' की अनुवृत्ति ४।३।१६७। तक जायेगी।

## चतुर्थः पादः

१. प्राग्वहतेष्ठक<sup>३</sup>

(वा०) पुष्पमूलेषु बहुलम्।

(वा०) तदाहेति माशब्दादिभ्य उप-  
संख्यानम्।

१३१. (वा २९५१) माशब्दः। नित्यशब्दः।  
कार्यशब्दः।। इति माशब्दादिः।।

(वा०) आहौ प्रभूतादिभ्यः।

१३२. (वा २९५२)। प्रभूत पर्याप्त। इति  
प्रभूतादिः।।

(वा०) पृच्छतौ सुस्नातादिभ्यः।

१३३. (२९५३)। सुस्नात सुखरात्रि  
सुखशयन। इति सुस्नातादिः।।

(वा०) गच्छतौ परदारादिभ्यः।

१३४. (वा २९५४)। परदार गुरुतल्प  
इति परदारादिः।।

२. तेन<sup>३</sup> दीव्यति खनति जयति जितम्

३. संस्कृतम्<sup>३</sup>

४. कुलुत्थकोपधादण्

५. तरति<sup>३</sup>

६. गोपुच्छाड्गञ्

७. नौ-द्व्यचष्ठन्

८. चरति<sup>३</sup>

९. आकर्षात्ठल्

१०. पर्पादिभ्यः छन्<sup>६</sup>

१३५. पर्प अश्व अश्वत्थ रथ जाल न्यास  
व्याल। पाद। इति पर्पादिः।।

११. श्वगणाड्गञ्च

१२. वेतनादिभ्यो जीवति<sup>३</sup>

१३६. वेतन वाहन अर्धवाहन धनुर्दण्ड जाल  
वेश उपवेश प्रेषण उपवस्ति सुख शय्या  
शक्ति उपनिषद् उपदेश स्फिज् (स्फिज)  
पाद (उपस्थ) उपस्थान उपहस्त। इति  
वेतनादिः।।

१३. वस्न-क्रय-विक्रयाड्गञ्

(वा०) क्रयविक्रयग्रहणं संघात-  
विगृहीतार्थम्।

१४. आयुधाच्छ च

१५. हर<sup>३</sup>त्युत्सङ्गादिभ्यः

१३६. उत्सङ्ग (उडुप) उत्पुत (उत्पन्न)  
उत्पुट पिटक पिटाक। इत्युत्सङ्गादिः।।

१६. भस्त्रादिभ्यः छन्<sup>१०</sup>

१३८. भस्त्रा भरट भरण शीर्षभार शीर्षेभार  
अंसभार अंसेभार। इति भस्त्रादिः।।

### विमर्श

१-‘तद्वहति रथ-युग-प्रासङ्गम्’ (४।४।७६।) इस सूत्र के पूर्व तक के जो-जो अर्थ निर्दिष्ट किये गये हैं उन सबों में सामान्यतया ‘ठक्’ प्रत्यय का अधिकार जायेगा। २-इस सूत्र से ‘तेन’ की अनुवृत्ति ४।४।२७। तक जाती है। ३- इस सूत्र की अनुवृत्ति ४।४।४। तक जाती है। ४-इस सूत्र की अनुवृत्ति ४।४।७। तक जायेगी। ५-‘चरति’ की अनुवृत्ति ४।४।११। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से ‘छन्’ की अनुवृत्ति ४।४।११। तक जाती है। ७-यहाँ से ‘जीवति’ की अनुवृत्ति ४।४।१४। तक जाती है। ७-इस सूत्र से ‘ठन्’ की अनुवृत्ति ४।४।१४। तक जायेगी। ९-इस सूत्र से ‘हरति’ की अनुवृत्ति ४।४।१८। तक जाती है। १०-‘छन्’ की अनुवृत्ति ४।४।१७। तक जायेगी।



१७. विभाषा विवधात्  
(वा०) वीवधादपि।  
१८. अणकुटिलिकायाः  
१९. निर्वृत्ते<sup>१</sup>ऽक्षधूतादिभ्यः  
१३९. अक्षधूत (जानुप्रहत) जङ्घाप्रहत  
पादस्वेदन कण्टकमर्दन गतानुगत गतागत  
यातोपयात अनुगत। इत्यक्षधूतादिः।।  
२०. त्रेर्मन्वित्यम्  
(वा०) भावप्रत्ययान्तादिमब्वक्तव्यः।  
२१. अपमित्ययाचिताभ्यां कक्-कनौ  
२२. संसृष्टे<sup>२</sup>  
२३. चूर्णादिनिः  
२४. लवणात्लुक्  
२५. मुद्रादण्  
२६. व्यञ्जनैरुपसिक्ते  
२७. ओजः सहोऽम्भसा वर्तते<sup>३</sup>  
२८. तत्प्रत्य<sup>४</sup>नुपूर्वमीपलोमकूलम्  
२९. परिमुखं च  
३०. प्रयच्छति गर्ह्यम्<sup>५</sup>  
(वा०) वृद्धेर्वधुषिभावो वक्तव्यः।  
३१. कुसीददशैकदशात्ष्ठन्ष्ठचौ  
३२. उञ्छति  
३३. रक्षति  
३४. शब्ददर्दुरं करोति  
३५. पक्षिमत्स्यमृगान्हन्ति<sup>६</sup>  
३६. परिपन्थं च तिष्ठति  
३७. माथोत्तरपदपदव्यनुपदं धावति<sup>७</sup>  
३८. आक्रन्दाद्वञ्च  
३९. पदोत्तरपदं गृह्णाति<sup>८</sup>  
४०. प्रतिकण्ठार्थललामं च  
४१. धर्मं चरति  
(वा०) अधर्माच्चेति वक्तव्यम्।  
४२. प्रतिपथमेति ठंश्च  
४३. समवायान्समवैति<sup>९</sup>  
४४. परिषदो ण्यः<sup>१०</sup>  
४५. सेनाया वा  
४६. संज्ञायां ललाटकुक्कुट्यौ  
पश्यति  
४७. तस्य धर्म्यम्<sup>११</sup>  
४८. अणमहिष्यादिभ्यः  
१४०. महिषी प्रजापति प्रजावती प्रलेपिका  
विलेपिका अनुलेपिका पुरोहिता मणिपाली  
अनुवारक (अनुचारक) होतृ यजमान।  
इति महिष्यादिः।।

### विमर्श

१-‘निर्वृत्ते’ की अनुवृत्ति ४।४।२१। तक जाती है। २-इस सूत्र की अनुवृत्ति ४।४।२५। तक जाती है। ३-इस सूत्र से ‘वर्तते’ की अनुवृत्ति ४।४।२९। तक जाती है। ४-यहाँ से ‘तत्’ की अनुवृत्ति ४।४।४६। तक जाती है। ५-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ४।४।३१। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से ‘हन्ति’ की अनुवृत्ति ४।४।३६। तक जाती है। ७-‘धावति’ की अनुवृत्ति ४।४।३८। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से ‘गृह्णाति’ की अनुवृत्ति ४।४।४०। तक जाती है। ९-इस सूत्र से ‘समवैति’ की अनुवृत्ति ४।४।४५। तक जायेगी। १०-‘ण्यः’ की अनुवृत्ति ४।४।४५। तक जाती है। ११-इस सूत्र से ‘तस्य’ की अनुवृत्ति ४।४।५०। तक तथा ‘धर्म्यम्’ की अनुवृत्ति ४।४।४९। तक जाती है।

४९. ऋतोऽञ्  
(वा०) नराच्चेति वक्तव्यम्।  
(वा०) विशसितुरिड्लोपश्चाञ्  
वक्तव्यः।  
(वा०) विभाजयितुर्णिलोपश्चाञ्  
वक्तव्यः।
५०. अवक्रयः  
५१. तदस्य पण्यम्<sup>१</sup>  
५२. लवणाड्डञ्  
५३. किसरादिभ्यः छन्<sup>२</sup>  
१४१. किसर नरद नलद स्थागल तगर  
गुगुलु उशीर हरिद्रा हरिद्रु पर्णी (पर्णी)।  
इति किसरादिः।।  
५४. शालालुनोऽन्यतरस्याम्  
५५. शिल्पम्<sup>३</sup>  
५६. मडुकझर्झरादन्यतरस्याम्  
५७. प्रहरणम्<sup>४</sup>  
५८. परश्वधाड्डञ्  
५९. शक्तियष्ट्योरीकक्  
६०. अस्ति नास्ति दिष्टं मतिः  
६१. शीलम्<sup>५</sup>
६२. छत्रादिभ्यो णः  
१४२. छत्र शिक्षा प्ररोह स्था बुभुक्षा चुरा  
तितिक्षा उपस्थान कृषि कर्मन् विश्वधा तपस्  
सत्य अनृत विशिखा विशिका भक्षा उदस्थान  
पुरोडा विक्षा चुक्षा मन्द्रा। इति छत्रादिः।।  
६३. कर्माध्ययने वृत्तम्<sup>६</sup>  
६४. बह्वचूर्वपदाड्डञ्  
६५. हितं भक्षाः  
६६. तदस्मै दीयते नियत (नियुक्त)म्<sup>७</sup>  
६७. श्राणामांसौदनाद्विठन्  
(वा०) मांसौदनग्रहणं संघात-  
विगृहीतार्थम्।  
६८. भक्तादणन्यतरस्याम्  
६९. तत्र नियुक्तः<sup>८</sup>  
७०. अगारान्ताड्डन्  
७१. अध्यायिन्यदेशकालात्  
७२. कठिनान्तप्रस्तारसंस्थानेषु  
व्यवहरति  
७३. निकटे वसति<sup>९</sup>  
७४. आवसथात्ठल्  
७५. प्राग्घिताद्यत्<sup>१०</sup>

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'तदस्य' की अनुवृत्ति ४।४।६५। तक तथा 'पण्यम्' की अनुवृत्ति ४।४।५४। तक जाती है। २-यहाँ से 'छन्' की अनुवृत्ति ४।४।५४। तक जायेगी। ३-'शिल्पम्' की अनुवृत्ति ४।४।५६। तक जायेगी। ४-इस सूत्र की अनुवृत्ति ४।४।५९। तक जाती है। ५-यहाँ से 'शीलम्' की अनुवृत्ति ४।४।६२। तक जायेगी। ६-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ४।४।६४। तक जायेगी। ७-इस अशेष सूत्र की अनुवृत्ति ४।४।६८। तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'तत्र' की अनुवृत्ति ४।४।७४। तक तथा 'नियुक्तः' की अनुवृत्ति ४।४।७०। तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'वसति' की अनुवृत्ति ४।४।७४। तक जाती है। १०-यहाँ से आगे 'तस्मै हितम्' (५।१।५।) इस सूत्र के पूर्व तक जो-जो अर्थ कहे गये हैं उन सब में सामान्यतया 'यत्' प्रत्यय का अधिकार (४।४।१४४।) जाता है।



७६. तद्वहति<sup>१</sup> रथयुगप्रासङ्गम्  
 ७७. धुरो यङ्गौ  
 ७८. खः<sup>२</sup> सर्वधुरात्  
 ७९. एकधुराल्लुक्  
 ८०. शकटादण्  
 ८१. हलसीराड्  
 ८२. संज्ञायां जन्त्याः  
 ८३. विध्यत्यधनुषा  
 ८४. धनगणं लब्धा<sup>३</sup>  
 ८५. अत्राणः  
 ८६. वशं गतः  
 ८७. पदमस्मिन्दृश्यम्  
 ८८. मूलमस्याबर्हि  
 ८९. संज्ञायां धेनुष्या  
 ९०. गृहपतिना संयुक्ते ज्यः  
 ९१. नौवयोधर्मविषमूलमूलसीता-  
 तुलाभ्यस्तार्यतुल्यप्राप्यवध्या-  
 नाम्यसमसमितसंमितेषु  
 ९२. धर्मपथ्यर्थन्यायादानपेते  
 ९३. छन्दसो निर्मिते<sup>४</sup>  
 ९४. उरसोऽण्च  
 ९५. हृदयस्य<sup>५</sup> प्रियः  
 ९६. बन्धने चर्षी  
 ९७. मतजनहलात्करणजल्पकर्षेषु  
 ९८. तत्र साधुः<sup>६</sup>  
 ९९. प्रतिजनादिभ्यः खञ्  
 १००. भक्ताणः  
 १०१. परिषदो ण्यः  
 १०२. कथादिभ्यष्ठक्  
 १०३. कथा विकथा विश्वकथा संकथा वितण्डा  
 कुष्टविद (कुष्ठविद्) जनवाद जनेवाद वृत्ति  
 संग्रह गुण गण आयुर्वेद। इति कथादिः॥  
 १०४. गुडादिभ्यष्ठक्  
 १०५. गुड कल्माष सक्तु अपूप मांसौदन  
 इक्षु वेणु संग्राम संघात (संक्राम संवाह)  
 प्रवास निवास उपवास। इति गुडादिः॥  
 १०६. पथ्यतिथिवसतिस्वपतेर्द्वज्  
 १०७. सभाया<sup>७</sup> यः  
 १०८. ढश्छन्दसि  
 १०९. समानतीर्थे वासी  
 ११०. समानोदरे शयित<sup>८</sup> ओ चोदात्तः  
 १११. सोदराद्यः  
 ११२. भवे छन्दसि<sup>९</sup>

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'तत्' की अनुवृत्ति ४।४।८६। तक, तथा 'वहति' की अनुवृत्ति ४।४।८२। तक जायेगी। २-'खः' की अनुवृत्ति ४।४।७९। तक जाती है। ३-यहाँ से 'लब्धा' की अनुवृत्ति ४।४।८५। तक जायेगी। ४-इस सूत्र से 'निर्मिते' की अनुवृत्ति ४।४।९४। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'हृदयस्य' की अनुवृत्ति ४।४।९६। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'तत्र' की अनुवृत्ति ४।४।११९। तक तथा 'साधुः' की अनुवृत्ति ४।४।१०६। तक जाती है। ७-'सभायाः' की अनुवृत्ति ४।४।१०६। तक जाती है। ८-यहाँ से 'शयितः' की अनुवृत्ति ४।४।१०९। तक जायेगी। ९-इस सूत्र से 'भवे' की अनुवृत्ति ४।४।११८। तक तथा 'छन्दसि' की अनुवृत्ति ४।४।१४४। तक जाती है।

१११. पाथोनदीभ्यां ड्यण्  
 ११२. वेशन्तहिमवद्भ्यामण्  
 ११३. स्रोतसो विभाषा ड्यङ्ग्यौ  
 ११४. सगर्भसयूथसनुताद्यन्  
 ११५. तुग्राद्धन्  
 ११६. अग्राद्यत्  
 ११७. घच्छौ च  
 ११८. समुद्राभ्राद्धः  
 ११९. बर्हिषि दत्तम्  
 १२०. दूतस्य भागकर्मणी  
 १२१. रक्षोयातूनां हननी  
 १२२. रेवतीजगतीहविष्याभ्यः प्रशस्ये  
 १२३. असुरस्य स्वम्  
 १२४. मायायामण्  
 १२५. तद्वानासामुपधानो मन्त्र इतीष्ट-  
 कासु लुक्च मतोः  
 १२६. अश्विमानण्  
 १२७. वयस्यासु मूध्नो मतुप्  
 १२८. मत्वर्थे मासतन्वोः  
 (वा०) मासतन्वोरनन्तरार्थे वा।  
 (वा०) लुगकारेकाररेफाश्च।
१२९. मधोर्ज च।  
 १३०. ओजसोऽहनि यत्खौ  
 १३१. वेशोयशआदेर्भगाद्यल्खौ  
 १३२. ख च  
 १३३. पूर्वैः कृतमिनियौ च  
 १३४. अब्धिः संस्कृतम्  
 १३५. सहस्रेण संमितौ घः  
 १३६. मतौ च  
 १३७. सोममर्हति यः  
 १३८. मये च  
 १३९. मधोः  
 १४०. वसोः समूहे च  
 (वा०) अक्षरसमूहे छन्दस उप-  
 संख्यानम्।  
 १४१. नक्षत्राद्धः  
 १४२. सर्वदेवात्तातिल्  
 १४३. शिवशमरिष्टस्य करे  
 १४४. भावे च  
 (प्राग्वहतेरपमित्यधर्म शीलं हलपरिषदो  
 रक्षोनक्षत्राच्चत्वारि॥)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे चतुर्थस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायश्च।



### विमर्श

१-यहाँ से 'अग्रात्' की अनुवृत्ति ४।४।११७। तक जाती है। २-'असुरस्य स्वम्' की अनुवृत्ति ४।४।१२४। तक जायेगी। ३-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ४।४।१२७। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'मत्वर्थे' की अनुवृत्ति ४।४।१३२। तक, तथा 'मासतन्वोः' की अनुवृत्ति ४।४।१२९। तक जायेगी। ५-यहाँ से 'वेशोयशआदेर्भगात्' की अनुवृत्ति ४।४।१३२। तक जाती है। ६-'सहस्रेण घः' की अनुवृत्ति ४।४।१३६। तक जाती है। ७-यहाँ से 'सोमम् यः' की अनुवृत्ति ४।४।१३८। तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'मये' की अनुवृत्ति ४।४।१४०। तक जायेगी। ९-इस सूत्र से 'तातिल्' की अनुवृत्ति ४।४।१४४। तक जाती है। १०-यहाँ से 'शिवशमरिष्टस्य' की अनुवृत्ति ४।४।१४४। तक जाती है।



## अथ पञ्चमोऽध्यायः

### प्रथमः पादः

१. प्राक् क्रीताच्छः<sup>१</sup>

२. उगवादिभ्यो यत्<sup>२</sup>

१४६. गो हविस् अक्षर विष बर्हिस् अष्टका  
स्वदा युग मेधा स्रुच्। 'नाभि नभं च' ९५।  
'शुनः संप्रसारणं वा च दीर्घत्वं तत्संनियोगेन  
चान्तोदात्तत्वम्' ९६। 'ऊषसोऽनङ् च' ९७।  
कूप खद दर खर असुर अध्वन् (अध्वन)  
क्षर वेद बीज दीस (दीप्त) ॥ इति गवादिः ॥

३. कम्बलाच्च संज्ञायाम्

४. विधाषा हविरपूपादिभ्यः

१४७. अपूप तण्डुल अभ्युष (कभ्युष)  
[अभ्युष अवोष अभ्येष] पृथुक ओदन सूप  
पूप किण्व प्रदीप मुसल कटक कर्णवेष्टक  
[ईर्गल] अर्गल। 'अन्नविकारेभ्यश्च' ९८। यूप  
स्थूणा दीप अश्व पत्र। इत्यपूपादिः ॥

५. तस्मै हितम्<sup>३</sup>

६. शरीरावयवाद्यत्<sup>४</sup>

(वा०) यत्प्रकरणे रथाच्च।

७. खलयवमाषतिलवृषब्रह्मणश्च

८. अजाविभ्यां थ्यन्

९. आत्मन्विश्वजनभोगोत्तरपदात्खः

(वा०) आचार्यादणत्वं च।

(वा०) पञ्चजनादुपसंख्यानम्।

(वा०) सर्वजनाद्वज् खश्च।

(वा०) महाजनाद्वज्।

(वा०) कर्मधारयादेवेष्ट्यते।

१०. सर्वपुरुषाभ्यां णढजौ

(वा०) सर्वाण्णो वेति वक्तव्यम्।

(वा०) पुरुषाद्वधविकारसमूहतेन-  
कृतेष्विति वक्तव्यम्।

११. माणवचरकाभ्यां खज्

१२. तदर्थं विकृतेः प्रकृतौ<sup>५</sup>

१३. छदिरुपधिवलेढज्

१४. ऋषभोपानहोर्व्यः

१५. चर्मणोऽज्

१६. तदस्य तदस्मिन्स्यादिति<sup>६</sup>

१७. परिखाया ढज्

### विमर्श

१-‘तेन क्रीतम्’ (५।१।३६।) के पूर्व जो-जो अर्थ कहे गये हैं उन सबों में सामान्यतया ‘छः’ प्रत्यय का अधिकार जाता है। यद्यपि क्रीत अर्थ का निर्देश ५।१।३६। में किया है, तथापि ‘प्राग्वतेष्टज्’ (५।१।१८) से क्रीताद्यर्थों में प्रत्यय विशेषों का विधान करने से छ प्रत्यय का अधिकार ५।१।१७। तक ही जानना चाहिए। २-इस सूत्र से ‘यत्’ की अनुवृत्ति ५।१।४। तक जाती है। ३-इस सूत्र की अनुवृत्ति ५।१।१५। तक जाती है। ४-‘यत्’ की अनुवृत्ति ५।१।७। तक जायेगी। ५-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ५।१।१५। तक जाती है। ६-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति ५।१।१७। तक जाती है।

१८. प्राग्वतेष्टञ्<sup>१</sup> (वा०) सुवर्णशतमानयोरुपसंख्यानम्।  
 १९. आर्हादगोपुच्छसंख्यापरि- ३०. द्वित्रिपूर्वा<sup>२</sup> त्रिष्कात्  
 माणाद्वक्<sup>३</sup> (वा०) बहुपूर्वाच्चेति वक्तव्यम्।  
 २०. असमासे निष्कादिभ्यः ३१. बिस्ताच्च  
 १४८. निष्क पण पाद माष वाह द्रोण षष्टि॥ (वा०) बहुपूर्वाच्च।  
 इति निष्कादिः॥ ३२. विंशतिकत्खः  
 (वा०) इत ऊर्ध्वं तु संख्यापूर्वपदानां ३३. खार्या ईकन्  
 तदन्तग्रहणं प्राग्वतेरिष्यते तच्चालुकि। (वा०) केवलायाश्चेति वक्तव्यम्।  
 २१. शताच्च ठन्यतावशते ३४. पणपादमाषशताद्यत्<sup>४</sup>  
 २२. संख्याया अतिशदन्तायाः कन्<sup>५</sup> ३५. शाणाद्वा<sup>६</sup>  
 २३. वतोरिङ् वा ३६. द्वित्रिपूर्वादणच  
 २४. विंशतित्रिंशद्भ्यां ड्वुन्नसंज्ञायाम् ३७. तेन क्रीतम्  
 २५. कंसाद्विठन् ३८. तस्य निमित्तं संयोगोत्पातौ<sup>७</sup>  
 (वा०) अर्थाच्चेति वक्तव्यम्। (वा०) वातपित्तश्लेष्मभ्यः शमन-  
 (वा०) कार्षापणाद्विठन्वक्तव्यः प्रतिरा- कोपयोरुपसंख्यानम्।  
 देशश्च वा। (वा०) संनिपाताच्च।  
 २६. शूर्पादजन्यतरस्याम् ३९. गो-द्व्यचोऽसंख्यापरिमाणा-  
 २७. शतमानविंशतिकसहस्रवसनादण् श्वादेर्यत्<sup>८</sup>  
 २८. अध्यर्धपूर्वद्विगोलुग<sup>९</sup> संज्ञायाम् १४९. अश्व अश्मन् गण ऊर्णा (उर्म) उमा  
 २९. विभाषा<sup>१०</sup> कार्षापणसहस्राभ्याम् भङ्गा (गङ्गा) वर्षा वसु ॥ इत्यश्वादिः॥  
 ४०. पुत्राच्छ च

### विमर्श

१-‘तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः’ (५।१।११५।) के पूर्व तक जो-जो अर्थ कहे गये हैं उन सब में यहाँ से ‘ठञ्’ प्रत्यय का अधिकार जानना चाहिए। २-‘तदर्हति’ (५।१।६३।) सूत्र के पूर्व तक जो-जो अर्थ कहे गये हैं उन सबों में ‘ठक्’ प्रत्यय का अधिकार जानना चाहिए। ३-इस सूत्र से ‘कन्’ की अनुवृत्ति ५।१।२३। तक जाती है। ४-इस सूत्र से ‘अध्यर्धपूर्वद्विगोः’ की अनुवृत्ति ५।१।३५। तक, तथा ‘लुक्’ की अनुवृत्ति ५।१।३१। तक जाती है। ५-‘विभाषा’ की अनुवृत्ति ५।१।३१। तक जायेगी। ६-‘द्वि-त्रिपूर्वात्’ की अनुवृत्ति ५।१।३१। तक जाती है। ७-इस सूत्र से ‘यत्’ की अनुवृत्ति ५।१।३६। तक जाती है। ८-‘शाणात्’ की अनुवृत्ति ५।१।३६। तक जायेगी। ९-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ५।१।४१। तक जाती है। १०-इस सूत्र से ‘यत्’ की अनुवृत्ति ५।१।४०। तक जायेगी।



४१. सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणजौ<sup>१</sup> ५५. कुलिजाल्लुक्खौ च  
 ४२. तस्येश्वरः ५६. सोऽस्यांशवस्नभृतयः  
 ४३. तत्र विदित इति<sup>२</sup> च ५७. तदस्य परिमाणम्<sup>१०</sup>  
 ४४. लोकसर्वलोकाद्वज् ५८. संख्यायाः संज्ञासंघसूत्राध्ययनेषु  
 ४५. तस्य वापः<sup>३</sup> (वा०) तत्र संज्ञायां स्वार्थे प्रत्ययो  
 ४६. पात्रात्ठन् वाच्यः।  
 ४७. तदस्मिन्वृद्ध्यायलाभशुल्कोपदा (वा०) स्तोमे डविधिः।  
 दीयते<sup>४</sup> (वा०) शनृशतोर्दिनिश्छन्दसि।  
 (वा०) चतुर्थ्यर्थ उपसंख्यानम्। (वा०) विंशतेश्च।  
 ४८. पूरणार्धाद्वन्<sup>५</sup> ५९. पंक्तिविंशतित्रिंशच्चत्वारिंशत्पञ्चा-  
 ४९. भागाद्यच्च शत्वष्टिसप्तत्यशीतिनवतिशतम्  
 ५०. तद्धरतिवहत्यावहति<sup>६</sup>भाराद्वंशा- ६०. पञ्चदशतौ वर्गे<sup>११</sup> वा  
 दिभ्यः ६१. सप्तनोऽज् छन्दसि  
 १५०. वंश कुटज बल्वज मूल स्थूणा (स्थूण) ६२. त्रिंशच्चत्वारिंशतोर्ब्राह्मणे संज्ञायां  
 अक्ष अश्मन् अश्व श्लक्ष्ण इक्षु खट्वा। डण्  
 इति वंशादिः॥ ६३. तदर्हति<sup>१२</sup>  
 ५१. वस्न-द्रव्याभ्यां ठन्-कनौ ६४. छेदादिभ्यो नित्यम्<sup>१३</sup>  
 ५२. संभवत्यवहरति पचति<sup>७</sup> १५१. छेद भेद द्रोह दोह नर्ति (नर्त) कर्ष  
 (वा०) तत्पचतीति द्रोणादणच। (तीर्थ) संप्रयोग विप्रयोग प्रयोग (विप्रकर्ष)  
 ५३. आढकाचितपात्रात्खोऽन्यतरस्याम्<sup>८</sup> प्रेषण संप्रश्न विप्रश्न विकर्ष प्रकर्ष। 'विराग  
 ५४. द्विगोः छंश्च<sup>९</sup> विरङ्गं च' ९९॥ इति छेदादिः॥

### विमर्श

१-इस अशेष सूत्र की अनुवृत्ति ५।१।४३। तक जाती है। २-यहाँ स 'तत्र विदितः' की अनुवृत्ति ५।१।४४। तक जायेगी। ३-'तस्य वापः' की अनुवृत्ति ५।१।४६ तक जायेगी। ४-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ५।१।४९। तक जाती है। ५-'ठन्' की अनुवृत्ति ५।१।४९। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'तत्' की अनुवृत्ति ५।१।५५। तक, तथा 'हरतिवहत्यावहति' की अनुवृत्ति ५।१।५१। तक जायेगी। ७-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ५।१।५५। तक जाती है। ८-इस अशेष सूत्र की अनुवृत्ति ५।१।५४। तक जायेगी। ९-'द्विगोष्ठन्' की अनुवृत्ति ५।१।५५। तक जाती है। १०-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति ५।१।६२। तक जाती है। ११-'वर्गे' की अनुवृत्ति ५।१।६१। तक जायेगी। १२-यहाँ से 'तत्' की अनुवृत्ति ५।१।७६। तक, तथा 'अर्हति' की अनुवृत्ति ५।१।७१। तक जाती है। १३-'नित्यम्' की अनुवृत्ति ५।१।६५। तक जाती है।

६५. शीर्षच्छेदाद्यच्च<sup>१</sup>  
 ६६. दण्डादिभ्यः (यत् )  
 १५२. दण्ड मुसल मधुपर्क कशा अर्घ मेघ  
 मेधा सुवर्ण उदक वध युग गुहा भाग इभ  
 भङ्ग ॥ इति दण्डादिः॥  
 ६७. छन्दसि च  
 ६८. पात्रादूर्ध्व  
 ६९. कडङ्करदक्षिणाच्छ च  
 ७०. स्थालीबिलात्  
 ७१. यज्ञर्त्विग्भ्यां घखजौ  
 (वा०) यज्ञर्त्विग्भ्यां तत्कर्माहंती-  
 त्युपसंख्यानम्।  
 ७२. पारायणतुरायणचान्द्रायणं वर्तयति  
 ७३. संशयमापन्नः  
 ७४. योजनं गच्छति<sup>२</sup>  
 (वा०) क्रोशशतयोजनशतयोरुपसंख्यानम्।  
 (वा०) ततोऽभिगमनमर्हतीति च  
 वक्तव्यम्।  
 ७५. पथः<sup>३</sup> प्कन्  
 ७६. पन्थो ण नित्यम्  
 ७७. उत्तरपथेनाहतं च  
 (वा०) आहतप्रकरणे वारिजङ्गल-  
 स्थलकान्तारपूर्वादुपसंख्यानम्।  
 (वा०) अजपथशङ्कुपथाभ्यां च।  
 (वा०) मधुकमरीचयोरणस्थलात्।  
 ७८. कालात्<sup>४</sup>  
 ७९. तेन निर्वृत्तम्  
 ८०. तमधीष्टो भूतो भूतो भावी<sup>५</sup>  
 ८१. मासाद्वयसि<sup>६</sup> यत्खजौ  
 ८२. द्विगोर्यप्<sup>७</sup>  
 ८३. षण्मासाण्यच्च<sup>८</sup>  
 ८४. अवयसि ठंश्च  
 ८५. समायाः खः<sup>९</sup>  
 ८६. द्विगोर्वा<sup>१०</sup>  
 ८७. रात्र्यहःसंवत्सराच्च  
 ८८. वर्षा<sup>११</sup>ल्लुक्च  
 ८९. चित्तवति नित्यम्  
 ९०. षष्टिकाः षष्टिरात्रेण पच्यन्ते  
 ९१. वत्सराणाच्छछन्दसि<sup>१२</sup>  
 ९२. संपरिपूर्वात्ख च

### विमर्शः

१-इस सूत्र से 'यत्' की अनुवृत्ति ५।१।७०। तक जायेगी। २-'गच्छति' की अनुवृत्ति ५।१।७७। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'पथः' की अनुवृत्ति ५।१।७६। तक जाती है। ४-'व्युष्टादिभ्योऽण्' (५।१।९७।) के पूर्व तक जो-जो प्रत्यय होंगे वे सब कालवाचक प्रातिपदिक से ही सम्पन्न होंगे। ५-इस सूत्र की अनुवृत्ति यथा सम्भव ५।१।८५। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'मासात्' की अनुवृत्ति ५।१।८२। तक, तथा 'वयसि' की ५।१।८३। तक जायेगी। ७-'यप्' की अनुवृत्ति ५।१।८३। तक जाती है। ८-'षण्मासाण्यत्' की अनुवृत्ति ५।१।८४। तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'समायाः' की अनुवृत्ति ५।१।८६। तक, तथा 'खः' की ५।१।८८। तक जाती है। १०-इस सूत्र से 'द्विगोः' की अनुवृत्ति ५।१।८९। तक तथा 'वा' की अनुवृत्ति ५।१।८८। तक जाती है। ११-'वर्षात्' की अनुवृत्ति ५।१।८९। तक जायेगी। १२-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ५।१।९२। तक जाती है।



९३. तेन परिज्यलभ्यकार्यसुकरम्

९४. तदस्य ब्रह्मचर्यम्

(वा०) महानाम्यादिभ्यः षष्ठ्यन्तेभ्य  
उपसंख्यानम्।

१५३. (वा ३०६७)। महानाम्नी आदित्य-  
व्रत गोदान॥ इति महानाम्यादिः॥

(वा०) अवान्तरदीक्षादिभ्योऽर्निर्वक्तव्यः

१५४. (वा ३०६९)। अवान्तरदीक्षा  
तिलव्रत देवव्रत॥ इत्यवान्तरदीक्षादिः॥

(वा०) चतुर्मासाण्यो यज्ञे।

९५. तस्य च दक्षिणा यज्ञाख्येभ्यः

९६. तत्र च दीयते कार्यं भववत्

९७. व्युष्टादिभ्योऽण्

१५५. व्युष्ट नित्य निष्क्रमण प्रवेशन  
(उपसंक्रमण) तीर्थ (अस्तरण) संग्राम  
संघात॥ इति व्युष्टादिः॥

(वा०) अग्निपदादिभ्य उपसंख्यानम्

१५६. वा (३०७५)। अग्निपद पीलुमूल  
(पीलू मूल) प्रवास उपवास॥ इत्यग्नि-  
पदादिः॥ आकृतिगणः॥

९८. तेन<sup>२</sup> यथाकथाचहस्ताभ्यां णयतौ

९९. संपादिनि<sup>३</sup>

१००. कर्मवेषाद्यत्

१०१. तस्मै प्रभवति<sup>४</sup> संतापादिभ्यः

१५७. संताप संनाह संग्राम संयोग संपराय  
(संवेशन) संपेव निषेव (सर्ग) निसर्ग विसर्ग  
उपसर्ग प्रवास उपवास संघात संवेश संवास  
संमोदन (सक्तु) 'मांसौदनाद्विगृहीतादपि'  
१००। इति संतापादिः॥

१०२. योगाद्यच्च

१०३. कर्मण उकञ्

१०४. समयस्तदस्य प्राप्तम्<sup>५</sup>

१०५. ऋतो<sup>६</sup>रण्

(वा०) उपवस्त्रादिभ्य उपसंख्यानम्।

१५८. (वा)। उपवस्तृ प्राशितृ॥  
इत्युपवस्त्रादिः॥

१०६. छन्दसि घस्

१०७. काला<sup>७</sup>द्यत्

१०८. प्रकृष्टे ठञ्

१०९. प्रयोजनम्<sup>८</sup>

११०. विशाखाषाढादण्मन्थदण्डयोः

(वा०) चूडादिभ्य उपसंख्यानम्।

१५९. चूडा श्रद्धा॥ इति चूडादिः॥

१११. अनुप्रवचनादिभ्यश्छः<sup>९</sup>

१६०. अनुप्रवचन उत्थापन उपस्थापन  
संवेशन प्रवेशन अनुप्रवेशन अनुवासन  
अनुवचन अनुवाचन अन्वारोहण प्रारम्भण  
आरम्भण आरोहण॥ इत्यनुप्रवचनादिः॥

### विमर्श

१-यहा से 'तत्र दीयते कार्यम्' की अनुवृत्ति ५।१।९७। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'तेन' की अनुवृत्ति ५।१।१००। तक जाती है। ३-'संपादिनि' की अनुवृत्ति ५।१।१००। तक जायेगी। ४-इस सूत्र से 'तस्मै प्रभवति' की अनुवृत्ति ५।१।१०३। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'तदस्य' की अनुवृत्ति ५।१।११४। तक, तथा 'प्राप्तम्' की अनुवृत्ति ५।१।१०७। तक जाती है। ६-'ऋतोः' की अनुवृत्ति ५।१।१०६। तक जाती है। ७-'कालात्' की अनुवृत्ति ५।१।१०८। तक जायेगी। ८-'प्रयोजनम्' की अनुवृत्ति ५।१।११४। तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'श्छः' की अनुवृत्ति ५।१।११२। तक जाती है।



(वा०) (स्वर्गादिभ्यो यद्वक्तव्यः।)

१६१. (वा० ३०७७)। स्वर्गं यशस्  
आयुस् काम धान ॥ इति स्वर्गादिः॥

(वा०) पुण्याहवाचनादिभ्यो

लुब्धक्तव्याः।

१६२. (वा ३०७८)। पुण्याहवाचन  
स्वस्तिवाचन शान्तिवाचन॥ इति  
पुण्याहवाचनादिः॥

११२. समापनात्सपूर्वपदात्

११३. ऐकागारिकट् चौरे

११४. आकालिकडाद्यन्तवचने

(वा०) आकालाट्टंश्च।

११५. तेन तुल्यं क्रिया चेद्वतिः<sup>१</sup>

११६. तत्र तस्येव

११७. तदर्हम्

११८. उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे

११९. तस्य भावस्त्वतलौ<sup>२</sup>

१२०. आ च त्वात्<sup>३</sup>

१२१. न नञ्पूर्वात्तत्पुरुषादचतुरसंगत

लवणवटयुधकतरसलसेभ्यः

१२२. पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा<sup>४</sup>

१६३. पृथु मृदु महत पटु तनु लघु बहु  
साधु आशु उरु गुरु बहुल खण्ड दण्ड  
चण्ड अकिञ्चन बाल होड पाक वत्स मन्द  
स्वादु ह्रस्व दीर्घ प्रिय वृष ऋजु क्षिप्र क्षुद्र  
अणु॥ इति पृथ्वादिः॥

१२३. वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ्च<sup>५</sup>

१६४. दृढ वृढ परिवृढ भृश कृश [वक्र]  
शुक्र चुक्र आम्र [कृष्ट] लवण ताम्र शीत  
उष्ण जड बधिर पण्डित मधुर मूर्ख मूक।  
'वेर्यातलातमतिर्मनः शारदानाम्' १०१।  
'समा मतिमनसोः' १०२। जवन। इति  
दृढादिः॥

१२४. गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः

कर्मणि<sup>६</sup> च

१६५. ब्राह्मण बाडब माणव। ('अर्हतो  
नुम्ब') १०३। चोर धूर्त आराधय विराधय  
अपराधय उपराधय एकभाव द्विभाव त्रिभाव  
अन्यभाव अक्षेत्रज्ञ संवादिन् संवेशिन्  
संभाषिन् बहुभाषिन् शीर्षघातिन् विघातिन्  
समस्थ विषमस्थ परमस्थ मध्यमस्थ अनीश्वर  
कुशल चपल निपुण पिशुन कुतूहल क्षेत्रज्ञ  
निश्र बालिश अलस दुःपुरुष कापुरुष राजन्  
गणपति अधिपति गडुल दायाद विशस्ति  
विषम विपात निपात। 'सर्ववेदादिभ्यः स्वार्थे'  
१०४। 'चतुर्वेदस्योभयपदवृद्धिश्च' १०५।  
शौटीर॥ आकृतिगणोऽयम् ॥ इति  
ब्राह्मणादिः॥

(वा०) चतुर्वर्णादीनां स्वार्थ उप-  
संख्यानम्।

१६६. (वा ३०९४)। चतुर्वर्णं चतुर्वेद  
चतुराश्रम सर्वविद्य त्रिलोक त्रिस्वर षड्गुण  
सेना अनन्तर संनिधि समीप उपमा सुख  
तदर्थ इतिह मणिक॥ इति चतुर्वर्णादिः॥

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'वतिः' की अनुवृत्ति ५।१।११८। तक जाती है। २-इस सूत्र की अनुवृत्ति ५।१।१३६। तक जाती है। ३-यहाँ से प्रारम्भ कर 'ब्राह्मणस्त्वः' (५।१।१३६।) के त्व पर्यन्त त्व तल् प्रत्यय होते हैं, ऐसा अधिकार समझना चाहिए। ४-'इमनिच्' की अनुवृत्ति ५।१।१२३। तक जाती है। ५-'ष्यञ्' की अनुवृत्ति ५।१।१२४। तक जायेगी। ६-'कर्मणि' की अनुवृत्ति ५।१।१३६। तक जाती है।



१२५. स्तेनाद्यन्नलोपश्च

१२६. सख्युर्यः

(वा०) दूतवणिग्भ्यां च।

१२७. कपिज्ञात्योर्दक्

१२८. पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्

१६७. पुरोहित। 'राजाऽसे' १०६। ग्रामिक

पिण्डिक सुहित बालमन्द (बाल मन्द)

खण्डिक दण्डिक वर्षिक कर्मिक धर्मिक

शितिक (सूतिक मूलिक तिलक) अञ्जलिक

(अन्तलिक) (रूपिक ऋषिक) पुत्रिक अविक

छत्रिक पर्षिक पथिक चर्मिक (प्रतिक) सारथि

आस्तिक सूचिक संरक्षसूचक (संरक्ष सूचक)

नास्तिक [अजानिक शाक्कर नागर चूडिक]॥

इति पुरोहितादिः॥

१२९. प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गात्रा-

दिभ्योऽञ्

१६८. उद्गातृ उन्नेतृ प्रतिहर्तृ प्रशास्तृ होतृ

पोतृ हर्तृ रथगणक पत्तिगणक सुष्ठु दुष्ठु

अध्वर्यु वधू। 'सुभग मन्त्रे' १०७।

इत्युद्गात्रादिः॥

१३०. हायनान्तयुवादिभ्योऽण्

१६९. युवन् स्थविर होतृ यजमान। 'पुरुषासे'

१०८। भ्रातृ कुतुक श्रमण (श्रणम) कटुक

कमण्डलु कुस्त्री सुस्त्री दुःस्त्री सुहृदय दुर्हृदय

सुहृद् दुर्हृद् सुभ्रातृ दुर्भ्रातृ वृषल परित्राजक

सब्रह्मचारिन् अनृशंस। 'हृदयासे' १०९।

कुशल चपल निपुण पिशुन कुतूहल क्षेत्रज्ञ।

('श्रोत्रियस्य यलोपश्च') ११०॥ इति

युवादिः॥

१३१. इगन्ताच्च लघुपूर्वात्

१३२. योपधाद् गुरुपोत्तमाद् वुञ्

१३३. द्वन्द्वमनोज्ञादिभ्यश्च

१७०. मनोज्ञ प्रियरूप अभिरूप कल्याण

मेधाविन् आढ्य कुलपुत्र छान्दस छात्र श्रोत्रिय

चोर धूर्त विश्वदेव युवन् कुपुत्र ग्रामपुत्र

ग्रामकुलाल ग्रामड (ग्रामषण्ड) ग्रामकुमार

सुकुमार बहुल (अवश्यपुत्र) अमुष्यपुत्र

अमुष्यकुल सारपुत्र शतपुत्र। इति मनोज्ञादिः॥

१३४. गोत्रचरणाच्छलाघात्याकार-

तदवेतेषु

१३५. होत्राभ्यश्छः

१३६. ब्रह्मणस्त्वः

(प्राक्क्रीताच्छताच्च सर्वभूमिसप्तनो-

ऽज्मासात्तस्मै प्रभवति न नञ्पूर्वात्षोडश॥)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे पञ्चमस्याध्यायस्य प्रथमः पादः॥



विमर्श

१-यहाँ से 'अण्' की अनुवृत्ति ५।१।१३१। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'वुञ्' की अनुवृत्ति ५।१।१३४। तक जाती है।

## द्वितीयः पादः

१. धान्यानां भवने क्षेत्रे<sup>१</sup> खञ्
२. ब्रीहिशाल्योर्दक्
३. यवयवकषष्टिकाद्यत्<sup>२</sup>
४. विभाषा तिलमाषोमाभङ्गाणुभ्यः
५. सर्वचर्मणः कृतः खखजौ
६. यथामुखसंमुखस्य दर्शनः खः<sup>३</sup>
७. तत्स<sup>४</sup>वदिः पथ्यङ्गकर्मपत्रपात्रं  
व्याप्नोति
८. आप्रपदं प्राप्नोति
९. अनुपदसर्वात्रायानयं बद्धाभक्षय-  
तिनेयेषु
१०. परोवरपरम्परपुत्रपौत्रमनुभवति
११. अवारप्रात्यन्तानुकामं गामी
१२. समांसमां विजायते<sup>५</sup>
- (वा०) खप्रत्ययानुत्पत्तौ यलोपो वा  
वक्तव्यः।
१३. अद्यश्चीनाऽवष्टब्धे
१४. आगवीनः
१५. अनुग्वलं गामी<sup>६</sup>
१६. अध्वनो यत्खौ<sup>७</sup>

१७. अभ्यमित्राच्छ च
१८. गोष्ठात्ख<sup>८</sup>ञ्भूतपूर्वे
१९. अश्वस्यैकाहगमः
२०. शालीनकौपीने अधृष्टाकार्ययोः
२१. व्रातेन जीवति
२२. साप्तपदीनं सख्यम्
२३. हैयङ्गवीनं संज्ञायाम्
२४. तस्य पाकमूले<sup>९</sup> पील्वादि-  
कर्णादिभ्यः कुणब्जाहचौ
१७१. पीलु कर्कन्धू (कर्कन्धु) शमी करीर  
बल (कुवल) बदर अश्वत्थ खदिर।। इति  
पील्वादिः।।
१७२. कर्ण अक्षि नख मुख केश पाद  
गुल्फ भ्रू शृङ्ग दन्त ओष्ठ पृष्ठ।। इति  
कर्णादिः।।
२५. पक्षात्तिः
२६. तेन वित्तश्चुष्वणपौ
२७. विनञ्भ्यां नानाजौ नसह
२८. वेः<sup>१०</sup> शालच्छङ्कटचौ
२९. संप्रोदश्च कटच्<sup>११</sup>

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'धान्यानां भवने क्षेत्रे' की अनुवृत्ति ५।२।४। तक जाती है। २-'यत्' की अनुवृत्ति ५।२।४। तक जाती है। ३-'खः' की अनुवृत्ति ५।२।१५। तक जाती है। ४-यहाँ से 'तत्' की अनुवृत्ति ५।२।१७। तक जाती है। ५-'विजायते' की अनुवृत्ति ५।२।१३। तक जायेगी। ६-'अलंगामी' की अनुवृत्ति ५।२।१७। तक जाती है। ७-इस सूत्र से 'यत्खौ' की अनुवृत्ति ५।२।१७। तक जाती है। ८-'खञ्' की अनुवृत्ति ५।२।२३। तक जायेगी। ९-यहाँ से 'तस्य पाकमूले' की अनुवृत्ति ५।२।२५। तक जाती है। १०-इस सूत्र से 'वेः' की अनुवृत्ति ५।२।२९। तक जाती है। ११-'कटच्' की अनुवृत्ति ५।२।३०। तक जायेगी।



- (वा०) अलाबूतिलोमाभङ्गाभ्यो  
रजस्युपसंख्यानम्।
- (वा०) गोष्ठजादयः स्थानादिषु  
पशुनामभ्यः।
- (वा०) संघाते कटच्।
- (वा०) विस्तारे पटच्।
- (वा०) द्वित्वे गोयुगच्।
- (वा०) षट्त्वे षड्गवच्।
- (वा०) स्नेहे तैलच्।
- (वा०) भवने क्षेत्रे शाकटशाकिनौ।
३०. अवा<sup>१</sup>त्कुटारच्च
३१. नते नासिकायाः संज्ञायां<sup>२</sup> टीटञ्जा  
टज्झटचः
३२. <sup>३</sup>नेर्बिडज्विरीसचौ
३३. इनचिपटच्चिकचि च
- (वा०) कप्रत्ययचिकादेशौ च वक्तव्यौ।
- (वा०) क्लित्रस्य चिल् पिल् लश्चास्य  
चक्षुषी।
- (वा०) चुल् च।
३४. उपाधिभ्यां त्यक्त्रासन्नारूढयोः
३५. कर्मणि घटोऽठच्
३६. तदस्य<sup>४</sup> संजातं तारकादिभ्य इतच्
१७३. तारका पुष्प कर्णक मञ्जरी ऋजीष  
(क्षण सूच) मूत्र निष्क्रमण पुरीष उच्चार
- प्रचार (विचार) कुडमल कण्टक मुसल  
(मुकुल) कुसुम कुतूहल स्तवक (स्तवक)  
किसलय पल्लव (खण्ड) वेग निद्रा मुद्रा  
बुभुक्षा (धेनुष्या) पिपासा श्रद्धा अत्र पुलक  
अङ्गारक वर्णक द्रोह दोह सुख दुःख उत्कण्ठा  
भर व्याधि वर्मन् व्रण गौरव शास्त्र तरङ्ग  
तिलक चन्द्रक अन्धकार गर्व कुमुर (मुकुर)  
हर्ष उत्कर्ष (रण) कुवलय गर्ध क्षुध् सीमन्त  
ज्वर गर रोग रोमाञ्च पण्डा कज्जल तृष  
कोरक कल्लोल स्थपुट फल कञ्चुक शृङ्गार  
अङ्कुर शैवल वकुल श्वभ्र आराल कलङ्क  
कदम (कन्दल) मूर्च्छा अङ्गार हस्तक  
प्रतिबिम्ब विध्नतन्त्र प्रत्यय दीक्षा गर्ज।  
'गर्भादप्राणिनि' १११। इति तारकादिः।।  
आकृतिगणः।।
३७. प्रमाणे द्वयसज्दघ्नज्मात्रचः<sup>५</sup>
- (वा०) प्रमाणे लः
- (वा०) द्विगोर्नित्यम्।<sup>६</sup>
- (वा०) प्रमाणपरिमाणाभ्यां संख्या-  
याश्चापि संशये मात्रच्।
- (वा०) वत्वन्तात्स्वार्थे द्वयसज्मात्रचौ  
बहुलम्।
३८. पुरुषहस्तिभ्यामणच्
३९. यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्<sup>६</sup>।
- (वा०) युष्मदस्मदोः सादृश्ये  
वतुब्वाच्यः।
४०. किमिदंभ्यां वो घः<sup>७</sup>

### विमर्श

१-‘अवात्’ की अनुवृत्ति ५।२।३१। तक जाती है। २-इस सूत्र से ‘नते नासिकायाः’ की अनुवृत्ति ५।२।३३। तक तथा ‘संज्ञायाम्’ की अनुवृत्ति ५।२।३४। तक जाती है। ३-‘नेः’ की अनुवृत्ति ५।२।३३। तक जायेगी। ४-इस सूत्र से ‘तदस्य’ की अनुवृत्ति ५।२।४४। तक जायेगी। ५-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ५।२।३८। तक जाती है। ६-‘वतुप्’ की अनुवृत्ति ५।२।४१। तक जायेगी। ७-यहाँ से ‘वो घः’ की अनुवृत्ति ५।२।४१। तक जाती है।

४१. किमः संख्यापरिमाणे इति च  
 ४२. संख्याया अवयवे तयप्  
 ४३. द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा<sup>१</sup>  
 ४४. उभादुदात्तौ नित्यम्  
 ४५. तदस्मिन्नधिकमिति<sup>२</sup> दशान्ताङ्गः  
 ४६. शदन्तविंशतेश्च  
 ४७. संख्याया<sup>३</sup> गुणस्य निमाने मयट्  
 ४८. तस्य पूरणे डट्<sup>४</sup>  
 ४९. नान्तादसंख्यादेर्मट्<sup>५</sup>  
 ५०. थट् च च्छन्दसि  
 ५१. षट्कृतिकतिपयचतुरां थुक्  
 (वा०) चतुरश्छयतावाद्यक्षरलोपश्च।  
 ५२. बहुपूगणसङ्घस्य तिथुक्  
 ५३. वतोरिथुक्  
 ५४. द्वेस्तीयः<sup>६</sup>  
 ५५. त्रेः संप्रसारणं च  
 ५६. विंशत्यादिभ्यस्तमड्<sup>७</sup> न्यतरस्याम्  
 ५७. नित्यं<sup>८</sup> शतादिमासार्धमास-  
 संवत्सराच्च।  
 ५८. षष्ठ्यादेश्चासंख्यादेः

५९. मतौ छः<sup>९</sup> सूक्तसाम्नोः  
 ६०. अध्यायानुवाकयोः<sup>१०</sup> लुक्  
 ६१. विमुक्तादिभ्योऽण्  
 १७४. विमुक्त देवासुर रक्षोसुर उपसद् सुवर्ण  
 परिसारक (सदसत्) वसु मरुत् पत्नीवत्  
 वसुमत् महीयत्व सत्त्वत् बर्हवत् दशार्ण  
 दशार्ह वयस् हविर्धान पतत्रिन् महित्री  
 अस्यहत्य सोमापुषन् (सोमापूषन्) इडा  
 अग्नाविष्णू उर्वशी वृत्रहन् ।। इति  
 विमुक्तादिः।।  
 ६२. गोषदादिभ्यो वुन्<sup>११</sup>  
 १७५. गोषद (गोषद् ) इषेत्वा मातरिश्चन्  
 देवस्य त्वा देवीरापः कृष्णोऽस्याखरेष्ठः  
 देवीधिषा (दैवीधिय) रक्षोहण युञ्जान अञ्जन  
 प्रभूत प्रतूत कृशानु (कृशाकु)।। इति  
 गोषदादिः।।  
 ६३. तत्र कुशलः<sup>१२</sup> पथः  
 ६४. आकर्षादिभ्यः कन्<sup>१३</sup>  
 १७६. आकर्ष त्सरु पिशाच पिचण्ड अशनि  
 अश्मन् निचय चय (विजय) जय आचय  
 नय पाद दीप हृद ह्राद ह्राद (गद्गद)  
 शकुनि।। इत्याकर्षादिः।

### विमर्श

१-‘तयस्यायच्’ की अनुवृत्ति ५।२।४४। तक जायेगी। २-इस सूत्र से ‘तदस्मिन्नधिकम् डः’ की अनुवृत्ति ५।२।४६। तक जाती है। ३-यहाँ से ‘संख्यायाः’ की अनुवृत्ति ५।२।५८। तक जाती है। ४-इस सूत्र से ‘तस्य पूरणे’ की अनुवृत्ति ५।२।५८। तक, तथा ‘डट्’ की अनुवृत्ति ५।२।५३। तक जाती है। ५- इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ५।२।५०। तक जाती है। ६-‘तीयः’ की अनुवृत्ति ५।२। ५५। तक जाती है। ७-‘तमट्’ की अनुवृत्ति ५।२।५८। तक जायेगी। ८-नित्यम् की अनुवृत्ति ५।२।५८। तक जायेगी। ९-यहाँ से ‘मतौ’ की अनुवृत्ति ५।२।६२। तक, तथा ‘छः’ की अनुवृत्ति ५।२।६०। तक जाती है। १०-‘अध्यायानुवाकयोः’ की अनुवृत्ति ५।२।६२। तक जायेगी। ११-‘वुन्’ की अनुवृत्ति ५।२।६३। तक जाती है। १२-इस सूत्र से ‘तत्र’ की अनुवृत्ति ५।२।६७। तक, तथा ‘कुशलः’ की अनुवृत्ति ५।२।६४। तक जाती है। १३-‘कन्’ की अनुवृत्ति ५।२।८२। तक जायेगी।



६५. धनहिरण्यात्कामे  
 ६६. स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते<sup>१</sup>  
 ६७. उदराट्टगाद्यूने  
 ६८. सस्येन परिजातः  
 ६९. अंशं हारी  
 ७०. तन्त्रादचिरापहते  
 ७१. ब्राह्मणकोष्णिके संज्ञायाम्  
 ७२. शीतोष्णाभ्यां कारिणि  
 ७३. अधिकम्  
 ७४. अनुकाभिकाभीकः कमिता  
 ७५. पार्श्वेनान्विच्छति<sup>२</sup>  
 ७६. अयःशूलदण्डाजिनाभ्यां ठक्ठञौ  
 ७७. तावतिथं ग्रहणमिति लुग्वा  
 (वा०) तावतिथेन गृहणातीति  
 कन्वक्तव्यो नित्यं च लुक्।  
 ७८. स एषां ग्रामणीः  
 ७९. शृङ्खलमस्य बन्धनं करभे  
 ८०. उत्क उन्मनाः  
 ८१. कालप्रयोजनाद्रोगे  
 ८२. तदस्मिन्नन्नं प्रायेण संज्ञायाम्<sup>३</sup>  
 (वा०) वटकेभ्य इनिर्वाच्यः  
 ८३. कुल्माषादज्  
 ८४. श्रोत्रियंश्छन्दोऽधीते  
 ८५. श्राद्धमनेन<sup>४</sup> भुक्तमिनिठनौ  
 ८६. पूर्वादिनिः<sup>५</sup>

८७. सपूर्वाच्च  
 ८८. इष्टादिभ्यश्च  
 १७७. इष्ट पूर्त उपासादित निगदित परिगदित  
 (परिवादित) निकथित निषादित निपठित  
 संकलित परिकलित संरक्षित परिरक्षित अर्चित  
 गणित अवकीर्ण आयुक्त गृहीत आम्नात  
 श्रुत अधीत (अवधान) आसेवित अवधारित  
 अवकल्पित निराकृत उपकृत उपाकृत अनुयुक्त  
 अनुगणित अनुपठित व्याकुलित। इतीष्टादिः॥  
 ८९. छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ  
 पर्यवस्थातरि  
 ९०. अनुपद्यन्वेष्टा  
 ९१. साक्षाद्द्रष्टरि संज्ञायाम्  
 ९२. क्षेत्रियचरक्षेत्रे चिकित्स्यः  
 ९३. इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्र-  
 सृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा  
 ९४. तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्<sup>६</sup>  
 ९५. रसादिभ्यश्च  
 १७८. रस रूप वर्ण गन्ध स्पर्श शब्द स्नेह  
 भाव। 'गुणात्' ११२। 'एकाचः' ११३॥  
 इति रसादिः॥  
 (वा०) गुणवचनेभ्यो मतुपो लुक्  
 ९६. प्राणिस्थादातो लजन्यतरस्याम्<sup>७</sup>  
 (वा०) प्राण्यङ्गादेव।

### विमर्श

१- 'प्रसिते' की अनुवृत्ति ५।२।६७। तक जाती है। २- 'अन्विच्छति' की अनुवृत्ति ५।२।७६। तक जाती है। ३- इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ५।२।८३। तक जाती है। ४- 'अनेन' की अनुवृत्ति ५।२।८८। तक जायेगी। ५- इस सूत्र से 'पूर्वात्' की अनुवृत्ति ५।२।८७। तक, तथा 'इनिः' की अनुवृत्ति ५।२।९१। तक जाती है। ६- 'तदस्यास्त्यस्मिन्निति' की अनुवृत्ति ५।२।१४०। तक, तथा 'मत्तुप्' की ५।२।९५। तक जाती है। ७- यहाँ से 'लच्' की अनुवृत्ति ५।२।९९। तक तथा 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ५।२।१४०। तक जाती है।

१७. सिध्मादिभ्यश्च

१७९. सिध्म गडु मणि नाभि बीज (वीणा)

कृष्ण निष्पाव पांसु पार्श्व पर्शू हनु सक्तु मास (मांस)। 'पार्श्विधमन्योर्दीर्घश्च' ११४।

'वातदन्तबलललाटानामूङ् च' ११५।

'जटाघटाकटाकालाः क्षेपे' ११६। पर्ण उदक

प्रज्ञा सक्थि कर्ण स्नेह शीत श्याम पिङ्ग

पित्त पुष्क पृथु मृदु मञ्जु (मण्ड) पत्र चटु

कपि गण्डु ग्रन्थि श्री कुश धारा वर्ष्मन्

पक्ष्मन् श्लेष्मन् पेश निष्पाद् कुण्ड 'क्षुद्र-

जन्तूपतापयोश्च॥ इति सिध्मादिः॥

१८. वत्सांसाभ्यां कामबले

१९. फेनादिलच्च

१००. लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः

शनेलचः

१८०. लोमन् रोमन् बभ्रु हरि गिरि कर्क  
कपि मुनि तरु॥ इति लोमादिः॥

१८१. पामन् वामन् वेमन् हेमन् श्लेष्मन्

कद्रु (कद्रू) बलि सामन् ऊष्मन् कृमि।

'अङ्गात्कल्याणे' ११८। 'शाकीपलालीदद्रूणां

ह्रस्वत्वं च' ११९। (विष्वगित्युत्तरपद-

लोपश्चाकृतसन्धेः) १२०। 'लक्ष्म्या अच्च'

१२१। इति पामादिः॥

१८२. पिच्छा उरस् ध्रुवक् ध्रुवक।

'जटाघटाकालाः क्षेपे' १२२। वर्ण उदक

पङ्क प्रज्ञा॥ इति पिच्छादिः॥

(वा०) विष्वगित्युत्तरपदलोपश्चाकृत-  
सन्धेः।

१०१. प्रज्ञाश्रद्धार्चाभ्यो णः

(वा०) वृत्तेश्च।

१०२. तपःसहस्राभ्यां<sup>१</sup> विनीनी१०३. अणच्<sup>२</sup>

(वा०) ज्योत्स्नादिभ्य उपसंख्यानम्

१८३. (वा ३२००) ज्योत्स्ना तमिस्त्रा

कुण्डल कुतप विसर्प विपादिका॥ इति

ज्योत्स्नादिः॥

१०४. सिकताशर्कराभ्यां<sup>३</sup> च

१०५. देशे लुबिलचौ च

१०६. दन्त उन्नत उरच्

१०७. ऊषसुषिमुष्कमधो रः

(वा०) रप्रकरणे खमुखकुञ्जेभ्य

उपसंख्यानम्।

(वा०) नगपांसुपाण्डुभ्यश्च।

(वा०) कच्छ्वा ह्रस्वत्वं च।

१०८. द्युद्भ्यां माः

१०९. केशाद्वो<sup>४</sup>ऽन्यतरस्याम्

(वा०) अन्येभ्योऽपि दृश्यत इति

वक्तव्यम्।

(वा०) अर्णसो लोपश्च।

(वा०) छन्दसीवनिपौ च।

(वा०) मेधारथाभ्यामीरन्निरचौ वक्तव्यौ

११०. गाण्ड्यजगात्संज्ञायाम्

१११. काण्डाण्डादीरन्नीरचौ

११२. रजः कृष्यासुतिपरिषदो वलच्<sup>५</sup>

## विमर्श

१- 'तपः सहस्राभ्याम्' की अनुवृत्ति ५।२।१०३। तक जाती है। २-यहँ से 'अण्' की अनुवृत्ति ५।२।१०५। तक जायेगी। ३- 'सिकताशर्कराभ्याम्' की अनुवृत्ति ५।२।१०५। तक जाती है। ४- इस सूत्र से 'वः' की अनुवृत्ति ५।२।११०। तक जाती है। ५- 'वलच्' की अनुवृत्ति ५।२।११३। तक जायेगी।



(वा०) अन्येभ्योऽपि दृश्यते।

११३. दन्तशिखात्संज्ञायाम्

११४. ज्योत्स्नातमिस्राशृङ्गिणोर्जस्वि-

त्रूर्जस्वलगोमिन्मलिनमलीमसाः

११५. अत इनिठनौ<sup>१</sup>

११६. व्रीह्यादिभ्यश्च

१८४. व्रीहि माया (शाला) शिखा माला  
मेखला केका अष्टका पताका चर्मन् कर्मन्  
वर्मन् दंष्ट्रा संज्ञा बडवा कुमारी नौ वीणा  
बलाका यवखदनौ कुमारी। 'शीर्षात्रजः'

१२३॥ इति व्रीह्यादिः॥

(वा०) शिखामालासंज्ञादिभ्य इनिः।

(वा०) यवखदादिभ्य इकः।

(वा०) अन्येभ्य उभयम्।

११७. तुन्दादिभ्य इलच्च।

१८५. तुन्द उदर पिचण्ड यव व्रीहि।  
'स्वाङ्गाद्विवृद्धौ' १२४॥ इति तुन्दादिः॥

११८. एकगोपूर्वाद्धि<sup>२</sup>जित्यम्

११९. शतसहस्रान्ताच्च निष्कात्

१२०. रूपादाहतप्रशंसयोर्यप्

(वा०) अन्येभ्योऽपि दृश्यते।

१२१. अस्मायामेधास्त्रजो विनिः<sup>३</sup>

१२२. बहुलं छन्दसि

(वा०) आमयस्योपसंख्यानं दीर्घश्च।

(वा०) शृङ्गवृन्दाभ्यामारकन्।

(वा०) फलबर्हाभ्यामिनच्।

(वा०) हृदयाच्चालुरन्यतरस्याम्।

(वा०) शीतोष्णतृप्रेभ्यस्तदसहने।

(वा०) हिमाच्चेलुः।

(वा०) बलादूलः।

(वा०) वातात्समूहे च।

(वा०) तप्पर्वमरुद्भ्याम्।

१२३. ऊर्णाया युस्

१२४. वाचो<sup>४</sup> ग्मिनिः

१२५. आलजाटचौ बहुभाषिणि

(वा०) कुत्सित इति वक्तव्यम्।

१२६. स्वामित्रैश्चर्ये

१२७. अर्श आदिभ्योऽच्

१८६. अर्शस् उरस् तुन्द चतुर पलित  
जटा (घटा) घाटा अम्र (अघ) (कर्दम) अम्ल  
लवण। 'स्वाङ्गाद्धीनात्' १२५। वर्णात् ॥  
इत्यर्शआदिः॥ आकृतिगणः।

१२८. द्वन्द्वोपतापगर्ह्यात्प्राणिस्थादिनिः<sup>५</sup>

१२९. वातातीसाराभ्यां कुक्च

(वा०) पिशाचाच्च।

१३०. वयसि पूरणात्

१३१. सुखादिभ्यश्च

१८७. सुख दुःख तृप्त [तृप्] कृच्छ्र अस्त्र  
(आश्र) आस्त्र (अस्त्र) अलीक करुण सोढ  
प्रतीप शील हल। 'माला क्षेपे' १२६।  
(कृपण) प्रणाय (प्रणय) दल कक्ष॥ इति  
सुखादिः॥

### विमर्श

१-‘इनिठनौ’ की अनुवृत्ति ५।२।११७। तक जाती है। २-इस सूत्र से ‘ठञ्’ की अनुवृत्ति ५।२।११९। तक जाती है। ३-यहाँ से ‘विनिः’ की अनुवृत्ति ५।२।१२२। तक जाती है। ४-‘वाचः’ की अनुवृत्ति ५।२।१२५। तक जायेगी। ५-यहाँ से ‘इनिः’ की अनुवृत्ति ५।२।१३७। तक जाती है।

१३२. धर्मशीलवर्णीन्ताच्च

(वा०) अर्थाच्चासंनिहिते।

१३३. हस्ताज्जातौ

(वा०) तदन्ताच्च।

१३४. वर्णीद् ब्रह्मचारिणि

१३६. बलादिभ्यो मतुबन्यतरस्याम्

१३५. पुष्करादिभ्यो देशे

१८९. बल उत्साह (उद्भास उद्भास) उद्भास

१८८. पुष्कर पद्म उत्पल तमाल कुमुद नड

शिखा कुल चूडा सुल कूल आयाम व्यायाम

कपित्थ बिस मृणाल कर्दम शालूक बिगर्ह

उपयाम आरोह अवरोह परिणाह (युद्ध)।।

करीष शिरीष यवास (प्रवास) हिरण्य कैरव

इति बलादिः।।

कल्लोल तट तरङ्ग पङ्कज सरोज राजीव

१३७. संज्ञायां मन्माभ्याम्

नालीक सरोरुह पुटक अरविन्द अम्भोज

१३८. कंशंभ्यां वभयुस्तितुतयसः

अब्ज कमल (कल्लोल) पयस्।। इति

१३९. तुन्दिवलिवटेर्भः

पुष्करादिः।।

१४०. अहंशुभमोर्युस्

(वा०) बाहूरूपूर्वपदाद्वलात्।

(धान्यानां त्रातेन किमो विमुक्तादिभ्यः

(वा०) सर्वादिश्च।

कालप्रयोजनात्प्रज्ञाश्रद्धास्मायामेधाविंशतिः।।)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे पञ्चमस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः।।





## तृतीयः पादः

१. प्राग्दिशो विभक्तिः<sup>१</sup> १६. इदमो<sup>६</sup> हिल्  
 २. किं-सर्वनाम-बहुभ्योऽद्वयादिभ्यः<sup>२</sup> १७. अधुना  
 ३. इदम<sup>३</sup> इश् १८. दानीं<sup>९</sup> च  
 ४. एतेतौ रथोः १९. तदो दा च  
 (वा०) थाहेतौ चच्छन्दसि। (वा०) तदो दावचनमनर्थकं विहित-  
 ५. एतदोऽन् त्वात्।  
 ६. सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि २०. तयोर्दाहिलौ च च्छन्दसि  
 ७. पञ्चम्यास्तसिल्<sup>४</sup> २१. अनद्यतने हिलन्यतरस्याम्  
 ८. तसेश्च २२. सद्यः परुत्परार्यैषमः परेद्य-  
 ९. पर्यभिभ्यां च व्यद्यपूर्वेद्युरन्येद्युरन्यतरेद्युरितरेद्युर-  
 (वा०) सर्वोभयार्थाभ्यामेव। परेद्युरधरेद्युरुभयेद्युरुत्तरेद्युः  
 १०. सप्तम्या<sup>५</sup> स्त्रल् (वा०) समानस्य सभावो द्यस् चाहनि।  
 ११. इदमो हः (वा०) पूर्वपूर्वतरयोः परभाव उदारी  
 १२. किमो<sup>६</sup> ऽत् च संवत्सरे।  
 १३. वा ह च च्छन्दसि (वा०) इदम इश् समसण् प्रत्ययश्च  
 १४. इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते (वा०) इदम इश् समसण् प्रत्ययश्च  
 (वा०) दृशिर्ग्रहणाद्भवदादियोग एव। संवत्सरे।  
 १९०. (वा ३२४४)। भवान् दीर्घायुः देवानां (वा०) परस्मादेद्यव्यहनि।  
 प्रियः आयुष्मान् ॥ इति भवदादिः॥ (वा०) इदमोऽशभावो द्यश्च।  
 १५. सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले<sup>७</sup> दा

## विमर्श

१-‘दिक्शब्देभ्यः सप्तमीपञ्चमीप्रथमाभ्यो दिग्देशकालेष्वस्तातिः’ (५।३।२७।) इस सूत्र के पूर्व कहे जाने वाले प्रत्यय विभक्तिसंज्ञक होते हैं, ऐसा अधिकार जानना चाहिए। २- इस समस्त सूत्र का अधिकार ५।३।२७। तक जाता है। ३-‘इदमः’ की अनुवृत्ति ५।३।४। तक जायेगी। ४-‘तसिल्’ की अनुवृत्ति ५।३।९। तक जायेगी। ५-यहाँ से ‘सप्तम्याः’ की अनुवृत्ति ५।३।२२। तक जाती है। ६-‘किमः’ की अनुवृत्ति ५।३।१३। तक जाती है। ७-इस सूत्र से ‘काले’ की अनुवृत्ति ५।३।२२। तक जाती है। ८-‘इदमः’ की अनुवृत्ति ५।३।१८। तक जायेगी। ९-‘दानी’ की अनुवृत्ति ५।३।१९। तक जाती है।

(वा०) पूर्वान्यान्यतरेतरापराधरो-  
भयोत्तरेभ्यो [ऽहनि] एद्युस्।

(वा०) द्युश्चोभयात्।

२३. प्रकारवचने<sup>१</sup> थाल्

२४. इदमस्थमुः<sup>२</sup>

(वा०) एतदो वाच्यः।

२५. किम<sup>३</sup>श्च

२६. था हेतौ च च्छन्दसि

२७. दिक्छन्देभ्यः सप्तमीपञ्चमीप्रथमा-  
भ्यो दिग्देशकालेष्वस्तातिः<sup>४</sup>

२८. दक्षिणोत्तराभ्यामतसुच्<sup>५</sup>

२९. विभाषा परावराभ्याम्

३०. अञ्जेलुक्

३१. उपर्युपरिष्ठात्

३२. पश्चात्<sup>६</sup>

(वा०) अपरस्यार्थे पश्चभावो वक्तव्यः।

३३. पश्च पश्चा च च्छन्दसि

३४. उत्तराधरदक्षिणादातिः<sup>७</sup>

३५. एनबन्यतरस्यामदूरेऽपञ्चम्याः<sup>८</sup>

३६. दक्षिणादाच्<sup>९</sup>

३७. आहि च दूरे<sup>१०</sup>

३८. उत्तराच्च

३९. पूर्वाधरावराणामसि पुरधव<sup>११</sup> श्रैषाम्

४०. अस्ताति<sup>१२</sup> च

४१. विभाषाऽवरस्य

४२. संख्याया विधार्थे धा<sup>१३</sup>

४३. अधिकरणविचाले च

४४. एकाद्धो ध्यमुञ्जन्यतरस्याम्<sup>१४</sup>

४५. द्वित्र्योश्च<sup>१५</sup> धमुञ्

(वा०) धमुञ्जन्तात्स्वार्थे डदर्शनम्।

४६. एधाच्च

४७. याप्ये पाशप्

४८. पूरणाद्भागे तीयादन्<sup>१६</sup>

४९. प्रागेकादशभ्योऽछन्दसि<sup>१७</sup>

५०. षष्ठाष्टमाभ्यां<sup>१८</sup> ज च

### विमर्श

१-‘प्रकारवचने’ की अनुवृत्ति ५।३।२६। तक जाती है। २-यहाँ से ‘थमुः’ की अनुवृत्ति ५।३।२५। तक जाती है। ३-इस सूत्र से ‘किमः’ की अनुवृत्ति ५।३।२६। तक जाती है। ४-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ५।३।४१। तक जायेगी। ५-यहाँ से ‘अतसुच्’ की अनुवृत्ति ५।३।२९। तक जाती है। ६-‘पश्चात्’ की अनुवृत्ति ५।३।३३। तक जायेगी। ७-यहाँ से ‘उत्तराधरदक्षिणात्’ की अनुवृत्ति ५।३।३५। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से ‘अपञ्चम्याः’ की अनुवृत्ति ५।३।३८। तक जायेगी। ९-यहाँ से ‘दक्षिणात्’ की अनुवृत्ति ५।३।३७। तक तथा ‘आच्’ की अनुवृत्ति ५।३।३८। तक जाती है। १०-‘आहि दूरे’ की अनुवृत्ति ५।३।३८। तक जाती है। ११-यहाँ से ‘पूर्वाधरावराणाम् पुरधव’ की अनुवृत्ति ५।३।४०। तक जायेगी। १२-‘अस्ताति’ की अनुवृत्ति ५।३।४१। तक जायेगी। १३-‘संख्यायाः धा’ की अनुवृत्ति ५।३।४६। तक जाती है। १४-इस सूत्र से ‘धः’ ‘अन्यतरस्याम्’ की अनुवृत्ति ५।३।४६। तक जायेगी। १५-यहाँ से ‘द्वित्र्योः’ की अनुवृत्ति ५।३।४६। तक जाती है। १६-यहाँ से ‘पूरणात्’ की अनुवृत्ति ५।३।४९। तक, ‘भागे’ की अनुवृत्ति ५।३।५१। तक तथा ‘अन्’ की अनुवृत्ति ५।३।५०। तक जाती है। १७-इस सूत्र से ‘अच्छन्दसि’ की अनुवृत्ति ५।३।५०। तक जाती है। १८-‘षष्ठाष्टमाभ्याम्’ की अनुवृत्ति ५।३।५१। तक जाती है।



५१. मानपश्चङ्गयोः कन्लुकौ <sup>१</sup> च	६८. विभाषा सुपो <sup>१</sup> बहुचुरस्तात्
५२. एकादाकिनिच्चासहाये	६९. प्रकारवचने जातीयर्
५३. भूतपूर्वे चरट् <sup>२</sup>	७०. प्रागिवात्कः <sup>१०</sup>
५४. षष्ठ्या रूप्य च	७१. अव्ययसर्वनाम्नामकच्चावटेः <sup>११</sup>
५५. अतिशायने तमबिष्ठनौ <sup>३</sup>	७२. कस्य च दः
५६. तिङ् <sup>४</sup> श्च	(वा०) ओकारसकारभकारादौ सुपि
५७. द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ	सर्वनाम्नष्टेः प्रागकच्
५८. अजादी <sup>५</sup> गुणवचनादेव	(वा०) अकच्प्रकरणे तूष्णीमः काम्।
५९. तुश्छन्दसि	(वा०) शीले को मलोपश्च।
६०. प्रशस्यस्य <sup>६</sup> श्चः	७३. अज्ञाते
६१. ज्य <sup>७</sup> च	७४. कुत्सिते <sup>१२</sup>
६२. वृद्धस्य च	७५. संज्ञायां कन्
६३. अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ	७६. अनुकम्पायाम् <sup>१३</sup>
६४. युवाल्पयोः कनन्यतरस्याम्	७७. नीतौ च तद्युक्तात् <sup>१४</sup>
६५. विन्मतोर्लुक्	७८. बह्वचो मनुष्यनाम्नष्टज्वा <sup>१५</sup>
६६. प्रशंसायां रूपप्	७९. घनिलचौ <sup>१६</sup> च
६७. ईषदसमाप्तौ <sup>६</sup> कल्पब्देश्यदेशीयरः	८०. प्राचामुपादेरडज्जुचौ च

### विमर्श

१-यहाँ से 'कन्-लुकौ' की अनुवृत्ति ५।३।५२। तक जायेगी। २-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ५।३।५४। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से 'अतिशायने' की अनुवृत्ति ५।३।५७। तक तथा 'तमबिष्ठनौ' की ५।३।५६। तक जाती है। ४-'तिङः' की अनुवृत्ति ५।३।८५। तक जाती है। ५-यहाँ से 'अजादी' की अनुवृत्ति ५।३।६५। तक जायेगी। ६-'प्रशस्यस्य' की अनुवृत्ति ५।३।६१। तक जाती है। ७-इस सूत्र से 'ज्य' की अनुवृत्ति ५।३।६२। तक जाती है। ८-'ईषदसमाप्तौ' की अनुवृत्ति ५।३।६८। तक जाती है। ९-यहाँ से 'सुपः' की अनुवृत्ति ५।३।७१। तक जाती है। १०-'इवे प्रतिकृतौ' (५।३।९६।) के पूर्व तक इस सूत्र का अधिकार जानना चाहिए। ११-यहाँ से आगे 'इवे प्रतिकृतौ' (५।३।९६) से पहले इस सूत्र का भी अधिकार जाता है। १२-इस सूत्र की अनुवृत्ति ५।३।७५। तक जाती है। १३-यहाँ से 'अनुकम्पायाम्' की अनुवृत्ति ५।३।८२। तक जाती है। १४-'नीतौ तद्युक्तात्' की अनुवृत्ति ५।३।८१। तक जायेगी। १५-यहाँ से 'बह्वचः ठज्वा' की अनुवृत्ति ५।३।८०। तक, तथा 'मनुष्यनाम्नः' की अनुवृत्ति ५।३।८४। तक जाती है। १६-'घनिलचौ' की अनुवृत्ति ५।३।८०। तक जाती है।

८१. जातिनाम्नः कन्<sup>१</sup>  
 ८२. अजिनान्तस्योत्तरपदलोपश्च<sup>२</sup>  
 ८३. ठाजादावूर्ध्वं द्वितीयादचः<sup>३</sup>  
 (वा०) चतुर्थादच ऊर्ध्वस्य लोपो  
 वक्तव्यः।  
 (वा०) अनजादौ च विभाषा लोपो  
 वक्तव्यः।  
 (वा०) लोपःपूर्वपदस्य च  
 (वा०) विनापि प्रत्ययं पूर्वोत्तरपदयोर्वा  
 लोपो वाच्यः।  
 (वा०) उवर्णाल्ल इलस्य च।  
 (वा०) (ऋवर्णादपि)।  
 (वा०) ठग्रहणमुको द्वितीयत्वे  
 कविधानार्थम्।  
 (वा०) द्वितीयं संध्यक्षरं चेत्तदादेर्लोपो  
 वक्तव्यः।  
 ८४. शेवलसुपरिविशालवरुणार्थमा-  
 दीनां तृतीयात्  
 (वा०) एकाक्षरपूर्वपदानामुत्तरपदलोपो  
 वक्तव्यः।  
 (वा०) षषष्ठाजादिवचनात्सिद्धम्।  
 ८५. अल्पे  
 ८६. ह्रस्वे<sup>४</sup>  
 ८७. संज्ञाया कन्  
 ८८. कुटीशमीशुण्डाभ्यो रः  
 ८९. कुत्वा डुपच्  
 ९०. कासूगोणीभ्यां ष्टरच्<sup>५</sup>  
 ९१. वत्सोक्षाश्चर्षभेभ्यश्च तनुत्वे  
 ९२. किंयत्तदो निर्धारणे द्वयोरेकस्य  
 डतरच्<sup>६</sup>  
 ९३. वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच्<sup>७</sup>  
 ९४. एकाच्च प्राचाम्  
 ९५. अवक्षेपणे कन्<sup>८</sup>  
 ९६. इवे प्रतिकृतौ<sup>९</sup>  
 ९७. संज्ञायां<sup>१०</sup> च  
 ९८. लुम्मनुष्ये  
 ९९. जीविकार्थे चापण्ये  
 १००. देवपथादिभ्यश्च  
 १०१. देवपथ (हंसपथ वारिपथ रथपथ)  
 स्थलपथ करिपथ अजपथ राजपथ शतपथ  
 शङ्खपथ सिन्धुपथ सिद्धगति उष्ट्रग्रीव वामरज्जु  
 हस्त इन्द्र दण्ड पुष्प मत्स्य इति  
 देवपथादिः॥ आकृतिगणः॥  
 १०१. वस्तेर्ढञ्  
 १०२. शिलाया ढः  
 १०३. शाखादिभ्यो यः

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'कन्' की अनुवृत्ति ५।३।८२। तक जाती है। २-यहाँ से 'लोपः' की अनुवृत्ति ५।३।८४। तक जायेगी। ३-'ठाजादावूर्ध्वम् अचः' की अनुवृत्ति ५।३।८४। तक जाती है। ४-'ह्रस्वे' की अनुवृत्ति ५।३।९०। तक जायेगी। ५-यहाँ से 'ष्टरच्' की अनुवृत्ति ५।३।९१। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'किंयत्तदः' की अनुवृत्ति ५।३।९३। तक, तथा 'निर्धारणे एकस्य डतरच्' की अनुवृत्ति ५।३।९४। तक जाती है। ७-'बहूनां डतमच्' की अनुवृत्ति ५।३।९४। तक जायेगी। ८-'कन्' की अनुवृत्ति ५।३।१००। तक जायेगी। ९-यहाँ से 'इवे' की अनुवृत्ति ५।३।१११। तक तथा 'प्रतिकृतौ' की ५।३।१००। तक जाती है। १०-'संज्ञायाम्' की अनुवृत्ति ५।३।१००। तक जाती है।



१९२. शाखा मुख जघन शृङ्ग मेघ अग्र  
चरण स्कन्ध स्कद (स्कन्द) उरस् शिरस्  
अग्र (शाण) शरण॥ इति शाखादिः॥

१०४. द्रव्यं च भव्ये

१०५. कुशाग्राच्छः<sup>१</sup>

१०६. समासाच्च तद्विषयात्

१०७. शर्करादिभ्योऽण्

१९३. शर्करा कपालिका कपाटिका कपिष्ठिका  
(कनिष्ठिका) पुण्डरीक शतपत्र गोलोमन् लोमन्  
गोपुच्छ नराचीनकुल सिक्ता॥ इति  
शर्करादिः॥

१०८. अङ्गुल्यादिभ्यष्ठक्<sup>२</sup>

१९४. अङ्गुली भरुज बभ्रु वल्गु मण्डर  
मण्डल शङ्कुली हरि कपि मुनि रुह  
खल उदश्वित् गोणी उरस् कुलिश॥  
इत्यङ्गुल्यादिः॥

१०९. एकशालायाष्ठजन्यतरस्याम्

११०. कर्कलोहितादीकक्

१११. प्रत्नपूर्वविश्वेमात्थाल्छन्दसि

११२. पूगाज्यो<sup>३</sup>ग्रामणीपूर्वात्

११३. व्रातचक्रजोरस्त्रियाम्

११४. आयुधजीविसङ्गा<sup>४</sup>ज्यङ्बाही-  
केष्वब्राह्मणराजन्यात्

११५. वृकाट्टेण्यण्

११६. दामन्यादित्रिगर्तषष्ठाच्छः

१९५. <sup>१</sup>दामनि औलपि बैजवापि औदकि  
औदङ्कि अच्युतन्ति (आच्युतन्ति) अच्युतदन्ति  
(आच्युतदन्ति) शाकुन्तकि आकिदन्ति  
आक्तिदन्ति औडवि काकदन्तकि शात्रुतपि  
सार्वसेनि बिन्दु बैन्दवि तुलभ मौञ्जायन  
काकन्दि सावित्रीपुत्र॥ इति दामन्यादिः॥

११७. पश्वादि यौधेयादिभ्योऽणञौ

१९६. पर्शु असुर रक्षस बाह्लीक वयस् वसु  
मरुत् सत्त्वत् दशार्ह पिशाच अशानि  
कार्षापण॥ इति पश्वादिः॥

१९७. यौधेय (कौशेय) शौक्रेय शौभ्रेय धार्तेय  
घार्तेय ज्याबाणेय त्रिगर्त भरत उशीनर॥  
इति यौधेयादिः॥

११८. अभिजिद्विदभृच्छालावच्छि-  
खावच्छमीवदूर्णावच्छुमदणो यञ्

११९. ज्यादयस्तद्राजाः

(प्रादिशोऽनघतने विभाषा ज्य च  
जातिनाम्नो वस्तरेकोनविंशतिः॥)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे पञ्चमस्याध्यायस्य तृतीयः पादः।



### विमर्श

१-यहाँ से 'छः' की अनुवृत्ति ५।३।१०६। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'ठक्' की अनुवृत्ति ५।३।१०९। तक जाती है। ३-यहाँ से 'ज्यः' की अनुवृत्ति ५।३।११३। तक जायेगी। ४-'आयुधजीविसंघात्' की अनुवृत्ति ५।३।११७। तक जाती है।

## चतुर्थः पादः

१. पादशतस्य संख्यादेर्वीप्सायां  
वुन्लोपश्च<sup>१</sup>  
२. दण्डव्यवसर्गयोश्च  
३. स्थूलादिभ्यः प्रकारवचने कन्<sup>२</sup>  
१९८. स्थूल अणु माषेषु (माष इषु)। 'कृष्ण  
तिलेषु' १२८। 'यव व्रीहिषु' १२९। 'इक्षु  
तिल पाद्यकालावदाता सुरायाम्' १३०।  
'गोमूत्र आच्छादाने' १३१। 'सुरा अहौ'  
१३२। 'जीर्ण शालिषु' १३३। 'पत्रमूल  
समस्तो व्यस्तश्च' १३४। कुमारीपुत्र  
कुमारीश्वशुर मणिः॥ इति स्थूलादिः॥  
(वा०) चञ्चद्रूहतोरुपसंख्यानम्।  
(वा०) (सुराया अहौ)।  
४. अनत्यन्तगतौ क्तात्<sup>३</sup>  
५. न सामिवचने  
६. बृहत्या आच्छादने  
७. अषडक्षाशितङ्ग्वलंकर्मालंपुरुषा-  
ऽध्युत्तरपदात्खः<sup>४</sup>  
८. विभाषाञ्चेरदिकस्त्रियाम्  
९. जात्यन्ताच्छ<sup>५</sup> बन्धुनि  
१०. स्थानान्ताद्विभाषा सस्थानेनेति चेत्  
११. किमेत्तिडव्ययघादाम्वद्रव्यप्रकर्षे<sup>६</sup>  
१२. अमु च च्छन्दसि  
१३. अनुगादिनष्टक्  
१४. णचः स्त्रियामञ्  
१५. अणिनुणः<sup>७</sup>  
१६. विसारिणो मत्स्ये  
१७. संख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने  
कृत्वसुच्<sup>८</sup>  
१८. द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच्<sup>९</sup>  
१९. एकस्य सकृच्च  
२०. विभाषा बहोर्धाऽविप्रकृष्टकाले  
२१. तत्प्रकृतवचने<sup>१०</sup> मयट्  
२२. समूहवच्च बहुषु  
२३. अनन्तावसथेतिहभेषजाज्यः  
२४. देवतान्तात्तादर्थ्ये यत्<sup>११</sup>  
२५. पादार्धाभ्यां च  
२६. अतिथेर्ज्यः  
२७. देवात्तल्  
२८. अवेः कः

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'पादशतस्य सङ्ख्यादेः वुन् लोपश्च' की अनुवृत्ति ५।४।२। तक जायेगी।  
२-इस सूत्र से 'कन्' की अनुवृत्ति ५।४।६। तक जायेगी। ३-यहाँ से 'क्तात्' की  
अनुवृत्ति ५।४।५। तक जाती है। ४-यहाँ से 'खः' की अनुवृत्ति ५।४।८। तक जाती  
है। ५-'छः' की अनुवृत्ति ५।४।१०। तक जायेगी। ६-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति  
५।४।१२। तक जाती है। ७-'अण्' की अनुवृत्ति ५।४।१६। तक जाती है। ८-यहाँ  
से 'सङ्ख्यायाः क्रियाभ्यावृत्तिगणने' की अनुवृत्ति ५।४।२०। तक जाती है। ९-यहाँ से  
'सुच्' की अनुवृत्ति ५।४।१९। तक जाती है। १०-यहाँ से 'तत्प्रकृतवचने' की अनुवृत्ति  
५।४।२२। तक जाती है। ११-इस सूत्र से 'तादर्थ्ये' की अनुवृत्ति ५।४।२६। तक,  
तथा 'यत्' की अनुवृत्ति ५।४।२५। तक जायेगी।



२९. यावादिभ्यः कन्<sup>१</sup> ३६. तद्युक्तात्कर्मणोऽण्<sup>७</sup>  
 १९९. याव मणि अस्थि (तालु) जानु लान्द्र (वा०) अण्प्रकरणे कुलालवरुडनिषाद-  
 पीत स्तम्ब। 'ऋतावुष्णशीते' १३५। 'पशौ चण्डालामित्रेभ्यश्छन्दसि।  
 लूनविपाते' १३६। 'अणु निपुणे' १३७। (वा०) भागरूपनामभ्यो धेयः।  
 'पुत्र कृत्रिमे' १३८। 'स्नात वेदसमाप्तौ' (वा०) मित्राच्च छन्दसि।  
 १३९। 'शून्य रिक्ते' १४०। 'दान कुत्सिते' (वा०) आग्नीध्रसाधारणादज्।  
 १४१। 'तनु सूत्रे' १४२। 'ईयसश्च' १४३। (वा०) अवयसमरुद्ध्यां छन्दसि।  
 ज्ञात अज्ञात। कुमारीक्रीडनकानि च (कुमार ३७. ओषधेरजातौ  
 क्रीडनकानि च)॥ इति यावादिः॥ ३८. प्रज्ञादिभ्यश्च  
 ३०. लोहिता<sup>२</sup>न्मणौ २०१. प्रज्ञ वणिज् उशिज् उष्णिज् प्रत्यक्ष  
 (वा०) लोहिताल्लिङ्गबाधनं वा। (विद्वस् ) विदन् षोडन् विद्या मनस्। 'श्रोत्र  
 (वा०) नवस्य नू आदेशः लप्तनप्खाश्च (विद्वस् ) विदन् षोडन् विद्या मनस्। 'श्रोत्र  
 प्रत्यया वक्तव्याः। शरीरे' १४५। जुहत्। 'कृष्ण मृगे' १४६।  
 (वा०) नश्च पुराणे प्रात्। चिकीर्षत् चोर शत्रु योध चक्षुस् वसु (एनस्)  
 ३१. वर्णे चानित्ये<sup>३</sup> मरुत् क्रुञ्च सत्त्वन्तु दशार्ह वयस् (व्याकृत)  
 ३२. रक्ते<sup>४</sup> असुर रक्षस् पिशाच् अशनि कार्षापण देवता  
 ३३. कालाच्च बन्धु॥ इति प्रज्ञादिः॥  
 ३४. विनयादिभ्यष्ठक्<sup>५</sup> ३९. मृद<sup>६</sup>स्तिकन्  
 २००. विनय समय। 'उपायो ह्रस्वत्वं च' ४०. सस्नौ प्रशंसायाम्<sup>७</sup>  
 १४४। संप्रति संगति कथंचित् अकस्मात् ४१. वृकज्येष्ठाभ्यां तिल्लातिलौ च  
 समाचार उपचार समाय (समयाचार) व्यवहार छन्दसि  
 संप्रदान समुत्कर्ष समूह विशेष अत्यय॥ ४२. बह्वल्पार्थाच्छस्कारकादन्य-  
 इति विनयादिः॥ तरस्याम्<sup>१०</sup>  
 ३५. वाचो व्याहृतार्थायाम्<sup>६</sup> (वा०) बह्वल्पार्थान्मङ्गलामङ्गलवचनम्।

### विमर्श

१-‘कन्’ की अनुवृत्ति ५।४।३३। तक जायेगी। २-इस सूत्र से ‘लोहितात्’ की अनुवृत्ति ५।४।३२। तक जायेगी। ३-इस सूत्र की अनुवृत्ति मण्डूकप्लुत गति से ५।४।३३। में जाती है। ४-इस सूत्र से ‘रक्ते’ की अनुवृत्ति ५।४।३३। तक जायेगी। ५-यहाँ से ‘ठक्’ की अनुवृत्ति ५।४।३५। तक जाती है। ६-यहाँ से ‘व्याहृतार्थायाम्’ की अनुवृत्ति ५।४।३६। तक जाती है। ७-‘अण्’ की अनुवृत्ति ५।४।३८। तक जायेगी। ८-‘मृदः’ की अनुवृत्ति ५।४।४०। तक जायेगी। ९-यहाँ से ‘प्रशंसायाम्’ की अनुवृत्ति ५।४।४१। तक जाती है। १०-यहाँ से ‘शस्’ की अनुवृत्ति ५।४।४३। तक, तथा ‘अन्यतरस्याम्’ की अनुवृत्ति ५।४।४९। तक जाती है।

४३. संख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम् ५६. देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो द्वितीया-  
 ४४. प्रतियोगे पञ्चम्यास्तसिः<sup>१</sup> सप्तम्योर्बहुलम्  
 (वा०) आद्यादिभ्य उपसंख्यानम्। ५७. अव्यक्तानुकरणाद् द्वयजवरार्धा-  
 २०२. (वा ३३४१)। आदि मध्य अन्त दनितौ डाच्<sup>१</sup>  
 पृष्ठ पार्श्व।। इत्याद्यादिः।। आकृतिगणः।। ५८. कृजो द्वितीयतृतीयशम्ब-  
 ४५. अपादाने चाहीयरुहोः बीजात्कृषौ<sup>१०</sup>  
 ४६. अतिग्रहाव्यथनक्षेपेष्वकर्तरि ५९. संख्यायाश्च गुणान्तायाः  
 तृतीयायाः<sup>३</sup> ६०. समयाच्च यापनायाम्  
 ४७. हीयमानपापयोगाच्च ६१. सपत्रनिष्पत्रादतिव्यधने  
 ४८. षष्ठ्या<sup>३</sup> व्याश्रये ६२. निष्कुलान्निष्कोषणे  
 ४९. रोगाच्चापनयने ६३. सुखप्रियादानुलोम्ये  
 ५०. कृश्वस्तियोगे संपद्यकर्तरि च्विः<sup>४</sup> ६४. दुःखात्प्रातिलोम्ये  
 (वा०) अभूततद्भाव इति वक्तव्यम्। ६५. शूलात्पाके  
 ५१. अरुर्मनश्चक्षुश्चेतोरहोरजसां लोपश्च ६६. सत्यादशपथे  
 ५२. विभाषा साति<sup>५</sup> कात्स्न्ये ६७. मद्रात्परिवापणे  
 ५३. अभिविधौ संपदा<sup>६</sup> च (वा०) भद्राच्चेति वक्तव्यम्।  
 ५४. तदधीनवचने<sup>७</sup> ६८. समासान्ताः<sup>११</sup>  
 ५५. देये त्रा<sup>८</sup> च ६९. न<sup>१२</sup> पूजनात्

### विमर्श

१-यहाँ से 'पञ्चम्याः' की अनुवृत्ति ५।४।४५। तक, तथा 'तसि' की अनुवृत्ति ५।४।४९। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'अकर्तरि तृतीयायाः' की अनुवृत्ति ५।४।४७। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'षष्ठ्या' की अनुवृत्ति ५।४।४९। तक जायेगी। ४-यहाँ से 'कृश्वस्तियोगे' की अनुवृत्ति ५।४।५७। तक, 'संपद्यकर्तरि' की ५।४।५२। तक, तथा 'च्विः' की ५।४।५९। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'विभाषा' की अनुवृत्ति ५।४।५३। तक, तथा 'साति' की ५।४।५५। तक जाती है। ६-'संपदा' की अनुवृत्ति ५।४।५५। तक जाती है। ७-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ५।४।५५। तक जाती है। ८-'त्रा' की अनुवृत्ति ५।४।५६। तक जायेगी। ९-'डाच्' की अनुवृत्ति ५।४।६७। तक जायेगी। १०-इस सूत्र से 'कृजः' की अनुवृत्ति ५।४।६७। तक, तथा 'कृषौ' की ५।४।५९। तक जाती है। ११-इस सूत्र का अधिकार पादसमाप्ति पर्यन्त अर्थात् ५।४।१६०। तक जाता है। आशय यह है कि आगे जो प्रत्यय कहे जायेंगे वे सब समास के अवयव होंगे ऐसा जानना चाहिए। १२-इस सूत्र से 'न' की अनुवृत्ति ५।४।७२। तक जाती है।



- (वा०) स्वतिभ्यामेव।  
 ७०. किमः क्षेपे  
 ७१. नजस्तत्पुरुषात्<sup>१</sup>  
 ७२. पथो विभाषा  
 ७३. बहुव्रीहौ संख्येये डजबहुगणात्  
 (वा०) संख्यायास्तत्पुरुषस्य वाच्यः।  
 ७४. ऋक्पूरब्धूः पथामानक्षे  
 (वा०) अनृचबहुचावध्येतयेव।  
 ७५. अच्<sup>२</sup>प्रत्यन्ववपूर्वात्सामलोमः  
 (वा०) कृष्णोदक्पाण्डुसंख्यापूर्वाया-  
 भूमेरजिष्यते।  
 ७६. अक्ष्णोऽदर्शनात्  
 ७७. अचतुरविचतुरसुचतुरस्त्रीपुंस-  
 धेन्वनडुहक्सामिवाङ्मनसाक्षिभ्रुवदार-  
 गवोर्वष्ठीवपदष्ठीवनक्तदिवरात्रिं-  
 दिवाहर्दिवसरजसनिःश्रेयसपुरुषायुष-  
 द्व्यायुषत्र्यायुषर्ग्यजुषजातोक्ष-  
 महोक्षवृद्धोक्षोपशुनगोष्ठश्वाः  
 (वा०) त्र्युपाभ्यां चतुरोऽजिष्यते।  
 ७८. ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः  
 (वा०) पल्यराजभ्यां च।  
 ७९. अवसमन्धेभ्यस्तमसः  
 ८०. श्वसो वसीयः श्रेयसः  
 ८१. अन्ववतप्ताद्रहसः  
 ८२. प्रतेरुरसः सप्तमीस्थात्  
 ८३. अनुगवमायामे  
 ८४. द्विस्तावा त्रिस्तावा वेदिः  
 ८५. उपसर्गादध्वनः  
 ८६. तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः<sup>३</sup>  
 ८७. अहः सर्वैकदेशसंख्यातपुण्याच्च  
 रात्रेः  
 (वा०) अहर्ग्रहणं द्वन्द्वार्थम्।  
 ८८. अहोऽह एतेभ्यः  
 ८९. न<sup>४</sup> संख्यादेः समाहारे  
 ९०. उत्तमैकाभ्यां च  
 ९१. राजाहःसखिभ्यष्टच्<sup>५</sup>  
 ९२. गोरतद्धितलुकि  
 ९३. अग्राख्यायामुरसः  
 ९४. अनोश्मायःसरसां जातिसंज्ञयोः  
 ९५. ग्रामकौटाभ्यां च तक्ष्णः  
 ९६. अतेः शुनः<sup>६</sup>  
 ९७. उपमाना<sup>७</sup>दप्राणिषु  
 ९८. उत्तरमृगपूर्वाच्च सक्थ्नः  
 ९९. नावो द्विगोः<sup>८</sup>  
 १००. अर्धाच्च<sup>९</sup>

### विमर्श

१-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ५।४।७२। तक जाती है। २-‘अच्’ की अनुवृत्ति ५।४।८७। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से ‘तत्पुरुषस्य’ की अनुवृत्ति ५।४।१०५। तक, तथा ‘संख्याव्ययादेः’ की ५।४।८८। तक जाती है। ४- ‘अहोऽहः’ की अनुवृत्ति ५।४।९०। तक जायेगी। ५- यहाँ से ‘न’ की अनुवृत्ति ५।४।९०। तक जायेगी। ६- ‘टच्’ की अनुवृत्ति ५।४।११२। तक जाती है। ७-‘शुनः’ की अनुवृत्ति ५।४।९७। तक जाती है। ८- यहाँ से ‘उपमानात्’ की अनुवृत्ति ५।४।९८। तक जाती है। ९- इस सूत्र से ‘नावः’ की अनुवृत्ति ५।४।१००। तक, तथा ‘द्विगोः’ की ५।४।१०१। तक जाती है। १०-‘अर्धात्’ की अनुवृत्ति ५।४।१०१। तक जायेगी।

१०१. खार्याः प्राचाम्

१०२. द्वित्रिभ्यामञ्जलेः

१०३. अनसन्तात्रपुंसकाच्छन्दसि

१०४. ब्रह्मणो<sup>१</sup> जानपदाख्यायाम्

१०५. कुमहद्भ्यामन्यतरस्याम्

१०६. द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे

१०७. अव्ययीभावे<sup>२</sup> शरत्प्रभृतिभ्यः

२०३. शरद् विपाश् अनस् मनस् उपानह

अनडुह दिव् हिमवत् हिरूक् विद् सद दिश्

दृश् विश् चतुर त्यद् तद् यद् कियत् ।

'जराया जरस् च' १४७। 'प्रतिपर-

समनुभ्योऽक्ष्णः' १४८। पथिन्॥ इति

शरदादिः॥

१०८. अनश्च<sup>३</sup>१०९. नपुंसकादन्यतरस्याम्<sup>४</sup>

११०. नदीपौर्णमास्याग्रहायणीभ्यः

१११. झयः

११२. गिरेश्च सेनकस्य

११३. बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः

स्वाङ्गात्षच्<sup>५</sup>

११४. अङ्गुलेर्दारुणि

११५. द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः

११६. अप्<sup>६</sup>रणीप्रमाणयोः

(वा०) नेतुर्नक्षत्रेऽव्क्तव्यः।

११७. अन्तर्बहिर्भ्यां च लोमनः

११८. अज्नासिकायाः<sup>७</sup> संज्ञायां नसं

चास्थूलात्।

(वा०) खुरखराभ्यां वा नस्।

११९. उपसर्गाच्च

(वा०) वेग्रो वक्तव्यः।

(वा०) ख्यश्च।

१२०. सुप्रातसुश्वसुदिवशारिकुक्षचतुर-

श्रेणीपदाजपदप्रोष्ठपदाः

१२१. नज्दुःसुभ्यो<sup>८</sup> हलिसक्थ्योरन्य-

तरस्याम्

१२२. नित्यमसिच्<sup>९</sup> प्रजामेधयोः

१२३. बहुप्रजाश्छन्दसि

१२४. धर्मादिनि<sup>१०</sup> च्केवलात्

१२५. जम्भासुहरिततृणसोमेभ्यः

१२६. दक्षिणेर्मा लुब्धयोगे

१२७. इक्क<sup>११</sup> र्मव्यतिहारे

१२८. द्विदण्ड्यादिभ्यश्च

२०४. द्विदण्डि द्विमुसलि उभाञ्जलि

## विमर्श

१- 'ब्रह्मणः' की अनुवृत्ति ५।४।१०५। तक जायेगी। २- यहाँ से 'अव्ययीभावे' की अनुवृत्ति ५।४।११२। तक जाती है। ३- इस सूत्र से 'अनः' की अनुवृत्ति ५।४।१०९। तक जाती है। ४- यहाँ से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ५।४।११२। तक जाती है। ५- यहाँ से 'बहुव्रीहौ' की अनुवृत्ति ५।४।१६०। तक, तथा 'षच्' की ५।४।११४। तक जाती है। ६- 'अप्' की अनुवृत्ति ५।४।११७। तक जायेगी। ७- यहाँ से 'अच्' की अनुवृत्ति ५।४।१२१। तक तथा 'नासिकायाः नसम्' की अनुवृत्ति ५।४।११९। तक जाती है। ८- 'नज्दुःसुभ्यः' की अनुवृत्ति ५।४।१२२। तक जायेगी। ९- 'असिच्' की अनुवृत्ति ५।४।१२३। तक जायेगी। १०- इस सूत्र से 'अनिच्' की अनुवृत्ति ५।४।१२६। तक जाती है। ११- 'इक्' की अनुवृत्ति ५।४।१२८। तक जायेगी।



उभयाञ्जलि उभादन्ति उभयादन्ति उभाहस्ति  
उभयाहस्ति उभाकर्णि उभयाकर्णि उभापाणि  
उभयापाणि उभाबाहु उभयाबाहु एकपदि  
प्रोष्ठपदि आचपदि (आढ्यपदि) सपदि  
निकुच्यकर्णि संहतपुच्छि अन्तेवासि॥ इति  
द्विदण्ड्यादिः॥

१२९. प्रसंभ्यां जानुनोर्जुः<sup>१</sup>

१३०. ऊर्ध्वाद्विभाषा

१३१. ऊधसोऽनङ्<sup>२</sup>

१३२. धनुषश्च<sup>३</sup>

१३३. वा संज्ञायाम्

१३४. जायाया निङ्

१३५. गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः<sup>४</sup>

(वा०) गन्धस्येत्वे तदेकान्तग्रहणम्।

१३६. अल्पाख्यायाम्

१३७. उपमानाच्च<sup>५</sup>

१३८. पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः

२०५. हस्तिन् (कुदाल अश्व कशिक कुरुत)  
कटोल कटोलक गण्डोल गण्डोलक कण्डोल  
कण्डोलक अज कपोत जाल गण्ड महेला  
दासी गणिका कुसूल॥ इति हस्त्यादिः॥

१३९. कुम्भपदीषु च

२०६. कुम्भपदी एकपदी जालपदी (शूलपदी)

मुनिपदी गुणपदी शतपदी सूत्रपदी गोधापदी  
कलशीपदी विपदी (तृणपदी) द्विपदी त्रिपदी  
षट्पदी दासीपदी शितिपदी विष्णुपदी सुपदी  
निष्पदी आर्द्रपदी कुणिपदी कृष्णपदी शुचिपदी  
द्रोणीपदी (द्रोणपदी) द्रुपदी सूकरपदी  
शकृत्पदी अष्टापदी स्थूणापदी अपदी  
सूचीपदी॥ इति कुम्भपद्यादिः॥

१४०. संख्यासुपूर्वस्य<sup>६</sup>

१४१. वयसि दन्तस्य दत्<sup>७</sup>

१४२. छन्दसि च

१४३. स्त्रियां संज्ञायाम्

१४४. विभाषा<sup>८</sup> श्यावारोकाभ्याम्

१४५. अग्रान्तशुद्धशुभ्रवृषवराहेभ्यश्च

१४६. ककुदस्यावस्थायां लोपः<sup>९</sup>

१४७. त्रिकुत्पर्वते

१४८. उद्विभ्यां काकुदस्य<sup>१०</sup>

१४९. पूर्णाद्विभाषा

१५०. सुहृद्-दुर्हदौ मित्रामित्रयोः

१५१. उरः प्रभृतिभ्यः कप्<sup>११</sup>

२०७. उरस् सर्पिस् उपानह पुमान् अनङ्वान्  
पयः नौः लक्ष्मीः दधि मधु शाली (शालिः)।  
(अर्थान्नजः) १४९॥ इत्युरःप्रभृतयः॥

१५२. इनः स्त्रियाम्

### विमर्श

१- यहाँ से 'जानुनोर्जुः' की अनुवृत्ति ५।४।१३०। तक जाती है। २- 'अनङ्' की अनुवृत्ति ५।४।१३३। तक जायेगी। ३- 'धनुषः' की अनुवृत्ति ५।४।१३३। तक जाती है। ४- यहाँ से 'गन्धस्य इत्' की अनुवृत्ति ५।४।१३७। तक जाती है। ५- 'उपमानात्' की अनुवृत्ति ५।४।१३८। तक जायेगी। ६- इस अशेष सूत्र की अनुवृत्ति ५।४।१४१। तक जाती है। ७- यहाँ से 'दन्तस्य दत्' की अनुवृत्ति ५।४।१४५। तक जाती है। ८- 'विभाषा' की अनुवृत्ति ५।४।१४५। तक जायेगी। ९- 'लोपः' की अनुवृत्ति ५।४।१४९। तक जाती है। १०- 'काकुदस्य' की अनुवृत्ति ५।४।१४९। तक जाती है। ११- इस सूत्र से 'कप्' की अनुवृत्ति ५।४।१६०। तक जाती है।

(वा०) अर्थान्नजः।

१५७. वन्दिते भ्रातुः

१५३. नघृतश्च

१५८. ऋतश्छन्दसि

१५४. शेषाद्विभाषा

१५९. नाडीतन्त्रयोः स्वाङ्गे

१५५. न<sup>१</sup> संज्ञायाम्

१६०. निष्प्रवाणिश्च

१५६. ईयसश्च

(पादशतस्य तत्प्रकृतवृकज्येष्ठाभ्यां

(वा०) ईयसो बहुव्रीहेर्नेतिवाच्यम्

सपत्रान्ववतप्तात्वार्या नन्दुःसुभ्यो वयसि  
विंशतिः॥)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे पञ्चमस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायश्च।

~~~~~

---

विमर्श

१-यहाँ से 'न' की अनुवृत्ति ५।४।१६०। तक जाती है।



## अथ षष्ठोऽध्यायः

### प्रथमः पादः

- |                                      |                                              |
|--------------------------------------|----------------------------------------------|
| १. एकाचो द्वे प्रथमस्य <sup>१</sup>  | (वा०) चरिचलिपतिवदीनां वा                     |
| २. अजादेर्द्वितीयस्य <sup>२</sup>    | द्वित्वमच्याक् चाभ्यासस्य।                   |
| ३. नन्द्राः संयोगादयः                | (वा०) हन्तेर्धत्वं च                         |
| (वा०) ईर्ष्यतेस्तृतीयस्येति वाच्यम्। | (वा०) पाटेर्णिलुक्चोक्च दीर्घ-               |
| (वा०) कण्ड्वादीनां तृतीयस्येति       | श्चाभ्यासस्य।                                |
| वाच्यम्।                             |                                              |
| (वा०) यथेष्टं नामधातुषु।             | १३. ष्यङः संप्रसारणं पुत्रपत्योस्तत्पुरुषे   |
| ४. पूर्वोऽभ्यासः                     | १४. बन्धुनि बहुव्रीहौ                        |
| ५. उभे अभ्यस्तम् <sup>३</sup>        | (वा) मातज्मातृकमातृषु वा।                    |
| ६. जक्षित्यादयः षट्                  | १५. वचिस्वपियजादीनां किति <sup>४</sup>       |
| ७. तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य         | १६. ग्रहिज्यावयिव्यधिवष्टिविचति-             |
| (वा०) तुजादिषु छन्दःप्रत्ययग्रहणं    | वृश्चतिपृच्छतिभृज्जतीनां <sup>५</sup> डिति च |
| कर्तव्यम्।                           | १७. लिट्यभ्यासस्योभयेषाम्                    |
| ८. लिटि धातोरनभ्यासस्य <sup>६</sup>  | १८. स्वापेश्चङि                              |
| ९. सन्यङोः                           | १९. स्वपिस्यमिव्येजां यङि <sup>६</sup>       |
| १०. श्लौ                             | २०. न वशः                                    |
| ११. चङि                              | २१. चायः की                                  |
| १२. दाश्चान्साहान्मीद्वांश्च         | २२. स्फायः स्फी निष्ठायाम् <sup>७</sup>      |

### विमर्श

१-इस सूत्र का अधिकार ६।१।११। तक जाता है। २-इस सूत्र का अधिकार ६।१।११। तक जानना चाहिए ३-इस सूत्र से 'अभ्यस्तम्' की अनुवृत्ति ६।१।६। तक जाती है। ४-यहाँ से 'धातोरनभ्यासस्य' की अनुवृत्ति ६।१।११। तक तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'ष्यङः' की अनुवृत्ति ६।१।१४। तक, तथा 'संप्रसारणम्' की अनुवृत्ति ६।१।३१। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'किति' की अनुवृत्ति ६।१।१६। तक, तथा 'वचिस्वपियजादीनाम्' की अनुवृत्ति ६।१।१७। में जाती है। ७-इस सूत्र से 'ग्रहि-ज्या-भृज्जतीनाम्' की अनुवृत्ति ६।१।१७। में जाती है। ८-'यङि' की अनुवृत्ति ६।१।२१। तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'निष्ठायाम्' की अनुवृत्ति ६।१।२८। तक जाती है।

|                                           |                                             |
|-------------------------------------------|---------------------------------------------|
| २३. स्त्यः प्रपूर्वस्य                    | ३७. न संप्रसारणे संप्रसारणम् <sup>१</sup>   |
| २४. द्रवमूर्तिस्पर्शयोः श्यः <sup>२</sup> | (वा०) रयेर्मतौ बहुलम्।                      |
| २५. प्रतेश्च                              | (वा०) ऋचि त्रेरुत्तरपदादिलो-                |
| २६. विभाषा <sup>३</sup> ऽभ्यवपूर्वस्य     | पश्छन्दसि।                                  |
| २७. शृतं पाके                             | ३८. लिटि <sup>१०</sup> वयो यः               |
| २८. प्यायः पी <sup>३</sup>                | ३९. वश्चास्यान्यतरस्यां किति                |
| (वा०) आङ्पूर्वस्यान्धूधसोरिति             | ४०. वेजः <sup>११</sup>                      |
| वक्तव्यम्                                 | ४१. ल्यपि <sup>१२</sup> च                   |
| २९. लिङ्यङोश्च <sup>४</sup>               | ४२. ज्यश्च                                  |
| ३०. विभाषा श्वेः <sup>५</sup>             | ४३. व्यश्च <sup>१३</sup>                    |
| ३१. णौ च संश्चङोः <sup>६</sup>            | ४४. विभाषा परेः                             |
| ३२. ह्रः संप्रसारणम् <sup>७</sup>         | ४५. आदेच उपदेशे <sup>१४</sup> ऽशिति         |
| ३३. अभ्यस्तस्य च                          | ४६. न व्यो लिटि                             |
| ३४. बहुलं छन्दसि <sup>८</sup>             | ४७. स्फुरतिस्फुलत्योर्ध्वि                  |
| ३५. चायः की                               | ४८. क्रीड्जीनां णौ <sup>१५</sup>            |
| ३६. अपस्पृधेथामानृचुरानृहुश्चिच्यु-       | ४९. सिद्ध्यतेरपारलौकिके                     |
| षेतित्याजश्राताःश्रितमाशीराशीर्ताः        | ५०. मीनातिमिनोतिदीडां ल्यपि <sup>१६</sup> च |
|                                           | ५१. विभाषा <sup>१७</sup> लीयतेः             |

### विमर्श

१-‘श्यः’ की अनुवृत्ति ६।१।२६। तक जायेगी। २-‘विभाषा’ की अनुवृत्ति ६।१।२८। तक जायेगी। ३-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ६।१।२९। तक जायेगी। ४-‘लिङ्यङोः’ की अनुवृत्ति ६।१।३०। तक जाती है। ५-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ६।१।३१। तक जाती है। ६-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ६।१।३२। तक जायेगी। ७-इस सूत्र से ‘ह्रः’ की अनुवृत्ति ६।१।३४। तक, तथा ‘संप्रसारणम्’ की अनुवृत्ति ६।१।३६। तक जाती है। ८-यहाँ से ‘बहुलम्’ की अनुवृत्ति ६।१।३६। तक, तथा ‘छन्दसि’ की अनुवृत्ति ६।१।३५। तक जाती है। ९-इस सूत्र से ‘न संप्रसारणम्’ की अनुवृत्ति ६।१।४४। तक जाती है। १०-यहाँ से ‘वयो यः’ की अनुवृत्ति ६।१।३९। तक, तथा ‘लिटि’ की अनुवृत्ति ६।१।४०। तक जाती है। ११-‘वेजः’ की अनुवृत्ति ६।१।४१। तक जायेगी। १२-‘ल्यपि’ की अनुवृत्ति ६।१।४४। तक जायेगी। १३-‘व्यः’ की अनुवृत्ति ६।१।४४। तक जाती है। १४-यहाँ से ‘आदेचः’ की अनुवृत्ति ६।१।५७। तथा ‘उपदेशे’ की ६।१।६५। तक जाती है। १५-‘णौ’ की अनुवृत्ति ६।१।४९। तक जाती है। १६-इस सूत्र से ‘ल्यपि’ की अनुवृत्ति ६।१।५१। तक जाती है। १७-‘विभाषा’ की अनुवृत्ति ६।१।५६। तक जायेगी।



|                                                                                  |                                                                           |
|----------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------|
| (वा०) प्रलम्भनशालिनीकरणयोश्च णौ<br>नित्यमात्वम्।                                 | (वा०) नस् नासिकाया यत्तस् क्षुद्रेषु।<br>(वा०) वर्णनगरयोर्नेति वक्तव्यम्। |
| ५२. खिदेश्छन्दसि                                                                 | ६४. धात्वादेः <sup>५</sup> षः सः                                          |
| ५३. अपगुरो णमुलि                                                                 | (वा०) सुब्धातुष्ठिवुष्वष्कतीनां<br>सत्त्वप्रतिषेधो वक्तव्यः।              |
| ५४. चिस्फुरोणौ <sup>१</sup>                                                      | ६५. णो नः                                                                 |
| ५५. प्रजने वीयतेः                                                                | ६६. लोपो <sup>६</sup> व्योर्वलि                                           |
| ५६. बिभेतेहेतुभये <sup>२</sup>                                                   | ६७. वेरपृक्तस्य                                                           |
| ५७. नित्यं स्मयतेः                                                               | ६८. हल्छ्याभ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं<br>हल् <sup>७</sup>                 |
| ५८. सृजिदृशोर्झल्यमकिति <sup>३</sup>                                             | ६९. एङ्हस्वात्संबुद्धेः                                                   |
| ५९. अनुदातस्य चर्दुपधस्यान्यतरस्याम्                                             | ७०. शेष्छन्दसि बहुलम्                                                     |
| ६०. शीर्षश्छन्दसि <sup>४</sup>                                                   | ७१. ह्रस्वस्य पिति कृति तुक् <sup>८</sup>                                 |
| ६१. ये च तद्धिते<br>(वा०) वा केशेषु।                                             | ७२. संहितायाम् <sup>९</sup>                                               |
| (वा०) अचि शीर्षः।                                                                | ७३. छे <sup>१०</sup> च                                                    |
| ६२. (अचि शीर्षः)<br>(वा०) छन्दसि च।                                              | ७४. आङ्-माडोश्च                                                           |
| ६३. पद्-दन्नो-मास् -हन्निशसन्-<br>यूषन्-दोषन्-यकञ्चकन्नुदन्ना-<br>सञ्छस्प्रभतिषु | ७५. दीर्घात्                                                              |
| (वा०) मांसपृतनासानूनां मांसपृत्स्नवो<br>वाच्याः।                                 | ७६. पदान्ताद्वा<br>(वा०) (विश्वजनादीनां छन्दसि तुग्वा<br>वक्तव्यः।)       |
|                                                                                  | ७७. इको यणचि <sup>११</sup>                                                |
|                                                                                  | ७८. एचो <sup>१२</sup> यवायावः                                             |

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'णौ' की अनुवृत्ति ६।१।५७। तक जायेगी। २-इस सूत्र से 'हेतुभये' की अनुवृत्ति ६।१।५७। तक जाती है। ३-यहाँ से 'झल्यमकिति' की अनुवृत्ति ६।१।५९। तक जाती है। ४-'शीर्षन्' की अनुवृत्ति ६।१।६१। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'धात्वादेः' की अनुवृत्ति ६।१।६५। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'लोपः' की अनुवृत्ति ६।१।७०। तक जाती है। ७-'हल्' की अनुवृत्ति ६।१।६९। तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'ह्रस्वस्य' की अनुवृत्ति ६।१।७३। तक, तथा 'तुक्' की अनुवृत्ति ६।१।७६। तक जाती है। ९-इस सूत्र का अधिकार ६।१।१५८। तक जाता है। १०-यहाँ से 'छे' की अनुवृत्ति ६।१।७६। तक जाती है। ११-यहाँ से 'अचि' की अनुवृत्ति ६।१।१२५। तक जाती है। १२-'एचः' की अनुवृत्ति ६।१।८३। तक जायेगी।

७९. वान्तो यि प्रत्यये<sup>१</sup>

(वा०) गोर्यूतौ च्छन्दस्युपसंख्यानम्

(वा०) अध्वपरिमाणे च।

८०. धातो<sup>२</sup>स्तन्निमित्तस्यैव

८१. क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे

८२. क्रय्यस्तदर्थे

८३. भय्यप्रवय्ये च छन्दसि

(वा०) हृदय्या उपसंख्यानम्।

(वा०) शरस्य च अवादेशो भवतीति  
वक्तव्यम्।८४. एकः पूर्वपरयोः<sup>३</sup>

८५. अन्तादिवच्च

८६. षत्वतुकोरसिद्धः

८७. आद्<sup>४</sup> गुणः८८. वृद्धिरेचि<sup>५</sup>

८९. एत्येधत्यूठसु

(वा०) अक्षादूहिन्यामुपसंख्यानम्।

(वा०) स्वादीरेरिणोः।

(वा०) प्रादूहोढोढ्यैषैष्येषु।

(वा०) ऋते च तृतीयासमासे।

(वा०) प्रवत्सतरकम्बलवसनार्णदशा-  
नामृणे।

९०. आटश्च

९१. उपसर्गादृति धातौ<sup>६</sup>

९२. वा सुप्यापिशलेः

९३. औतोऽम्शसोः

९४. एडि पररूपम्<sup>७</sup>(वा०) शकन्श्वादिषु पररूपं  
वक्तव्यम्।२०८. (वा ३६३०)। शकन्धुः कर्कन्धुः  
कुलटा। 'सीमन्तः केशवेशेषु' १५०। हलीषा  
मनीषा लाङ्गलीषा पतञ्जलिः। 'सारङ्गः  
पशुपक्षिणोः' १५१। इति शकन्श्वादिः॥

(वा०) एवे चानियोगे।

(वा०) ओत्वोष्ठयोः समासे वा।

(वा०) एमन्नादिषु छन्दसि।

९५. ओमाडोश्च

९६. उस्यपदान्तात्<sup>८</sup>

९७. अतो गुणे

९८. अव्यक्तानुकरणस्यात इतौ<sup>९</sup>

(वा०) —एकाचो न।

९९. नाप्रेडितस्यान्त्यस्य तु वा

१००. नित्यमाप्रेडिते डाचि

### विभर्ष

१-यहाँ से 'वान्तः' की अनुवृत्ति ६।१।८०। तक, तथा 'यि प्रत्यये' की अनुवृत्ति ६।१।८३। तक जाती है। २-'धातोः' की अनुवृत्ति ६।१।८३। तक जायेगी। ३-इस सूत्र का अधिकार ६।१।१११। तक जाता है। ४-यहाँ से 'आत्' की अनुवृत्ति ६।१।९६। तक जायेगी। ५-यहाँ से 'वृद्धिः' की अनुवृत्ति ६।१।९२। तक, तथा 'एचि' की अनुवृत्ति ६।१।८९। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'उपसर्गात् धातौ' की अनुवृत्ति ६।१।९४। तक, तथा 'ऋति' की अनुवृत्ति ६।१।९२। तक जाती है। ७-इससूत्र से 'पररूपम्' की अनुवृत्ति ६।१।१००। तक जाती है। ८-यहाँ से 'अपदान्तात्' की अनुवृत्ति ६।१।९७। तक जाती है। ९-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति ६।१।१००। तक जाती है।



१०१. अकः सवर्णे दीर्घः<sup>१</sup>

(वा०) ऋति सवर्णे ऋ वा

(वा०) लृति सवर्णे लृ वा।

१०२. प्रथमयोः पूर्वसवर्णः<sup>२</sup>

१०३. तस्माच्छसो नः पुंसि

१०४. नादिचि<sup>३</sup>१०५. दीर्घाज्जसि च<sup>४</sup>

१०६. वा च्छन्दसि

१०७. अमि पूर्वः<sup>५</sup>

१०८. संप्रसारणाच्च

१०९. एङः पदान्तादति<sup>६</sup>११०. डसिङसोश्च<sup>७</sup>१११. ऋत उत्<sup>८</sup>

११२. ख्यत्यात्परस्य

११३. अतो रोरप्लुतादप्लुते<sup>९</sup>

११४. हशि च

११५. प्रकृत्यान्तः<sup>१०</sup> पादमव्यपरे

११६. अव्यादवद्यादवक्रमुरत्रताय-

मवन्त्ववस्युषु च

११७. यजु<sup>११</sup>ष्युरः

११८. आपो जुषाणो वृष्णो वर्षिष्ठे-

ऽम्बेऽम्बालेऽम्बिके पूर्वे

११९. अङ्ग इत्यादौ च

१२०. अनुदाते<sup>१२</sup> च कुधपरे

१२१. अवपथासि च

१२२. सर्वत्र विभाषा गोः<sup>१३</sup>१२३. अवङ्<sup>१४</sup> स्फोटायनस्य

१२४. इन्द्रे च

१२५. प्लुतप्रगृह्या अचि<sup>१५</sup> नित्यम्

१२६. आङोऽनुनासिकश्छन्दसि

१२७. इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य

ह्रस्वश्च<sup>१६</sup>

(वा०) न समासे।

(वा०) सिति च।

१२८. ऋत्यकः

१२९. अप्लुतवदुपस्थिते<sup>१७</sup>

१३०. ई३चाक्रवर्मणस्य

## विमर्श

१-यहाँ से 'अकः' की अनुवृत्ति ६।१।१०७। तक तथा 'दीर्घः' की ६।१।१०६। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'पूर्वसवर्णः' की अनुवृत्ति ६।१।१०६। तक जाती है। ३-यहाँ से 'इचि' की अनुवृत्ति ६।१।१०६। तक, तथा 'न' की अनुवृत्ति ६।१।१०५। तक जाती है। ४-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति ६।१।१०६। तक जाती है। ५-'पूर्वः' की अनुवृत्ति ६।१।११०। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'एङः' तथा 'अति' की अनुवृत्ति ६।१।१२२। तक जाती है। ७-'डसिङसोः' की अनुवृत्ति ६।१।११२। तक जायेगी। ८-'उत्' की अनुवृत्ति ६।१।११४। तक जायेगी। ९-इस सूत्र से 'अतः रोः' की अनुवृत्ति ६।१।११४। तक जाती है। १०-यहाँ से 'प्रकृत्या' की अनुवृत्ति ६।१।१३०। तक, तथा 'अन्तःपादम्' की ६।१।११६। तक जाती है। ११-'यजुषि' की अनुवृत्ति ६।१।१२१। तक जायेगी। १२-'अनुदाते' की अनुवृत्ति ६।१।१२१। तक जायेगी। १३-यहाँ से 'गोः' की अनुवृत्ति ६।१।१२४। तक, तथा 'विभाषा' की अनुवृत्ति ६।१।१२३। तक जाती है। १४-'अवङ्' की अनुवृत्ति ६।१।१२४। तक जायेगी। १५-'अचि' की अनुवृत्ति ६।१।१३०। तक जायेगी। १६-यहाँ से 'शाकल्यस्य ह्रस्वश्च' की अनुवृत्ति ६।१।१२८। तक जाती है। १७-इस सूत्र से 'अप्लुतवत्' की अनुवृत्ति ६।१।१३०। तक जाती है।

१३१. दिव उत्  
 १३२. एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे  
 हलि<sup>१</sup>  
 १३३. स्यश्छन्दसि बहुलम्  
 १३४. सोऽचि लोपे चेत्पादपूरणम्  
 १३५. सूट्<sup>२</sup>कात्पूर्वः  
 १३६. अडभ्यासव्यवायेऽपि  
 १३७. संपरिभ्यां करोतौ<sup>३</sup> भूषणे  
 १३८. समवाये च  
 १३९. उपा<sup>४</sup>त्प्रतियत्नवैकृतवाक्या-  
 ध्याहारेषु च  
 १४०. किरतौ<sup>५</sup> लवने  
 १४१. हिंसायां प्रतेश्च  
 १४२. अपाच्चतुष्पाच्छकुनिष्वालेखने  
 (वा०) किरतेर्हर्षजीविकाकुलायकरणेषु।  
 १४३. कुस्तुम्बुरुणि जातिः  
 १४४. अपरस्पराः क्रियासातत्ये  
 १४५. गोष्पदं सेवितासेवितप्रमाणेषु  
 १४६. आस्पदं प्रतिष्ठायाम्  
 १४७. आश्चर्यमनित्ये  
 १४८. वर्चस्केऽवस्करः  
 १४९. अपस्करो रथाङ्गम्  
 १५०. विष्किरः शकुनौ वा  
 १५१. ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे  
 १५२. प्रतिष्कशश्च कशेः  
 १५३. प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी  
 १५४. मस्करमस्करिणौ वेणुपरिव्राज-  
 कयोः  
 १५५. कास्तीराजस्तुन्दे नगरे  
 १५६. कारस्करो वृक्षः  
 १५७. पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम्  
 २०९. 'पारस्करो देशः' १५२। 'कारस्करो  
 वृक्षः' १५३। 'रथस्या (रयस्था) नदी'  
 १५४। 'किष्कुः प्रमाणम्' १५५। 'किष्किन्धा  
 गुहा' १५६। तद्वहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः  
 सुट् तलोपश्च) १५७। 'प्रातुम्पतौ गवि कर्तारि'  
 १५८। इति पारस्करादिः॥  
 (वा०) प्रायस्य चित्तिचित्तयोः सुडस्कारो  
 वा।  
 १५८. अनुदात्तं पदमेकवर्जम्  
 १५९. कर्षात्त्वतो घञोऽन्त उदात्तः<sup>६</sup>  
 १६०. उज्छादीनां च  
 २१०. उज्छ म्लेच्छ जज्ञ नल्प (जल्प) जप  
 वध 'युगः कालविशेषे रथाद्युपकरणे च'  
 १५९। 'गरो दूष्ये' (गरो डूष्ये) १६०।  
 अवन्तः। 'वेदवेगवेष्टबन्धाः करणे' १६१।  
 'स्तुयुद्वशछन्दसि' १६२। 'वर्तनिः स्तोत्रे'  
 १६३। 'श्वध्रेदरः' १६४। 'साम्बतापौ  
 भावगर्हायाम्' १६५। 'उत्तमशश्चत्तमौ सर्वत्र'  
 १६६। 'भक्षमन्थभोगमन्थाः' १६७। हेहाः॥  
 इत्युज्छादिः॥

### विमर्शः

१-यहाँ से 'सुलोपः' की अनुवृत्ति ६।१।१३४। तक, तथा 'हलि' की अनुवृत्ति ६।१।१३३। तक जाती है। २-इस सूत्र का अधिकार ६।१।१५७। तक जाता है। ३-यहाँ से 'संपरिभ्याम्' की अनुवृत्ति ६।१।१३८। तक, तथा 'करोतौ' की अनुवृत्ति ६।१।१३९। तक जाती है। ४-'उपात्' की अनुवृत्ति ६।१।१४१। तक जायेगी। ५-'किरतौ' की अनुवृत्ति ६।१।१४२। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'अन्तः' की अनुवृत्ति ६।१।१८५। तक, तथा 'उदात्तः' की अनुवृत्ति ६।१।२२०। तक जाती है।



|                                                                     |                                                                               |
|---------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------|
| १६१. अनुदात्तस्य च यत्रोदात्तलोपः                                   | १७५. नोङ्धात्वोः                                                              |
| १६२. धातोः                                                          | १७६. ह्रस्वनुङ्भ्यां मतुप् <sup>८</sup>                                       |
| १६३. चितः <sup>१</sup>                                              | १७७. नामन्यतरस्याम् <sup>९</sup>                                              |
| १६४. तद्धितस्य <sup>२</sup>                                         | १७८. ऊयाश्छन्दसि बहुलम्                                                       |
| १६५. कितः                                                           | १७९. षट्त्रिचतुर्भ्यो <sup>१०</sup> हलादिः                                    |
| १६६. तिसृभ्यो जसः                                                   | १८०. झल्युपोत्तमम् <sup>११</sup>                                              |
| १६७. चतुरः शसि                                                      | १८१. विभाषा भाषायाम्                                                          |
| १६८. सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः <sup>३</sup>                       | १८२. न <sup>१२</sup> गोश्वन्त्साववर्णराडङ्-<br>क्रुङ्कृद्भ्यः                 |
| १६९. अन्तोदात्तादुत्तरपदादन्यतर-<br>स्यामनित्यसमासे                 | १८३. दिवो झल् <sup>१३</sup>                                                   |
| १७०. अञ्चेश्छन्दस्यसर्वनामस्थानम् <sup>४</sup>                      | १८४. नृ चान्यतरस्याम्                                                         |
| १७१. ऊडिदंपदाद्यप्पुम्रैद्युभ्यः<br>(वा०) ऊठ्युपधाग्रहणं कर्तव्यम्। | १८५. तित्स्वरितम्                                                             |
| १७२. अष्टनो दीर्घात्                                                | १८६. तास्यनुदात्तोन्डिदुपदेशाल्ल-<br>सार्वधातुकम् <sup>१४</sup> नुदात्तमहिडोः |
| १७३. शतुरनुमो नद्यजादी <sup>५</sup><br>(वा०) बृहन्महतोरुपसंख्यानम्। | १८७. आदिः सिचोऽन्यतरस्याम् <sup>१५</sup>                                      |
| १७४. उदात्तयणो हल्पूर्वात् <sup>६</sup>                             | १८८. स्वपादिर्हिसामच्यनिटि <sup>१६</sup>                                      |
|                                                                     | १८९. अभ्यस्तानामादिः <sup>१७</sup>                                            |
|                                                                     | १९०. अनुदात्ते च                                                              |

### विमर्श

१-यहाँ से 'चितः' की अनुवृत्ति ६।१।१६४। तक जाती है। २-'तद्धितस्य' की अनुवृत्ति ६।१।१६५। तक जायेगी। ३-'एकाचः' तृतीयादिः' की अनुवृत्ति ६।१।१६९। तक तथा 'विभक्तिः' की अनुवृत्ति ६।१।१८४। तक जायेगी। ४-यहाँ से 'अन्तोदात्तात्' की अनुवृत्ति ६।१।१७७। तक जाती है। ५-यहाँ से 'असर्वनामस्थानम्' की अनुवृत्ति ६।१।१७५। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'नद्यजादी' की अनुवृत्ति ६।१।१७५। तक जाती है। ७-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ६।१।१७५। तक जाती है। ८-यहाँ से 'ह्रस्वः' तथा 'मत्तुप्' की अनुवृत्ति ६।१।१७७। तक जायेगी। ९-'नाम्' की अनुवृत्ति ६।१।१८७। तक जायेगी। १०-'षट्त्रिचतुर्भ्यः' की अनुवृत्ति ६।१।१८१। तक जायेगी। ११-इस अशेष सूत्र की अनुवृत्ति ६।१।१८१। तक जाती है। १२-यहाँ से 'न' की अनुवृत्ति ६।१।१८४। तक जाती है। १३-'झल्' की अनुवृत्ति ६।१।१८४। तक जायेगी। १४-इस सूत्र से 'लसार्वधातुकम्' की अनुवृत्ति ६।१।१९२। तक जाती है। १५-यहाँ से 'आदिः अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ६।१।१८८। तक जाती है। १६-'अच्यनिटि' की अनुवृत्ति ६।१।१८९। तक जायेगी। १७-इस सूत्र से 'अभ्यस्तानाम्' की अनुवृत्ति ६।१।१९२। तक तथा 'आदिः' की अनुवृत्ति ६।१।१९१। तक जाती है।

१९१. सर्वस्य सुपि  
 १९२. भीहीभृहुमदजनधनदरिद्राजागरां  
 प्रत्ययात्पूर्व<sup>१</sup> पिति  
 १९३. लिति  
 १९४. आदिर्णमुल्यन्यतरस्याम्<sup>२</sup>  
 १९५. अचः कर्तृयकि  
 १९६. थलि च सेटीडन्तो वा-  
 १९७. ज्नित्यादि<sup>३</sup>र्नित्यम्  
 १९८. आमन्त्रितस्य च  
 १९९. पथिमथोः सर्वनामस्थाने  
 २००. अन्तश्च तवै युगपत्  
 २०१. क्षयो निवासे  
 २०२. जयः करणम्  
 २०३. वृषादीनां च  
 २११. वृषः जनः ज्वरः ग्रहः हयः गयः  
 नयः तायः तयः चयः अमः वेदः सूदः  
 अंशः गुहा। 'शमरणौ संज्ञायां संमतौ  
 भावकर्मणोः' १६८। मन्त्रः शान्तिः कामः  
 यामः आरा धारा कारा वहः कल्पः पादः।  
 इति वृषादिः॥ आकृतिगणः॥ अविहित-  
 लक्षणमाद्युदात्तत्वं वृषादिषु ज्ञेयम्॥  
 २०४. संज्ञायामुपमानम्<sup>४</sup>  
 २०५. निष्ठा च द्वयजनात्

२०६. शुष्कधृष्टौ  
 २०७. आशितः कर्ता  
 २०८. रिक्ते विभाषा<sup>५</sup>  
 २०९. जुष्टार्पिते<sup>६</sup> च च्छन्दसि  
 २१०. नित्यं मन्त्रे  
 २११. युष्मदस्मदो<sup>७</sup>र्दसि  
 २१२. डयि च  
 २१३. यतोऽनावः  
 २१४. ईडवन्दवृशंसदुहां प्यतः  
 २१५. विभाषा<sup>८</sup> वेण्विन्धानयोः  
 २१६. त्यागरागहासकुहश्चठक्रथानाम्  
 २१७. उपोत्तमं<sup>९</sup> रिति  
 २१८. चड्यन्यतरस्याम्  
 २१९. मतोः पूर्वमात्संज्ञायां<sup>१०</sup> स्त्रियाम्  
 २२०. अन्तो<sup>११</sup>ऽवत्याः  
 २२१. ईवत्याः  
 २२२. चौ  
 (वा०) चोरतद्धित इति वक्तव्यम्।  
 २२३. समासस्य

(एकाचश्चायो ल्यपि च ये च

क्षय्यजय्यावकः सवर्णेऽवपथाहिंसाया-  
 मनुदात्तस्य विभाषा क्षय ईवत्यास्त्रीणि॥)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे षष्ठस्याध्यायस्य प्रथमः पादः॥

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'प्रत्ययात् पूर्वम्' की अनुवृत्ति ६।१।१९३। तक जाती है। २-यहाँ से 'आदिः अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ६।१।१९६। तक जाती है। ३-यहाँ से 'आदिः' की अनुवृत्ति ६।१।२१६। तक जाती है। ४-यहाँ से 'संज्ञायाम्' की अनुवृत्ति ६।१।२०५। तक जाती है। ५-'विभाषा' की अनुवृत्ति ६।१।२०९। तक जायेगी। ६-यहाँ से 'जुष्टार्पिते' की अनुवृत्ति ६।१।२१०। तक जाती है। ७-इस सूत्र से 'युष्मदस्मदोः' की अनुवृत्ति ६।१।२१२। तक जाती है। ८-'विभाषा' की अनुवृत्ति ६।१।२१६। तक जायेगी। ९-'उपोत्तमम्' की अनुवृत्ति ६।१।२१८। तक जाती है। १०-यहाँ से 'संज्ञायाम्' की अनुवृत्ति ६।१।२२१। तक जाती है। ११-यहाँ से 'अन्तः' की अनुवृत्ति ६।१।२२३। तक जायेगी।



## द्वितीयः पादः

- |                                                                                |                                                                                                |
|--------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------|
| १. बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् <sup>१</sup>                                  | १९. न भूवाक्चिद्दिधिषु                                                                         |
| २. तत्पुरुषे <sup>२</sup> तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युप-<br>मानाव्ययद्वितीयाकृत्याः | २०. वा भुवनम्                                                                                  |
| ३. 'वर्णो वर्णेष्वनेते                                                         | २१. आशङ्काबाधनेदीयस्सु संभावने                                                                 |
| ४. गाधलवणयोः प्रमाणे                                                           | २२. पूर्वे भूतपूर्वे                                                                           |
| ५. दायाद्यं दायादे                                                             | २३. सविधसनीडसमर्यादसवेशसदेशेषु<br>सामीप्ये                                                     |
| ६. प्रतिबन्धि चिरकृच्छ्रयोः                                                    | २४. विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु                                                                    |
| ७. पदेऽपदेशे                                                                   | २१२. विस्पष्ट विचित्र विचित व्यक्त संपन्न<br>पटु पण्डित कुशल चपल निपुण।। इति<br>विस्पष्टादिः।। |
| ८. निवाते वातत्राणे                                                            | २५. श्रज्यावमकन्यापवत्सु भावे कर्म-<br>धारये <sup>५</sup>                                      |
| ९. शारदेऽनार्तवे                                                               | २६. कुमार <sup>६</sup> श्च                                                                     |
| १०. अध्वर्युकषाययोजार्तातौ                                                     | २७. आदिः <sup>७</sup> प्रत्येनसि                                                               |
| ११. सदृशप्रतिरूपयोः सादृश्ये                                                   | २८. पूगेष्वन्यतरस्याम्                                                                         |
| १२. द्विगौ प्रमाणे                                                             | २९. इगन्तकालकपालभगालशरावेषु<br>द्विगौ <sup>८</sup>                                             |
| १३. गन्तव्यपण्यं वाणिजे                                                        | ३०. बह्वन्यतरस्याम् <sup>९</sup>                                                               |
| १४. मात्रोपज्ञोपक्रमच्छाये नपुंसके                                             | ३१. दिष्टिवितस्त्योश्च                                                                         |
| १५. सुखप्रिययो <sup>३</sup> र्हिते                                             |                                                                                                |
| १६. प्रीतौ च                                                                   |                                                                                                |
| १७. स्वं स्वामिनि                                                              |                                                                                                |
| १८. पत्यावैश्वर्ये <sup>४</sup>                                                |                                                                                                |

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'प्रकृत्या' की अनुवृत्ति ६।२।६३। तक तथा 'पूर्वपदम्' की अनुवृत्ति ६।२।१०९। तक जायेगी। २-यहाँ से 'तत्पुरुषे' की अनुवृत्ति ६।२।२४। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'सुखप्रिययोः' की अनुवृत्ति ६।२।१६। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'पत्यावैश्वर्ये' की अनुवृत्ति ६।२।२०। तक जाती है। ५-'कर्मधारये' की अनुवृत्ति ६।२।२८। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'कुमारः' की अनुवृत्ति ६।२।२८। तक जाती है। ७-'आदिः' की अनुवृत्ति ६।२।२८। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से 'इगन्तकालकपालभगालशरावेषु' की अनुवृत्ति ६।२।३०। तक, तथा 'द्विगौ' की अनुवृत्ति ६।२।३१। तक जाती है। ९-यहाँ से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ६।२।३१। तक जाती है।

३२. सप्तमी सिद्धशुष्कपक्वबन्धेष्व-  
कालात्
३३. परिप्रत्युपापावर्ज्यमानाहोरात्रावय-  
वेषु
३४. राजन्यबहुवचनद्वन्द्वेऽन्धक-  
वृष्णिषु
३५. संख्या
३६. आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासी
३७. कार्तिकौजपादयश्च
२१३. कार्तिकौजपौ सावर्णिमाण्डकेयौ  
(सावर्णिमाण्डूकेयौ) अवन्त्यश्मकाः पैलश्या-  
पर्णेयाः कपिश्यापर्णेयाः शैतिकाक्ष-पाञ्चालेयाः  
कटुकवाधूलेयाः शाकलंशुनकाः  
शाकलशणकाः शणकबाभ्रवाः आर्चीभिमौद्गलाः  
कुन्तिसुराष्ट्राः चिन्तिसुराष्ट्राः तण्डवतण्डाः  
अविमत्तकामविद्धाः बाभ्रवशालङ्कायनाः  
बाभ्रवदानच्युताः कठकालापाः कठकौथुमाः  
कौथुमलौकाक्षाः स्त्रीकुमारम् मौद्गपैप्पलादाः  
वत्सजरन्तः सौश्रुतपार्थवाः जरामृत्यू  
याज्यानुवाक्ये॥ इति कार्तिकौजपादिः॥
३८. महा<sup>२</sup>न्त्रीह्यापराहणागृष्टीष्वासजा-  
बालभारभारतहैलिहिलरौरवप्रवृद्धेषु
३९. क्षुल्लकश्च वैश्वदेवे
४०. उष्ट्रः सादिवाम्योः
४१. गौः सादसादिसारथिषु
४२. कुरुगार्हपतरिक्तगुर्वसूतजरत्य-  
श्लीलदृढरूपापारेबडवातैतिलकद्रु-  
पण्यकम्बलो दासीभाराणां च
२१४. दासीभारः देवहूतिः देवभीतिः देवलातिः  
वसुनीतिः (वसूनीतिः) औषधिः चन्द्रमाः॥  
इति दासीभारादिः॥ आकृतिगणः॥
- (वा०) कुरुवृज्योगार्हपते।
४३. चतुर्थी<sup>३</sup>तदर्थं
४४. अर्थे
४५. क्ते<sup>४</sup>च
४६. कर्मधारयेऽनिष्ठा
४७. अहीने द्वितीया
- (वा०) अनुपसर्ग इति वक्तव्यम्।
४८. तृतीया कर्मणि<sup>५</sup>
४९. गतिरनन्तरः<sup>६</sup>
५०. तादौ च निति कृत्यतौ
५१. तवै चान्तश्च युगपत्
५२. अनिगन्तोऽञ्चतौ वप्रत्यये<sup>७</sup>
५३. न्यधी च
५४. ईषदन्यतरस्याम्<sup>८</sup>
५५. हिरण्यपरिमाणं धने

### विमर्श

१-यहाँ से 'द्वन्द्वे' की अनुवृत्ति ६।२।३७। तक जाती है। २-'महान्' की अनुवृत्ति ६।२।३९। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से 'चतुर्थी' की अनुवृत्ति ६।२।४५। तक जाती है। ४-'क्ते' की अनुवृत्ति ६।२।४९। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'कर्मणि' की अनुवृत्ति ६।२।४९। तक जाती है। ६-यहाँ से 'गतिः' की अनुवृत्ति ६।२।५२। तक, तथा 'अनन्तरः' की अनुवृत्ति ६।२।५१। तक जाती है। ७-यहाँ से 'अञ्चतौ वप्रत्यये' की अनुवृत्ति ६।२।५३। तक जाती है। ८- इस सूत्र से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ६।२।६३। तक जाती है।



५६. प्रथमोऽचिरोपसंपत्तौ  
 ५७. कतरकतमौ कर्मधारये<sup>१</sup>  
 ५८. आर्यो ब्राह्मणकुमारयोः<sup>२</sup>  
 ५९. राजा<sup>३</sup> च  
 ६०. षष्ठी प्रत्येनसि  
 ६१. क्ते नित्यार्थे  
 ६२. ग्रामः शिल्पिनि<sup>४</sup>  
 ६३. राजा च प्रशंसायाम्  
 ६४. आदिरुदात्तः<sup>५</sup>  
 ६५. सप्तमीहारिणौ धर्म्येऽहरणे  
 ६६. युक्ते च  
 ६७. विभाषा<sup>६</sup>ऽध्यक्षे  
 ६८. पापं च शिल्पिनि  
 ६९. गोत्रान्तेवासिमाणवब्राह्मणेषु क्षेपे  
 ७०. अङ्गानि मैरये  
 ७१. भक्ताख्यास्तदर्थेषु  
 ७२. गोविडालसिंहसैन्धवेषूपमाने  
 ७३. अके<sup>७</sup> जीविकार्थे  
 ७४. प्राचां क्रीडायाम्  
 ७५. अणि<sup>८</sup> नियुक्ते  
 ७६. शिल्पिनि चाकृजः<sup>९</sup>  
 ७७. संज्ञायां च  
 ७८. गोतन्तियवं पाले  
 ७९. णिनि<sup>१०</sup>  
 ८०. उपमानं शब्दार्थप्रकृतावेव  
 ८१. युक्तारोह्यादयश्च  
 २१५. युक्तारोही आगतरोही आगतयोधी  
 आगतवञ्जी आगतनन्दी आगतप्रहारी  
 आगतमत्स्यः क्षीरहोता भगिनीभर्ता ग्रामगोधुक्  
 अश्वत्रिरात्रः गर्गत्रिरात्रः व्युष्टित्रिरात्र गणपादः  
 एकशितिपादः पात्रेसमितादयश्च<sup>११</sup> १६९। इति  
 युक्तारोह्यादिः॥  
 ८२. दीर्घकाशतुषभ्राष्ट्रवटं जे<sup>१२</sup>  
 ८३. अन्त्यात्पूर्वं बह्वचः  
 ८४. ग्रामेऽनिवसन्तः  
 ८५. घोषादिषु च  
 २१६. घोष घट (कट) वल्लभ हृद बदरी  
 पिङ्गल (पिङ्गली) माला रक्षा शाला (वृट्)  
 कूट (कट्) शाल्मली अश्वत्थ तृण (शिल्पी)  
 मुनि प्रेक्षाकू (प्रेक्षा)॥ इति घोषादिः॥  
 ८६. छात्र्यादयः शालायाम्  
 २१७. छात्रि पेलि भाण्डि व्याडि आखण्डि  
 आटि गोमि॥ इति छात्र्यादिः॥  
 ८७. प्रस्थे<sup>१३</sup>ऽवृद्धमकर्व्यादीनाम्  
 २१८. कर्कि (कर्की) मघ्नी मकरी कर्कन्धु  
 शमी करीरि (करीर) कन्दुक कुबल (कवल)  
 बदरी॥ इति कर्व्यादिः॥

### विमर्श

१-‘कर्मधारये’ की अनुवृत्ति ६।२।५९। तक जायेगी। २-‘ब्राह्मणकुमारयोः’ की अनुवृत्ति ६।२।५९। तक जायेगी। ३-‘राजा’ की अनुवृत्ति ६।२।६०। तक जायेगी। ४-यहाँ से ‘शिल्पिनि’ की अनुवृत्ति ६।२।६३। तक जाती है। ५-इस सूत्र से ‘आदिः’ की अनुवृत्ति ६।२।९१। तक, तथा ‘उदात्तः’ की अनुवृत्ति ६।२।१९८। तक जाती है। ६-इस सूत्र से ‘विभाषा’ की अनुवृत्ति ६।२।६८। तक जाती है। ७-यहाँ से ‘अके’ की अनुवृत्ति ६।२।७४। तक जाती है। ८-यहाँ से ‘अणि’ की अनुवृत्ति ६।२।७७। तक जाती है। ९-इस सूत्र से ‘चाकृजः’ की अनुवृत्ति ६।२।७७। तक जाती है। १०-‘णिनि’ की अनुवृत्ति ६।२।८०। तक जायेगी। ११-‘जे’ की अनुवृत्ति ६।२।८३। तक जायेगी। १२-यहाँ से ‘प्रस्थे’ की अनुवृत्ति ६।२।८८। तक जाती है।

८८. मालादीनां च १०१. न हास्तिनफलकमादेयाः  
 २१९. माला शाला शोणा (शोण) १०२. कुसूलकूपकम्भशालं बिले  
 द्राक्षा स्नाक्षा क्षामा काञ्ची एक काम।। १०३. दिक्छब्दा<sup>१</sup>ग्रामजनपदाख्यान-  
 इति मालादिः। चानराटेषु  
 ८९. अमहन्न<sup>२</sup>वन्नगरेऽनुदीचाम् १०४. आचार्योपसर्जनश्चान्तेवासिनि  
 ९०. अमे<sup>३</sup>चावर्णं द्व्यचन्यच् १०५. उत्तरपदवृद्धौ सर्वं च  
 ९१. न भूताधिकसंजीवमद्राश्मकज्जलम् १०६. बहुव्रीहौ विश्वं संज्ञायाम्<sup>४</sup>  
 (वा०) आद्युदात्तप्रकरणे दिवोदासादीनां १०७. उदराश्वेषुषु<sup>५</sup>  
 छन्दस्युपसंख्यानम्। १०८. क्षेपे  
 ९२. अन्तः<sup>३</sup> १०९. नदी बन्धुनि  
 ९३. सर्वं गुणाकात्स्न्यं ११०. निष्ठोपसर्गपूर्वमन्यतरस्याम्  
 (वा०) गुणात्तरेण तरपो लोपश्चेति- १११. उत्तरपदादिः<sup>६</sup>  
 वक्तव्यम् ११२. कर्णो<sup>७</sup> वर्णलक्षणात्  
 ९४. संज्ञायां गिरिनिकाययोः ११३. संज्ञौपम्ययोश्च<sup>८</sup>  
 ९५. कुमार्या वयसि ११४. कण्ठपृष्ठग्रीवाजङ्घं च  
 ९६. उदकेऽकेवले ११५. शृङ्गमवस्थायां च  
 ९७. द्विगौ क्रतौ ११६. नञो जरमरमित्रमृताः  
 ९८. सभायां नपुंसके ११७. सोर्म<sup>९</sup>नसी अलोमोषसी  
 ९९. पुरे<sup>१०</sup>प्राचाम् ११८. क्रत्वादयश्च  
 १००. अरिष्टगौडपूर्वं च २२०. क्रतु दृशीक प्रतीक प्रतूर्ति हव्य भव्य  
 भग।। इति क्रत्वादिः।।

### विमर्श

१-यहाँ से 'अमहन्नवम्' की अनुवृत्ति ६।२।१०। तक जाती है। २-यहाँ से 'अमे' की अनुवृत्ति ६।२।११। तक जाती है। ३-इस सूत्र का अधिकार ६।२।११०। तक जाता है। ४-इस सूत्र से 'पुरे' की अनुवृत्ति ६।२।१०१। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'दिक्छब्दाः' की अनुवृत्ति ६।२।१०५। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'बहुव्रीहौ' की अनुवृत्ति ६।२।१२०। तक, तथा 'संज्ञायाम्' की अनुवृत्ति ६।२।१०८। तक जाती है। ७-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ६।२।१०८। तक जायेगी। ८-यहाँ से 'उत्तरपदः' की अनुवृत्ति ६।२।११९। तक, तथा 'आदिः' की अनुवृत्ति ६।२।१४२। तक जाती है। ९-यहाँ से 'कर्णः' की अनुवृत्ति ६।२।११३। तक जाती है। १०-यहाँ से 'संज्ञौपम्ययोः' की अनुवृत्ति ६।१।१५। तक जाती है। ११-इस सूत्र से 'सोः' की अनुवृत्ति ६।२।१२०। तक जायेगी।



११९. आद्युदात्तं द्व्यच्छन्दसि<sup>१</sup>  
 १२०. वीरवीर्यौ च  
 १२१. कूलतीरतूलमूलशालाक्ष-  
 सममव्ययीभावे  
 १२२. कंसमन्थशूर्पपाय्यकाण्डं द्विगौ  
 १२३. तत्पुरुषे शालायां नपुंसके<sup>२</sup>  
 १२४. कन्था<sup>३</sup> च  
 १२५. आदिश्विहणादीनाम्  
 २२१. चिहण मदुर सद्रुमर वैतुल पटत्क  
 बैडालिकर्णक बैडालिकर्णि कुक्कुट चिक्कण  
 चित्कण॥ इति चिहणादिः॥  
 १२६. चेलखेटकटुककाण्डं गर्हायाम्  
 १२७. चीरमुपमानम्  
 १२८. पललसूपशाकं मिश्रे  
 १२९. कूलसूदस्थलकर्षाः संज्ञायाम्  
 १३०. अकर्मधारये<sup>४</sup> राज्यम्  
 (वा०) चेलराज्यादिस्वरादव्ययस्वरो  
 भवति पूर्वविप्रतिषेधेन।  
 १३१. वर्ग्यादयश्च  
 २२२. दिगादिषु वर्ग्यादयस्त एव कृतयदन्ता  
 वर्ग्यादयः॥  
 १३२. पुत्रः<sup>५</sup> पुंभ्यः  
 १३३. नाचार्यराजर्त्विक्संयुक्तज्ञात्या-  
 ख्येभ्यः  
 १३४. चूर्णादीन्यप्राणिषष्ठ्याः<sup>६</sup>  
 २२३. चूर्ण करिव करिपे शाकिन शाकट  
 द्राक्षा तूस्त कुन्दुम दलप चमसी चक्कन  
 चौल॥ इति चूर्णादिः॥  
 १३५. षट् च काण्डादीनि  
 २२४. काण्ड चीर पलल सूप शाक कूल॥  
 इति काण्डादिः॥  
 १३६. कुण्डं वनम्  
 १३७. प्रकृत्या<sup>७</sup> भगालम्  
 १३८. शितेर्नित्याबह्वज्वह्व्रीहावभसत्  
 १३९. गतिकारकोपपदात्कृत्  
 १४०. उभे वनस्पत्यादिषु युगपत्<sup>८</sup>  
 २२५. वनस्पतिः वृहस्पतिः शचीपतिः  
 तनूनपात् नराशंसः शुनःशेफः शण्डामर्कौ  
 तृष्णावरूत्री लम्बाविश्ववयसौ मर्मृत्युः॥ इति  
 वनस्पत्यादिः॥  
 १४१. देवताद्वन्द्वे<sup>९</sup> च  
 १४२. नोत्तरपदेऽनुदात्तादावपृथिवी-  
 रुद्रपूषमन्थिषु  
 १४३. अन्तः<sup>१०</sup>  
 १४४. थाथघञ्क्ताजबित्रकाणाम्  
 १४५. सूपमानात्कः<sup>११</sup>  
 १४६. संज्ञायामनाचितादीनाम्<sup>१२</sup>  
 २२६. आचित पर्याचित आस्थापित परिगृहीत

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'छन्दसि' की अनुवृत्ति ६।२।१२०। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'तत्पुरुषे' की अनुवृत्ति ६।२।१३७। तक, तथा 'नपुंसके' की अनुवृत्ति ६।२।१२५। तक जायेगी। ३-'कन्था' की अनुवृत्ति ६।२।१२५। तक जायेगी। ४-'अकर्मधारये' की अनुवृत्ति ६।२।१३१। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से 'पुत्रः' की अनुवृत्ति ६।२।१३३। तक जाती है। ६-यहाँ से 'अप्राणिषष्ठ्याः' की अनुवृत्ति ६।२।१३५। तक जाती है। ७-इस सूत्र से 'प्रकृत्या' की अनुवृत्ति ६।२।१४२। तक जाती है। ८-'उभे युगपत्' की अनुवृत्ति ६।२।१४२। तक जाती है। ९-यहाँ से 'देवताद्वन्द्वे' की अनुवृत्ति ६।२।१४२। तक जाती है। १०-इस सूत्र का अधिकार पादसमाप्तिपर्यन्त अर्थात् ६।२।१९९। तक जाता है। ११-'क्तः' की अनुवृत्ति ६।२।१४९। तक जायेगी। १२-'संज्ञायाम्' की अनुवृत्ति ६।२।१४८। तक जायेगी।

- निरुक्त प्रतिपत्र अपशिलष्ट प्रशिलष्ट उपहित १५८. आक्रोशे<sup>५</sup> च  
 उपस्थित। 'संहितागवि' १७०। इत्या- १५९. संज्ञायाम्  
 चितादिः॥ १६०. कृत्योकेष्णुच्चार्यादयश्च  
 १४७. प्रवृद्धादीनां च २२८. चारु साधु यौधिक (यौधिक) अनङ्ग।  
 २२७. 'प्रवृद्धं यानम्' १७१। 'प्रवृद्धो मेजय वदान्य अकस्मात्। 'वर्तमानवर्धमान-  
 वृषलः' १७२। 'प्रयुता सूष्णवः' १७३। त्वरमाणध्रियमाणक्रीयमाणरोचमानशोभमानाः  
 'आकर्षेऽवहितः' १७४। 'अवहितो भोगेषु' संज्ञायाम् १७६ 'विकारसदृशे व्यस्तसमस्ते'  
 १७५। खट्वारूढः। कविशस्तः॥ इति १७७। गृहपति गृहपतिक ('राजाहो-  
 प्रवृद्धादिः॥ आकृति-गणोऽयम् ॥ तेन॥ श्छन्दसि') १७८। इति चार्वादिः॥  
 प्रवृद्धं यानम् ॥ अप्रवृद्धो वृषकृतो रथ (वा०) राजाहोश्छन्दसि।  
 इत्यादि॥ १६१. विभाषा तृन्नत्रतीक्ष्णशुचिषु  
 १४८. कारका<sup>१</sup> दत्तश्रुतयोरेवाशिषि १६२. बहुव्रीहा<sup>६</sup> विदमेतत्तद्भ्यः प्रथम-  
 १४९. इत्थंभूतेन कृतमिति च पूरणयोः क्रियागणने  
 १५०. अनो भावकर्मवचनः १६३. संख्यायाः स्तनः<sup>७</sup>  
 १५१. मन्तिन्व्याख्यानशयनासन- १६४. विभाषा छन्दसि  
 स्थानयाजकादिक्रीताः १६५. संज्ञायां मित्राजिनयोः  
 १५२. सप्तम्याः पुण्यम् (वा०) ऋषिप्रतिषेधोऽमित्रे।  
 १५३. ऊनार्थकलहं तृतीयायाः<sup>३</sup> १६६. व्यवायिनोऽन्तरम्  
 १५४. मिश्रं चानुपसर्गमसन्धौ १६७. मुखं स्वाङ्गम्<sup>८</sup>  
 १५५. नजो गुणप्रतिषेधे<sup>३</sup> संपाद्यर्हहि- १६८. नाव्ययदिवच्छब्दगोमहत्स्थूल-  
 तालमर्थास्तद्धिताः मुष्टिपृथुवत्सेभ्यः  
 १५६. ययतोश्चातदर्थे १६९. निष्ठोपमानादन्यतरस्याम्  
 १५७. अच्कावशक्तौ<sup>४</sup> १७०. जातिकालसुखादिभ्यो<sup>९</sup> ऽनाच्छा-  
 दनात्कोऽकृतमितप्रतिपन्नाः

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'कारकात्' की अनुवृत्ति ६।२।१५१। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'तृतीयायाः' की अनुवृत्ति ६।२।१५४। तक जाती है। ३-यहाँ से 'नजः' की अनुवृत्ति ६।२।१६१। तक, तथा 'गुणप्रतिषेधे तद्धिताः' की अनुवृत्ति ६।२।१५६। तक जाती है। ४-यहाँ से 'अच्चौ' की अनुवृत्ति ६।२।१५८। तक जाती है। ५-'आक्रोशे' की अनुवृत्ति ६।२।१५९। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'बहुव्रीहौ' की अनुवृत्ति ६।२।१७७। तक जाती है। ७-'संख्यायाः स्तनः' की अनुवृत्ति ६।२।१६४। तक जायेगी। ८-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ६।२।१६९। तक जायेगी। ९-इस सूत्र से 'जातिकालसुखादिभ्यः' की अनुवृत्ति ६।२।१७१। तक जाती है।



|                                                  |                                             |
|--------------------------------------------------|---------------------------------------------|
| १७१. वा जाते                                     | १८६. अपा <sup>४</sup> च्च                   |
| १७२. नञ्सुभ्याम् <sup>१</sup>                    | १८७. स्फिगपूतवीणाऽञ्जोऽध्वकु-               |
| १७३. कपि <sup>२</sup> पूर्वम्                    | क्षिसीरनामनाम च                             |
| १७४. ह्रस्वान्तेऽन्त्यात्पूर्वम्                 | १८८. अधेरुपरिस्थम्                          |
| १७५. बहो <sup>३</sup> र्नञ्वदुत्तरपदभूमि         | १८९. अनोर <sup>१</sup> प्रधानकनीयसी         |
| १७६. न गुणादयोऽवयवाः                             | १९०. पुरुषश्चान्वादिष्टः                    |
| २२९. गुण अक्षर अध्याय सूक्त छन्दोमानः।।          | १९१. अतेरकृतपदे                             |
| इति गुणादिः।। आकृतिगणः।।                         | (वा०) अतेर्धातुलोप इति वक्तव्यम्।           |
| १७७. उपसर्गा <sup>४</sup> त्स्वाङ्गं ध्रुवमपर्शु | १९२. नेरनिधाने                              |
| १७८. वनं <sup>५</sup> समासे                      | १९३. प्रतेरंश्वादयस्तत्पुरुषे <sup>१०</sup> |
| १७९. अन्तः                                       | २३१. अंशु जन (राजन् ) उष्ट्र खेटक           |
| १८०. अन्तश्च <sup>६</sup>                        | अजिर आर्द्रा श्रवण कृत्तिका अर्धपुर।।       |
| १८१. न निविभ्याम्                                | इत्यंश्वादिः।।                              |
| १८२. परेरभितोभावि मण्डलम्                        | १९४. उपाद् द्वयजजिनमगौरादयः                 |
| १८३. प्रादस्वाङ्गं संज्ञायाम्                    | २३२. गौर तैष तैल लेट लोट जिह्वा कृष्ण       |
| १८४. निरुदकादीनि च                               | कन्या गुध कल्प पाद।। इति गौरादिः।।          |
| २३०. निरुदक निरुपल निर्मक्षिक निर्मशक            | १९५. सोरवक्षेपणे                            |
| निष्कालक निष्कालिक निष्पेष दुस्तरीप              | १९६. विभाषो <sup>११</sup> त्पुच्छे          |
| निस्तरीप निस्तरीक निरजिन (उदजिन)                 | १९७. द्वित्रिभ्यां पाद्-दन्मूर्धसु          |
| उपाजिन। 'परेर्हस्तपादकेशकर्षाः' १७९।             | बहुव्रीहौ <sup>१२</sup>                     |
| इति निरुदकादिः।। आकृतिगणः।।                      | १९८. सक्थं <sup>१३</sup> चाक्रान्तात्       |
| १८५. अभेर्मुखम् <sup>७</sup>                     | १९९. परादिश्छन्दसि बहुलम्                   |

### विमर्श

१-‘नञ्सुभ्याम्’ की अनुवृत्ति ६।२।१७४। तक जायेगी। २-इस सूत्र से ‘कपि’ की अनुवृत्ति ६।२।१७४। तक जायेगी। ३- यहाँ से ‘बहोः’ की अनुवृत्ति ६।२।१७६। तक जाती है। ४-‘उपसर्गात्’ की अनुवृत्ति ६।२।१९६। तक जायेगी। ५-‘वनम्’ की अनुवृत्ति ६।२।१७९। तक जायेगी। ६-यहाँ से ‘अन्तः’ की अनुवृत्ति ६।२।१८१। तक जाती है। ७-इस सूत्र से ‘मुखम्’ की अनुवृत्ति ६।२।१८६। तक जायेगी। ८-यहाँ से ‘अपात्’ की अनुवृत्ति ६।२।१८७। तक जाती है। ९-‘अनोः’ की अनुवृत्ति ६।२।१९०। तक जायेगी। १०-इस सूत्र से ‘तत्पुरुषे’ की अनुवृत्ति ६।२।१९६। तक जाती है। ११- यहाँ से ‘विभाषा’ की अनुवृत्ति ६।२।१९८। तक जाती है। १२-इस सूत्र से ‘बहुव्रीहौ’ की अनुवृत्ति ६।२।१९८। तक जाती है। १३-‘सक्थम्’ की अनुवृत्ति ६।२।१९९। तक जायेगी।

(वा०) त्रिचक्रादीनां छन्दस्युप-  
संख्यानम्।

(बहुव्रीहावाशङ्कागौः सादत्ते नित्यार्थे  
युक्ताब हास्तिनकूलतीरदेवताविभाषा न

२३३. (वा ३८६९)। त्रिचक्र त्रिवृत्  
त्रिवङ्कर॥ इति त्रिचक्रादिः॥ आकृतिगणः॥

निव्येकोनविंशतिः॥)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे षष्ठस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः॥

—०००—



## तृतीयः पादः

- |                                                |                                                    |
|------------------------------------------------|----------------------------------------------------|
| १. अलुगुत्तरपदे <sup>१</sup>                   | १३. बन्धे च विभाषा                                 |
| २. पञ्चम्याः स्तोकादिभ्यः                      | १४. तत्पुरुषे कृति बहुलम्                          |
| (वा०) ब्राह्मणाच्छंसिन उप-<br>संख्यानम्।       | १५. प्रावृट्शरत्कालदिवां जे <sup>२</sup>           |
| ३. ओजः सहोऽम्भस्तमसस्तृतीयायाः <sup>३</sup>    | १६. विभाषा <sup>४</sup> वर्षक्षरशरवरात्            |
| (वा०) अञ्जस उपसंख्यानम्।                       | १७. धकालतनेषु कालनाम्नः                            |
| (वा०) पुंसानुजो जनुषान्ध इति च।                | १८. शयवासवासिष्वकालात्                             |
| ४. मनसः <sup>५</sup> संज्ञायाम्                | (वा०) अपो योनियन्मतिषु।                            |
| ५. आज्ञायिनि च                                 | १९. नेन्सिद्धवध्नातिषु <sup>६</sup> च              |
| ६. आत्मनश्च <sup>७</sup>                       | २०. स्थे च भाषायाम्                                |
| (वा०) पूरणे।                                   | २१. षष्ठ्या आक्रोशे <sup>८</sup>                   |
| ७. वैयाकरणाख्यायां चतुर्थ्याः <sup>९</sup>     | (वा०) वाग्दिक्पश्यद्भ्यो युक्ति-<br>दण्डहरेषु।     |
| ८. परस्य च                                     | (वा०) आमुष्यायणामुष्यपुत्रिका-<br>मुष्यकुलिकेति च। |
| ९. हलदन्तात्सप्तम्याः <sup>१०</sup> संज्ञायाम् | (वा०) देवानां प्रिय इति च (मूर्खे।)।               |
| (वा०) हृद्यभ्यां च।                            | (वा०) शेषपुच्छलाङ्गुलेषु शुनः<br>संज्ञायाम्।       |
| १०. कारनाम्नि च प्राचां हलादौ                  | (वा०) दिवश्च दासे।                                 |
| ११. मध्याद् गुरौ                               | २२. पुत्रेऽन्यतरस्याम्                             |
| (वा०) अन्ताच्च।                                |                                                    |
| १२. अमूर्धमस्तकात्स्वाङ्गादकामे                |                                                    |

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'अलुक्' का अधिकार ६।३।२४। तक, तथा 'उत्तरपदे' का ६।३।१३९। तक जाता है। २-'तृतीयायाः' की अनुवृत्ति ६।३।६। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से 'मनसः' की अनुवृत्ति ६।३।५। तक जाती है। ४-'आत्मनः' की अनुवृत्ति ६।३।७। तक जाती है। ५-इस सूत्र की अनुवृत्ति ६।३।८। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'हलदन्तात्' की अनुवृत्ति ६।३।१३। तक, तथा 'सप्तम्याः' की अनुवृत्ति ६।३।२०। तक जाती है। ७-'जे' की अनुवृत्ति ६।३।१६। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से 'विभाषा' की अनुवृत्ति ६।३।१८। तक जाती है। ९-'न' की अनुवृत्ति ६।३।२०। तक जायेगी। १०-इस सूत्र से 'षष्ठ्याः' की अनुवृत्ति ६।३।२४। तक, तथा 'आक्रोशे' की अनुवृत्ति ६।३।२२। तक जाती है।

२३. ऋतो विद्यायोनिबंधेभ्यः<sup>१</sup>  
(वा०) विद्यायोनिबंधेभ्यस्तत्पूर्वोत्तर-  
पदग्रहणम्।

२४. विभाषा स्वसृपत्योः

२५. आनङ्गतो<sup>२</sup> द्वन्द्वे

२६. देवताद्वन्द्वे<sup>३</sup> च

(वा०) वायुशब्दप्रयोगे प्रतिषेधो  
वक्तव्यः।

२७. ईदग्नेः<sup>४</sup> सोमवरुणयोः

२८. इद्वृद्धौ

(वा०) विष्णौ न

२९. दिवो द्यावा<sup>५</sup>

३०. दिवसश्च पृथिव्याम्

३१. उषासोषसः

३२. मातरपितरावुदीचाम्

३३. पितरा मातरा च च्छन्दसि

३४. स्त्रियाः पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङ्<sup>६</sup>  
समानाधिकरणे स्त्रियामपूरणी-  
प्रियादिषु

२३४. प्रिया मनोज्ञा कल्याणी सुभगा दुर्भगा  
भक्तिः सचिवा स्वसा (स्वा) कान्ता (क्षान्ता)  
समा चपला दुहिता वामना (तनया) इति  
प्रियादिः।।

३५. तसिलादिष्वाकृत्वसुचः

२३५. तसिल् तल् तरप् तमप् चरट् जातीयर्  
कल्पप् देशीयर् रूपप् पाशप् थल् थाल् दा  
हिल् तिल थ्यन्।। एते तसिलादयः।।

(वा०) शसि बहल्यार्थस्य पुंवद्भावो  
वक्तव्यः।

(वा०) त्वतलोर्गुणवचनस्य।

(वा०) भस्यादे तद्धिते।

(वा०) ठक्छसोश्च।

३६. क्यङ्मानिनोश्च

३७. न<sup>७</sup> कोपधायाः

(वा०) कोपधप्रतिषेधे तद्धितवुग्रहणम्।

३८. संज्ञापूरण्योश्च

३९. वृद्धिनिमित्तस्य च तद्धि-  
तस्यारक्तविकारे

४०. स्वाङ्गाच्चेतः

(वा०) अमानिनीति वाच्यम्।

४१. जातेश्च

४२. पुंवत्कर्मधारयजातीयदेशीयेषु

(वा०) कुक्कुट्यादीनामण्डादिषु।

२३६-२३७. (वा ३९३४)। कुक्कुटी  
मृगी काकी अण्ड पद शाव भ्रुकुंस भ्रुकुटी।।  
इति कुक्कुट्याद्यण्डादी।।

४३. धरूपकल्पप्चेलङ् ब्रुवगोत्रमतहतेषु  
ङ्योऽनेकाचो ह्रस्वः<sup>८</sup>

### विमर्श

१-यहाँ से 'ऋतः' की अनुवृत्ति ६।३।२४। तक, तथा 'विद्यायोनिबंधेभ्यः' की अनुवृत्ति ६।३।२५। तक जाती है। २-'आनङ्' की अनुवृत्ति ६।३।२६। तक जाती है। ३-यहाँ से 'देवताद्वन्द्वे' की अनुवृत्ति ६।३।३१। तक जाती है। ४-यहाँ से 'अग्नेः' की अनुवृत्ति ६।३।२८। तक जाती है। ५-'दिवो द्यावा' की अनुवृत्ति ६।३।३०। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'स्त्रियाः अनूङ्' की अनुवृत्ति ६।३।४२। तक, तथा 'पुंवत्' की अनुवृत्ति ६।३।४१। तक और 'भाषितपुंस्कात्' की अनुवृत्ति ६।३।४३। तक जाती है। ७-यहाँ से 'न' की अनुवृत्ति ६।३।४१। तक जाती है। ८-यहाँ से 'धरूपकल्पप्चेलङ् ब्रुवगोत्रमतहतेषु ह्रस्वः' की अनुवृत्ति ६।३।४५। तक जाती है।



४४. नद्याः शेषस्यान्यतरस्याम्<sup>१</sup> (वा०) कृत्रद्या न।  
 ४५. उगितश्च (वा०) निष्के चेति वक्तव्यम्।  
 ४६. आन्म<sup>२</sup>महतः समानाधिकरण-  
 जातीययोः (वा०) महत आत्वे घासकरविशिष्टे-  
 षूपसंख्यानं पुंवद्भावश्च।  
 (वा०) अष्टनः कपाले हविषि।  
 (वा०) गवि च युक्ते।  
 ४७. द्व्यष्टनः संख्यायामबहु-  
 व्रीह्यशीत्योः<sup>३</sup> (वा०) प्राक्शतादिति वक्तव्यम्।  
 ४८. त्रेस्त्रयः<sup>४</sup>  
 ४९. विभाषा चत्वारिंशत्पञ्चभृतौ सर्वेषाम्  
 ५०. हृदयस्य हल्लेख<sup>५</sup>यदणलासेषु  
 ५१. वा शोकष्यज्जोगेषु  
 ५२. पादस्य<sup>६</sup>पदाज्यातिगोपहतेषु  
 ५३. पद्यत्यतदर्थे<sup>७</sup> (वा०) इके चरतावुपसंख्यानम्।  
 ५४. हिमकाषिहतिषु च  
 ५५. ऋचः शो  
 ५६. वा घोषमिश्रशब्देषु  
 (वा०) निष्के चेति वक्तव्यम्।  
 ५७. उदकस्योदः ‘संज्ञायाम्’  
 (वा०) उत्तरपदस्येति च वक्तव्यम्।  
 ५८. पेषंवासवाहनधिषु च  
 ५९. एकहलादौ पूरयितव्येऽन्यतर-  
 स्याम्<sup>८</sup>  
 ६०. मन्थौदनसक्तुबिन्दुवज्रभारहारवी-  
 वधगाहेषु च  
 ६१. इको ह्रस्वो<sup>९</sup>ऽड्यो गालवस्य  
 (वा०) इयडुवड्भाविनामव्ययानां च  
 नेति वाच्यम्।  
 (वा०) अभ्रूकुंसादीनामिति वक्तव्यम्।  
 ६२. एक तद्धिते च  
 ६३. ड्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलम्<sup>१०</sup>  
 ६४. त्वे च  
 ६५. इष्टकेषीकामालानां चिततूलभारिषु  
 ६६. खित्यनव्ययस्य<sup>११</sup>  
 ६७. अरुर्द्विषदजन्तस्य मुम्<sup>१२</sup>  
 ६८. इच एकाचोऽम्प्रत्ययवच्च

### विमर्श

१-इस सूत्र से ‘नद्याः’ और ‘अन्यतरस्याम्’ की अनुवृत्ति ६।३।४५। तक जायेगी। २-‘आत्’ की अनुवृत्ति ६।३।४९। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से ‘संख्यायामबहुव्रीह्यशीत्योः’ की अनुवृत्ति ६।३।४९। तक जाती है। ४-‘त्रयः’ की अनुवृत्ति ६।३।४९। तक जायेगी। ५-‘हृदयस्य हत्’ की अनुवृत्ति ६।३।५१। तक जाती है। ६-यहाँ से ‘पादस्य’ की अनुवृत्ति ६।३।५६। तक जाती है। ७-‘पद्’ की अनुवृत्ति ६।३।५६। तक जाती है। ८-यहाँ से ‘उदकस्योदः’ की अनुवृत्ति ६।३।६०। तक जाती है। ९-‘अन्यतरस्याम्’ की अनुवृत्ति ६।३।६१। तक जायेगी। १०-‘ह्रस्वः’ की अनुवृत्ति ६।३।६६। तक जायेगी। ११-इस सूत्र से ‘ड्यापोः बहुलम्’ की अनुवृत्ति ६।३।६४। तक जाती है। १२-इस सूत्र से ‘खिति’ की अनुवृत्ति ६।३।६८। तक तथा ‘अनव्ययस्य’ की अनुवृत्ति ६।३।६७। तक जाती है। १३-‘मुम्’ की अनुवृत्ति ६।३।७२। तक जाती है।

६९. वाचंयमपुरन्दरौ च  
 ७०. कारे सत्यागदस्य  
 (वा०) अस्तोश्चेति वक्तव्यम्।  
 (वा०) भक्षस्य च छन्दसि।  
 (वा०) धेनोर्भव्यायाम्।  
 (वा०) लोकस्य पृणे।  
 (वा०) इत्वेऽनभ्यासस्य।  
 (वा०) भ्राष्ट्राग्न्योरिन्धे।  
 (वा०) गिलेऽगिलस्य।  
 (वा०) गिलगिले च।  
 (वा०) उष्णभद्रयोः करणे।  
 (वा०) सूतोग्रराजभोजकुलमेरुभ्यो  
 दुहितुः पुत्रइवा।  
 ७१. श्येनतिलस्य पाते जे  
 ७२. रात्रेः कृति विभाषा  
 ७३. नलोपो नजः<sup>१</sup>  
 (वा०) नजो नलोपस्तिङि क्षेपे।  
 ७४. तस्मान्नुडचि  
 ७५. नभ्राणनपात्रवेदानासत्यानमुचिन-  
 कुलनखनपुंसकनक्षत्रनक्रनाकेषु  
 प्रकृत्या<sup>२</sup>  
 ७६. एकादिश्चैकस्य चादुक्  
 ७७. नगोऽप्राणिष्वन्यतरस्याम्  
 ७८. सहस्य सः<sup>३</sup> संज्ञायाम्
७९. ग्रन्थान्ताधिके च  
 ८०. द्वितीये चानुपाख्ये  
 ८१. अव्ययीभावे चाकाले  
 ८२. वोपसर्जनस्य  
 ८३. प्रकृत्याशिषि  
 (वा०) अगोवत्सहलेष्विति वाच्यम्।  
 ८४. समानस्य<sup>४</sup> छन्दस्यमूर्धप्रभृत्युदकेषु  
 ८५. ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभिनामगोत्र-  
 रूपस्थानवर्णवयोवचनबन्धुषु  
 ८६. चरणे ब्रह्मचारिणि  
 ८७. तीर्थे ये<sup>५</sup>  
 ८८. विभाषोदरे  
 ८९. दृग्दृशवतुषु<sup>६</sup>  
 (वा०) दृक्षे चेति वक्तव्यम्।  
 ९०. इदंकिमोरीशकी  
 (वा०) दृक्षे चेति वक्तव्यम्।  
 ९१. आ सर्वनाम्नः<sup>७</sup>  
 (वा०) दृक्षे चेति वक्तव्यम्।  
 ९२. विष्वग्देवयोश्च टेरद्वयञ्चताव-  
 प्रत्यये<sup>८</sup>  
 (वा०) छन्दसि स्त्रियां बहुलं विष्वग्देव-  
 योष्टेरद्वयादेशः।  
 ९३. समः समि  
 ९४. तिरसस्तिर्यलोपे  
 ९५. सहस्य<sup>९</sup>सध्निः

### विमर्श

१-‘नजः’ की अनुवृत्ति ६।३।७७। तक जाती है। २-‘प्रकृत्या’ की अनुवृत्ति ६।३।७७। तक जायेगी। ३-यहाँ से ‘सहस्य’ की अनुवृत्ति ६।३।८३। तक, तथा ‘सः’ की अनुवृत्ति ६।३।८९। तक जाती है। ४-‘समानस्य’ की अनुवृत्ति ६।३।८९। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से ‘ये’ की अनुवृत्ति ६।३।८८। तक जाती है। ६-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ६।३।९१। तक जाती है। ७-‘सर्वनाम्नः’ की अनुवृत्ति ६।३।९२। तक जायेगी। ८-यहाँ से ‘अञ्चतावप्रत्यये’ की अनुवृत्ति ६।३।९५। तक जाती है। ९-‘सहस्य’ की अनुवृत्ति ६।३।९६। तक जायेगी।



|                                             |                                                 |
|---------------------------------------------|-------------------------------------------------|
| ९६. सधमादस्थयोश्छन्दसि                      | (वा०) दिक्छन्देभ्यस्तीरस्य तारभावो वा।          |
| ९७. द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप <sup>१</sup> ईत् | (वा०) षष उत्वं दतृदशधासूत्तरपदादेः              |
| (वा०) अवर्णान्ताद्वा।                       | ष्टुत्वं च।                                     |
| ९८. ऊदनोर्देशे                              | (वा०) धासु वेति वाच्यम्।                        |
| ९९. अषष्ठ्यतृतीयास्थस्यान्यस्य दुगा-        | (वा०) दुरो दाशनाशदभ्येषूत्वमुत्तर-              |
| शीरा <sup>२</sup> शास्थास्थितोत्सुकोतिकार-  | पदादेः ष्टुत्वं च।                              |
| करागच्छेषु                                  | (वा०) स्वरो रोहतौ छन्दस्युत्वम्।                |
| १००. अर्थे विभाषा                           | (वा०) पीवोपवसनादीनां छन्दसि                     |
| १०१. कोः कत्तत्पुरुषेऽचि <sup>३</sup>       | लोपः।                                           |
| (वा०) त्रौ च।                               | ११०. संख्याविसायपूर्वस्याहस्याह-                |
| १०२. रथवदयोश्च                              | न्नन्यतरस्यां डौ                                |
| १०३. तृणे च जातौ                            | १११. ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः <sup>४</sup>    |
| १०४. का <sup>५</sup> पथ्यक्षयोः             | ११२. सहिवहोरोदवर्णस्य                           |
| १०५. ईषदर्थे                                | ११३. साढ्यै साढ्वा साढेति निगमे                 |
| १०६. विभाषा <sup>६</sup> पुरुषे             | ११४. संहितायाम् <sup>७</sup>                    |
| १०७. कव <sup>८</sup> चोष्णे                 | ११५. कर्णे लक्षणस्याविष्टाष्टपञ्चमणि            |
| १०८. पथि च छन्दसि                           | भिन्नच्छिन्नच्छिद्रमुवस्वस्तिकस्य               |
| १०९. पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्                | ११६. नहिवृतिवृषिव्यधिरुचिसहित-                  |
| २३८. पृषोदर पृषोत्थान वलाहक जीमूत           | निषु क्वौ                                       |
| श्मशान उलूखल पिशाच वृसी मयूरः।। इति         | ११७. वनगिर्योः संज्ञायाम् <sup>९</sup> कोटरकिं- |
| पृषोदरादिः।। आकृतिगणः।।                     | शुलुकादीनाम्                                    |

### विमर्श

१-‘अपः’ की अनुवृत्ति ६।३।९८। तक जायेगी। २-इस सूत्र से ‘अषष्ठ्यतृतीयास्थस्य अन्यस्य दुक्’ की अनुवृत्ति ६।३।१००। तक जाती है। ३-यहाँ से ‘कोः’ की अनुवृत्ति ६।३।१०८। तक, तथा ‘कत्’ की अनुवृत्ति ६।३।१०३। तक जाती है। ४-‘का’ की अनुवृत्ति ६।३।१०८। तक जायेगी। ५-‘विभाषा’ की अनुवृत्ति ६।३।१०८। तक जाती है। ६-‘कवम्’ की भी अनुवृत्ति ६।३।१०८। तक जाती है। ७-यहाँ से ‘ढ्रलोपे’ की अनुवृत्ति ६।३।११२। तक, तथा ‘पूर्वस्य’ की ६।३।१३२। तक एवं ‘दीर्घः’ की अनुवृत्ति ६।४।१८। तक और ‘अणः’ की अनुवृत्ति ६।४।२। तक जाती है। ८-इस सूत्र का अधिकार ६।३।१३५। तक जाता है। ९-इस सूत्र से ‘संज्ञायाम्’ की अनुवृत्ति ६।३।१२०। तक जाती है।

२३९. कोटर मिश्रक सिध्नक पुरग सारिक (वा०) भाषायामष्टनो दीर्घो भवतीति (शारिक)। इति कोटरादिः॥  
 २४०. किंशुलुक शाल्वनभ्र (नड) अञ्जन भञ्जन लोहित कुक्कुट॥ इति किंशुलुकादिः॥  
 ११८. वले  
 ११९. मतौ<sup>१</sup>बह्वचोऽनजिरादीनाम्  
 २४१. अजिर खदिर पुलिन हंसक (हंस) कारण्ड (कारण्डव) चक्रवाक॥ इत्य-जिरादिः॥  
 १२०. शरादीनां च  
 २४२. शर वंश धूम अहि कपि मणि मुनि शुचि हनु॥ इति शरादिः॥  
 १२१. इको वहेऽपीलोः  
 (वा०) अपील्लादीनामिति वाच्यम्।  
 २४३. (वा ४००४)। पीलु दारु रुचि चारु गम् कम् ॥ इति पील्लादिः॥  
 १२२. उपसर्गस्य<sup>२</sup>घञ्यमनुष्ये बहुलम्  
 १२३. इकः<sup>३</sup>काशे  
 १२४. दस्ति  
 १२५. अष्टनः<sup>४</sup>संज्ञायाम्  
 १२६. छन्दसि च  
 १२७. चितेः कपि  
 १२८. विश्वस्य<sup>५</sup> वसुराटोः  
 १२९. नरे संज्ञायाम्  
 १३०. मित्रे चर्षौ  
 १३१. मन्त्रे<sup>६</sup>सोमाश्चेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ  
 १३२. ओषधेश्च विभक्तावप्रथमायाम्  
 १३३. ऋचि<sup>७</sup>तुनुधमक्षुतङ्कुत्रोरुष्याणाम्  
 १३४. इकः सुजि  
 १३५. द्व्यचोऽतस्तिडः  
 १३६. निपातस्य च  
 १३७. अन्येषामपि दृश्यते  
 (वा०) शुनोदन्तदंष्ट्राकर्णकुन्दवराह-पुच्छपदेषु दीर्घो वाच्यः।  
 १३८. चौ  
 (वा०) चौ प्रत्यङ्गस्य प्रतिषेधः।  
 १३९. संप्रसारणस्य<sup>८</sup>  
 (अलुक्षष्ट्या जातेरिकोऽव्ययीभावे कोः कत्तदिको वहे एकोनविंशतिः। )

इति पाणिनीयसूत्रपाठे षष्ठस्याध्यायस्य तृतीयः पादः॥



### विमर्श

१-‘मतौ’ की अनुवृत्ति ६।३।१२०। तक जायेगी। २-यहाँ से ‘उपसर्गस्य’ की अनुवृत्ति ६।३।१२४। तक जाती है। ३-‘इकः’ की अनुवृत्ति ६।३।१२४। तक जायेगी। ४-‘अष्टनः’ की अनुवृत्ति ६।३।१२६। तक जाती है। ५-‘विश्वस्य’ की अनुवृत्ति ६।३।१३०। तक जाती है। ६- यहाँ से ‘मन्त्रे’ की अनुवृत्ति ६।३।१३२। तक जाती है। ७-इस सूत्र से ‘ऋचि’ की अनुवृत्ति ६।३।१३६। तक जाती है। ८-‘संप्रसारणम्’ की अनुवृत्ति ६।४।२। तक जाती है।



## चतुर्थः पादः

- |                                                                                    |                                              |
|------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------|
| १. अङ्गस्य <sup>१</sup>                                                            | १४. अत्वसन्तस्य चाधातोः                      |
| २. हलः                                                                             | १५. अनुनासिकस्य विव-झलोः किङिति <sup>२</sup> |
| ३. नामि <sup>३</sup>                                                               | १६. अज्झनगमां सनि <sup>१०</sup>              |
| ४. न तिसृचतसृ <sup>३</sup>                                                         | (वा०) गमेरिडादेशस्येति वक्तव्यम्।            |
| ५. छन्दस्युभयथा <sup>४</sup>                                                       | १७. तनोतेर्विभाषा <sup>११</sup>              |
| ६. नृ च                                                                            | १८. क्रमश्च क्त्वि                           |
| ७. नोपधायाः <sup>५</sup>                                                           | १९. च्छ्वोः शूडनुनासिके <sup>१२</sup> च      |
| ८. सर्वनामस्थाने चासंबुद्धौ <sup>६</sup>                                           | २०. ज्वरत्वरस्त्रिव्यविमवामुपधायाश्च         |
| ९. वा षपूर्वस्य निगमे                                                              | २१. राल्लोपः                                 |
| १०. सान्तमहतः संयोगस्य                                                             | २२. असिद्धवदत्राभात् <sup>१३</sup>           |
| ११. अप-तृन्- तृच्-स्वसृ-नप्तृ-<br>नेष्टृ-त्वष्टृ-क्षत्-होत्-पोत्-<br>प्रशास्तृणाम् | (वा०) वुग्युटावुवड्यणोः सिद्धौ<br>वक्तव्यौ।  |
| १२. इन्हन्पूर्वार्थम्णां <sup>७</sup> शौ                                           | २३. शनान्न लोपः <sup>१४</sup>                |
| १३. सौ <sup>८</sup> च                                                              | २४. अनिदितां हल उपधायाः <sup>१५</sup> किङिति |

## विमर्श

१-यह अधिकार सूत्र है इसका अधिकार सप्तमाध्याय की समाप्ति पर्यन्त अर्थात् ७।४।९७। तक जाता है। २-इस सूत्र से 'नामि' की अनुवृत्ति ६।४।७। तक जाती है। ३-'तिसृचतसृ' की अनुवृत्ति ६।४।५। तक जाती है। ४-'छन्दस्युभयथा' की अनुवृत्ति ६।४।६। तक जाती है। ५-इससूत्र से 'न' की अनुवृत्ति ६।४।१०। तक, तथा 'उपधायाः' की अनुवृत्ति ६।४।१८। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'सर्वनामस्थाने' की अनुवृत्ति ६।४।११। तक, तथा 'असम्बुद्धौ' की अनुवृत्ति ६।४।१४। तक जायेगी। ७-'इन्हन्पूर्वार्थम्णाम्' की अनुवृत्ति ६।४।१३। तक जायेगी। ८-'सौ' की अनुवृत्ति ६।४।१४। तक जायेगी। ९-इस सूत्र से 'विवझलोः' की अनुवृत्ति ६।४।२१। तक, तथा 'किङिति' की अनुवृत्ति ६।४।१९। तक जायेगी। १०-'सनि' की अनुवृत्ति ६।४।१७। तक जायेगी। ११-यहाँ से 'विभाषा' की अनुवृत्ति ६।४।१८। तक जाती है। १२-इस सूत्र से 'च्छ्वोः अनुनासिके' की अनुवृत्ति ६।४।२१। तक, तथा 'शूठ' की ६।४।२०। तक जाती है। १३-'आभात्' इस शब्द में 'आङ्' अभिविधि में है। अतः 'आभात्' से 'भस्य' (६।४।१२९।) का अधिकार जहाँ तक जाता है, वहाँ तक अर्थात् पादसमाप्तिपर्यन्त अथवा ६।४।१७५। तक इस सूत्र का अधिकार जानना चाहिए। १४-नलोपः की अनुवृत्ति ६।४।३३। तक जायेगी। १५-उपधायाः की अनुवृत्ति ६।४।३४। तक जाती है।

- (वा०) अनिदितां नलोपे लङ्गिकम्प्यो- दीनामनुनासिकलोपो<sup>१</sup> झलि विडति  
 रुपतापशरीरविकारयोरुप- ३८. वा ल्यपि  
 संख्यानम्। ३९. न क्तिचि दीर्घश्च  
 (वा०) रञ्जेर्णौ मृगरमण उपसंख्यानम्। ४०. गमः क्वौ  
 २५. दंशसञ्जस्वञ्जां शपि<sup>२</sup> (वा०) गमादीनामिति वक्तव्यम्।  
 २६. रञ्जेश्च<sup>३</sup> (वा०) ऊङ् च गमादीनामिति  
 २७. घजि<sup>३</sup> च भावकरणयोः वक्तव्यम्।  
 २८. स्यदो जवे ४१. विड्वनोरनुनासिकस्यात्<sup>१०</sup>  
 २९. अवोदैधौघप्रश्रथहिमश्रथाः ४२. जनसनखनां<sup>११</sup> सञ्जलोः  
 ३०. ना<sup>४</sup>ञ्जेः पूजायाम् ४३. ये विभाषा<sup>१२</sup>  
 ३१. क्त्वि<sup>५</sup>स्कन्दिस्स्यन्दोः ४४. तनोतेर्यकि  
 ३२. जान्तनशां विभाषा<sup>६</sup> ४५. सनः क्तिचि लोपश्चास्यान्य-  
 ३३. भञ्जेश्च चिणि तरस्याम्  
 ३४. शास<sup>७</sup>इदङ्हलोः ४६. आर्धधातुके<sup>१३</sup>  
 (वा०) क्वौ च शास इत्वं भवतीति ४७. भ्रस्जो रोपधयोरमन्यतरस्याम्  
 वक्तव्यम्। ४८. अतो लोपः<sup>१४</sup>  
 (वा०) आङ्पूर्वाच्च। (वा०) ण्यल्लोपावियङ्यण्गुणवृद्धि-  
 ३५. शा हौ<sup>८</sup> दीर्घेभ्यः पूर्वविप्रतिषेधेन।  
 ३६. हन्तेर्जः ४९. यस्य हलः<sup>१५</sup>  
 ३७. अनुदातोपदेशवनतितनोत्या- ५०. क्यस्य विभाषा

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'शपि' की अनुवृत्ति ६।४।२६। तक जाती है। २-'रञ्जेः' की अनुवृत्ति ६।४।२७। तक जायेगी। ३-'घजि' की अनुवृत्ति ६।४।२९। तक जायेगी। ४-इस सूत्र से 'न' की अनुवृत्ति ६।४।३२। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'क्त्वि' की अनुवृत्ति ६।४।३२। तक जाती है। ६-'विभाषा' की अनुवृत्ति ६।४।३३। तक जायेगी। ७-यहाँ से 'शासः' की अनुवृत्ति ६।४।३५। तक जाती है। ८-यहाँ से 'हौ' की अनुवृत्ति ६।४।३६। तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'अनुदातोपदेशवनतितनोत्यादीनाम्' की अनुवृत्ति ६।४।३९। तक, तथा 'अनुनासिकलोपः' की अनुवृत्ति ६।४।४०। तक जाती है। १०-यहाँ से 'आत्' की अनुवृत्ति ६।४।४५। तक जाती है। ११-इस सूत्र से 'जनसनखनाम्' की अनुवृत्ति ६।४।४३। तक जाती है। १२-'विभाषा' की अनुवृत्ति ६।४।४४। तक जाती है। १३-यह अधिकार सूत्र है तथा इसका अधिकार ६।४।६८। तक जाता है। १४-यहाँ से 'लोपः' की अनुवृत्ति ६।४।५४। तक जाती है। १५-यहाँ से 'हलः' की अनुवृत्ति ६।४।५०। तक जाती है।



|                                                                          |                                                         |
|--------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------|
| ५१. णेर <sup>१</sup> निटि                                                | ६५. ईद्यति <sup>१</sup>                                 |
| ५२. निष्ठायां सेटि                                                       | ६६. घुमास्थागापाजहातिसां <sup>१०</sup> हलि              |
| ५३. जनिता मन्त्रे                                                        | ६७. एर्लिङि <sup>११</sup>                               |
| ५४. शमिता यज्ञे                                                          | ६८. वाऽन्यतरस्याम्                                      |
| ५५. अयामन्ताल्वाय्येत्विष्णुषु <sup>२</sup>                              | ६९. न ल्यपि <sup>१२</sup>                               |
| ५६. ल्यपि <sup>३</sup> लघुपूर्वात्                                       | ७०. मयतेरिदन्यतरस्याम्                                  |
| ५७. विभाषाऽऽपः                                                           | ७१. लुङ्लङ्लृङ्क्ष्वडुदात्तः <sup>१३</sup>              |
| ५८. युप्लुवोर्दीर्घश्छन्दसि <sup>४</sup>                                 | ७२. आड <sup>१४</sup> जादीनाम्                           |
| ५९. क्षियः <sup>५</sup>                                                  | ७३. छन्दस्यपि दृश्यते                                   |
| ६०. निष्ठायामण्यदर्थे <sup>६</sup>                                       | ७४. न माङ्योगे <sup>१५</sup>                            |
| ६१. वाऽऽक्रोशदैन्ययोः                                                    | ७५. बहुलं छन्दस्य <sup>१६</sup> माङ्योगेऽपि             |
| ६२. स्यसिच्सीयुट्तासिषु भावकर्मणो-<br>रुपदेशेऽज्जनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् | ७६. इरयो रे                                             |
| च                                                                        | ७७. अचि श्नुधातुभ्रुवां य्वोरियडु-<br>वडौ <sup>१७</sup> |
| ६३. दीडो युडचि किङिति <sup>०</sup>                                       | (वा०) तन्वादीनां बहुलं छन्दसि।                          |
| ६४. आतो <sup>८</sup> लोप इटि च                                           | ७८. अभ्यासस्यासवर्णे                                    |
|                                                                          | ७९. स्त्रियाः <sup>१८</sup>                             |

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'णेः' की अनुवृत्ति ६।४।५७। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'अय्' की अनुवृत्ति ६।४।५७। तक जाती है। ३-'ल्यपि' की अनुवृत्ति ६।४।५९। तक जायेगी। ४-'दीर्घः' की अनुवृत्ति ६।४।६१। तक जायेगी। ५-यहाँ से 'क्षियः' की अनुवृत्ति ६।४।६१। तक जाती है। ६-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ६।४।६१। तक जाती है। ७-यहाँ से 'अचि' की अनुवृत्ति ६।४।६४। तक, तथा 'किङिति' की अनुवृत्ति ६।४।६८। तक जाती है। ८-'आतः' की अनुवृत्ति ६।४।६८। तक जाती है। ९-यहाँ से 'ईत्' की अनुवृत्ति ६।४।६६। तक जाती है। १०-इस सूत्र से 'घुमास्थागापाजहातिसाम्' की अनुवृत्ति ६।४।६९। तक जाती है। ११-'एर्लिङि' की अनुवृत्ति ६।४।६८। तक जाती है। १२-इस सूत्र से 'ल्यपि' की अनुवृत्ति ६।४।७०। तक जाती है। १३-इस समस्त सूत्रकी अनुवृत्ति ६।४।७५। तक जाती है। १४- यहाँ से 'आट्' की अनुवृत्ति ६।४।७५। तक जाती है। १५-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ६।४।७५। तक जाती है। १६-'बहुलं छन्दसि' की अनुवृत्ति ६।४।७६। तक जायेगी। १७-यहाँ से 'अचि' की अनुवृत्ति ६।४।१००। तक, तथा 'य्वोः' की अनुवृत्ति ६।४।७८। तक और 'इयडुवडौ' की अनुवृत्ति ६।४।८०। तक जाती है। १८-'स्त्रियाः' की अनुवृत्ति ६।४।८०। तक जायेगी।

|                                               |                                                       |
|-----------------------------------------------|-------------------------------------------------------|
| ८०. वाऽम्शसोः                                 | ९४. खचि ह्रस्वः <sup>८</sup>                          |
| ८१. इणो यण् <sup>१</sup>                      | ९५. ह्रादो निष्ठायाम्                                 |
| ८२. एरनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य <sup>२</sup>       | ९६. छादे <sup>९</sup> घे <sup>१०</sup> द्वयुपसर्गस्य  |
| (वा०) गतिकारकेतरपूर्वपदस्य यण्<br>नेष्यते।    | ९७. इस्मन्त्रन्विषु च                                 |
| ८३. ओःसुपि <sup>३</sup>                       | ९८. गमहनजनखनघसां लोपः किङित्य-<br>नङि <sup>१०</sup>   |
| ८४. वर्षाभ्वश्च                               | ९९. तनिपत्योश्छन्दसि <sup>११</sup>                    |
| (वा०) दृन्करपुनःपूर्वस्य भुवो<br>यण्वक्तव्यः। | १००. घसिभसोर्हलि <sup>१२</sup> च                      |
| ८५. न भूसुधियोः <sup>४</sup>                  | १०१. हुञ्जलभ्यो हेर्धिः <sup>१३</sup>                 |
| ८६. छन्दस्युभयथा                              | १०२. श्रु-शृणु-पृ-कृ-वृभ्य-<br>श्छन्दसि <sup>१४</sup> |
| ८७. हुश्नुवोः सार्वधातुके                     | १०३. अङितश्च                                          |
| ८८. भुवो वुग्लुङलिटोः                         | १०४. चिणो लुक् <sup>१५</sup>                          |
| ८९. ऊदुपधाया <sup>५</sup> गोहः                | १०५. अतो हेः <sup>१६</sup>                            |
| ९०. दोषो णौ <sup>६</sup>                      | १०६. उतश्च प्रत्ययादसंयोगपूर्वात् <sup>१७</sup>       |
| ९१. वा चित्तविरागे                            | १०७. लोपश्चास्यान्यतरस्यां म्वोः <sup>१८</sup>        |
| ९२. मितां <sup>७</sup> ह्रस्वः                | १०८. नित्यं करोतेः <sup>१९</sup>                      |
| ९३. चिण्णमुलोर्दीर्घोऽन्यतरस्याम्             | १०९. ये च                                             |

### विमर्श

१-यहाँ से 'यण्' की अनुवृत्ति ६।४।८७। तक जाती है। २-यहाँ से 'अनेकाचोऽसंयोगपूर्वस्य' की अनुवृत्ति ६।४।८७। तक जाती है। ३-'सुपि' की अनुवृत्ति ६।४।८५। तक जायेगी। ४-'भूसुधियोः' की अनुवृत्ति ६।४।८६। तक जाती है। ५-यहाँ से 'ऊत्' की अनुवृत्ति ६।४।९१। तक, तथा 'उपधायाः' की अनुवृत्ति ६।४।१००। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'णौ' की अनुवृत्ति ६।४।९४। तक, तथा 'दोषः' की अनुवृत्ति ६।४।९१। तक जाती है। ७-'मिताम्' की अनुवृत्ति ६।४।९३। तक जायेगी। ८-'ह्रस्वः' की अनुवृत्ति ६।४।९७। तक जायेगी। ९-यहाँ से 'छादेः' की अनुवृत्ति ६।४।९७। तक जाती है। १०-इस सूत्र से 'लोपः' की अनुवृत्ति ६।४।१००। तक, तथा 'किङित्य' की अनुवृत्ति ६।४।१२६। तक जाती है। ११-'छन्दसि' की अनुवृत्ति ६।४।१००। तक जायेगी। १२-'हलि' की अनुवृत्ति ६।४।१०१। तक जाती है। १३-यहाँ से 'हेर्धिः' की अनुवृत्ति ६।४।१०३। तक जाती है। १४-'छन्दसि' की अनुवृत्ति भी ६।४।१०३। तक जाती है। १५-यहाँ से 'लुक्' की अनुवृत्ति ६।४।१०६। तक जाती है। १६-'हेः' की अनुवृत्ति ६।४।१०६। तक जायेगी। १७- यहाँ से 'उतः प्रत्ययात्' की अनुवृत्ति ६।४।११०। तक, तथा 'असंयोगपूर्वात्' की अनुवृत्ति ६।४।१०७। तक जाती है। १८-'लोपः' की अनुवृत्ति ६।४।१०९। तक, तथा 'म्वोः' की अनुवृत्ति ६।४।१०८। तक जाती है। १९-'नित्यम्' की अनुवृत्ति ६।४।१०९। तक तथा 'करोतेः' की ६।४।११०। तक जायेगी।



|                                           |                                      |
|-------------------------------------------|--------------------------------------|
| ११०. अत उत्सार्वधातुके <sup>१</sup>       | १२१. थलि च सेटि <sup>१०</sup>        |
| १११. शनसोरल्लोपः <sup>२</sup>             | १२२. तृफलभजत्रपश्च                   |
| ११२. शनाभ्यस्तयोरातः <sup>३</sup>         | (वा०) श्रन्येश्चेति वक्तव्यम्।       |
| ११३. ईहल्यघोः <sup>४</sup>                | १२३. राधो हिंसायाम्                  |
| ११४. इद्दिरिद्रस्य <sup>५</sup>           | १२४. वा <sup>११</sup> जृभ्रमुत्रसाम् |
| (वा०) दरिद्रातेरार्धधातुके विवक्षिते      | १२५. फणां च सप्तानाम्                |
| आतो लोपो वाच्यः। लुङि                     | १२६. न शसददवादिगुणानाम्              |
| वा सनि ण्वुलि ल्युटि च न।                 | १२७. अर्वणस्त्र <sup>१२</sup> सावनजः |
| ११५. भियोऽन्यतरस्याम् <sup>६</sup>        | १२८. मघवा बहुलम्                     |
| ११६. जहातेश्च <sup>७</sup>                | १२९. भस्य <sup>१३</sup>              |
| ११७. आ च हौ                               | १३०. पादः पत्                        |
| ११८. लोपो यि                              | १३१. वसोः संप्रसारणम् <sup>१४</sup>  |
| ११९. ध्वसोरेद्धावभ्यासलोपश्च <sup>८</sup> | १३२. वाह ऊट्                         |
| १२०. अत एकहल्मध्येऽनादेशा-                | १३३. श्वयुवमघोनामतद्धिते             |
| देर्लिटि <sup>९</sup>                     | १३४. अल्लोपोऽनः <sup>१५</sup>        |
| (वा०) यजिवप्योश्च।                        | १३५. षपूर्वहन्धृतराज्ञामणि           |
| (वा०) दम्भेश्च।                           | १३६. विभाषा डिश्योः                  |

### विमर्श

१-यहाँ से 'सार्वधातुके' की अनुवृत्ति ६।४।११९। तक जाती है। २-'लोपः' की अनुवृत्ति ६।४।११२। तक जाती है। ३-यहाँ से 'शनाभ्यस्तयोः' की अनुवृत्ति ६।४।११३। तक, तथा 'आतः' की ६।४।११४। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'हलि' की अनुवृत्ति ६।४।११६। तक जायेगी। ५-'इत्' की अनुवृत्ति ६।४।११६। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ६।४।११७। तक जाती है। ७-इस सूत्र से 'जहातेः' की अनुवृत्ति ६।४।११८। तक जाती है। ८-यहाँ से 'एत्' और 'अभ्यासलोपश्च' की अनुवृत्ति ६।४।१२६। तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'अतः लिटि' की अनुवृत्ति ६।४।१२६। तक, तथा 'एकहल्मध्ये अनादेशादेः' की ६।४।१२१। तक जाती है। १०-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ६।४।१२६। तक जायेगी। ११-'वा' की अनुवृत्ति ६।४।१२५। तक जायेगी। १२-यहाँ से 'तृ' की अनुवृत्ति ६।४।१२८। तक जाती है। १३-इस सूत्र का अधिकार पादसमाप्तिपर्यन्त अर्थात् ६।४।१७५। तक जाता है। १४-'संप्रसारणम्' की अनुवृत्ति ६।४।१३३। तक जायेगी। १५- यहाँ से 'अत्' की अनुवृत्ति ६।४।१३८। तक, तथा 'लोपः' की ६।४।१४५। तथा 'अनः' की ६।४।१३७। तक जाती है।

१३७. नसंयोगाद्वमन्तात् (वा०) औडः श्यां प्रतिषेधो वक्तव्यः।  
 १३८. अचः<sup>१</sup> १४९. सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां य  
 १३९. उद ईत् उपधायाः<sup>८</sup>  
 १४०. आतो धातोः (वा०) मत्स्यस्य ड्याम्।  
 १४१. मन्त्रेष्वड्यादेरात्मनः (वा०) सूर्यागस्त्ययोश्छे च ड्यां च।  
 १४२. ति विंशतेर्दिति<sup>३</sup> (वा०) तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्राणि यलोप  
 १४३. टेः<sup>३</sup> इति वाच्यम्।  
 १४४. नस्तद्धिते<sup>४</sup> १५०. हल<sup>९</sup>स्तद्धितस्य  
 (वा०) नान्तस्य टिलोपे सब्रह्मचारि- १५१. आपत्यस्य च तद्धिते<sup>१०</sup>ऽनाति  
 पीठसर्पिकलापिकौथुमितैतिलिजा- १५२. क्यच्च्योश्च  
 जगलिशिलालिशिखण्डिसूकर- १५३. बिल्वकादिभ्यश्छस्य लुक्  
 सद्यमुपवर्णानामुपसंख्यानं २४४. बिल्व वेणु वेत्र वेतस तृण इक्षु काष्ठ  
 कर्तव्यम्। कपोत क्रुञ्चा तक्षन् -नडाद्यन्तर्गणो  
 (वा०) अश्मनो विकारे टिलोपो बिल्वादिः॥ छविधानार्थं ये नडादयस्ते यदा  
 वक्तव्यः। छसंनियोगे कृतकुगागमास्ते॥ इति  
 (वा०) अव्ययानां भमात्रे टिलोपः बिल्वकादयः॥  
 (वा०) चर्मणः कोशे। १५४. तुरिष्ठेमेयःसु<sup>११</sup>  
 (वा०) शुनः संकोचे। १५५. टेः  
 १४५. अहष्टखोरेव (वा०) णाविष्ठवत् प्रातिपदिकस्य कार्यं  
 १४६. ओर्गुणः<sup>५</sup> भवतीति वक्तव्यम्।  
 १४७. ढे लोपो<sup>६</sup>ऽकद्रवाः १५६. स्थूलदूरयुवहस्वक्षिप्रक्षुद्राणां  
 १४८. यस्येति<sup>७</sup> च यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः

### विमर्श

१-इस सूत्र की अनुवृत्ति ६।४।१३९। तक जाती है। २-'दिति' की अनुवृत्ति ६।४।१४३। तक जायेगी। ३-यहाँ से 'टेः' की अनुवृत्ति ६।४।१४५। तक जाती है। ४-'तद्धिते' की अनुवृत्ति ६।४।१४९। तक जाती है। ५-'ओः' की अनुवृत्ति ६।४।१४७। तक जायेगी। ६-'लोपः' की अनुवृत्ति ६।४।१५५। तक जायेगी। ७-यहाँ से 'ईति' की अनुवृत्ति ६।४।१५०। तक जाती है। ८-यहाँ से 'यः' की अनुवृत्ति ६।४।१५२। तक, तथा 'उपधायाः' की ६।४।१५०। तक जाती है। ९-'हलः' की अनुवृत्ति ६।४।१५२। तक जायेगी। १०-इस सूत्र से 'आपत्यस्य' की अनुवृत्ति ६।४।१५२। तक, तथा 'तद्धिते' की ६।४।१५३। तक जाती है। ११-इस सूत्र से 'इष्टेमेयस्सु' की अनुवृत्ति ६।४।१६३। तक जाती है।



१५७. प्रियस्थिरस्फिरोरुबहुलगुरु-  
वृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थ-  
स्फवर्बहिगर्वर्षित्रब्धाधिवृन्दाः  
१५८. बहोर्लोपो भू च बहोः<sup>१</sup>  
१५९. इष्ठस्य यिट् च  
१६०. ज्यादादीयसः  
१६१. र ऋतो<sup>२</sup>हलादेर्लघोः  
१६२. विभाषजोश्छन्दसि  
१६३. प्रकृत्यैकाच्<sup>३</sup>  
(वा०) प्रकृत्या अके राजन्य-  
मनुष्ययुवानः।  
१६४. इनण्यन<sup>४</sup>पत्ये  
१६५. गाथिविदधिकेशिगणिपणिनश्च  
१६६. संयोगादिश्च  
१६७. अन्<sup>५</sup>  
१६८. ये चाभावकर्मणोः  
१६९. आत्माध्वानौ खे  
१७०. न मपूर्वोऽपत्ये<sup>६</sup>ऽवर्मणः  
(वा०) वा हितनाम्न इति वाच्यम्।  
१७१. ब्राह्मोऽजातौ  
१७२. कर्मस्ताच्छील्ये  
१७३. औक्षमनपत्ये  
१७४. दाण्डिनायनहास्तिनायनाथर्व-  
णिकजैह्याशिनेयवाशिनायनिध्रौण-  
हत्यधैवत्यसारवैक्ष्वाकमैत्रेय-  
हिरण्मयानि  
१७५. ऋत्व्यवास्त्व्यवास्त्वमाध्वी-  
हिरण्ययानि च्छन्दसि  
(अङ्गस्य राल्लोपो विड्वनोर्वा-  
क्रोशेणो यण्डुल्लभ्यस्थलि च मन्त्रेषु र ऋतः  
पञ्चदश।।)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे षष्ठस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायश्च।



### विमर्श

१-इस सूत्र से 'बहोः भू च बहोः' की अनुवृत्ति ६।४।१५९। तक जाती है। २-'ऋतः' की अनुवृत्ति ६।४।१६२। तक जायेगी। ३-यहाँ से 'प्रकृत्या' की अनुवृत्ति ६।४।१७०। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'इन्' की अनुवृत्ति ६।४।१६६। तक, तथा 'अणि' की ६।४।१७१। तक जाती है। ५-'अन्' की अनुवृत्ति ६।४।१७०। तक जायेगी। ६-यहाँ से 'अपत्ये' की अनुवृत्ति ६।४।१७१। तक जाती है।

## अथ सप्तमोऽध्यायः

### प्रथमः पादः

- |                                           |                                             |
|-------------------------------------------|---------------------------------------------|
| १. युवोरनाकौ                              | १५. डसिङ्योः स्मात्स्मिनौ <sup>८</sup>      |
| २. आयनेयीनीयियः फढखछघां<br>प्रत्ययादीनाम् | १६. पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा                  |
| ३. झोऽन्तः <sup>२</sup>                   | १७. जसः शी <sup>९</sup>                     |
| ४. अदभ्य <sup>३</sup> स्तात्              | १८. औङ <sup>१०</sup> आपः                    |
| ५. आत्मनेपदेष्वनतः                        | १९. नपुंसकाच्च <sup>११</sup>                |
| ६. शीङो रुट् <sup>४</sup>                 | २०. जश्शसोः <sup>१२</sup> शिः               |
| ७. वेतेर्विभाषा                           | २१. अष्टाभ्य औश्                            |
| ८. बहुलं छन्दसि                           | २२. षड्भ्यो लुक् <sup>१३</sup>              |
| ९. अतो भिस ऐस् <sup>५</sup>               | २३. स्वमोर्नपुंसकात् <sup>१४</sup>          |
| ११. नेदमदसोरकोः                           | २४. अतोऽम्                                  |
| १२. टाङसिङसामिनात्स्याः                   | २५. अद्ङ् <sup>१५</sup> डतरादिभ्यः पञ्चभ्यः |
| १३. डेर्यः <sup>६</sup>                   | २६. नेतराच्छन्दसि                           |
| १४. सर्वनाम्नः <sup>७</sup> स्मै          | (वा०) एकतरात्प्रतिषेधो वक्तव्यः।            |
|                                           | २७. युष्मदस्मद्भ्याम् <sup>१६</sup> ङसोऽश्  |

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'प्रत्ययस्य' की अनुवृत्ति ७।१।५। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'झ' की अनुवृत्ति ७।१।८। तक जाती है। ३-'अत्' की अनुवृत्ति ७।१।७। तक जायेगी। ४-यहाँ से 'रुट्' की अनुवृत्ति ७।१।८। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'अतः' की अनुवृत्ति ७।१।१७। तक, तथा 'भिस ऐस्' की अनुवृत्ति ७।१।११। तक जाती है। ६-यहाँ से 'ङेः' की अनुवृत्ति ७।१।१४। तक जाती है। ७-'सर्वनाम्नः' की अनुवृत्ति ७।१।१७। तक जायेगी। ८-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ७।१।१६। तक जायेगी। ९-'शी' की अनुवृत्ति ७।१।१९। तक जायेगी। १०-'औङः' की अनुवृत्ति ७।१।१९। तक जायेगी। ११-इस सूत्र से 'नपुंसकात्' की अनुवृत्ति ७।१।२०। तक जाती है। १२-'जश्शसोः' की अनुवृत्ति ७।१।२२। तक जायेगी। १३-'लुक्' की अनुवृत्ति ७।१।२३। तक जाती है। १४- यहाँ से 'स्वमोः' की अनुवृत्ति ७।१।२६। तक एवं 'नपुंसकात्' की अनुवृत्ति ७।१।२४। तक जाती है। १५-इस सूत्र से 'अद्ङ्' की अनुवृत्ति ७।१।२६। तक जाती है। १६-इस सूत्र से 'युष्मदस्मद्भ्याम्' की अनुवृत्ति ७।१।३३। तक जाती है।



२८. डे प्रथमयोरम् ४७. क्तवो यक्  
 २९. शसो न ४८. इष्ट्वीनमिति च  
 ३०. भ्यसो<sup>१</sup>भ्यम् ४९. स्नात्व्यादयश्च  
 ३१. पञ्चम्या अत्<sup>२</sup> २४५. स्नात्वी पीत्वी।। इति स्नात्व्यादिः।।  
 ३२. एकवचनस्य च आकृतिगणः।।  
 ३३. साम आकम् ५०. आज्ञसेरसुक्<sup>६</sup>  
 ३४. आत औ णलः ५१. अश्वक्षीरवृषलवणानामात्मप्रीतौ  
 ३५. तुह्योस्तातड्डाशिष्यन्यतरस्याम् क्यचि  
 ३६. विदेः शतुर्वसुः (वा०) अश्ववृषयोर्मैथुनेच्छायामिति  
 ३७. समासेऽन्पूर्वे क्तवो ल्यप्<sup>३</sup> वक्तव्यम्।  
 ३८. क्त्वापि छन्दसि<sup>४</sup> (वा०) क्षीरलवणयोर्लालसायाम्।  
 ३९. सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडा- (वा०) सर्वप्रातिपदिकानां क्यचि  
 ड्यायाजालः लालसायां सुगसुकौ च।  
 (वा०) इयाडियाजीकाराणामुप- ५२. आमि<sup>०</sup> सर्वनाम्नः सुट्  
 संख्यानम् ५३. त्रेख्यः  
 (वा०) आड्याजयारामुपसंख्यानम्। ५४. ह्रस्वनद्यापो नुट्<sup>५</sup>  
 ४०. अमो मश् ५५. षट्चतुर्भ्यश्च  
 ४१. लोपस्त आत्मनेपदेषु (वा०) नुमचिरतृज्वद्भावेभ्यो नुट् पूर्व-  
 ४२. ध्वमो ध्वात् विप्रतिषेधेन।  
 ४३. यजध्वैनमिति च ५६. श्रीग्रामण्योश्छन्दसि<sup>९</sup>  
 ४४. तस्य<sup>४</sup> तात् ५७. गोः पादान्ते  
 ४५. तप्तनप्तनथनाश्च ५८. इदितो नुमधातोः<sup>१०</sup>  
 ४६. इदन्तो मसि

### विमर्श

१-यहाँ से 'भ्यसः' की अनुवृत्ति ७।१।३१। तक जाती है। २- इस अशेष सूत्र की अनुवृत्ति ७।१।३२। तक जाती है। ३- इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ७।१।३८। तक जाती है। ४- 'छन्दसि' की अनुवृत्ति ७।१।५०। तक जायेगी। ५- 'तस्य' की अनुवृत्ति ७।१।४५। तक जाती है। ६-यहाँ से 'आत्' की अनुवृत्ति ७।१।५२। तक, तथा 'असुक्' की अनुवृत्ति ७।१।५१। तक जाती है। ७-'आम्' की अनुवृत्ति ७।१।५७। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से 'नुट्' क अनुवृत्ति ७।१।५७। तक जायेगी। ९-'छन्दसि' की अनुवृत्ति ७।१।५७। तक जायेगी। १०-इस सूत्र से 'नुम्' की अनुवृत्ति ७।१।८३। तक जाती है।

५९. शे मुचादीनाम्

(तुदाद्यन्तर्गणो मुचादिः॥१)

(वा०) शे तृम्पादीनां-नुम्वाच्यः।

६०. मस्जिनशोर्झलि

६१. रधिजभोरचि<sup>१</sup>

६२. नेट्यलिटि रधेः

६३. रभेरशब्बिलटोः<sup>२</sup>

६४. लभेश्च<sup>३</sup>

६५. आडो यि<sup>४</sup>

६६. उपात्रशंसायाम्

६७. उपसर्गात्खल्घजोः<sup>५</sup>

६८. न सुदुर्भ्यां केवलाभ्याम्

६९. विभाषा चिण्णमुलोः

७०. उगिदचां सर्वनामस्थाने<sup>६</sup>ऽधातोः

७१. युजेरसमासे

७२. नपुंसकस्य<sup>७</sup>झलचः

(वा०) बहूर्जेर्नुम्प्रतिषेधः।

(वा०) अन्त्यात्पूर्वो वा नुम्।

७३. इकोऽचि विभक्तौ<sup>८</sup>

७४. तृतीयादिषु<sup>९</sup>भाषितपुंस्कं पुंवद्

गालवस्य

७५. अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णामनडुदात्तः<sup>१०</sup>

७६. छन्दस्यपि<sup>११</sup>दृश्यते

७७. ई च द्विवचने

७८. नाभ्यस्ताच्छतुः<sup>१२</sup>

७९. वा<sup>१३</sup>नपुंसकस्य

८०. आच्छीनघोर्नुम्<sup>१४</sup>

८१. शप्श्यनोर्नित्यम्

८२. सावन<sup>१५</sup>डुहः

८३. दृक्स्ववस्स्वतवसां छन्दसि

८४. दिव औत्

८५. पथिमथ्यृभुक्षामात्<sup>१६</sup>

८६. इतोऽत्सर्वनामस्थाने<sup>१७</sup>

८७. थो न्यः

८८. भस्य टेलोपः

८९. पुंसोऽसुड्

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'अचि' की अनुवृत्ति ७।१।६४। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'अशब्बिलटोः' की अनुवृत्ति ७।१।६४। तक जाती है। ३-'लभेः' की अनुवृत्ति ७।१।६९। तक जायेगी। ४-'यि' की अनुवृत्ति ७।१।६६। तक जायेगी। ५-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ७।१।६८। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'सर्वनामस्थाने' की अनुवृत्ति ७।१।७२। तक जाती है। ७-'नपुंसकस्य' की अनुवृत्ति ७।१।७७। तक जायेगी। ८-यहाँ से 'इकः' की अनुवृत्ति ७।१।७४। तक, तथा 'अचि विभक्तौ' की अनुवृत्ति ७।१।७५। तक जाती है। ९-यहाँ से 'तृतीयादिषु' की अनुवृत्ति ७।१।७५। तक जाती है। १०-इस सूत्र से 'अस्थिदधिसक्थ्यक्ष्णाम् उदात्तः' की अनुवृत्ति ७।१।७७। तक, एवं 'अनङ्' की अनुवृत्ति ७।१।७६। तक जाती है। ११-'छन्दसि' की अनुवृत्ति ७।१।७७। तक जायेगी। १२-यहाँ से 'अभ्यस्तात्' की अनुवृत्ति ७।१।७९। तक, तथा 'शतुः' की अनुवृत्ति ७।१।८१। तक जाती है। १३-'वा' की अनुवृत्ति ७।१।८०। तक जाती है। १४-यहाँ से 'शीनघोः' की अनुवृत्ति ७।१।८१। तक जाती है। १५-यहाँ से 'सौ' की अनुवृत्ति ७।१।८५। तक जाती है। १६-यहाँ से 'पथिमथ्यृभुक्षाम्' की अनुवृत्ति ७।१।८८। तक जाती है। १७-यहाँ से 'सर्वनामस्थाने' की अनुवृत्ति ७।१।९८। तक जाती है।



- |                                   |                                       |
|-----------------------------------|---------------------------------------|
| ९०. गोतो णित् <sup>१</sup>        | ९८. चतुरनडुहोरा <sup>५</sup> मुदात्तः |
| (वा०) ओतो णिदिति वाच्यम्।         | ९९. अम्संबुद्धौ                       |
| ९१. णलुत्तमो वा                   | १००. ऋत इद्धातोः <sup>६</sup>         |
| ९२. सख्युरसंबुद्धौ <sup>३</sup>   | १०१. उपधायाश्च                        |
| ९३. अनङ् सौ <sup>३</sup>          | १०२. उदो <sup>४</sup> ष्ठ्यपूर्वस्य   |
| ९४. ऋदुशनस्पुरुदंसोऽनेहसां च।     | १०३. बहलं छन्दसि                      |
| ९५. तृज्वत्क्रोष्टुः <sup>४</sup> | (युवोरष्टाभ्यो लोपो रधिशप्श्य-        |
| ९६. स्त्रियां च                   | नोरुपधायास्त्रीणि।)                   |
| ९७. विभाषा तृतीयादिष्वचि          |                                       |

इति पाणिनीयसूत्रपाठे सप्तमस्याध्यायस्य प्रथमः पादः॥



### विमर्श

१-इस सूत्र से 'णित्' की अनुवृत्ति ७।१।९२। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'सख्युः' की अनुवृत्ति ७।१।९३। तक, एवं 'असंबुद्धौ' की अनुवृत्ति ७।१।९५। तक जाती है। ३-'अनङ् सौ' की अनुवृत्ति ७।१।९४। तक जायेगी। ४-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति ७।१।९७। तक जाती है। ५-'चतुरनडुहोः' की अनुवृत्ति ७।१।९९। तक जायेगी। ६-यहाँ से 'ऋतः धातोः' की अनुवृत्ति ७।१।१०३। तक तथा 'इत्' की ७।१।१०१। तक जाती है। ७-यहाँ से 'उत्' की अनुवृत्ति ७।१।१०३। तक जाती है।

## द्वितीयः पादः

- |                                          |                                                 |
|------------------------------------------|-------------------------------------------------|
| १. सिचि वृद्धिः परस्मैपदेषु <sup>१</sup> | १८. क्षुब्धस्वान्तध्वान्तलग्नम्लिष्ट-           |
| २. अतो लान्तस्य                          | विरिब्धफाण्टबाढानि मन्यमन-                      |
| ३. वदब्रजहलन्तस्याचः <sup>२</sup>        | स्तमः सक्ताविस्पष्टस्वरानायास-                  |
| ४. नेटि <sup>३</sup>                     | भृशेषु                                          |
| ५. ह्रयन्तक्षणश्वसजागृणिश्व्येदिताम्     | १९. धृषिशसी वैयात्ये                            |
| ६. ऊर्णोतेर्विभाषा <sup>४</sup>          | २०. दृढः स्थूलबलयोः                             |
| ७. अतो हलादेर्लघोः                       | २१. प्रभौ परिबृढः                               |
| ८. नेङ् वशि कृति <sup>५</sup>            | २२. कृच्छ्रगहनयोः कषः                           |
| ९. तितुत्रतथसिसुसरकसेषु च                | २३. घुषिरविशब्दने                               |
| (वा०) तितुत्रेष्वग्रहादीनामिति           | २४. अर्देः <sup>१०</sup> संनिविध्यः             |
| वक्तव्यम्।                               | २५. अभेश्चाविदूयै                               |
| १०. एकाच <sup>६</sup> उपदेशोऽनुदात्तात्  | २६. णेर <sup>११</sup> ध्ययने वृत्तम्            |
| ११. श्रुकः <sup>७</sup> किति             | २७. वा <sup>१२</sup> दान्तशान्तपूर्णदस्तस्पष्ट- |
| १२. सनि ग्रहगुहोश्च                      | च्छत्रज्ञप्ताः                                  |
| १३. कृसृभृवृस्तुद्रुसुश्रुवो लिटि        | २८. रुध्यमत्वरसंघुषास्वनाम्                     |
| १४. श्वीदितो निष्ठायाम् <sup>८</sup>     | २९. हषेलोमसु                                    |
| १५. यस्य विभाषा                          | (वा०) विस्मितप्रतिघातयोश्च।                     |
| १६. आदितश्च <sup>९</sup>                 | ३०. अपचितश्च                                    |
| १७. विभाषा भावादिकर्मणोः                 | (वा०) क्तिनि नित्यं चिभावो वक्तव्यः।            |

## विमर्श

१-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ७।२।७। तक जाती है। २-'हलन्तस्य' की अनुवृत्ति ७।२।४। तक जायेगी। ३-यहाँ से 'नेटि' की अनुवृत्ति ७।२।७। तक जाती है। ४-यहाँ से 'विभाषा' की अनुवृत्ति ७।२।७। तक जाती है। ५-इस सूत्र से 'नेट्' की अनुवृत्ति ७।२।३४। तक, तथा 'कृति' की अनुवृत्ति ७।२।९। तक जाती है। ६-यहाँ से 'एकाचः' की अनुवृत्ति ७।२।११। तक जाती है। ७-यहाँ से 'उकः' की अनुवृत्ति ७।२।१२। तक जाती है। ८-'निष्ठायाम्' की अनुवृत्ति ७।२।३४। तक जायेगी। ९-'आदितः' की अनुवृत्ति ७।२।१७। तक जाती है। १०-'अर्देः' की अनुवृत्ति ७।२।२५। तक जायेगी। ११-'णेः' की अनुवृत्ति ७।२।२७। तक जाती है। १२-इस सूत्र से 'वा' की अनुवृत्ति ७।२।२९। तक जाती है।





६२. उपदेशोऽत्वतः

६३. ऋतो भारद्वाजस्य

६४. बभूथाततन्थजगृभ्मववर्थेति निगमे

६५. विभाषा सृजिदृशोः

६६. इडत्यर्तिव्ययतीनाम्

६७. वस्वे<sup>१</sup>काजादघसाम्६८. विभाषा गमहनविदविशाम्  
(वा०) दृशेश्च।

६९. सनिंससनिवासम्

७०. ऋद्धनोः स्ये

७१. अञ्जेः सिचि<sup>२</sup>७२. स्तुसुधूञ्भ्यः परस्मैपदेषु<sup>३</sup>

७३. यमरमनमातां सक्च

७४. स्मिपूड्रञ्ज्वां सनि<sup>४</sup>७५. किरश्च पञ्चभ्यः<sup>५</sup>७६. रुदादिभ्यः सार्वधातुके<sup>६</sup>७७. ईशः से<sup>७</sup>

७८. ईडजनोर्ध्वे च

७९. लिङः सलोपोऽनन्त्यस्य

८०. अतो येयः<sup>८</sup>

८१. आतो डितः

८२. आने<sup>९</sup>मुक्

८३. ईदासः

८४. अष्टन आ विभक्तौ<sup>१०</sup>

८५. रायो हलि

८६. युष्मदस्मदोरनादेशे<sup>११</sup>

८७. द्वितीयायां च

८८. प्रथमायाश्च द्विवचने भाषायाम्

८९. योऽचि

९०. शेषे लोपः

९१. मपर्यन्तस्य<sup>१२</sup>

९२. युवावौ द्विवचने

९३. यूयवयौ जसि

९४. त्वाहौ सौ

९५. तुभ्यमहौ डयि

९६. तवममौ डसि

९७. त्वमावेकवचने<sup>१३</sup>

९८. प्रत्ययोत्तरपदयोश्च

९९. त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ<sup>१४</sup>१००. अचि<sup>१५</sup> ऋतः

### विमर्श

१-‘वसु’ की अनुवृत्ति ७।२।६९। तक जायेगी। २-‘सिचि’ की अनुवृत्ति ७।२।७३। तक जाती है। ३-इस सूत्र से ‘परस्मैपदेषु’ की अनुवृत्ति ७।२।७३। तक जाती है। ४-‘सनि’ की अनुवृत्ति ७।२।७५। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से ‘पञ्चभ्यः’ की अनुवृत्ति ७।२।७६। तक जाती है। ६-इस सूत्र से ‘सार्वधातुके’ की अनुवृत्ति ७।२।८१। तक जाती है। ७-यहाँ से ‘से’ की अनुवृत्ति ७।२।७८। तक जाती है। ८-इस सूत्र से ‘अतः’ की अनुवृत्ति ७।२।८२। तक, तथा ‘इयः’ की अनुवृत्ति ७।२।८१। तक जाती है। ९-इस सूत्र से ‘आने’ की अनुवृत्ति ७।२।८३। तक जाती है। १०-यहाँ से ‘आः’ की अनुवृत्ति ७।२।८८। तक, तथा ‘विभक्तौ’ की अनुवृत्ति ७।२।११३। तक जाती है। ११-इस सूत्र से ‘युष्मदस्मदोः’ की अनुवृत्ति ७।२।९८। तक, एवं ‘अनादेशे’ की अनुवृत्ति ७।२।८९। तक जाती है। १२-इस सूत्र के आगे युष्मद्, अस्मद् को जो आदेश कहेंगे वे आदेश मकार पर्यन्त के स्थान में ही होंगे। इस सूत्र का अधिकार ७।२।९८। तक जानना चाहिए। १३-इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति ७।२।९८। तक जाती है। १४-यहाँ से ‘तिसृचतसृ’ की अनुवृत्ति ७।२।१००। तक जाती है। १५-‘अचि’ की अनुवृत्ति ७।२।१०१। तक जायेगी।



|                                         |                                      |
|-----------------------------------------|--------------------------------------|
| १०१. जराया जरसन्यतरस्याम्               | ११०. यः सौ <sup>५</sup>              |
| १०२. त्यदादीनामः                        | १११. इदो <sup>६</sup> ऽय् पुंसि      |
| (वा०) द्विपर्यन्तानामेवेष्टिः।          | ११२. अनाप्यकः <sup>७</sup>           |
| १०३. किमः <sup>८</sup> कः               | ११३. हलि लोपः                        |
| १०४. कु तिहोः                           | ११४. मृजेर्वृद्धिः <sup>९</sup>      |
| १०५. क्वाति                             | ११५. अचो ङ्गिति <sup>१०</sup>        |
| १०६. तदोः सः सा <sup>१</sup> वनन्त्ययोः | ११६. अत उपधायाः                      |
| १०७. अदस औ सुलोपश्च                     | ११७. तद्धितेष्वचामादेः <sup>१०</sup> |
| (वा०) अदस औत्वप्रतिषेधः साकच्चस्य       | ११८. किति <sup>११</sup> च            |
| वा वक्तव्यः सादुत्वं च।                 | (सिचि प्रभाविट् सन्यचस्ता-स्वदातो    |
| १०८. इदमो मः <sup>३</sup>               | जराया अष्टादश।।)                     |
| १०९. दश्च <sup>४</sup>                  |                                      |

इति पाणिनीयसूत्रपाठे सप्तमस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः॥



### विमर्श

१-इस सूत्र से 'किमः' की अनुवृत्ति ७।२।१०५। तक जाती है। २-यहाँ से 'सौ' की अनुवृत्ति ७।२।१०८। तक जाती है। ३-यहाँ से 'इदमः' की अनुवृत्ति ७।२।११३। तक, तथा 'म' की ७।२।१०९। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'द' की अनुवृत्ति ७।२।११०। तक जाती है। ५-'सौ' की अनुवृत्ति ७।२।१११। तक जायेगी। ६-यहाँ से 'इदः' की अनुवृत्ति ७।२।११३। तक जाती है। ७-यहाँ से 'अकः' की अनुवृत्ति ७।२।११३। तक जाती है। ८-'वृद्धिः' की अनुवृत्ति ७।३।३५। तक जायेगी। ९-इस सूत्र से 'अचः' की अनुवृत्ति ७।३।३१। तक, तथा ङ्गिति' की अनुवृत्ति ७।३।३५। तक जाती है। १०-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ७।३।३१। तक जाती है। ११-'किति' की अनुवृत्ति ७।३।३१। तक जायेगी।

## तृतीयः पादः

१. देविकाशिंशपादित्यवाङ्दीर्घसत्रश्रेय-  
सामात्  
२. केकयमित्रयुप्रलयानां यादेरियः  
३. न य्वाभ्यां पदान्ताभ्यां पूर्वौ तु  
ताभ्यामैच्  
४. द्वारादीनां च  
२४६. द्वार स्वर स्वग्राम (स्वाध्याय) व्यल्कश-  
स्वस्ति स्वर स्फ्यकृत् (सफ्यकृत) स्वादु  
मृदु श्वम श्वन् स्व।। इति द्वारादिः।।  
५. न्यग्रोधस्य च केवलस्य  
६. न<sup>२</sup> कर्मव्यतिहारे  
७. स्वागतादीनां च  
२४७. स्वागत स्वध्वर स्वङ्ग व्यङ्ग व्यङ्  
व्यवहार स्वपिति (स्वपति)।। इति  
स्वागतादिः।।  
८. श्वा<sup>३</sup>देरिजि  
(वा०) इकारादाविति वाच्यम्।  
९. पदान्तस्यान्यतरस्याम्  
१०. उत्तरपदस्य<sup>४</sup>  
११. अवयवादृतोः  
१२. सुसर्वाधाज्जनपदस्य<sup>५</sup>  
१३. दिशो<sup>६</sup>ऽमद्राणाम्  
१४. प्राचां ग्रामनगराणाम्  
१५. संख्यायाः<sup>७</sup> संवत्सरसंख्यस्य च  
१६. वर्षस्याभविष्यति  
१७. परिमाणान्तस्यासंज्ञाशाणयोः  
(वा०) कुलिजशब्दमपि केचि-  
त्पठन्ति।  
१८. जे प्रोष्ठपदानाम्  
१९. हृद्गसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य<sup>८</sup> च  
२०. अनुशतिकादीनां च  
२४८. अनुशतिक अनुहोड अनुसंवरण  
(अनुसंचरण) अनुसंवत्सर अङ्गारवेणु  
असिहत्य (अस्यहत्य) अस्यहेति वध्योग  
पुष्करसद् अनुहरत् कुरुकत कुरुपञ्चाल  
उदकशुद्ध इहलोक परलोक सर्वलोक सर्वपुरुष  
सर्वभूमि प्रयोग परस्त्री।। 'राजपुरुषात्प्यजि'।  
सूत्रनड। इत्यनुशतिकादिः।। आकृति-  
गणोऽयम्।। तेन। अभिगम अधिभूत अधि-  
देव चतुर्विद्या इत्यादयोऽप्यन्ये विज्ञेयाः।।  
२१. देवताद्वन्द्वे<sup>९</sup> च  
२२. ने<sup>१०</sup>न्द्रस्य परस्य  
२३. दीर्घाच्च वरुणस्य

## विमर्श

१- इस सूत्र से 'न य्वाभ्याम् पूर्वौ ताभ्याम् ऐच्' की अनुवृत्ति ७।३।५। तक जाती है।  
२- यहाँ से 'न' की अनुवृत्ति ७।३।९। तक जाती है। ३- 'श्वादेः' की अनुवृत्ति  
७।३।९। तक जायेगी। ४- इस सूत्र का अधिकार ७।३।३१। तक जाता है। ५-  
'जनपदस्य' की अनुवृत्ति ७।३।१३। तक जायेगी। ६- 'दिशः' की अनुवृत्ति ७।३।१४।  
तक जाती है। ७- इस सूत्र से 'संख्यायाः' की अनुवृत्ति ७।३।१७। तक जाती है। ८-  
यहाँ से 'पूर्वपदस्य' की अनुवृत्ति ७।३।२५। तक जायेगी। ९- इस सूत्र से 'देवताद्वन्द्वे'  
की अनुवृत्ति ७।३।२३। तक जाती है। १०- यहाँ से 'न' की अनुवृत्ति ७।३।२३। तक  
जाती है।



|                                                  |                                        |
|--------------------------------------------------|----------------------------------------|
| २४. प्राचां नगरान्ते                             | ३९. लीलोनुर्गुलुकावन्यतरस्यां स्नेह-   |
| २५. जङ्गलधेनुवलजान्तस्य विभाषित-                 | निपातने                                |
| मुत्तरम्                                         | ४०. भियो हेतुभये षुक्                  |
| २६. अर्धात्परिमाणस्य पूर्वस्य तु वा <sup>१</sup> | ४१. स्फायो वः                          |
| २७. नातः परस्य                                   | ४२. शदेरगतौ तः                         |
| २८. प्रवाहणस्य <sup>२</sup> षे                   | ४३. रुहः पोऽन्यतरस्याम्                |
| २९. तत्प्रत्ययस्य च                              | ४४. प्रत्ययस्थात्कात्पूर्वस्यात्       |
| ३०. नजः <sup>३</sup> शुचीश्वरक्षेत्रज्ञकुशल-     | इदाप्यसुपः <sup>४</sup>                |
| निपुणानाम्                                       | (वा०) मामकनरकयोरुपसंख्यानम्।           |
| ३१. यथातथायथापुरयोः पर्यायेण                     | (वा०) त्यक्त्यपोश्च                    |
| ३२. हनस्तोऽचिण्णलोः                              | ४५. न <sup>५</sup> यासयोः              |
| ३३. आतो युक्चिण्कृतोः <sup>६</sup>               | (वा०) त्यकनश्च निषेधः।                 |
| ३४. नो <sup>७</sup> दातोपदेशस्य मान्तस्यानाचमेः  | (वा०) पावकादीनां छन्दसि।               |
| (वा०) अनाचमिकमिवमीनामिति                         | (वा०) आशिषि वुनश्च न।                  |
| वक्तव्यम्।                                       | (वा०) उत्तरपदलोपे न।                   |
| ३५. जनीवध्योश्च                                  | (वा०) क्षिपकादीनां च।                  |
| ३६. अर्तिहीव्लीरीकन्यूीक्षमाय्यातां              | २४९. (वा ४५.३०)। क्षिपका ध्रुवका चरका  |
| पुण्णौ <sup>८</sup>                              | सेवका करका चटका अवका लहका अलका         |
| ३७. शाच्छासाह्वाव्यावेपां युक्                   | कन्यका ध्रुवका एडका।। इति क्षिपकादिः।। |
| (वा०) पातेणौ लुग्वक्तव्यः।                       | आकृतिगणः।।                             |
| (वा०) धूञ्जीजोर्नुग्वक्तव्यः।                    | (वा०) तारका ज्योतिषि।                  |
| ३८. वो विधूनने जुक्                              | (वा०) वर्णका तान्तवे।                  |
|                                                  | (वा०) वर्तकाशकुनौ प्राचाम्।            |

### विमर्श

१-यहाँ से 'अर्धात् परिमाणस्य' की अनुवृत्ति ७।३।२७। तक, तथा 'पूर्वस्य' की ७।३।३१। तक, एवं 'वा तु' की अनुवृत्ति ७।३।३०। तक जाती है। २-'प्रवाहणस्य' की अनुवृत्ति ७।३।२९। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से 'नजः' की अनुवृत्ति ७।३।३१। तक जाती है। ४-'चिण्-कृतोः' की अनुवृत्ति ७।३।३५। तक जायेगी। ५-'न' की अनुवृत्ति ७।३।३५। तक जाती है। ६-यहाँ से 'णौ' की अनुवृत्ति ७।३।४३। तक जाती है। ७-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ७।३।४९। तक जाती है। ८-यहाँ से 'न' की अनुवृत्ति ७।३।४८। तक जायेगी।

- (वा०) अष्टका पितृदैवत्ये। ५४. हो हन्तेः<sup>६</sup>जिन्नेषु  
 (वा०) सूतकापुत्रिकावृन्दारकाणां वेति ५५. अभ्यासाच्च<sup>७</sup>  
 वक्तव्यम्। ५६. हेरचडि  
 ४६. उदीचामातः<sup>१</sup>स्थाने यकपूर्वायाः ५७. सन्लिटोर्जेः<sup>८</sup>  
 (वा०) धात्वन्तयकोस्तु नित्यम्। ५८. विभाषा चेः  
 ४७. भस्त्रैषाजाज्ञाद्वास्वानभ्यूर्वाणामपि<sup>९</sup> ५९. न<sup>१०</sup> क्वादेः  
 ४८. अभाषितपुंस्काच्च<sup>३</sup> ६०. अजिब्रज्योश्च  
 ४९. आदाचार्याणाम् ६१. भुजन्युब्जौ पाण्युपतापयोः  
 ५०. ठस्येकः<sup>४</sup> ६२. प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे  
 ५१. इसुसुक्तान्तात्कः ६३. वञ्चेर्गतौ  
 (वा०) दोष उपसंख्यानम्। ६४. ओक उचः के  
 ५२. चजोः कु<sup>५</sup>धिण्यतोः ६५. ण्य<sup>१०</sup>आवश्यके  
 (वा०) निष्ठायामनिट इति वक्तव्यम्। ६६. यजयाचरुचप्रवचर्चश्च  
 ५३. न्यङ्क्वादीनां च (वा०) त्यजेश्च।  
 २५०. न्यङ्कु मद्गु भृगु दूरेपाक फलेपाक ६७. वचोऽशब्दसंज्ञायाम्  
 क्षणेपाक दूरेपाका फलेपाका दूरेपाकु फलेपाकु ६८. प्रयोज्यनियोज्यौ शक्यार्थे  
 तक्र (तत्र) वक्र (चक्र) व्यतिषङ्ग (अनुषङ्ग) ६९. भोज्यं भक्ष्ये  
 अवसर्ग (उपसर्ग) श्वपाक मांसपाक (मासपाक) ७०. घोर्लोपो<sup>११</sup>लेटि वा  
 मूलपाक कपोतपाक उलूकपाक। 'संज्ञायां ७१. ओतः श्यनि  
 मेघनिदाघावदाघार्धाः' १८०। न्यग्रोध वीरुत्। ७२. क्सस्याचि<sup>१२</sup>  
 इति न्यङ्क्वादिः॥ ७३. लुग्वा दुहदिहलिहगुहामात्मनेपदे  
 दन्त्ये

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'उदीचाम्' की अनुवृत्ति ७।३।४८। तक, तथा 'आतः' की ७।३।४९। तक जाती है। २-'नभ्यूर्वाणामपि' की अनुवृत्ति ७।३।४९। तक जायेगी। ३-यहाँ से 'अभाषितपुंस्कात्' की अनुवृत्ति ७।३।४९। तक जाती है। ४-यहाँ से 'ठस्य' की अनुवृत्ति ७।३।५१। तक जाती है। ५-इस सूत्र स 'चजोः कु' की अनुवृत्ति ७।३।६९। तक जाती है। ६-यहाँ से 'हः' की अनुवृत्ति ७।३।५६। तक, तथा 'हन्तेः' की ७।३।५५। तक जाती है। ७-'अभ्यासात्' की अनुवृत्ति ७।३।५८। तक जायेगी। ८-यहाँ से 'सन्लिटोः' की अनुवृत्ति ७।३।५८। तक जाती है। ९-'न' की अनुवृत्ति ७।३।६९। तक जायेगी। १०-इस सूत्र से 'ण्ये' की अनुवृत्ति ७।३।६९। तक जाती है। ११-इस सूत्र से 'लोपः' की अनुवृत्ति ७।३।७२। तक जाती है। १२-यहाँ से 'क्सस्य' की अनुवृत्ति ७।३।७३। तक जायेगी।



|                                                   |                                       |
|---------------------------------------------------|---------------------------------------|
| ७४. शमामष्टानां दीर्घः <sup>१</sup> श्यनि         | (वा०) बहुलं छन्दसीति वक्तव्यम्।       |
| ७५. ण्विबुक्लमुचमां शिति <sup>२</sup>             | ८८. भूसुवोस्तिडि                      |
| (वा०) आडि चम इति वक्तव्यम्।                       | ८९. उतो वृद्धिर्लुकि हलि <sup>३</sup> |
| ७६. क्रमः परस्मैपदेषु                             | ९०. ऊर्णोते <sup>४</sup> विभाषा       |
| ७७. इषुगमियमां छः                                 | ९१. गुणोऽपृक्ते                       |
| ७८. पाप्राध्मास्थाम्नादाण्डृश्यतिर्तिसर्ति-       | ९२. तृणह इम्                          |
| शदसदां पिबजिघ्रधमतिष्ठमन-                         | ९३. ब्रुव ईट् <sup>५</sup>            |
| यच्छपश्यच्छधौशीयसीदाः                             | ९४. यडो वा <sup>६</sup>               |
| ७९. ज्ञाजनोर्जा                                   | ९५. तुरुस्तुशम्यमः सार्वधातुके        |
| ८०. प्वादीनां ह्रस्वः <sup>७</sup>                | ९६. अस्तिसिचोऽपृक्ते <sup>८</sup>     |
| ८१. मीनातेर्निगमे                                 | ९७. बहुलं छन्दसि                      |
| ८२. मिदेर्गुणः <sup>९</sup>                       | ९८. रुदश्च पञ्चभ्यः <sup>१०</sup>     |
| ८३. जुसि च                                        | ९९. अङ्गा <sup>११</sup> र्ग्यगालवयोः  |
| ८४. सार्वधातुकार्धधातुकयोः <sup>१२</sup>          | १००. अदः सर्वेषाम्                    |
| ८५. जाग्रोऽविचिण्णलडित्सु                         | १०१. अतो दीर्घो यजि <sup>१३</sup>     |
| ८६. पुगन्तलघूपधस्य <sup>१४</sup> च                | १०२. सुपि च <sup>१५</sup>             |
| ८७. नाभ्यस्तस्याचि पिति सार्वधातुके <sup>१६</sup> | १०३. बहुवचने झल्येत् <sup>१७</sup>    |

### विमर्श

१-‘दीर्घः’ की अनुवृत्ति ७।३।७६। तक जायेगी। २-यहाँ से ‘शिति’ की अनुवृत्ति ७।३।८२। तक जायेगी। ३-‘ह्रस्वः’ की अनुवृत्ति ७।३।८१। तक जाती है। ४-यहाँ से ‘गुणः’ की अनुवृत्ति ७।३।८८। तक जाती है। ५-इस अशेष सूत्र की अनुवृत्ति ७।३।८६। तक जाती है। ६-‘लघूपधस्य’ की अनुवृत्ति ७।३।८७। तक जाती है। ७-यहाँ से ‘न’ की अनुवृत्ति ७।३।८८। तक, तथा ‘पिति’ की ७।३।९४। तक एवं ‘सार्वधातुके’ की ७।३।१०१। तक जाती है। ८-इस सूत्र से ‘वृद्धिः’ की अनुवृत्ति ७।३।९०। तक, एवं ‘हलि’ की अनुवृत्ति ७।३।१००। तक जाती है। ९-यहाँ से ‘ऊर्णोतेः’ की अनुवृत्ति ७।३।९१। तक जाती है। १०-‘ईट्’ की अनुवृत्ति ७।३।९८। तक जायेगी। ११-‘वा’ की अनुवृत्ति ७।३।९५। तक जाती है। १२-यहाँ से ‘अस्ति सिचः’ की अनुवृत्ति ७।३।९७। तक, तथा ‘अपृक्ते’ की ७।३।१००। तक जाती है। १३-‘रुदः पञ्चभ्यः’ की अनुवृत्ति ७।३।९९। तक जाती है। १४-‘अट्’ की अनुवृत्ति ७।३।१००। तक जायेगी। १५-यहाँ से ‘अतः’ की अनुवृत्ति ७।३।१०४। तक, तथा ‘दीर्घो यजि’ की ७।३।१०२। तक जाती है। १६-‘सुपि’ की अनुवृत्ति ७।३।१०३। तक जाती है। १७-यहाँ से ‘एत्’ की अनुवृत्ति ७।३।१०६। तक जाती है।

|                                  |                                                    |
|----------------------------------|----------------------------------------------------|
| १०४. ओसि <sup>१</sup> च          | ११३. याडापः <sup>६</sup>                           |
| १०५. आङि चापः <sup>२</sup>       | ११४. सर्वनाम्नः स्याङ् ह्रस्वश्च <sup>७</sup>      |
| १०६. संबुद्धौ <sup>३</sup> च     | ११५. विभाषा द्वितीयातृतीयाभ्याम्                   |
| १०७. अम्बार्थनद्योर्ह्रस्वः      | ११६. डेराम्नद्याम्नी <sup>४</sup> भ्यः             |
| १०८. ह्रस्वस्य गुणः <sup>५</sup> | ११७. इदुद्भ्याम् <sup>९</sup>                      |
| १०९. जसि च                       | ११८. औत् <sup>१०</sup>                             |
| ११०. ऋतो ङिसर्वनामस्थानयोः       | ११९. अच्च घेः <sup>११</sup>                        |
| १११. घेङिति <sup>४</sup>         | १२०. आङोनाऽस्त्रियाम्                              |
| ११२. आप्नद्याः                   | (देविकादेवतास्फायोभुजमीनातेरतो<br>दीर्घो विंशतिः॥) |

इति पाणिनीयसूत्रपाठे सप्तमस्याध्यायस्य तृतीयः पादः॥



### विमर्श

१-‘ओसि’ की अनुवृत्ति ७।३।१०५। तक जायेगी। २-‘आपः’ की अनुवृत्ति ७।३।१०६। तक जाती है। ३-इस सूत्र से ‘संबुद्धौ’ की अनुवृत्ति ७।३।१०८। तक जाती है। ४-यहाँ से ‘ह्रस्वस्य’ की अनुवृत्ति ७।३।१०९। तक, तथा ‘गुणः’ की अनुवृत्ति ७।३।१११। तक जाती है। ५-‘ङिति’ की अनुवृत्ति ७।३।११५। तक जाती है। ६-‘आपः’ की अनुवृत्ति ७।३।११४। तक जाती है। ७-यहाँ से ‘स्याङ् ह्रस्वश्च’ की अनुवृत्ति ७।३।११५। तक जाती है। ८-यहाँ से ‘ङेः’ की अनुवृत्ति ७।३।११९। तक तथा ‘आम् नद्याः’ की ७।३।११७। तक जाती है। ९-‘इदुद्भ्याम्’ की अनुवृत्ति ७।३।११८। तक जायेगी। १०-इस सूत्र से ‘औत्’ की अनुवृत्ति ७।३।११९। तक जाती है। ११-यहाँ से ‘घेः’ की अनुवृत्ति ७।३।१२०। तक जाती है।



## चतुर्थः पादः

- |                                                                                                          |                                             |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------|
| १. णौ चङ्युपधाया ह्रस्वः <sup>१</sup>                                                                    | ११. ऋच्छत्यृताम्                            |
| २. नाग्लोपिशास्वृदिताम्                                                                                  | १२. शृदृप्रां ह्रस्वो <sup>२</sup> वा       |
| ३. भ्राजभासभाषदीपजीवमीलपीडा-<br>मन्यतरस्याम्                                                             | १३. केऽणः <sup>३</sup>                      |
| (वा०) काण्यादीनां वेति वक्तव्यम्।                                                                        | १४. न कपि <sup>४</sup>                      |
| २५१. (वा ४६०७)। कण रण भण श्रण<br>लुप हेठ हायि वाणि (चाणि) लोटि<br>(लोठि)लोपि।। इति कणादिः।। <sup>५</sup> | १५. आपोऽन्यतरस्याम्                         |
| ४. लोपः पिबतेरीच्चाभ्यासस्य                                                                              | १६. ऋदृशोऽडि <sup>६</sup> गुणः              |
| ५. तिष्ठतेरित् <sup>७</sup>                                                                              | १७. अस्यतेस्थुक्                            |
| ६. जिघ्रतेर्वा <sup>८</sup>                                                                              | १८. श्वयतेरः                                |
| ७. उर्ऋत् <sup>९</sup>                                                                                   | १९. पतः पुम्                                |
| ८. नित्यं छन्दसि                                                                                         | २०. वच उम्                                  |
| ९. दयतेर्दिङि लिटि <sup>१०</sup>                                                                         | २१. शीङः <sup>११</sup> सार्वधातुके गुणः     |
| (वा०) दिग्यादेशेन द्वित्वबाधन-<br>मिष्यते।                                                               | २२. अयङ् यि क्ङिति <sup>१२</sup>            |
| १०. ऋतश्च संयोगादेर्गुणः <sup>१३</sup>                                                                   | २३. उपसर्गाद्भ्रस्व <sup>१४</sup> ऊहतेः     |
|                                                                                                          | २४. एतेर्लिङि                               |
|                                                                                                          | २५. अकृत्सार्वधातुकयोर्दीर्घः <sup>१५</sup> |

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'णौ चङ्युपधायाः' की अनुवृत्ति ७।४।८। तक, तथा 'ह्रस्वः' की ७।४।३। तक जाती है। २- इस सूत्र से 'इत्' की अनुवृत्ति ७।४।६। तक जाती है। ३- यहाँ से 'वा' की अनुवृत्ति ७।४।७। तक जाती है। ४- इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति ७।४।८। तक जाती है। ५- इस सूत्र से 'लिटि' की अनुवृत्ति ७।४।१२। तक जाती है। ६- 'गुणः' की अनुवृत्ति ७।४।११। तक जायेगी। ७- 'ह्रस्वः' की अनुवृत्ति ७।४।१५। तक जायेगी। ८- यहाँ से 'अणः' की अनुवृत्ति ७।४।१४। तक जायेगी। ९- 'न कपि' की अनुवृत्ति ७।४।१५। तक जायेगी। १०- यहाँ से 'अडि' की अनुवृत्ति ७।४।२०। तक जायेगी। ११- यहाँ से 'शीङः' की अनुवृत्ति ७।४।२२। तक जाती है। १२- इस सूत्र से 'क्ङिति' की अनुवृत्ति ७।४।२५। तक, तथा 'यि' की ७।४।२९। तक जाती है। १३- यहाँ से 'उपसर्गात् ह्रस्वः' की अनुवृत्ति ७।४।२४। तक जाती है। १४- 'अकृत्सार्वधातुकयोः' की अनुवृत्ति ७।४।२९। तक, तथा 'दीर्घः' की ७।४।२६। तक जाती है।

२६. च्वौ<sup>१</sup> च  
 २७. रीडृतः<sup>२</sup>  
 २८. रिङ् शयग्लिङ्क्षु<sup>३</sup>  
 २९. गुणोऽर्तिसंयोगाघोः<sup>४</sup>  
 ३०. यङि<sup>५</sup> च  
 (वा०) हन्तेर्हिसायां यङि घ्नीभावो  
 वाच्यः।  
 ३१. ई<sup>६</sup> घ्राध्मोः  
 ३२. अस्य<sup>७</sup> च्वौ  
 ३३. क्यचि<sup>८</sup> च  
 ३४. अशनायोदन्यधनाया बुभुक्षा-  
 पिपासागर्धेषु  
 ३५. न छन्दस्य<sup>९</sup> पुत्रस्य  
 (वा०) अपुत्रादीनामिति वक्तव्यम्।  
 ३६. दुरस्युर्द्रविणस्युर्वृषण्यतिरिषण्यति  
 ३७. अश्वाघस्यात्<sup>१०</sup>  
 ३८. देवसुम्नयोर्यजुषि काठके  
 ३९. कव्यध्वरपृतनस्यर्चि लोपः  
 ४०. घतिस्वतिमास्थामिति किति<sup>११</sup>  
 ४१. शाच्छोरन्यतरस्याम्  
 (वा०) श्यतेरित्वं व्रते नित्यमिति  
 वक्तव्यम्।  
 ४२. दधातेर्हिः<sup>१२</sup>  
 ४३. जहातेश्च क्त्वि<sup>१३</sup>  
 ४४. विभाषा छन्दसि<sup>१४</sup>  
 ४५. सुधितवसुधितनेमधितधिष्वधिषीय  
 च  
 ४६. दो दद्धोः<sup>१५</sup>  
 ४७. अच उपसर्गात्<sup>१६</sup>  
 ४८. अपो भि  
 (वा०) मासश्छन्दसीति वक्तव्यम्।  
 (वा०) स्ववस्वतवसोर्मास उषसश्च  
 त इष्यते।  
 ४९. सः स्या<sup>१७</sup> धातुके  
 ५०. तासस्त्योलोपः<sup>१८</sup>  
 ५१. रि च

### विमर्श

१-यहाँ से 'च्वौ' की अनुवृत्ति ७।४।२७। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'ऋतः' की अनुवृत्ति ७।४।३०। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'शयग्लिङ्क्षु' की अनुवृत्ति ७।४।२९। तक जाती है। ४-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ७।४।३०। तक जाती है। ५-'यङि' की अनुवृत्ति ७।४।३१। तक जायेगी। ६-यहाँ से 'ई' की अनुवृत्ति ७।४।३३। तक जाती है। ७-यहाँ से 'अस्य' की अनुवृत्ति ७।४।३५। तक जाती है। ८-'क्यचि' की अनुवृत्ति ७।३।३९। तक जायेगी। ९-इस सूत्र से 'छन्दसि' की अनुवृत्ति ७।४।३९। तक जाती है। १०-इस सूत्र से 'आत्' की अनुवृत्ति ७।४।३८। तक जाती है। ११-यहाँ से 'इत्' की अनुवृत्ति ७।४।४१। तक, तथा 'ति किति' की अनुवृत्ति ७।४।४७। तक जाती है। १२-'हिः' की अनुवृत्ति ७।४।४४। तक जायेगी। १३-'जहातेः क्त्वि' की अनुवृत्ति ७।४।४४। तक जाती है। १४-यहाँ से 'छन्दसि' की अनुवृत्ति ७।४।४५। तक जायेगी। १५-इस सूत्र से 'दः घोः' की अनुवृत्ति ७।४।४७। तक जाती है। १६-इस सूत्र से 'तः' की अनुवृत्ति ७।४।४९। तक जाती है। १७-यहाँ से 'सः' की अनुवृत्ति ७।४।५२। तक, तथा 'सि' की अनुवृत्ति ७।४।५७। तक जाती है। १८-यहाँ से 'तासस्त्योः' की अनुवृत्ति ७।४।५२। तक, तथा 'लोपः' की अनुवृत्ति ७।४।५३। तक जाती है।



|                                                                                                                                                                       |                                                     |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------|
| ५२. ह एति                                                                                                                                                             | ६६. उरत्                                            |
| ५३. यीवर्णयोर्दीधीवेव्योः                                                                                                                                             | ६७. द्युतिस्वाप्योः संप्रसारणम् <sup>६</sup>        |
| ५४. सनि मीमाधुरभलभशकपत-<br>पदामच <sup>१</sup> इस्                                                                                                                     | ६८. व्यथो लिटि <sup>९</sup>                         |
| (वा०) राधो हिंसायां सनीस् वाच्यः।                                                                                                                                     | ६९. दीर्घ <sup>१०</sup> इणः किति                    |
| ५५. आप्ज्ञप्यृधामीत् <sup>२</sup>                                                                                                                                     | ७०. अत आदेः                                         |
| ५६. दम्भ इच्च                                                                                                                                                         | ७१. तस्मान्नुड् <sup>११</sup> द्विहलः               |
| ५७. मुचोऽकर्मकस्य गुणो वा                                                                                                                                             | ७२. अश्नोतेश्च                                      |
| ५८. अत्र लोपोऽभ्यासस्य <sup>३</sup>                                                                                                                                   | ७३. भवतेरः <sup>१२</sup>                            |
| ५९. ह्रस्वः                                                                                                                                                           | ७४. ससूवेति निगमे                                   |
| ६०. हलादिः शेषः <sup>४</sup>                                                                                                                                          | ७५. निजां त्रयाणां गुणः श्लौ <sup>१३</sup>          |
| ६१. शर्पूर्वाः खयः                                                                                                                                                    | ७६. भृजामित् <sup>१४</sup>                          |
| ६२. कुहोश्चुः <sup>५</sup>                                                                                                                                            | ७७. अर्तिपिपत्योश्च                                 |
| ६३. न कवतेर्यडि <sup>६</sup>                                                                                                                                          | ७८. बहुलं छन्दसि                                    |
| ६४. कृषेश्छन्दसि <sup>७</sup>                                                                                                                                         | ७९. सन्यतः <sup>१५</sup>                            |
| ६५. दाधर्तिदधर्तिदधर्षिबोभूतुतेतिक्ते-<br>ऽलर्थापनीफणत्संसनिष्यदत्कक्रिक्-<br>निक्रदद्भरिभद्विध्वतोदविद्युतत्त-<br>रित्रतः सरीसृपतंवरीवृजन्मर्म्-<br>ज्यागनीगन्तीति च | ८०. ओः पुयण्यपरे <sup>१६</sup>                      |
|                                                                                                                                                                       | ८१. स्रवतिशृणोतिद्रवतिप्रवतिप्ल-<br>वतिच्यवतीनां वा |

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'अचः' की अनुवृत्ति ७।४।५६। तक, तथा 'सनि' की अनुवृत्ति ७।४।५७। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'ईत्' की अनुवृत्ति ७।१।५६। तक जाती है। ३-यहाँ से 'अभ्यासस्य' की अनुवृत्ति ७।४।९७। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'शेषः' की अनुवृत्ति ७।४।६१। तक जाती है। ५-'चुः' की अनुवृत्ति ७।४।६४। तक जायेगी। ६-यहाँ से 'न यडि' की अनुवृत्ति ७।४।६४। तक जायेगी। ७-'छन्दसि' की अनुवृत्ति ७।४।६५। तक जाती है। ८-'संप्रसारणम्' की अनुवृत्ति ७।४।६८। तक जायेगी। ९-इस सूत्र से 'लिटि' की अनुवृत्ति ७।४।७४। तक जाती है। १०-यहाँ से 'दीर्घः' की अनुवृत्ति ७।४।७०। तक जाती है। ११-यहाँ से 'तस्मान्नुड्' की अनुवृत्ति ७।४।७२। तक जाती है। १२-'अः' की अनुवृत्ति ७।४।७४। तक जायेगी। १३-इस सूत्र से 'त्रयाणाम्' की अनुवृत्ति ७।४।७६। तक तथा 'श्लौ' की अनुवृत्ति ७।४।७८। तक जाती है। १४-यहाँ से 'इत्' की अनुवृत्ति ७।४।८१। तक जायेगी। १५-'सनि' की अनुवृत्ति ७।४।८१। तक जायेगी। १६-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ७।४।८१। तक जायेगी।

|                                                    |                                                    |
|----------------------------------------------------|----------------------------------------------------|
| ८२. गुणो यङ्लुकोः <sup>१</sup>                     | (वा०) रीगृत्वत इति वक्तव्यम्।                      |
| ८३. दीर्घोऽकितः                                    | ९१. रुग्रिकौ च लुकि <sup>६</sup>                   |
| ८४. नीग्वञ्चुसं सुध्वंसुभ्रंसुकसपत-<br>पदस्कन्दाम् | ९२. ऋतश्च                                          |
| ८५. नुगतो <sup>२</sup> ऽनुनासिकान्तस्य             | ९३. सन्वल्लघुनि चङ्परेऽनग्लोपे <sup>७</sup>        |
| ८६. जपजभदहदशभञ्जपशां च                             | ९४. दीर्घो लघोः                                    |
| ८७. चरफलोश्च <sup>३</sup>                          | ९५. अत्स्मृ <sup>४</sup> दृत्वरप्रथम्रदस्तृत्पशाम् |
| ८८. उत्प <sup>५</sup> रस्यातः                      | ९६. विभाषा वेष्टिचेष्टयोः                          |
| ८९. ति च                                           | ९७. ई च गणः                                        |
| ९०. रीगृदुपधस्य <sup>५</sup> च                     | (णौ च शीङः शाच्छोः शर्पूर्वाः<br>स्रवतिसप्तदश॥)    |

इति पाणिनीयसूत्रपाठे सप्तमस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायश्च।



### विमर्श

१-यहाँ से 'यङ्लुकोः' की अनुवृत्ति ७।४।९०। तक जाती है। २-'नुक्' की अनुवृत्ति ७।४।८७। तक जायेगी। ३-यहाँ से 'चरफलोः' की अनुवृत्ति ७।४।८९। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'उत् अतः' की अनुवृत्ति ७।४।८९। तक जाती है। ५-यहाँ से 'ऋदुपधस्य' की अनुवृत्ति ७।४।९१। तक, तथा 'रीक्' की अनुवृत्ति ७।४।९२। तक जाती है। ६-इस सूत्र से 'रुग्रिकौ लुकि' की अनुवृत्ति ७।४।९२। तक जाती है। ७-यहाँ से 'लघुनि अनग्लोपे' की अनुवृत्ति ७।४।९४। तक, तथा 'चङ्परे' की अनुवृत्ति ७।४।९७। तक जाती है। ८-'अत्' की अनुवृत्ति ७।४।९७। तक जायेगी।



## अथ अष्टमोऽध्यायः

### प्रथमः पादः

- |                                                             |                                                                          |
|-------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------|
| १. सर्वस्य द्वे <sup>१</sup>                                | १३. अकृच्छे प्रियसुखयोरन्यतरस्याम्                                       |
| २. तस्य परमाप्रेडितम् <sup>२</sup>                          | १४. यथास्वे यथायथम्                                                      |
| ३. अनुदात्तं च                                              | १५. द्वन्द्वं रहस्यमर्यादावचनव्युत्क्रमण-<br>यज्ञपात्रप्रयोगाभिव्यक्तिषु |
| ४. नित्यवीप्सयोः                                            | १६. पदस्य <sup>५</sup>                                                   |
| ५. परेर्वर्जने                                              | १७. पदात् <sup>६</sup>                                                   |
| (वा०) परेर्वर्जने वा वचनम्।                                 | १८. अनुदात्तं सर्वमपादादौ <sup>७</sup>                                   |
| ६. प्रसमुपोदः पादपूरणे                                      | (वा०) समानवाक्ये निघातयुष्मदस्म-                                         |
| ७. उपर्यध्यधसः सामीप्ये                                     | दादेशा वक्तव्याः।                                                        |
| ८. वाक्यादेरामन्त्रितस्यासूयाऽसंमति-<br>कोपकुत्सनभर्त्सनेषु | १९. आमन्त्रितस्य च                                                       |
| ९. एकं बहुव्रीहिवत् <sup>३</sup>                            | २०. युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थी-<br>द्वितीयास्थयो <sup>८</sup> र्वानावौ    |
| १०. आबाधे च                                                 | २१. बहुवचनस्य वस्-नसौ                                                    |
| ११. कर्मधारयवदुत्तरेषु <sup>४</sup>                         | २२. तेमयावेकवचनस्य <sup>९</sup>                                          |
| १२. प्रकारे गुणवचनस्य                                       | २३. त्वामौ द्वितीयायाः                                                   |
| (वा०) आनुपूर्व्ये द्वे वाच्ये।                              | २४. न <sup>१०</sup> चवाहाहैवयुक्ते                                       |
| (वा०) क्रियासमभिहारे च।                                     | २५. पश्याथैश्चानालोचने                                                   |
| (वा०) डाचि विवक्षिते द्वे बहुलम्।                           | २६. सपूर्वायाः प्रथमाया विभाषा                                           |
| (वा०) स्त्रीनपुंसकयोरुत्तरपदस्थाया                          | २७. तिङो गोत्रादीनि कुत्सनाभीक्ष्ण्ययोः                                  |
| विभक्तेराम्भावो वा वक्तव्यः।                                |                                                                          |

### विमर्श

१-इस सूत्र का अधिकार ८।१।१५। तक जाता है। २-इस सूत्र से 'आप्रेडितम्' की अनुवृत्ति ८।१।३। तक जाती है। ३-यहाँ से 'बहुव्रीहिवत्' की अनुवृत्ति ८।१।१०। तक जाती है। ४-'कर्मधारयवत्' की अनुवृत्ति ८।१।१५। तक जाती है। ५-इस सूत्र का अधिकार ८।३।५४। तक जाता है। ६-इस सूत्र का अधिकार ८।१।६९। तक जाता है। ७-इस सूत्र का अधिकार ८।१।७१। तक जायेगा। ८-यहाँ से 'युष्मदस्मदोः षष्ठीचतुर्थीद्वितीयास्थयोः' की अनुवृत्ति ८।१।२६। तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'एकवचनस्य' की अनुवृत्ति ८।१।२३। तक जाती है। १०-'न' की अनुवृत्ति ८।१।२६। तक जायेगी।

२५२. गोत्र ब्रुव प्रवचन प्रहसन प्रकथन  
प्रत्ययन प्रपञ्च प्राय न्याय प्रचक्षण विचक्षण  
अवचक्षण स्वाध्याय भूयिष्ठ (भूयिष्ठ)  
वानाम॥ इति गोत्रादिः॥

२८. तिङ्<sup>१</sup>डतिङः

२९. न<sup>२</sup> लुट्

३०. निपातैर्यद्यदिहन्तकुविन्नेच्चेच्चणक-  
च्चिघत्रयुक्तम्

३१. नह प्रत्यारम्भे

३२. सत्यं प्रश्ने

३३. अङ्गात्प्रातिलोम्ये<sup>३</sup>

३४. हि<sup>४</sup> च

३५. छन्दस्यनेकमपि साकाङ्क्षम्

३६. यावद्यथाभ्याम्<sup>५</sup>

३७. पूजायां नानन्तरम्<sup>६</sup>

३८. उपसर्गव्यपेतं च

३९. तुपश्यपश्यताहैः पूजायाम्<sup>७</sup>

४०. अहो<sup>८</sup> च

४१. शेषे विभाषा<sup>९</sup>

४२. पुरा च परीप्सायाम्

४३. नन्वित्यनुज्ञैषणायाम्

४४. किं क्रियाप्रश्नेऽनुपसर्गमप्रति-  
षिद्धम्<sup>१०</sup>

४५. लोपे विभाषा

४६. एहिमन्ये प्रहासे लट्

४७. जात्वपूर्वम्<sup>११</sup>

४८. किंवृत्तं च चिदुत्तरम्

४९. आहो उताहो<sup>१२</sup> चानन्तरम्

५०. शेषे विभाषा

५१. गत्यर्थलोटा लृणन चेत्कारकं  
सर्वान्यत्<sup>१३</sup>

५२. लोट्<sup>१४</sup> च

५३. विभाषितं सोपसर्गमनुत्तमम्<sup>१५</sup>

५४. हन्त च

५५. आम एकान्तरमामन्त्रितमनन्तिके

५६. यद्धितुपरं छन्दसि

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'तिङ्' की अनुवृत्ति ८।१।६६। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'न' की अनुवृत्ति ८।१।६६। तक जाती है। ३-यहाँ से 'अप्रातिलोम्ये' की अनुवृत्ति ८।१।३४। तक जाती है। ४-इस सूत्र से 'हि' की अनुवृत्ति ८।१।३५। तक जायेगी। ५-'यावद्यथाभ्याम्' की अनुवृत्ति ८।१।३८। तक जायेगी। ६-इस समस्त सूत्र की अनुवृत्ति ८।१।३८। तक जाती है। ७-'पूजायाम्' की अनुवृत्ति ८।१।४०। तक जायेगी। ८-यहाँ से 'अहो' की अनुवृत्ति ८।१।४१। तक जाती है। ९-'विभाषा' की अनुवृत्ति ८।१।४२। तक जाती है। १०-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ८।१।४५। तक जाती है। ११-'अपूर्वम्' की अनुवृत्ति ८।१।५०। तक जायेगी। १२-यहाँ से 'आहो उताहो' की अनुवृत्ति ८।१।५०। तक जाती है। १३-इस सूत्र से 'गत्यर्थलोटा न चेत् कारकं सर्वान्यत्' की अनुवृत्ति ८।१।५३। तक जायेगी। १४-'लोट्' की अनुवृत्ति ८।१।५४। तक जायेगी। १५- इस सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति ८।१।५४। तक जाती है।



|                                                                                      |                                                                                                      |
|--------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ५७. चनचिदिवगोत्रादितद्धिता-<br>प्रेडितेष्वगतेः <sup>१</sup>                          | घोरं सुखं परमं सु अति॥ इति काष्ठादिः॥                                                                |
| ५८. चादिषु च                                                                         | ६८. सगतिरपि तिङ् <sup>७</sup>                                                                        |
| ५९. चवायोगे प्रथमा <sup>२</sup>                                                      | (वा०) गतिग्रहणे उपसर्गग्रहणमिष्यते।                                                                  |
| ६०. हेति क्षियायाम् <sup>३</sup>                                                     | ६९. कुत्सने च सुप्यगोत्रादौ                                                                          |
| ६१. अहेति विनियोगे च                                                                 | (वा०) क्रियाकुत्सन इति वाच्यम्।                                                                      |
| ६२. चाहलोप एवेत्यवधारणम्                                                             | (वा०) पूतिश्चानुबन्ध इति वाच्यम्।                                                                    |
| ६३. चादिलोपे विभाषा <sup>४</sup>                                                     | (वा०) वा बहुर्थमनुदात्तमिति वाच्यम्।                                                                 |
| ६४. वैवावेति च छन्दसि <sup>५</sup>                                                   | ७०. गतिर् <sup>६</sup> गता                                                                           |
| ६५. एकान्याभ्यां समर्थाभ्याम्                                                        | ७१. तिङि चोदात्तवति                                                                                  |
| ६६. यद्वृत्तान्नित्यम्                                                               | ७२. आमन्त्रितं पूर्वमविद्यमानवत् <sup>९</sup>                                                        |
| (वा०) अत्र व्यवहिते कार्यमिष्यते।                                                    | ७३. नामन्त्रिते समानाधिकरणे <sup>१०</sup> -                                                          |
| ६७. पूजनात्पूजितमनुदात्तं काष्ठा-<br>दिभ्यः                                          | सामान्यवचनम्                                                                                         |
| २५३. काष्ठ दारुण अमातापुत्र वेश अनाज्ञात<br>अनुज्ञात अपुत्र अयुत अद्भुत (अनुक्त) भृश | ७४. विभाषितं विशेषवचने<br>(वा०) बहुवचनमित्यपि भाष्यम्।<br>(सर्वस्य बहुवचनस्य शेषेऽहेति<br>चतुर्दशा॥) |

इति पाणिनीसूत्रपाठे अष्टमस्याध्यायस्य प्रथमः पादः॥



### विमर्श

१-इस सूत्र से 'अगतेः' की अनुवृत्ति ८।१।५८। तक जाती है। २-'प्रथमा' की अनुवृत्ति ८।१।६५। तक जायेगी। ३-इस सूत्र से 'क्षियायाम्' की अनुवृत्ति ८।१।६१। तक जाती है। ४-'विभाषा' की अनुवृत्ति ८।१।६५। तक जाती है। ५-'छन्दसि' की अनुवृत्ति ८।१।६५। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'पूजनात् पूजितम्' की अनुवृत्ति ८।१।६८। तक जाती है। ७-इस अशेष सूत्र की अनुवृत्ति ८।१।६९। तक जाती है। ८-'गतिः' की अनुवृत्ति ८।१।७१। तक जायेगी। ९-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ८।१।७४। तक जाती है। १०-इस सूत्र से 'आमन्त्रिते समानाधिकरणे' की अनुवृत्ति ८।१।७४। तक जाती है।

## द्वितीयः पादः

१. पूर्वत्रासिद्धम्<sup>१</sup>  
(वा०) पूर्वत्रासिद्धीयमद्विर्वचने।
२. नलोपः सुप्स्वरसंज्ञातुग्विधिषु कृति
३. न मु ने
४. उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितो-  
ऽनुदात्तस्य<sup>२</sup>
५. एकादेश उदात्तेनो<sup>३</sup>दात्तः
६. स्वरितो वाऽनुदात्ते पदादौ
७. नलोपः प्रातिपदिकान्तस्य<sup>४</sup>  
(वा०) अहो नलोपप्रतिषेधः।
८. न डिसंबुद्धयोः  
(वा०) डावुत्तरपदे प्रतिषेधः।
९. मादुपधायाश्च मतोर्त्रो<sup>५</sup>ऽयवादिभ्यः  
२५४. यव दल्मि ऊर्मि (उर्भि) भूमि कृमि  
क्रुञ्चा वशा द्राक्षा ध्राक्षा ध्रजि (व्रजि) ध्वजि  
निजि सिजि सज्जि हरित् ककुत् मरुत् गरुत्  
इक्षु द्रु मधु॥ इति यवादिः॥ आकृतिगणः।
१०. झयः
११. संज्ञायाम्<sup>६</sup>
१२. आसन्दीवदष्ठीवच्चक्रीवत्क्षीव-  
द्रुमण्वच्चर्मण्वती

१३. उदन्वानुदधौ च
१४. राजन्वान्सौराज्ये
१५. छन्दसीरः<sup>७</sup>
१६. अनो नुट्<sup>८</sup>
१७. नादघस्य  
(वा०) भूरिदान्नस्तुङ् वाच्यः।  
(वा०) ईद्रथिनः।
१८. कृपो रो लः<sup>९</sup>  
(वा०) वालमूललध्वसुरालमङ्गुलीनां  
वा लो रमापद्यत इति वाच्यम्।  
(वा०) कपिलकादीनां संज्ञाच्छन्द-  
सोर्वेति वाच्यम्।
२५५. (वा)। कपिलक निर्विलीक लोमानि  
पांसुल कल्म शुक्ल कपिलिका तर्पिलिका  
तर्पिलि॥ आकृतिगणोऽयम् ॥ इति  
कपिलकादिः॥
१९. उपसर्गस्यायतौ
२०. ग्रो<sup>१०</sup> यङि
२१. अचि विभाषा<sup>११</sup>
२२. परेश्व घाङ्गयोः  
(वा०) घ इति स्वरूपस्य ग्रहणम्।

### विमर्श

१-इस सूत्र का अधिकार ८।४।६८। तक जाता है। २-यहाँ से 'अनुदात्तस्य' की, अनुवृत्ति ८।२।६। तक जाती है। ३-यहाँ से 'एकादेश उदात्तेन' की अनुवृत्ति ८।२।६। तक जाती है। ४-इस अशेष सूत्र की अनुवृत्ति ८।२।८। तक जाती है। ५-यहाँ से 'मतोः' की अनुवृत्ति ८।२।१६। तक, तथा 'वः' की ८।२।१५। तक जाती है। ६-'संज्ञायाम्' की अनुवृत्ति ८।२।१७। तक जाती है। ७-यहाँ से 'छन्दसि' की अनुवृत्ति ८।२।१७। तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'नुट्' की अनुवृत्ति ८।२।१७। तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'रो लः' की अनुवृत्ति ८।२।२२। तक जाती है। १०-इस सूत्र से 'ग्रः' की अनुवृत्ति ८।२।२१। तक जाती है। ११-यहाँ से 'विभाषा' की अनुवृत्ति ८।२।२२। तक जाती है।



|                                               |                                                |
|-----------------------------------------------|------------------------------------------------|
| (वा०) योगे चेति वाच्यम्।                      | ४२. रदाभ्यां निष्ठातो नः <sup>८</sup> पूर्वस्य |
| २३. संयोगान्तस्य लोपः <sup>९</sup>            | च दः                                           |
| २४. रात्सस्य <sup>३</sup>                     | ४३. संयोगादेरातो धातोर्यण्वतः                  |
| २५. धि च                                      | ४४. ल्वादिभ्यः                                 |
| (वा०) सङीति वक्तव्यम्।                        | (वा०) ऋल्वादिभ्यः क्तिन्नि-                    |
| २६. झलो झलि <sup>३</sup>                      | ष्ठावद्वाच्यः।                                 |
| २७. ह्रस्वादङ्गात्                            | (वा०) दुग्बोर्दीर्घश्च।                        |
| २८. इट ईटि                                    | (वा०) पूजो विनाशे।                             |
| २९. स्कोः संयोगाद्योरन्ते च <sup>४</sup>      | (वा०) सिनोतेर्ग्रासकर्मकर्तृकस्य।              |
| ३०. चोः कुः                                   | ४५. ओदितश्च                                    |
| ३१. हो <sup>५</sup> ढः                        | ४६. क्षियो दीर्घात्                            |
| ३२. दादेर्धातोर्धः <sup>६</sup>               | ४७. श्योऽस्पर्शे                               |
| ३३. वा द्रुहमुहष्णुहष्णिहाम्                  | ४८. अञ्चोऽनपादाने                              |
| ३४. नहो धः                                    | ४९. दिवोऽविजिगीषायाम्                          |
| ३५. आहस्थः                                    | ५०. निर्वाणोऽवाते                              |
| ३६. व्रश्चभ्रस्जसृजमृजयजराजभ्राज-             | ५१. शुषः कः                                    |
| च्छशां षः                                     | ५२. पचो वः                                     |
| ३७. एकाचो बशो भष्णन्तस्य स्त्वोः <sup>७</sup> | ५३. क्षायो मः <sup>९</sup>                     |
| ३८. दधस्तथोश्च                                | ५४. प्रस्त्योऽन्यतरस्याम्                      |
| ३९. झलां जशोऽन्ते                             | ५५. अनुपसर्गात्फुल्लक्षीबकृशोल्लाघाः           |
| ४०. झषस्तथोर्धोऽधः                            | (वा०) उत्फुल्लसंफुल्लयोरुप-                    |
| ४१. षढोः कः सि                                | संख्यानम्।                                     |

### विमर्श

१-यहाँ से 'संयोगान्तस्य' की अनुवृत्ति ८।२।२४। तक, तथा 'लोपः' की अनुवृत्ति ८।२।२९। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'सस्य' की अनुवृत्ति ८।२।२८। तक जाती है। ३-इस सूत्र से 'झलि' की अनुवृत्ति ८।२।३८। तक जायेगी। ४-'अन्ते' की अनुवृत्ति ८।२।३८। तक जायेगी। ५-'हः' की अनुवृत्ति ८।२।३५। तक जायेगी। ६-इस सूत्र से 'धः' की अनुवृत्ति ८।२।३३। तक, तथा 'धातोः' की ८।२।३८। तक जाती है। ७-'बशो भष्णन्तस्य स्त्वोः' की अनुवृत्ति ८।२।३८। तक जाती है। ८-यहाँ से 'निष्ठातो नः' की अनुवृत्ति ८।२।६१। तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'मः' की अनुवृत्ति ८।२।५४। तक जाती है।

|                                                      |                                                |
|------------------------------------------------------|------------------------------------------------|
| ५६. नुदविदोन्दीत्राग्राहीभ्योऽन्य-<br>तरस्याम्       | २५७. पति गण पुत्रा। इति पत्यादिः।।             |
| ५७. न <sup>१</sup> ध्याख्यापृमूर्च्छिमदाम्           | ७१. भुवश्च महाव्याहतेः                         |
| ५८. वित्तो भोगप्रत्यययोः                             | ७२. वसुसं सुध्वंस्वनडुहां दः <sup>८</sup>      |
| ५९. भित्तं शकलम्                                     | ७३. तिप्यनस्तेः                                |
| ६०. ऋणमाधमण्ये                                       | ७४. सिपि धातो रुर्वा <sup>९</sup>              |
| ६१. नसत्तनिषत्तानुत्तप्रतूर्तसूर्तगूर्तानि<br>छन्दसि | ७५. दश्च                                       |
| ६२. क्विन्प्रत्ययस्य कुः <sup>३</sup>                | ७६. वोरुपधाया दीर्घ इकः <sup>१०</sup>          |
| ६३. नशेर्वा                                          | ७७. हलि <sup>११</sup> च                        |
| ६४. मो नो धातोः <sup>३</sup>                         | ७८. उपधायां च                                  |
| ६५. म्वोश्च                                          | ७९. नभकुर्छुराम्                               |
| ६६. ससजुषो रुः <sup>४</sup>                          | ८०. अदसोऽसेर्दादु दो मः <sup>१२</sup>          |
| ६७. अवयाः श्वेतवाः पुरोडाश्च                         | ८१. एत ईद्वहुवचने                              |
| ६८. अहन् <sup>५</sup>                                | ८२. वाक्यस्य टेः <sup>१३</sup> प्लुत उदात्तः   |
| (वा०) रूपरात्रिरथन्तरेषु रुत्वं वाच्यम्।             | ८३. प्रत्यभिवादेऽशूद्रे                        |
| ६९. रो <sup>६</sup> ऽसुपि                            | (वा०) स्त्रियां न।                             |
| ७०. अमनरुधरवरित्युभयथा छन्दसि <sup>७</sup>           | (वा०) भोराजन्यविशां वेति वाच्यम्।              |
| (वा०) अहरादीनां पत्यादिषु वा रेफः।                   | ८४. दूराद्धूते <sup>१४</sup> च                 |
| २५६. (वा ३६०४)। अहर् गीर् धूर्। इत्य-<br>हरादिः।।    | ८५. हैहेप्रयोगे हैहयोः                         |
|                                                      | ८६. गुरोरनृतोऽनन्त्यस्याप्येकैकस्य<br>प्राचाम् |

### विमर्श

१-‘न’ की अनुवृत्ति ८।२।६१। तक जायेगी। २-‘कुः’ की अनुवृत्ति ८।२।६३। तक जायेगी। ३-यहाँ से ‘मो नो धातोः’ की अनुवृत्ति ८।२।६५। तक जाती है। ४-यहाँ से ‘रुः’ की अनुवृत्ति ८।२।७१। तक जाती है। ५-इस सूत्र से ‘अहन्’ की अनुवृत्ति ८।२।६९। तक जायेगी। ६-‘र’ की अनुवृत्ति ८।२।७१। तक जायेगी। ७-यहाँ से ‘उभयथा छन्दसि’ की अनुवृत्ति ८।२।७१। तक जाती है। ८-यहाँ से ‘दः’ की अनुवृत्ति ८।२।७५। तक जाती है। ९-इस सूत्र से ‘सिपि रुर्वा’ की अनुवृत्ति ८।२।७५। तक, तथा ‘धातोः’ की ८।२।७९। तक जाती है। १०-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ८।२।७९। तक जाती है। ११-यहाँ से ‘हलि’ की अनुवृत्ति ८।२।७८। तक जाती है। १२-इस सूत्र से ‘अदसोऽसेर्दादु दो मः’ की अनुवृत्ति ८।२।८१। तक जायेगी। १३-पादसमाप्तिपर्यन्त अर्थात् ८।२।१०८। तक इस सूत्र का अधिकार जाता है। १४-इस सूत्र से ‘दूराद्धूते’ की अनुवृत्ति ८।२।८५। तक जाती है।



|                                                      |                                           |
|------------------------------------------------------|-------------------------------------------|
| ८७. ओमध्यादाने                                       | १०२. उपरिस्विदासीदिति च                   |
| ८८. ये यज्ञकर्मणि <sup>१</sup>                       | १०३. स्वरितमाग्रेडितेसूयासंमति-           |
| ८९. प्रणवष्टेः <sup>२</sup>                          | कोपकुत्सनेषु                              |
| ९०. याज्यान्तः                                       | १०४. क्षियाशीः प्रैषेषु तिडाकाङ्क्षम्     |
| ९१. ब्रूहिप्रेष्यश्रौषड्वौषडावहानामादेः <sup>३</sup> | १०५. अनन्त्यस्यापि प्रश्नाख्यानयोः        |
| ९२. अग्नीत्प्रेषणे परस्य च                           | १०६. प्लुतावैच इदुतौ                      |
| ९३. विभाषा <sup>४</sup> पृष्टप्रतिवचने हेः           | १०७. एचोऽप्रगृह्यस्यादूराद्धूते           |
| ९४. निगृह्यानुयोगे च                                 | पूर्वस्यार्धस्यादुत्तरस्येदुतौ            |
| ९५. आग्रेडितं भर्त्सने <sup>५</sup>                  | (वा०) प्रश्नान्ताभिपूजितविचार्यमाण-       |
| (वा०) भर्त्सने पर्यायेणेति वक्तव्यम्।                | प्रत्यभिवादनयाज्यान्तेष्वेव।              |
| ९६. अङ्गयुक्तं तिडाकाङ्क्षम्                         | (वा०) पदान्तग्रहणं कर्तव्यम्।             |
| ९७. विचार्यमाणानाम् <sup>६</sup>                     | (वा०) आमन्त्रिते छन्दसि प्लुत-            |
| ९८. पूर्वं तु भाषायाम्                               | विकारोऽयं वक्तव्यः।                       |
| ९९. प्रतिश्रवणे च                                    | १०८. तयोर्व्यावचि संहितायाम् <sup>७</sup> |
| १००. अनुदात्तं <sup>८</sup> प्रश्नान्ताभिपूजितयोः    | (पूर्वत्राचि षढोर्नसत्तैत ईच्चि-          |
| १०१. चिदिति चोपमार्थे प्रयुज्यमाने                   | दित्यष्टौ॥)                               |

इति पाणिनीयसूत्रपाठे अष्टमस्याध्यायस्य द्वितीयः पादः॥



### विमर्श

१-यहाँ से 'यज्ञकर्मणि' की अनुवृत्ति ८।२।९२। तक जाती है। २-इस सूत्र से 'टेः' की अनुवृत्ति ८।२।९०। तक जाती है। ३-'आदेः' की अनुवृत्ति ८।२।९२। तक जायेगी। ४-'विभाषा' की अनुवृत्ति ८।२।९४। तक जायेगी। ५-यहाँ से 'भर्त्सने' की अनुवृत्ति ८।२।९६। तक जाती है। ६-'विचार्यमाणानाम्' की अनुवृत्ति ८।२।९६। जाती है। ७-'अनुदात्तम्' की अनुवृत्ति ८।२।१०२। तक जायेगी। ८-'स्वरितम्' की अनुवृत्ति ८।२।१०५। तक जायेगी। ९-इस सूत्र से 'संहितायाम्' का अधिकार ८।४।६८। तक जाता है।

## तृतीयः पादः

- |                                                                    |                                                                        |
|--------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------|
| १. मतुवसो रु <sup>१</sup> संबुद्धौ छन्दसि<br>(वा०) वन उपसंख्यानम्। | १३. ढो ढे लोपः <sup>६</sup>                                            |
| (वा०) विभाषा भवद्भगवदधवता-<br>मोच्चावस्यछन्दसि भाषायाञ्च           | १४. रो <sup>७</sup> रि                                                 |
| २. अत्रानुनासिकः पूर्वस्य <sup>३</sup> तु वा                       | १५. खरवसानयोर्विसर्जनीयः <sup>४</sup><br>(वा०) (विसर्जनीयोऽनुत्तरपदे)। |
| ३. आतोऽटि नित्यम्                                                  | १६. रोः <sup>९</sup> सुपि                                              |
| ४. अनुनासिकात्परोऽनुस्वारः                                         | १७. भोभगोअघोअपूर्वस्य <sup>१०</sup> योऽशि                              |
| ५. समः सुटि                                                        | १८. व्यो <sup>११</sup> र्लघुप्रयत्नतरः शाकटाय-<br>नस्य                 |
| (वा०) संपुंकानां सो वक्तव्यः।                                      | १९. लोपः <sup>१२</sup> शाकल्यस्य                                       |
| ६. पुमः खय्यम्परे <sup>३</sup>                                     | २०. ओतो गार्ग्यस्य                                                     |
| ७. नश्छव्यप्रशान् <sup>४</sup>                                     | २१. उजि च पदे                                                          |
| ८. उभयथर्क्षु <sup>५</sup>                                         | २२. हलि <sup>१३</sup> सर्वेषाम्                                        |
| ९. दीर्घादटि समानपादे                                              | २३. मोऽनुस्वारः <sup>१४</sup>                                          |
| १०. नृन्पे                                                         | २४. नश्चापदान्तस्य झलि                                                 |
| ११. स्वतवान्पायौ                                                   | २५. मो <sup>१५</sup> राजि समः क्वौ                                     |
| १२. कानाम्प्रेडिते                                                 | २६. हे मपरे वा <sup>१६</sup>                                           |

### विमर्श

१-यहाँ से 'रु' की अनुवृत्ति ८।३।१२। तक जाती है। २-इस सूत्र से आगे जिसको रु विधान करेंगे उससे पूर्व के वर्ण को विकल्प से अनुनासिक आदेश होता है, ऐसा अधिकार इस रुत्व-विधान प्रकरण में ८।३।१२। तक जानना चाहिए। ३-यहाँ से 'अम्परे' की अनुवृत्ति ८।३।८। तक जाती है। ४-यहाँ से 'नः' की अनुवृत्ति ८।३।१२। तक, तथा 'छवि' की ८।३।८। तक जाती है। ५-यहाँ से 'ऋक्षु' की अनुवृत्ति ८।३।९। तक जाती है। ६-'लोपः' की अनुवृत्ति ८।३।१४। तक जायेगी। ७-'रः' की अनुवृत्ति ८।३।१५। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से 'विसर्जनीयः' की अनुवृत्ति ८।३।१६। तक जाती है। ९-इस सूत्र से 'रोः' की अनुवृत्ति ८।३।१७। तक जाती है। १०-यहाँ से 'भोभगोअघोअपूर्वस्य' की अनुवृत्ति ८।३।२२। तक, तथा 'अशि' की ८।३।२०। तक जाती है। ११-'व्योः' की अनुवृत्ति ८।३।२२। तक जायेगी। १२-'लोपः' की अनुवृत्ति ८।३।२२। तक जायेगी। १३-यहाँ से 'हलि' की अनुवृत्ति ८।३।२३। तक जायेगी। १४-यहाँ से 'अनुस्वारः' की अनुवृत्ति ८।३।२४। तक, तथा 'मः' की ८।३।२६। तक जाती है। १५-यहाँ से 'मः' की अनुवृत्ति ८।३।२७। तक जाती है। १६-यहाँ से 'हे' की अनुवृत्ति ८।३।२७। तक तथा 'वा' की ८।३।३१। तक जाती है।



- (वा०) यवलपरे यवला वेति वक्तव्यम्। ४०. नमस्पुरसोर्गत्योः  
 २७. नपरे नः ४१. इदुदुपधस्य चाप्रत्ययस्य  
 २८. ङ्णोः कुक्कुटुक्शरि (वा०) मुहुसः प्रतिषेधः।  
 २९. डः सि धुट् ४२. तिरसोऽन्यतरस्याम्  
 ३०. नश्च ४३. द्विस्त्रिश्चतुरिति कृत्वोऽर्थे  
 ३१. शि तुक् ४४. इसुसोः<sup>१०</sup> सामर्थ्ये  
 ३२. डम्भो ह्रस्वादचि<sup>३</sup>डमुणित्यम् ४५. नित्यं समासेऽनुत्तरपदस्थस्य<sup>११</sup>  
 ३३. मय उजो वो वा ४६. अतः कृकमिकंसकुम्भपात्रकु-  
 ३४. विसर्जनीयस्य<sup>४</sup>सः शाकर्णीष्वनव्ययस्य  
 ३५. शर्परि विसर्जनीयः<sup>५</sup> ४७. अधः शिरसी पदे  
 ३६. वा शरि ४८. कस्कादिषु च  
 (वा०) खर्परि शरि वा विसर्गलोपो २५८. कस्कः कौतस्कुतः भ्रातृष्पुत्रः  
 वक्तव्यः। शुनस्कर्णः सद्यस्कालः सद्यस्क्रीः साद्यस्कः  
 ३७. कुप्वोः<sup>६</sup>कः<sup>७</sup>पौ च कांस्कान् सर्पिष्कुण्डिका धनुष्कपालम्  
 ३८. सोऽपदादौ<sup>८</sup> बहिष्पलम् (वर्हिष्पलम्) यजुष्पात्रम्  
 (वा०) पाशकल्पककाम्येष्विति अयस्कान्तः तमस्काण्डः अयस्काण्डः  
 वाच्यम्। भेदस्पिण्डः भास्करः अहस्करः॥ इति  
 (वा०) अनव्ययस्येति वाच्यम्। कस्कादिः॥ आकृतिगणः॥  
 (वा०) काम्ये रोरेवेति वाच्यम्। ४९. छन्दसि<sup>१२</sup> वाप्राप्तेडितयोः  
 ३९. इणः षः<sup>९</sup> ५०. कः करत्करतिकृधिकृतेष्वनदितेः  
 ५१. पञ्चम्याः<sup>१३</sup> परावध्यर्थे

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'सि धुट्' की अनुवृत्ति ८।३।३०। तक जाती है। २-'न' की अनुवृत्ति ८।३।३१। तक जायेगी। ३-'अचि' की अनुवृत्ति ८।३।३३। तक जायेगी। ४-इस सूत्र से 'विसर्जनीयस्य' की अनुवृत्ति ८।३।५४। तक जाती है। ५-यहाँ से 'विसर्जनीयः' की अनुवृत्ति ८।३।३७। तक जाती है। ६-यहाँ से 'कुप्वोः' की अनुवृत्ति ८।३।४९। तक जाती है। ७-इस सूत्र से 'सः' की अनुवृत्ति ८।३।५४। तक, तथा 'अपदादौ' की ८।३।३९। तक जाती है। ८-'षः' की अनुवृत्ति ८।३।४८। तक जायेगी। ९-'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ८।३।४४। तक जायेगी। १०-इस सूत्र से 'इसुसोः' की अनुवृत्ति ८।३।४५। तक जाती है। ११-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ८।३।४७। तक जाती है। १२-यहाँ से 'छन्दसि' की अनुवृत्ति ८।३।५४। तक जाती है। १३-'पञ्चम्याः' की अनुवृत्ति ८।३।५२। तक जायेगी।

|                                                                                                |                                                                    |
|------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------|
| ५२. पातौ च बहुलम्                                                                              | ६८. अवा <sup>११</sup> च्चालम्बनाविदूर्ययोः                         |
| ५३. षष्ठ्याः पतिपुत्रपृष्ठपारपद-<br>पयस्पोषेषु <sup>३</sup>                                    | ६९. वेश्व स्वनो भोजने                                              |
| ५४. इडाया वा                                                                                   | ७०. परिनिविभ्यः <sup>१२</sup> सेवसितसय-<br>सिवुसहसुट्स्तुस्वञ्जाम् |
| ५५. अपदान्तस्य मूर्धन्यः <sup>३</sup>                                                          | ७१. सिवादीनां वा <sup>१३</sup> ऽड्व्यवायेऽपि                       |
| ५६. सहेः साडः सः <sup>३</sup>                                                                  | ७२. अनुपर्याभिनिविभ्यः स्यन्दतेरप्राणिषु                           |
| ५७. इणकोः <sup>४</sup>                                                                         | ७३. वेः स्कन्दे <sup>१४</sup> रनिष्ठायाम्                          |
| ५८. नुम्बिसर्जनीयशर्व्यवायेऽपि <sup>५</sup>                                                    | ७४. परेश्व                                                         |
| ५९. आदेशप्रत्यययोः                                                                             | ७५. परिस्कन्दः प्राच्यभरतेषु                                       |
| ६०. शासिवसिघसीनां च                                                                            | ७६. स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निविभ्यः                                 |
| ६१. स्तौतिण्योरेव षण्यभ्यासात् <sup>६</sup>                                                    | ७७. वेः स्कन्नातेर्नित्यम्                                         |
| ६२. सः स्वदिस्वदिसहीनां च                                                                      | ७८. इणः षीध्वंलुङ्लिटं धो <sup>१५</sup> ऽङ्गात्                    |
| ६३. प्राक्सितादड्व्यवायेऽपि <sup>७</sup>                                                       | ७९. विभाषेतः                                                       |
| ६४. स्थादिष्वभ्यासेन चाभ्यासस्य <sup>८</sup>                                                   | ८०. समासे <sup>१६</sup> ऽङ्गुलेः सङ्गः                             |
| ६५. उपसर्गात् <sup>९</sup> त्सुनोतिसुवतिस्यति-<br>स्तौतिस्तोभतिस्थासेनयसेधसिच<br>सञ्जस्वञ्जाम् | ८१. भीरोः स्थानम्                                                  |
| ६६. सदिरप्रतेः                                                                                 | ८२. अग्नेः स्तुत्स्तोमसोमाः                                        |
| ६७. स्तन्भेः <sup>१०</sup>                                                                     | ८३. ज्योतिरायुषः स्तोमः                                            |
|                                                                                                | ८४. मातृपितृभ्यां स्वसा <sup>१७</sup>                              |
|                                                                                                | ८५. मातुः पितुर्भ्यामन्यतरस्याम् <sup>१८</sup>                     |

### विमर्श

१-इस अंशेष सूत्र की अनुवृत्ति ८।३।५४। तक जाती है। २-इस सूत्र का अधिकार पादसमाप्तिपर्यन्त अर्थात् ८।३।११९। तक जाता है। ३-'सः' की अनुवृत्ति ८।३।११९। तक जायेगी। ४-इस सूत्र का भी अधिकार पादसमाप्तिपर्यन्त अर्थात् ८।३।११९। तक समझना चाहिए। ५-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ८।३।५९। तक जाती है। ६-यहाँ से 'णेः षण्यभ्यासात्' की अनुवृत्ति ८।३।६२। तक जाती है। ७-यहाँ से 'अड्व्यवायेऽपि' की अनुवृत्ति ८।३।७०। तक जाती है। ८-इस अंशेष सूत्र की अनुवृत्ति ८।३।७०। तक जाती है। ९-'उपसर्गात्' की अनुवृत्ति ८।३।७७। तक जायेगी। १०-यहाँ से 'स्तन्भेः' की अनुवृत्ति ८।३।६८। तक जाती है। ११-यहाँ से 'अवात्' की अनुवृत्ति ८।३।६९। तक जाती है। १२-'परिनिविभ्यः' की अनुवृत्ति ८।३।७१। तक जाती है। १३-'वा' की अनुवृत्ति ८।३।७६। तक जायेगी। १४-यहाँ से 'स्कन्देः' की अनुवृत्ति ८।३।७४। तक जाती है। १५-इस सूत्र से 'इणः षीध्वंलुङ्लिटाम् घः' की अनुवृत्ति ८।३।७९। तक जाती है। १६-यहाँ से 'समासे' की अनुवृत्ति ८।३।८५। तक जाती है। १७-'स्वसा' की अनुवृत्ति ८।३।८५। तक जायेगी। १८-यहाँ से 'अन्यतरस्याम्' की अनुवृत्ति ८।३।८६। तक जाती है।



|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| ८६. अभिनिसः स्तनः शब्दसंज्ञायाम्                                                                                                                                                                                                                                                                                            | १००. नक्षत्राद्वा                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |
| ८७. उपसर्गप्रादुर्भ्यामस्तिर्यच्यगः                                                                                                                                                                                                                                                                                         | १०१. ह्रस्वात्तादौ <sup>३</sup> तद्धिते                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |
| ८८. सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः                                                                                                                                                                                                                                                                                           | १०२. निसस्तपतावनासेवने                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               |
| ८९. निनदीभ्यां स्नातेः कौशले                                                                                                                                                                                                                                                                                                | १०३. युष्मत्तत्तक्षुष्व <sup>४</sup> न्तःपादम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       |
| ९०. सूत्रं प्रतिष्ठातम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | १०४. यजुष्येकेषाम् <sup>५</sup>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      |
| ९१. कपिष्ठलो गोत्रे                                                                                                                                                                                                                                                                                                         | १०५. स्तुतस्तोमयोश्छन्दसि <sup>६</sup>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               |
| ९२. प्रष्ठोऽग्रगामिनि                                                                                                                                                                                                                                                                                                       | १०६. पूर्वपदात् <sup>७</sup>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |
| ९३. वृक्षासनयोर्विष्टरः <sup>१</sup>                                                                                                                                                                                                                                                                                        | १०७. सुजः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            |
| ९४. छन्दोनाम्नि च                                                                                                                                                                                                                                                                                                           | १०८. सनोतेरनः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        |
| ९५. गवियुधिभ्यां स्थिरः                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | १०९. सहेः पृतनर्ताभ्यां च                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            |
| ९६. विकुशमिपरिभ्यः स्थलम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                   | ११०. न <sup>२</sup> परसृपिसृजिसृशिस्पृहिस-<br>वनादीनाम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |
| ९७. अम्बाम्बगोभूमिसव्येऽपद्वित्रिकु-<br>शेकुशड्वक्वङ्गमञ्जिपुञ्जिपरमेबर्हि-<br>दिव्यग्निभ्यः स्थः                                                                                                                                                                                                                           | २६०. सवने सवने। सूते सूते। सोमे<br>सोमे। सवनमुखे सवनमुखे। किंसं किंसम्<br>(किंसं किंसः)। अनुसवनम् अनुसवनम्।<br>गोसनिं गोसनिम्। अश्वसनिं अश्वसनिम्।।<br>पाठान्तरम्।। सवने सवने सवनमुखे<br>सवनमुखे। अनुसवनमनुसवनम्। संज्ञायां<br>बृहस्पतिसवः।। शकुनिसवनम्। सोमे सोमे।<br>सुते सुते। संवत्सरे संवत्सरे। विसं विसम्।<br>किंसं किंसम्। मुसलं मुसलम्। गोसनिम्<br>अश्वसनिम्।। इति सवनादिः।। |
| (वा०) स्थास्थिन्स्थृणामिति वक्तव्यम्                                                                                                                                                                                                                                                                                        | १११. सात्पदाद्योः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |
| ९८. सुषामादिषु च                                                                                                                                                                                                                                                                                                            | ११२. सिचो यङि                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        |
| २५९. सुषामा निःषामा दुःषामा सुषेधः निषेधः<br>(निःषेधः) दुःषेधः सुषन्धिः निःषन्धि दुःषन्धि<br>सुष्ठु दुष्ठु 'गौरिषक्थः संज्ञायाम्' १८१।<br>प्रतिष्ठाका जलाषाहम् (जलाषाडम्) नौषेचनम्<br>दुन्दुभिषेवणम् (दुन्दुभिषेचनम्) 'एति<br>संज्ञायामगात्' १८२। 'नक्षत्राद्वा' १८३।<br>हरिषेणः रोहिणीषेणः।। इति सुषामादिः।।<br>आकृतिगणः।। | ११३. सेधतेर्गताौ                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     |
| ९९. एति संज्ञायामगात् <sup>३</sup>                                                                                                                                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      |

### विमर्श

१-इस सूत्र से 'विष्टरः' की अनुवृत्ति ८।३।९४। तक जाती है। २-इस अशेष सूत्र की अनुवृत्ति ८।३।१००। तक जाती है। ३-यहाँ से 'तादौ' की अनुवृत्ति ८।३।१०४। तक जाती है। ४-यहाँ से 'युष्मत्तत्तक्षुषु' की अनुवृत्ति ८।३।१०४। तक जायेगी। ५-'एकेषाम्' की अनुवृत्ति ८।३।१०६। तक जायेगी। ६-'छन्दसि' की अनुवृत्ति ८।३।१०९। तक जायेगी। ७-यहाँ से 'पूर्वपदात्' की अनुवृत्ति ८।३।१०९। तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'नः' की अनुवृत्ति ८।३।११९। तक जाती है।

११४. प्रतिस्तब्धनिस्तब्धौ च

(वा०) स्वञ्जेषुपसंख्यानम्।

११५. सोढः

११९. निव्यभिभ्योऽङ्ववाये वा

११६. स्तम्भुसिवुसहां चडिः

छन्दसि

११७. सुनोतेः स्यसनोः

(मतुवसोरुजि चेदुदुपधस्य स्तौ-

११८. सदेः परस्य लिटि

तिण्योर्भीरोर्हस्वात्तादावेकोनविंशतिः॥)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे अष्टमस्याध्यायस्य तृतीयः पादः॥





## चतुर्थः पादः

१. रषाभ्यां नो णः समानपदे<sup>१</sup> तूर्यमान माषेन आर्गयन॥ इति गिरिनद्यादिः॥  
 (वा०) ऋवर्णीत्रस्य णत्वं वाच्यम्। आकृतिगणः॥
२. अटकुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि<sup>२</sup> ११. प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु<sup>३</sup> च  
 ३. पूर्वपदात्संज्ञायामगः<sup>३</sup> (वा०) युवादेर्न।
४. वनं<sup>४</sup> पुरगामिश्रकासिध्रकाशा- २६३. (वा ४९९९)। युवन् पक्व अहन्॥  
 रिकाकोटराग्रेभ्यः इति युवादिः। (आर्ययूना क्षत्रिययूना प्रपक्वानि  
 ५. प्रनिरन्तःशरेक्षुप्लक्षाम्रकार्थ- परिपक्वानि दीर्घाही) आकृतिगणोयम्।  
 खदिरपीयूक्षाभ्योऽसंज्ञायामपि १२. एकाजुत्तरपदे णः
६. विभाषौषधिवनस्पतिभ्यः १३. कुमति च  
 (वा०) द्व्यच्त्र्यज्यामेव। १४. उपसर्गाद<sup>५</sup> समासेऽपि णोपदेशस्य
- (वा०) इरिकादिभ्यः प्रतिषेधो वक्तव्यः। १५. हिनुमीना  
 २६१. (वा ४९७६)। इरिका मिरिका तिमिरा। १६. आनि लोट्
- इतीरिकादिः॥ आकृतिगणः॥ १७. ने<sup>६</sup> र्गदनदपतपदधुमास्यतिहन्ति-  
 ७. अहोऽदन्तात् तिवातिद्रातिप्सातिवपतिवहतिशाम्य-  
 ८. वाहनमाहितात् तिचिनोतिदेग्धिषु च
९. पानं<sup>७</sup> देशे १८. शेषे विभाषाऽकखादावधान्त  
 १०. वा<sup>८</sup> भारकरणयोः उपदेशे
- (वा०) गिरिनद्यादीनां वा। १९. अनितेः<sup>९</sup>  
 २६२. (वा ४९८०)। गिरिनदी गिरिनख २०. अन्तः  
 गिरिनद्ध गिरिनितम्ब चक्रनदी चक्रनितम्ब २१. उभौ साभ्यासस्य

## विमर्श

१-इस सूत्र से 'रषाभ्यां नो णः' की अनुवृत्ति ८।४।३९। तक जाती है। २-इस निखिल सूत्र की अनुवृत्ति ८।४।३९। तक जाती है। ३-यहाँ से 'पूर्वपदात्' की अनुवृत्ति ८।४।३३। तक, तथा 'संज्ञायाम्' की ८।४।४। तक जाती है। ४-'वनम्' की अनुवृत्ति ८।४।६। तक जायेगी। ५-'पानम्' की अनुवृत्ति ८।४।१०। तक जाती है। ६-यहाँ से 'वा' की अनुवृत्ति ८।४।११। तक जाती है। ७-इस सूत्र से 'प्रातिपदिकान्तनुम्विभक्तिषु' की अनुवृत्ति ८।४।१३। तक जाती है। ८-इस सूत्र से 'उपसर्गात्' की अनुवृत्ति ८।४।२३। तक जाती है। ९-यहाँ से 'नेः' की अनुवृत्ति ८।४।१८। तक जाती है। १०-'अनितेः' की अनुवृत्ति ८।४।२१। तक जाती है।

२२. हन्तेरत्पूर्वस्य<sup>१</sup>  
 २३. वमोर्वा  
 २४. अन्तरदेशे<sup>२</sup>  
 २५. अयनं च  
 २६. छन्दस्य<sup>३</sup>दवग्रहात्  
 २७. नश्च<sup>४</sup>धातुस्थोरुषुभ्यः  
 २८. उपसर्गा<sup>५</sup>दनोत्परः  
 २९. कृत्यचः<sup>६</sup>

(वा०) निर्विण्णस्योपसंख्यानम्।

३०. णेर्विभाषा<sup>७</sup>  
 ३१. हल<sup>८</sup>श्चेजुपधात्  
 ३२. इजादेः सनुमः  
 ३३. वा निंसनिक्षनिन्दाम्  
 ३४. न<sup>९</sup> भाभूपूकमिगमिप्यायीवेपाम्  
 (वा०) पूज एवेह ग्रहणमिष्यते।  
 (वा०) ण्यन्तभादीनामुपसंख्यानम्।  
 ३५. षात्पदान्तात्  
 ३६. नशेः षान्तस्य  
 ३७. पदान्तस्य  
 ३८. पदव्यवायेऽपि  
 (वा०) अतद्धित इति वाच्यम्।  
 ३९. क्षुभ्नादिषु च

२६४. क्षुभ्ना नृनमन नन्दिन् नन्दन  
 नगर। एतान्युत्तरपदानि संज्ञायां प्रयोजयन्ति।  
 हरिनन्दी हरिनन्दनः गिरिनगरम्। नृतिर्यङि  
 प्रयोजयति। नरीनृत्यते। नर्तन गहन नन्दन  
 निवेश निवास अग्नि अनूप। एतान्युत्तरपदानि  
 प्रयोजयन्ति। परिनर्तनम् परिगहनम् परिनन्दनम्  
 शरनिवेशः शरनिवासः शराग्निः दर्भानूपः।  
 'आचार्यादणत्वं च' १८४। आचार्यभोगीनः।  
 आकृतिगणोऽयम्।। पाठान्तरम्।। क्षुभ्ना तृप्नु  
 नृनमन नरनगर नन्दन। यङ्नुती। गिरिनदी  
 गृहगमन निवेश निवास अग्नि अनूप आचार्य-  
 भोगीन चतुर्हायन। 'इरिकादीनि वनोत्तरपदानि  
 संज्ञायाम्' १८५। इरिका तिमिर समीर  
 कुबेर हरि कर्मार।। इति क्षुभ्नादिः।।

इति श्रीपाणिनिमुनिप्रणीतो

गणपाठः समाप्तः।।

(वा०) अग्रग्रामाभ्यां नयतेणो वाच्यः।

४०. स्तोः<sup>१०</sup> शुना शुः

(वा०) श्रुत्वं धुटि सिद्धं वाच्यम्।

४१. षुना षुः<sup>११</sup>

४२. न<sup>१२</sup> पदान्ताद्वोरनाम्

(वा०) अनाम्नवतिनगरीणामिति

वक्तव्यम्।

### विमर्श

१-इस अशेष सूत्र की अनुवृत्ति ८।४।२३। तक जाती है। २-इस सूत्र की अनुवृत्ति ८।४।२५। तक जायेगी। ३-यहाँ से 'छन्दसि' की अनुवृत्ति ८।४।२७। तक जाती है। ४-'नः' की अनुवृत्ति ८।४।२८। तक जायेगी। ५-'उपसर्गात्' की अनुवृत्ति ८।४।३४। तक जायेगी। ६-यहाँ से 'कृत्यचः' की अनुवृत्ति ८।४।३३। तक जाती है। ७-'विभाषा' की अनुवृत्ति ८।४।३१। तक जायेगी। ८-'हलः' की अनुवृत्ति ८।४।३२। तक जायेगी। ९-यहाँ से 'न' की अनुवृत्ति ८।४।३९। तक जाती है। १०-यहाँ से 'स्तोः' की अनुवृत्ति ८।४।४२। तक जाती है। ११-'षुः' की अनुवृत्ति ८।४।४२। तक जायेगी। १२-इस सूत्र से 'न' की अनुवृत्ति ८।४।४४। तक जाती है।



४३. तोः<sup>१</sup> षि  
 ४४. शात्  
 ४५. यरो<sup>२</sup> ऽनुनासिके ऽनुनासिको वा  
 (वा०) प्रत्यये भाषायां नित्यम्।  
 ४६. अचो रहाभ्यां द्वे<sup>३</sup>  
 ४७. अनचि च  
 (वा०) यणो मयो द्वे वाच्ये।  
 ४८. नादि<sup>४</sup> न्याक्रोशे पुत्रस्य  
 (वा०) तत्परे च।  
 (वा०) वा हतजग्धयोः।  
 (वा०) चयो द्वितीयाः शरि पौष्कर-  
 सादेरिति वाच्यम्।  
 ४९. शरोऽचि  
 ५०. त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य  
 ५१. सर्वत्र शाकल्यस्य  
 ५२. दीर्घादाचार्याणाम्  
 ५३. झलां<sup>५</sup> जश्झशि  
 ५४. अभ्यासे चर्च<sup>६</sup>  
 ५५. खरि च  
 ५६. वाऽवसाने<sup>७</sup>  
 ५७. अणोऽप्रगृह्यस्यानुनासिकः  
 ५८. अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः<sup>८</sup>  
 ५९. वा पदान्तस्य  
 ६०. तोर्लि  
 ६१. उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य<sup>९</sup>  
 ६२. झयो होऽन्यतरस्याम्<sup>१०</sup>  
 ६३. शश्छोऽटि  
 (वा०) छत्वममीति वाच्यम्।  
 ६४. हलो यमां यमि लोपः<sup>११</sup>  
 ६५. झरो झरि सवर्णे  
 ६६. उदात्तादनुदात्तस्य<sup>१२</sup> स्वरितः  
 ६७. नोदात्तस्वरितोदयमगार्ग्यकाश्यप-  
 गालवानाम्  
 ६८. अ अ  
 (रषाभ्यामुभौ घुना घुरुदः स्थाष्टौ॥)

इति पाणिनीयसूत्रपाठे अष्टमस्याध्यायस्य चतुर्थः पादः अध्यायश्च।



### विमर्श

१-‘तोः’ की अनुवृत्ति ८।४।४४। तक जायेगी। २-इस सूत्र से ‘यरो वा’ की अनुवृत्ति ८।४।४७। तक जाती है। ३-यहाँ से ‘अचः’ की अनुवृत्ति ८।४।४७। तक, तथा ‘द्वे’ की अनुवृत्ति ८।४।५२। तक जाती है। ४-यहाँ से ‘न’ की अनुवृत्ति ८।४।५२। तक जायेगी। ५-इस सूत्र से ‘झलाम्’ की अनुवृत्ति ८।४।५६। तक, तथा ‘जश्’ की अनुवृत्ति ८।४।५४। तक जाती है। ६-यहाँ से ‘चर्’ की अनुवृत्ति ८।४।५६। तक जाती है। ७-‘वाऽवसाने’ की अनुवृत्ति ८।४।५७। तक जायेगी। ८-इस सूत्र से ‘अनुस्वारस्य ययि’ की अनुवृत्ति ८।४।५९। तक, तथा ‘पर’ की अनुवृत्ति ८।४।६०। तक एवं ‘सवर्णः’ की ८।४।६२। तक जाती है। ९-‘पूर्वस्य’ की अनुवृत्ति ८।४।६२। तक जायेगी। १०-इस सूत्र से ‘झयः’ की अनुवृत्ति ८।४।६३। तक, तथा ‘अन्यतरस्याम्’ की ८।४।६५। तक जाती है। ११-यहाँ से ‘हलः लोपः’ की अनुवृत्ति ८।४।६५। तक जाती है। १२-इस सूत्र से ‘अनुदात्तस्य स्वरितः’ की अनुवृत्ति ८।४।६७। तक जायेगी।

## अथ पाणिनीयो धातुपाठः

### भ्वादयः

१-भू सत्तायाम्। उदात्तः परस्मैभाषः॥ अथ षट्त्रिंशत्तवर्गीयान्ता आत्मनेपदिनः॥  
२-एथ वृद्धौ। ३-स्पर्ध संघर्षे। ४-गाधृ प्रतिष्ठालिप्सयोर्ग्रन्थे च। ५-बाधृ लोडने। ६-नाथृ। ७-नाधृ, याच्चोपतापैश्वर्याशीःषु। ८-दध धारणे। ९-  
स्कृदि आप्रवणे। १०-श्विदि श्वैत्ये। ११-वदि अभिवादनस्तुत्योः। १२-  
भदि कल्याणे सुखे च। १३-मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु। १४-  
स्पदि किञ्चित्चलने। १५-क्लिदि परिदेवने। १६-मुद हर्षे। १७-दद दाने।  
१८-ष्वद, १९-स्वर्द आस्वादने। २०-उर्द माने क्रीडायां च। २१-कुर्द,  
२२-खुर्द, २३-गुर्द, २४-गुद क्रीडायामेव। २५-षूद क्षरणे। २६-ह्राद  
अव्यक्ते शब्दे। २७-ह्रादी सुखे च। २८-स्वाद आस्वादने। २९-पर्द  
कुत्सिते शब्दे। ३०-यती प्रयत्ने। ३१-युतृ, ३२-जुतृ भासने। ३३-  
विथृ, ३४-वेथृ याचने। ३५-श्रथि शैथिल्ये। ३६-ग्रथि कौटिल्ये। ३७-  
कथ्य श्लाघायाम्। एधादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः॥ अथाष्ट-  
त्रिंशत्तवर्गीयान्ताः परस्मैपदिनः॥ ३८-अत सातत्यगमने। ३९-चिती संज्ञाने।  
४०-च्युतिर् आसेचने। ४१-श्च्युतिर् (श्चुतिर्) क्षरणे। ४२-मन्थ विलोडने।  
४३-कुथि, ४४-पुथि, ४५-लुथि, ४६-मथि हिंसासंक्लेशनयोः। ४७-  
षिध गत्याम्। ४८-षिधु शास्त्रे माङ्गल्ये च। ४९-खादृ भक्षणो। ५०-खद  
स्थैर्ये हिंसायां च। ५१-वद स्थैर्ये। ५२-गद व्यक्तायां वाचि। ५३-रद  
विलेखने। ५४-णद अव्यक्ते शब्दे। ५५-अर्द गतौ याचने च। ५६-नर्द,  
५७-गर्द शब्दे। ५८-तर्द हिंसायाम्। ५९-कर्द कुत्सिते शब्दे ६०-खर्द  
दन्दशूके। ६१-अति, ६२-अदि बन्धने। ६३-इदि परमैश्वर्ये। ६४-बिदि  
अवयवे, भिदि इत्येके॥ ६५-गडि वदनैकदेशे। ६६-णिदि कुत्सायाम्।  
६७-टु नदि समृद्धौ। ६८-चदि आह्लादे। दीप्तौ च। ६९-त्रदि चेष्टायाम्।  
७०-कदि, ७१-क्रदि, ७२-क्लदि आह्वाने रोदने च। ७३-क्लिदि परिदेवने।



७४-शुन्ध शुद्धौ॥ अतादय उदात्ताः उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ अथ कवर्गीयान्ता  
 आत्मनेपदिनो द्विचत्वारिंशत्॥ ७५-शीकृ<sup>१</sup> सेचने। ७६-लोकृ दर्शने। ७७-  
 श्लोकृ संघाते। ७८-द्रेकृ, ७९-ध्रेकृ शब्दोत्साहयोः। ८०-रेकृ शङ्कायाम्।  
 ८१-सेकृ, ८२-सेकृ, ८३-स्रकि, ८४-श्रकि, ८५-श्लकि गतौ। ८६-  
 शकि शङ्कायाम्। ८७-अकि लक्षणे। ८८-वकि कौटिल्ये। ८९-मकि  
 मण्डने। ९०-कक लौल्ये। ९१-कुक, ९२-वृक आदाने। ९३-चक तृप्तौ  
 प्रतिघाते च। ९४-ककि, ९५-वकि, ९६-श्वकि, ९७-त्रकि, ९८-ढौकृ,  
 ९९-त्रौकृ, १००-ष्वक्क<sup>२</sup>, १०१-वस्क, १०२-मस्क, १०३-टकृ,  
 १०४-टीकृ, १०५-तिकृ, १०६-तीकृ, १०७-रधि, १०८-लधि  
 गत्यर्थाः॥ तृतीयो दन्त्यादिरित्येके॥ लधि भोजननिवृत्तावपि॥ १०९-  
 अधि, ११०-वधि, १११-मधि गत्याक्षेपे। गतौ गत्यारम्भे चेत्यपरे। मधि  
 कैतवे च॥ ११२-राघृ, ११३-लाघृ, ११४-द्राघृ सामर्थ्ये॥ ध्राघृ इत्यपि  
 केचित्। दाघृ आयामे च॥ ११५-श्लाघृ कथने॥ शीक्रादय उदात्ता  
 अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः॥ अथ कवर्गीयान्ताः परस्मैपदिनः पञ्चाशत्। ११६-  
 फक्क नीचैर्गतौ। ११७-तक हसने। ११८-तकि कृच्छ्रजीवने। (शुक  
 गतौ)। ११९-बुक्क भषणे। १२०-कख हसने। १२१-ओखृ, १२२-  
 राखृ, १२३-लाखृ, १२४-द्राखृ, १२५-ध्राखृ शोषणालमर्थयोः। १२६-  
 शाखृ, १२७-श्लाखृ व्याप्तौ, १२८-उख, १२९-उखि, १३०-वख,  
 १३१-वखि, १३२-मख, १३३-मखि, १३४-णख, १३५-णखि,  
 १३६-रख, १३७-रखि, १३८-लख, १३९-लखि, १४०-इख, १४१-  
 इखि, १४२-ईखि, १४३-वल्ग, १४४-रगि, १४५-लगि, १४६-  
 अगि, १४७-वगि, १४८-मगि, १४९-तगि, १५०-त्वगि, १५१-  
 श्रगि, १५२-श्लगि, १५३-इगि, १५४-रगि, १५५-लगि गत्यर्थाः॥  
 रिख (रिखि लिख लिखि) त्रख त्रिखि शिखि इत्यपि केचित्। त्वगि कम्पने  
 च॥ १५६-युगि, १५७-जुगि, १५८-बुगि वर्जने। १५९-घघ हसने।  
 (दधि पालने। लधि शोषणे)। १६०-मधि मण्डने। १६१-शिधि आघ्राणे।  
 (अर्घ मूल्ये)॥ फक्कादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ अथ चवर्गीयान्ता  
 आत्मनेपदिनः एकविंशतिः॥ १६२-वर्च दीप्तौ। १६३-षच सेचने सेवने

१-‘सीकृ’ इति पाठान्तरम्।

२-‘ष्वक्क’ इति पाठान्तरम्।



च। १६४-लोचृ दर्शने। १६५-शच व्यक्तायां वाचि। १६६-श्च, १६७-श्चचि गतौ। (शचि च) १६८-कच बन्धने। १६९-कचि, १७०-काचि दीप्तिबन्धनयोः। १७१-मच, १७२-मुचि कल्कने। कथन इत्यन्ये।। १७३-मचि धारणोच्छ्रायपूजनेषु। १७४-पचि व्यक्तीकरणे। १७५-ष्टुच प्रसादे। १७६-ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु। १७७-ऋजि, १७८-भृजी भर्जने। १७९-एजृ, १८०-भ्रेजृ, १८१-भ्राजृ दीप्तौ। १८२-ईज गतिकुत्सनयोः।। वर्चादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः।। अथ चवर्गीयान्ता व्रज्यन्ताः परस्मैपदिनो द्विसप्ततिः।। १८३-शुच शोके। १८४-कुच शब्दे तारे। १८५-कुन्च, १८६-क्रुन्च कौटिल्याल्पीभावयोः। १८७-लुन्च अपनयने। १८८-अन्चु गतिपूजनयोः। १८९-बन्चु, १९०-चन्चु, १९१-तन्चु, १९२-त्वन्चु, १९३-मुन्चु, १९४-म्लुन्चु, १९५-म्रुचु, १९६-म्लुचु गत्यर्थाः। १९७-युचु, १९८-ग्लुचु, १९९-कुजु, २००-खुजु स्तेयकरणे। २०१-ग्लुन्चु, २०२-षस्ज गतौ। (षस्जिरात्मनेपद्यपि)। २०३-गुजि अव्यक्ते शब्दे। २०४-अर्च पूजायाम्। २०५-म्लेच्छ अव्यक्ते शब्दे। २०६-लछ, २०७-लाछि लक्षणे। २०८-वाछि इच्छायाम्। २०९-आछि आयामे। २१०-ह्रीच्छ लज्जायाम्। २११-हुर्छ कौटिल्ये। २१२-मुर्छ मोहसमुच्छ्राययोः। २१३-स्फूर्छा विस्तृतौ। २१४-युच्छ प्रमादे। २१५-उछि उच्छे। २१६-उछी विवासे। २१७-ध्रज, २१८-ध्रजि, २१९-धृज, २२०-धृजि, २२१-ध्वज, २२२-ध्वजि गतौ। (ध्रिज च)। २२३-कूज अव्यक्ते शब्दे। २२४-अर्ज, २२५-षर्ज अर्जने। २२६-गर्ज शब्दे। २२७-तर्ज भर्त्सने। २२८-कर्ज व्यथने। २२९-खर्ज पूजने च। २३०-अज गतिक्षेपणयोः। २३१-तेज पालने। २३२-खज मन्थे। (कज मद इत्येके)। २३३-खजि गतिवैकल्ये। २३४-एजृ कम्पने। २३५-टुओ-स्फूर्जा वज्रनिर्घोषे। २३६-क्षि क्षये। २३७-क्षिज अव्यक्ते शब्दे। २३८-लज, २३९-लजि भर्त्सने। २४०-लाज। २४१-लाजि भर्जने च। २४२-जज, २४३-जजि युद्धे। २४४-तुज हिंसायाम्। २४५-तुजि पालने। २४६-गज, २४७-गजि, २४८-गृज, २४९-गृजि, २५०-मुज, २५१-मुजि शब्दार्थाः। गज मदने च। २५२-वज, २५३-व्रज गतौ। शुचादय उदात्ता उदात्तेतः (क्षिवर्ज) परस्मैभाषाः।। अथ टवर्गीयान्ताः शाड्रन्ता आत्मनेपदिनः षट्त्रिंशत्।। २५४-अट्ट अतिक्रमहिंसयोः। २५५-वेष्ट



वेष्टने। २५६- चेष्ट चेष्टायाम्। २५७-गोष्ट, २५८-लोष्ट संघाते। २५९-  
 घट्ट चलने। २६०-स्फुट विकसने। २६१-अठि गतौ। २६१-वठि  
 एकचर्यायाम्। २६२-मठि, २६४-कठि शोके। २६५-मुठि पालने। २६६-  
 हेठ विबाधायाम्। २६७-एठ च। २६८-हिडि गत्यनादरयोः। २६९-हुडि  
 संघाते। २७०-कुडि दाहे। २७१-वडि विभाजने। २७२-मडि च। २७३-  
 भडि परिभाषणे। २७४-पिडि संघाते। २७५-मुडि मार्जने। २७६-तुडि  
 तोडने। २७७-हुडि वरणे। हरण इत्येके। (स्फुडि विकसने)। २७८-चडि  
 कोपे। २७९-शडि रुजायां सङ्घाते च। २८०-तडि ताडने। २८१-पडि  
 गतौ। २८२-कडि मदे। २८३-खडि मन्थे। २८४-हेडू, २८५-होडू  
 अनादरे। २८६-बाडू आप्लाव्ये। २८७-द्राडू, २८८-ध्राडू विशरणे।  
 २८९-शाडू श्लाघायाम्।। अट्टादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः।। अथ  
 आ टवर्गीयान्तसमाप्तेः परस्मैपदिनः।। २९०-शौटू गर्वे। २९१-यौटू  
 बन्धे। २९२-म्लेटू, २९३-म्रेडू उन्मादे। २९४-कटे वर्षाविरणयोः।। चटे  
 इत्येके। २९५-अट, २९६-पट गतौ। २९७-रट परिभाषणे। २९८-  
 लट बाल्ये। २९९-शट रुजाविशरणगत्यवसादनेषु। ३००-वट वेष्टने।  
 ३०१-किट, ३०२-खिट त्रासे। ३०३-शिट, ३०४-षिट अनादरे। ३०५-  
 जट, ३०६-झट संघाते। ३०७-भट भृतौ। ३०८-तट उच्छ्राये। ३०९-  
 खट काङ्क्षायाम्। ३१०-णट नृत्तौ। ३११-पिट शब्दसंघातयोः। ३१२-  
 हट दीप्तौ। ३१३-षट अवयवे। ३१४-लुट विलोडने। डान्तोऽयमित्येके।  
 ३१५-चिट परप्रेष्ये। ३१६-विट शब्दे। ३१७-बिट आक्रोशे। हिट  
 इत्येके।। ३१८-इट, ३१९-किट, ३२०-कटी गतौ। ३२१-मडि भूषायाम्।  
 ३२२-कुडि वैकल्ये। कुटीत्येके। ३२३-मुड, ३२४-प्रुड मर्दने। ३२५-  
 चुडि अल्पीभावे। ३२६-मुडि खण्डने। पुडि चेत्येके।। ३२७-रुटि, ३२८-  
 लुटि स्तेये। रुठि लुठि इत्येके। रुडि लुडि इत्यपरे।। ३२९-स्फुटिर्  
 विशरणे।। स्फुटि इत्यपि केचित्।। ३३०-पठ व्यक्तायां वाचि। ३३१-  
 वठ स्थौल्ये। ३३२-मठ मदनिवासयोः। ३३३-कठ कृच्छ्रजीवने। ३३४-  
 रट परिभाषणे। रठ इत्येके।। ३३५-हठ प्लुतिशठत्वयोः।। बलात्कार  
 इत्यन्ये।। ३३६-रुठ, ३३७- लुठ, ३३८ उठ उपघाते।। ऊठ इत्येके।।  
 ३३९-पिठ हिंसासंक्लेशनयोः। ३४०-शठ कैतवे च। ३४१-शुठ गति-  
 प्रतिघाते।। शुठि इति स्वामी। ३४२-कुठि च। ३४३-लुठि आलस्ये



प्रतिघाते च। ३४४-शुठि शोषणे। ३४५-रुठि। ३४६-लुठि गतौ। ३४७-  
 चुड्डु भावकरणे। ३४८-अड्डु अभियोगे। ३४९-कड्डु कार्कश्ये।। चुड्डादयस्त्रयो  
 दोषधाः। ३५०-क्रीड् विहारे। ३५१-तुड् तोडने।। तूड् इत्येके।। ३५२-  
 हुड्, ३५३-हूड्, ३५४-होड् गतौ। ३५५-रौड् अनादरे। ३५६-रोड्,  
 ३५७-लोड् उन्मादे। ३५८-अड उद्यमे। ३५९-लड विलासे।। लल  
 इत्येके।। ३६०-कड मदे।। कडि इत्येके।। ३६१-गडि वदनैकदेशे।।  
 शौटादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः।। अथ पवर्गीयान्ता आत्मनेपदिनः  
 स्तोभत्यन्ताश्चतुस्त्रिंशत्।। ३६२-तिपृ, ३६३-तेपृ, ३६४-ष्टिपृ, ३६५-  
 ष्टेपृ क्षरणार्थाः।। आद्योऽनुदात्तः।। तेपृ कम्पने च।। ३६६-ग्लेपृ दैन्ये।  
 ३६७-टु वेपृ कम्पने। ३६८-केपृ, ३६९-गेपृ, ३७०-ग्लेपृ च, ३७१-  
 मेपृ, ३७२-रेपृ, ३७३-लेपृ गतौ। ३७४-त्रपूष् लज्जायाम्। ३७५-कपि  
 चलने। ३७६-रबि, ३७७-लबि, ३७८-अबि शब्दे। ३७९-लबि अवसंसने  
 च। ३८०-कबृ वर्णे। ३८१-क्लीबृ अधाष्ट्ये। ३८२-क्षीबृ मदे। ३८३-  
 शीभृ कथने। ३८४-चीभृ च। ३८५-रेभृ शब्दे।। अभिरभी क्वचित्पठ्येते।।  
 लभि च। ३८६-ष्टभि, ३८७-स्कभि प्रतिबन्धे। ३८८-जभी, ३८९-  
 जृभि गात्रविनामे। ३९०-शल्लभ कथने। ३९१-वल्लभ भोजने। ३९२-  
 गल्लभ धाष्ट्ये। ३९३-श्रन्भु प्रमादे।। दन्त्यादिश्च।। ३९४-ष्टुभु स्तम्भे।।  
 तिप्यादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः।। तिपिस्त्वनुदात्तः।। अथ पवर्गीयान्ताः  
 परस्मैपदिनः एकचत्वारिंशत्।। ३९५-गुपू रक्षणो। ३९६-धूप संतापे।  
 ३९७-जप, ३९८-जल्प व्यक्तायां वाचि। जप मानसे च।। ३९९-चप  
 सान्त्वने। ४००-षप समवाये। ४०१-रप, ४०२-लप व्यक्तायां वाचि।  
 ४०३-चुप मन्दायां गतौ। ४०४-तुप, ४०५-तुन्प। ४०६-त्रुप, ४०७-  
 त्रुन्प, ४०८-तुफ, ४०९-तुन्फ। ४१०-त्रुफ, ४११-त्रुन्फ हिंसार्थाः। ४१२-  
 पर्प, ४१३-रफ, ४१४-रफि, ४१५-अर्ब, ४१६-पर्ब, ४१७-लर्ब, ४१८-  
 बर्ब, ४१९-मर्ब, ४२०-कर्ब, ४२१-खर्ब, ४२२-गर्ब, ४२३-शर्ब, ४२४-  
 षर्ब, ४२५-चर्ब गतौ। ४२६-कुबि आच्छादने। ४२७-लुबि, ४२८-तुबु  
 अर्दने। ४२९-चुबि वक्त्रसंयोगे। ४३०-षृभु, ४३१-षृन्भु हिंसार्थौ। षुभु  
 षिभि इत्येके।। ४३२-शुभ, ४३३-शुन्भ भाषणे। आसन इत्येके।  
 हिंसायामित्यन्ये।। गुपादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः।। अथ अनुनासिकान्ताः  
 कम्प्यन्ताः आत्मनेपदिनो दश।। ४३४-घिणि, ४३५-घुणि, ४३६-घृणि



ग्रहणे। ४३७-घुण, ४३८-घूर्ण भ्रमणे। ४३९-पण व्यवहारे स्तुतौ च। ४४०-पन च। ४४१-भाम क्रोधे। ४४२-क्षमूष् सहने। ४४३-कमु कान्तौ।। घिण्यादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः।। अथ क्रम्यन्ताः परस्मैपदिनः त्रिंशत्।। ४४४-अण, ४४५-रण, ४४६-वण, ४४७-भण, ४४८-मण, ४४९-कण, ४५०-क्वण, ४५१-व्रण, ४५२-भ्रण, ४५३-ध्वण शब्दार्थाः।। धण इत्यपि केचित्।। ४५४-ओणृ अपनयने। ४५५-शोणृ वर्णगत्योः। ४५६-श्रोणृ संघाते। ४५७-श्लोणृ च। ४५८-पैणृ गतिप्रेरणश्लेषणेषु। (प्रैणृ इत्यपि)। ४५९-ध्रन शब्दे। वण इत्यपि केचित्।। ४६०-कन दीप्तिकान्तिगतिषु। ४६१-ष्टन, ४६२-वन शब्दे। ४६३-वन, ४६४-षण संभक्तौ। ४६५-अम गत्यादिषु। ४६६-द्रम, ४६७-हम्म, ४६८-मीमृ गतौ। मीमृ शब्दे च।। ४६९-चमु, ४७०-छमु, ४७१-जमु, ४७२-झमु अदने। जिमु इति केचित्। ४७३-क्रमु पादविक्षेपे। अणादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः।। अथ रेवत्यन्ता आत्मनेपदिनश्चत्वारिंशत्।। ४७४-अय, ४७५-वय, ४७६-पय, ४७७-मय, ४७८-चय, ४७९-तय, ४८०-णय गतौ। ४८१-दय दानगतिरक्षणहिंसादानेषु। ४८२-रय गतौ। लय च।। ४८३-ऊयी तन्तुसंताने। ४८४- पूयी विशरणे दुर्गन्धे च। ४८५-कूयी शब्दे उन्दने च। ४८६-क्षमायी विधूनने। ४८७-स्फायी, ४८८-ओप्यायी वृद्धौ। ४८९-तायृ संतानपालनयोः। ४९०-शल चलनसंवरणयोः। ४९१-वल, ४९२-वल्ल संवरणे संचरणे च। ४९३-मल, ४९४-मल्ल धारणे। ४९५-भल, ४९६-भल्ल परिभाषणहिंसादानेषु। ४९७-कल शब्दसंख्यानयोः। ४९८-कल्ल अव्यक्ते शब्दे। अशब्द इति स्वामी।। ४९९-तेवृ, ५००-देवृ देवने। ५०१-षेवृ, ५०२-गेवृ, ५०३-ग्लेवृ, ५०४-पेवृ, ५०५-मेवृ, ५०६-म्लेवृ सेवने।। शेवृ खेवृ क्लेवृ इत्यप्येके।। ५०७-रेवृ प्लवगतौ।। अयादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः।। अथावत्यन्ताः परस्मैपदिनः एकनवतिः।। ५०८-मव्य बन्धने। ५०९-सूक्ष्य, ५१०-ईक्ष्य, ५११-ईर्ष्य ईर्ष्यार्थाः। ५१२-हय गतौ। ५१३-शुच्य अभिषवे। चुच्य इत्येके।। ५१४-हर्य गतिकान्त्योः। ५१५-अल भूषणपर्याप्तिवारणेषु।। अयं स्वरितेदित्येके।। ५१६-जि फला विशरणे। ५१७-मील, ५१८-श्मील, ५१९-स्मील, ५२०-क्षमील निमेषणे। ५२१-पील प्रतिष्ठम्भे। ५२२-णील वर्णे। ५२३-शील समाधौ। ५२४-कील



बन्धने। ५२५-कूल आवरणे। ५२६-शूल रुजायां संघोषे च। ५२७-तूल निष्कर्षे। ५२८-पूल संघाते। ५२९-मूल प्रतिष्ठायाम्। ५३०-फल निष्पत्तौ। ५३१-चुल्ल भावकरणे। ५३२-फुल्ल विकसने। ५३३-चिल्ल शैथिल्ये भावकरणे च। ५३४-तिल गतौ। तिल्ल इत्येके। ५३५-वेल, ५३६-चेल, ५३७-केल, ५३८-खेल, ५३९-क्ष्वेल, ५४०-वेल्ल चलने। ५४१-पेल, ५४२-फेल, ५४३-शेल गतौ। षेल इत्येके। ५४४-स्खल संचलने। ५४५-खल संचये। ५४६-गल अदने। ५४७-षल गतौ। ५४८-दल विशरणे। ५४९-श्वल, ५५०-श्वल्ल आशुगमने। ५५१-खोल, ५५२-खोर्ल गतिप्रतिघाते। ५५३-धोर्ल गतिचातुर्ये। ५५४-त्सर छद्मगतौ। ५५५-क्मर हूर्च्छने। ५५६-अभ्र, ५५७-वभ्र, ५५८-मभ्र, ५५९-चर गत्यर्थाः। चरतिर्भक्षणेऽपि। ५६०-ष्ठिवु निरसने। ५६१-जि जये। ५६२-जीव प्राणधारणे। ५६३-पीव, ५६४-मीव, ५६५-तीव, ५६६-णीव स्थौल्ये। ५६७-क्षीवु, ५६८-क्षेवु निरसने। ५६९-उर्वी, ५७०-तुर्वी, ५७१-थुर्वी, ५७२-दुर्वी, ५७३-धुर्वी हिंसार्थाः। ५७४-गुर्वी उद्यमने। ५७५-मुर्वी बन्धने। ५७६-पूर्व, ५७७-पर्व, ५७८-मर्व पूरणे। ५७९-चर्व अदने। ५८०-भर्व हिंसायाम्। ५८१-कर्व, ५८२-खर्व, ५८३-गर्व दर्पे। ५८४-अर्व, ५८५-शर्व, ५८६-षर्व हिंसायाम्। ५८७-इवि व्याप्तौ। ५८८-पिवि, ५८९-मिवि, ५९०-णिवि सेचने। (षिवीत्येके)। सेवन इति तरङ्गिण्याम्। ५९१-हिवि, ५९२-दिवि, ५९३-धिवि, ५९४-जिवि प्रीणनार्थाः। ५९५-रिवि, ५९६-रवि, ५९७-धवि गत्यर्थाः। ५९८-कृवि हिंसाकरणयोश्च। ५९९-मव बन्धने। ६००-अव रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादानभागवृद्धिषु। मव्यादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः। जिस्त्वनुदात्तः। ६०१-धावु गतिशुद्ध्योः। उदात्तः स्वरितेदुभयतोभाषः। अथोष्मान्ता आत्मनेपदिनो द्विपञ्चाशत्। ६०२-धुक्ष, ६०३-धिक्ष संदीपनक्लेशनजीवनेषु। ६०४-वृक्ष वरणे। ६०५-शिक्ष विद्योपादाने। ६०६-भिक्ष भिक्षायामलाभे लाभे च। ६०७-क्लेश अव्यक्तायां वाचि। बाधन इति दुर्गः। ६०८-दक्ष वृद्धौ शीघ्रायै च। ६०९-दीक्ष मौण्ड्येज्योपनयननियमव्रतादेशेषु। ६१०-ईक्ष दर्शने। ६११-ईष गति-हिंसादर्शनेषु। ६१२-भाष व्यक्तायां वाचि। ६१३-वर्ष स्नेहने। ६१४-गेषु



अन्विच्छायाम् । ग्लेषृ इत्येके ।। ६१५-पेषृ प्रयत्ने । एषृ इत्येके । येषृ इत्यप्यन्ये ।  
 ६१६-जेषृ, ६१७-णेषृ, ६१८-एषृ, ६१९-प्रेषृ गतौ । ६२०-रेषृ, ६२१-  
 हेषृ, ६२२- हेषृ अव्यक्ते शब्दे । ६२३- कासृ शब्दकुत्सायाम् । ६२४-  
 भासृ दीप्तौ । ६२५-णासृ, ६२६-रासृ शब्दे । ६२७-णस कौटिल्ये । ६२८-  
 भ्यस भये । ६२९-आडः शसि इच्छायाम् । ६३०-ग्रसु, ६३१-ग्लसु  
 अदने । ६३२-ईह चेष्टायाम् । ६३३-वहि, ६३४-महि वृद्धौ, (बहीत्येके)  
 ६३५-अहि गतौ । ६३६-गर्ह, ६३७-गल्ह कुत्सायाम् । ६३८-बर्ह,  
 ६३९-बल्ह प्राधान्ये । ६४०-वर्ह, ६४१-वल्ह परिभाषणहिंसाच्छादनेषु ।  
 ६४२-प्लिह गतौ । ६४३-वेह (बेह), ६४४-जेह, ६४५-बाह (बाह)  
 प्रयत्ने । जेह गतावपि ।। ६४६-द्राह निद्राक्षये ।। निक्षेप इत्येके ।। ६४७-  
 काशृ दीप्तौ । ६४८-ऊह वितर्के । ६४९-गाहू विलोडने । ६५०-गृहू ग्रहणे ।  
 ६५१-ग्लह च । ६५२-घुषि कान्तिकरणे । घष इति केचित् ।। धुक्षादय  
 उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः ।। गृहिस्तु वेट् । अथ अर्हत्यन्ताः परस्मैपदिन  
 एकनवतिः ।। ६५३-घुषिर् अविशब्दने । शब्द इति अन्ये पेटुः ।। ६५४-  
 अक्षू व्याप्तौ ।। ६५५-तक्षू, ६५६-त्वक्षू तनूकरणे । ६५७-उक्ष सेचने ।  
 ६५८-रक्ष पालने । ६५९-णिक्ष चुम्बने । ६६०-त्रक्ष, ६६१-ष्टक्ष (तृक्ष  
 षृक्ष), ६६२-णक्ष गतौ । ६६३-वक्ष रोषे । संघात इत्येके । ६६४-मृक्ष  
 संघाते । प्रक्ष इत्येके ।। ६६५-तक्ष त्वचने । पक्ष परिग्रह इत्येके । ६६६-  
 सूक्ष आदरे । षूर्क्ष इति केचित् । ६६७-काक्षि, ६६८-वाक्षि, ६६९-माक्षि  
 काङ्क्षायाम् । ६७०-द्राक्षि, ६७१-ध्राक्षि, ६७२-ध्वाक्षि घोरवासिते च ।  
 ६७३-चूष पाने । ६७४-तूष तुष्टौ । ६७५-पूष वृद्धौ । ६७६-मूष स्तेये ।  
 ६७७-लूष, ६७८-रूष भूषायाम् । ६७९-शूष प्रसवे । ६८०-यूष हिंसायाम् ।  
 ६८१-जूष च । ६८२-भूष अलंकारे । ६८३- ऊष रुजायाम् । ६८४-ईष  
 उज्छे । ६८५-कष, ६८६-खष, ६८७-शिष, ६८८-जष । ६८९-झष,  
 ६९०-शष, ६९१-वष, ६९२-मष, ६९३-रूष, ६९४-रिष हिंसार्थाः ।  
 ६९५-भष भर्त्सने । ६९६-उष दाहे । ६९७-जिषु, ६९८- विषु, ६९९-  
 मिषु सेचने । ७००-पुष पुष्टौ । ७०१-श्रिषु, ७०२-श्लिषु, ७०३-प्रुषु,  
 ७०४-प्लुषु दाहे । ७०५-पृषु, ७०६-वृषु, ७०७-मृषु सेचने । मृषु सहने  
 च । इतरौ हिंसासंक्लेशनयोश्च । ७०८-घृषु संघर्षे । ७०९-हृषु अलीके ।  
 ७१०-तुस, ७११-हस, ७१२-ह्लस, ७१३-रस शब्दे । ७१४-लस



श्लेषणक्रीडनयोः। ७१५-घस्त्व अदने। ७१६-जर्ज, ७१७-चर्च, ७१८-  
झर्झ परिभाषणहिंसातर्जनेषु। ७१९-पिसृ, ७२०-पेसृ गतौ। ७२१-हसे  
हसने। ७२२-णिश समाधौ। ७२३-मिश, ७२४-मश शब्दे रोषकृते च।  
७२५-शव गतौ। ७२६-शश प्लुतगतौ। ७२७-शसु हिंसायाम्। ७२८-  
शंसु स्तुतौ। दुर्गताविति दुर्गः। ७२९-चह परिकल्कने। ७३०-मह पूजायाम्।  
७३१-रह त्यागे। ७३२-रहि गतौ। ७३३-दृह, ७३४-दृहि, ७३५-  
बृह, ७३६-बृहि वृद्धौ। बृहि शब्दे च। बृहिर् चेत्येके। ७३७-तुहिर्,  
७३८-दुहिर्, ७३९-उहिर् अर्दने। ७४०-अर्ह पूजायाम् ।। घुषिरादय  
उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः।। घसिस्त्वनुदात्तः।। अथ कृपूपर्यन्ता आत्मनेपदिनः  
षड्विंशतिः।। ७४१-द्युत दीप्तौ। ७४२-श्विता वर्णे ७४३-जिमिदा स्नेहने।  
७४४-जिष्विदा स्नेहनमोचनयोः। मोहनयोरित्येके। जिष्विदा चेत्येके।। ७४५-  
रुच दीप्तावभिप्रीतौ च। ७४६-घुट परिवर्तने। ७४७-रुट, ७४८-लुट,  
७४९-लुठ प्रतिघाते। ७५०-शुभ दीप्तौ। ७५१-क्षुभ संचलने। ७५२-  
णभ, ७५३-तुभ हिंसायाम्। आद्योऽभावेऽपि।। ७५४-स्नन्सु, ७५५-  
ध्वन्सु, ७५६-भ्रन्सु अवसंसने। ध्वन्सु गतौ च। भ्रन्शु इत्यपि केचित्।  
तृतीय एव तालव्यान्त इत्यन्ये।। ७५७-स्नन्भु विश्वासे। ७५८-वृतु वर्तने।  
७५९-वृधु वृद्धौ। ७६०-शृधु शब्दकुत्सायाम्। ७६१-स्यन्दू प्रस्रवणे।  
७६२-कृपू सामर्थ्ये।। द्युतादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः।। वृतु।।  
अथ त्वरत्यन्ताः त्रयोदशात्मनेपदिनः षितश्च।। ७६३-घट चेष्टायाम्। ७६४-  
व्यथ भयसंचलनयोः। ७६५-प्रथ प्रख्याने। ७६६-प्रस विस्तारे। ७६७-  
म्रद मर्दने। ७६८-स्खद स्खदने। ७६९-क्षजि गतिदानयोः। ७७०-दक्ष  
गतिहिंसनयोः। ७७१-क्रप कृपायां गतौ च। ७७२-कदि, ७७३-क्रदि,  
७७४-क्लदि वैक्लब्धे। वैक्ल्य इत्येके। त्रयोऽप्यनिदित इति नन्दी। इदित  
इति स्वामी। कदिक्रदी इदितौ, क्रद क्लद इति चानिदितौ इति मैत्रेयः।।  
७७५-जि त्वरा संध्रमे।। घटादयः षितः। उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः।।  
अथ फणान्ताः परस्मैपदिनः।। ७७६-ज्वर रोगे। ७७७-गड सेचने। ७७८-  
हेड वेष्टने। ७७९-वट, ७८०-भट परिभाषणे। ७८१-णट नृत्तौ।  
नतावित्येके।। गतावित्यन्ये।। ७८२-ष्टक प्रतिघाते। ७८३-चक तृप्तौ।  
७८४-कखे हसने। ७८५-रगे शङ्कायाम्। ७८६-लगे सङ्गे। ७८७-हगे,  
७८८-ह्रगे, ७८९-षगे। ७९०-ष्टगे संवरणे। ७९१-कगे नोच्यते। ७९२-



अक, ७९३-अग कुटिलायां गतौ। ७९४-कण, ७९५-रण गतौ। ७९६-चण, ७९७-शण, ७९८-श्रण दाने च। शण गतावित्यन्ये। ७९९-श्रथ (श्रथ श्लथ), ८००-क्वथ। ८०१-क्रथ, ८०२-क्लथ हिंसार्थाः। ८०३-वन च। वनु च नोच्यते। ८०४-ज्वल दीप्तौ। ८०५-हल, ८०६-हल चलने। ८०७-स्मृ आध्याने। ८०८-दृ भये। ८०९-नृ नये। ८१०-श्रा पाके। मारणतोषणनिशामनेषु। निशानेष्विति पाठान्तरम्। ८११-ज्ञा कम्पने। ८१२-चलिः, ८१३-छदिर् ऊर्जने। ८१४-लडिः जिह्वोन्मथने। ८१५-मदी हर्षग्लेपनयोः। ८१६-ध्वन शब्दे। दलि-वलि-स्खलि-रणि-ध्वनि-त्रपि-क्षपयश्चेतिभोजः। ८१७-स्वन अवतंसने। घटादयो मितः। जनी-जृष-क्वसु-रन्जो-ऽमन्ताश्च। ज्वल-हल-हल-नमाममनुपसर्गाद्वा। ग्ला-स्ना-वनु-वमा च। नकमि-अमि-चमाम्। ८१८-शमो दर्शने। ८१९-यमोऽपरिवेषणे। ८२०-स्खदिर् अवपरिभ्यां च। ८२१-फण गतौ। घटादयः फणान्ता मितः। वृत्। ज्वरादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः। ८२२-राजृ दीप्तौ। उदात्तः स्वरितेदुभयतोभाषः। ८२३-टु भ्राजू, ८२४-टु भ्राशृ, ८२५-टु भ्लाशृ दीप्तौ। उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः। अथ क्षरत्यन्ताः परस्मैपदिनः। ८२६-स्यमु, ८२७-स्वन, ८२८-ध्वन शब्दे। फणादयो गताः। ८२९-षम, ८३०-ष्टम अवैकल्ये। वृत्। ८३१-ज्वल दीप्तौ। ८३२-चल कम्पने। ८३३-जल घातने। ८३४-टल, ८३५-ट्वल वैकल्ये। ८३६-ष्ठल स्थाने। ८३७-हल विलेखने। ८३८-णल गन्धे। बन्धन इत्येके। ८३९-पल गतौ। ८४०-बल प्राणने धान्यावरोधने च। ८४१-पुल महत्वे। ८४२-कुल संस्त्याने बन्धुषु च। ८४३-शल। ८४४-हुल। ८४५-पल्ल गतौ। (हुल हिंसायां संवरणे च)। ८४६-क्वथे निष्पाके। ८४७-पथे गतौ। ८४८-मथे विलोडने। ८४९-टु वम् उद्गिरणे। ८५०-भ्रमु चलने। ८५१-क्षर संचलने। स्यमादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः। ८५२-षह मर्षणे। उदात्तो-ऽनुदात्तेदात्मनेभाषाः। अथ कसन्ताः परस्मैपदिनः। ८५४-षद्ल विशरणगत्यवसादनेषु। ८५५-शद्ल शातने। ८५६-कुश आह्वाने रोदने च। षदादयस्त्रयोऽनुदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः। ८५७-कुच संपर्चनकौटिल्यप्रतिष्ठम्भविलेखनेषु। ८५८-बुध अवगमने। ८५९-रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च। ८६०-कस गतौ। वृत्। कुचादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः। रुहिस्त्वनुदात्तः। ज्वलादिर्गतः। अथ गूहत्यन्ताः



स्वरितेतः॥ ८६१-हिक्क अव्यक्ते शब्दे। ८६२-अन्चु गतौ याचने च।  
 अचु इत्येके। अचि इत्यपरे॥ ८६३-टु याचु याच्चायाम्। ८६४-रेट्  
 परिभाषणे। ८६५-चते, ८६६-चदे याचने। ८६७-प्रोथु पर्याप्तौ। ८६८-  
 मिट्, ८६९-मेट् मेधाहिंसनयोः। थान्ताविमाविति स्वामी। धान्ताविति न्यासः॥  
 ८७०-मेथु संगमे च। ८७१-णिट्। ८७२-णेट् कुत्सासंनिकर्षयोः। ८७३-  
 शृथु, ८७४-मृथु उन्दने। ८७५-बुधिर् बोधने। ८७६-उ बुन्दिर् निशामने।  
 ८७७-वेणु गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु॥ नान्तोऽप्ययम्॥ ८७८-  
 खनु अवदारणे। ८७९-चीवृ आदानसंवरणयोः। ८८०-चायृ पूजानिशामनयोः।  
 ८८१-व्यय गतौ। ८८२-दाशृ दाने। ८८३-भेषृ भये॥ गतावित्येके॥  
 ८८४-भ्रेषृ, ८८५-भ्लेषृ गतौ। ८८६-अस गतिदीप्त्यादानेषु॥ अष इत्येके॥  
 ८८७-स्पश जाधनस्पर्शनयोः। ८८८-लष कान्तौ। ८८९-चष भक्षणे।  
 ८९०-छष हिंसायाम्। ८९१-झष आदानसंवरणयोः, ८९२-भ्रक्ष, ८९३-  
 भ्लक्ष अदने। (भक्ष इति मैत्रेयः)। ८९४-दासृ दाने। ८९५-माह माने।  
 ८९६-गुहू संवरणे॥ हिक्कादय उदात्ताः स्वरितेत उभयतोभाषाः॥ अथ  
 अजन्ताः उभयपदिनः॥ ८९७-श्रिञ् सेवायाम्॥ उदात्त उभयतोभाषः॥  
 ८९८-भृञ् भरणे। ८९९-हृञ् हरणे। ९००-धृञ् धारणे। ९०१-णीञ्  
 प्रापणे। भृजादयश्चत्वारोऽनुदात्ता उभयतोभाषाः॥ अथ अजन्ताः परस्मैपदिनः॥  
 ९०२-धेट् पाने। ९०३-ग्लै, ९०४-ग्लै हर्षक्षये। ९०५-द्यै न्यक्करणे।  
 ९०६-द्रै स्वप्ने। ९०७-ध्रै तृप्तौ। ९०८-ध्यै चिन्तायाम्। ९०९-रै शब्दे।  
 ९१०-स्त्यै, ९११-ष्ट्यै शब्दसंघातयोगः। ९१२-खै खदने। ९१३-क्षै,  
 ९१४-जै, ९१५-षै क्षये। ९१६-कै, ९१७-गै शब्दे। ९१८-शै, ९१९-  
 श्रै पाके, स्नै इति केषुचित्पाठः। ९२०-पै, ९२१-ओ वै शोषणे। ९२२-  
 छै वेष्टने। ९२३-ष्णै वेष्टने। शोभायां चेत्येके॥ ९२४-दैप् शोधने।  
 ९२५-पा पाने। ९२६-प्रा गन्धोपादाने। ९२७-ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः।  
 ९२८-ष्ठा गतिनिवृत्तौ। ९२९-म्ना अभ्यासे। ९३०-दाण् दाने। ९३१-  
 ह् कौटिल्ये। ९३२-स्वृ शब्दोपतापयोः। ९३३-स्मृ चिन्तायाम्। ९३४-  
 ह् संवरणे। ९३५-सृ गतौ। ९३६-ऋ गतिप्रापणयोः। ९३७-गृ, ९३८-  
 घृ सेचने। ९३९-ध्वृ हृच्छने। ९४०-स्रु गतौ। ९४१-षु प्रसवैश्वर्ययोः।  
 ९४२-श्रु श्रवणे। ९४३-ध्रु स्थैर्ये। ९४४-दु, ९४५-द्रु गतौ। ९४६-  
 जि, ९४७-जि अभिभवे॥ धयत्यादयोऽनुदात्ताः परस्मैभाषाः॥ अथ डीडन्ता



डितः॥ ९४८-ष्मिड् ईषद्धसने। ९४९-गुड् अव्यक्ते शब्दे। ९५०-गाड्  
 गतौ। ९५१-कुड्, ९५२-घुड्, ९५३-उड्, ९५४-डुड् शब्दे। उड्  
 कुड् खुड् गुड् घुड् डुड् इत्यन्ये॥ ९५५-च्युड्, ९५६-ज्युड्, ९५७-  
 प्रुड्, ९५८-प्लुड् गतौ। क्लुड् इत्येके॥ ९५९-रुड् गतिरेषणयोः। ९६०-  
 धृड् अवध्वंसने। ९६१-मेड् प्रणिदाने। ९६२-देड् रक्षणे। ९६३-श्यैड्  
 गतौ। ९६४-प्यैड् वृद्धौ। ९६५-त्रैड् पालने॥ ष्मिडादयोऽनुदात्ता  
 आत्मनेभाषाः॥ ९६६-पूड् पवने। ९६७-मूड् बन्धने। ९६८-डीड् विहायसा  
 गतौ॥ पूडादयस्त्रय उदात्ता आत्मनेभाषाः॥ ९६९-तृप्लवनतरणयोः॥ उदात्तः  
 परस्मैभाषः॥ अथाष्टावात्मनेपदिनः॥ ९७०-गुप गोपने। ९७१-तिज निशाने।  
 ९७२ मान पूजायाम्। ९७३-वध बन्धने॥ गुपादयश्चत्वार उदात्ता अनुदात्तेत  
 आत्मनेभाषाः॥ ९७४-रभ राभस्ये। ९७५-डु लभष् प्राप्तौ। ९७६-ष्वन्ज  
 परिष्वङ्गे। ९७७-हद पुरीषोत्सर्गे॥ रभादयश्चत्वार उदात्ता अनुदात्तेत  
 आत्मनेभाषाः॥ ९७८-जि ष्विदा अव्यक्ते शब्दे॥ उदात्त उदात्तेत् परस्मैभाषः॥  
 ९७९-स्कन्दिर् गतिशोषणयोः। ९८०-यभ मैथुने। ९८१-णम प्रहृत्वे  
 शब्दे च। ९८२-गम्ह, ९८३-सृप्ह गतौ। ९८४-यम उपरमे। ९८५-  
 तप संतापे। ९८६-त्यज हानौ। ९८७-षन्ज सङ्गे। ९८८-दृशिर् प्रेक्षणे।  
 ९८९-दन्श दशने। ९९०-कृष विलेखने। ९९१-दह भस्मीकरणे। ९९२-  
 मिह सेचने॥ स्कन्दादयोऽनुदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ ९९३-कित निवासे  
 रोगापनयने च॥ उदात्तेत् परस्मैभाषः॥ अथ वहत्यन्ताः स्वरितेतः॥ ९९४-  
 दान खण्डने। ९९५-शान तेजने॥ उदात्तौ स्वरितेतावुभयतोभाषौ॥ ९९६-  
 डु पचष् पाके। ९९७-षच समवाये। ९९८-भज सेवायाम्। ९९९-रञ्ज  
 रागे। १०००-शप आक्रोशे। १००१-त्विष दीप्तौ। १००२-यज  
 देवपूजासंगतिकरणदानेषु। १००३-डु वप् बीजसंताने। छेदनेऽपि॥ १००४-  
 वह प्रापणे॥ पचादयोऽनुदात्ताः स्वरितेत उभयतोभाषाः॥ षचिस्तूदात्तः॥  
 १००५-वस निवासे। अनुदात्त उदात्तेत् परस्मैभाषः॥ १००६-वेज्  
 तन्तुसंताने। १००७-व्येज् संवरणे। १००८-ह्वेज् स्पर्धायां शब्दे च॥  
 वैजादयस्त्रयोऽनुदात्ता उभयतोभाषाः॥ अथ परस्मैपदिनौ॥ १००९-वद  
 व्यक्तायां वाचि। १०१०-टु ओ श्वि गतिवृद्धयोः॥ वृत्। यजादिः समाप्तः॥  
 अयं वदतिश्चोदात्तौ परस्मैभाषौ॥ चुलुम्पत्यादिश्च भ्वादौ द्रष्टव्यः। तस्य  
 आकृतिगणत्वात्। ऋतिः सौत्रश्च सजुगुप्साकृपयोः॥ इति शब्विकरणा भ्वादयः॥



## अथ अदादिः

१०११-अद भक्षणे। १०१२-हन हिंसागत्योः॥ अनुदात्तावुदात्तेतौ परस्मैपदिनौ॥ अथ चत्वारः स्वरितेतः॥ १०१३-द्विष अप्रीतौ। १०१४-दुह प्रपूरणे। १०१५-दिह उपचये। १०१६-लिह आस्वादाने॥ द्विषादयोऽनुदात्ताः स्वरितेत उभयतोभाषाः॥ १०१७-चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि। अयं दर्शनेऽपि॥ अनुदात्तोऽनुदात्तेत् आत्मनेपदी॥ अथ पृच्यन्ताः अनुदात्तेतो दश॥ १०१८-ईर गतौ कम्पने च। १०१९-ईड स्तुतौ। १०२०-ईश ऐश्वर्ये। १०२१-आस उपवेशने। १०२२-आडः शासु इच्छायाम्। १०२३-वस आच्छादाने। १०२४-कसि गतिशासनयोः। अयमनिदिति केचित्। कस इत्येके। कश इत्यपि॥ १०२५-णिसि चुम्बने। १०२६-णिजि शुद्धौ। १०२७-शिजि अव्यक्ते शब्दे। १०२८-पिजि वर्णे। संपर्चन इत्येके॥ १०२९-वृजी वर्जने। वृजि इत्यन्ये॥ १०३०-पृची संपर्चने॥ ईरादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः॥ १०३१-षूङ् प्राणिगर्भविमोचने। १०३२-शीङ् स्वप्ने॥ उदात्तावात्मनेभाषौ॥ अथ स्तौत्यन्ताः परस्मैपदिनो दश॥ १०३३-यु मिश्रणेऽमिश्रणे च। १०३४-रु शब्दे। तु इति सौत्रौ धातुः गतिवृद्धिहिंसासु॥ १०३५-णु स्तुतौ। १०३६-टु क्षु शब्दे। १०३७-क्षु तेजने। १०३८-ष्णु प्रस्रवणे॥ युप्रभृतय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ १०३९-ऊर्णुञ् आच्छादाने॥ उदात्त उभयतोभाषाः॥ १०४०-द्यु अभिगमने। १०४१-षु प्रसवैश्वर्ययोः १०४२-कु शब्दे। १०४३-ष्टुञ् स्तुतौ॥ द्युप्रभृतयोऽनुदात्ताः परस्मैभाषाः॥ स्तौतिस्तूभयतोभाषाः॥ १०४४-ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि॥ उदात्त उभयतोभाषाः॥ अथ शास्यन्ताः परस्मैपदिनः॥ १०४५-इण् गतौ। १०४६-इङ् अध्ययने। नित्यमधिपूर्वः॥ १०४७-इक् स्मरणे। अयमप्यधिपूर्वः॥ १०४८-वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादानेषु। (ई च)। १०४९-या प्रापणे। १०५०-वा गतिगन्धनयोः। १०५१-भा दीप्तौ। १०५२-ष्णा शौचे। १०५३-श्रा पाके। १०५४-द्रा कुत्सायां गतौ। १०५५-प्सा भक्षणे। १०५६-पा रक्षणे। १०५७-रा दाने। १०५८-ला आदाने। द्वावपि दाने इति चन्द्रः॥ १०५९-दाप् लवने। १०६०-ख्या प्रकथने। १०६१-प्रा पूरणे। १०६२-मा माने। १०६३-वच परिभाषणे॥ इण्प्रभृतयोऽनुदात्ताः परस्मैभाषाः॥ इङ् त्वात्मनेपदी॥ १०६४-विद ज्ञाने॥



१०६५-अस भुवि। १०६६-मृजू शुद्धौ। १०६७-रुदिर् अश्रुविमोचने॥  
 विदादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ १०६८-जि ष्वप् शये॥ अनुदात्तः  
 परस्मैभाषः॥ १०६९-श्वस प्राणने १०७०-अन च। १०७१-जक्ष  
 भक्षहसनयोः॥ वृत्॥ १०७२-जागृ निद्राक्षये। १०७३-दरिद्रा दुर्गतौ।  
 १०७४-चकासृ दीप्तौ। १०७५-शासु अनुशिष्टौ॥ श्वसादय उदात्ता उदात्तेतः  
 परस्मैभाषाः॥ अथ पञ्चधातवश्छान्दसाः॥ १०७६-दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः।  
 १०७७-वेवीङ् वेतिना तुल्ये॥ उदात्तावात्मनेभाषौ। १०७८-षस, १०७९-  
 षस्ति स्वप्ने। १०८०-वश कान्तौ॥ षसादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥  
 १०८१-चर्करीतं च। १०८२-हुङ् अपनयने। अनुदात्त आत्मनुभाषः॥  
 इति लुग्विकरणा अदादयः॥२॥

### अथ जुहोत्यादिः

१०८३-हु दानादनयोः। आदाने चेत्येके। प्रीणनेऽपीति भाष्यम्। १०८४-  
 जी भी भये। १०८५-ह्री लज्जायाम्॥ जुहोत्यादयोऽनुदात्ताः परस्मैभाषाः॥  
 १०८६-पृ पालनपूरणयोः। पृ इत्येके॥ उदात्तः परस्मैभाषः॥ १०८७-  
 डुभृज् धारणपोषणयोः॥ अनुदात्त उभयतोभाषः॥ १०८८-माङ् माने शब्दे  
 च। १०८९-ओ हाङ् गतौ। अनुदात्तावात्मनेपदिनौ॥ १०९०-ओ हाक्  
 त्यागे॥ अनुदात्तः परस्मैपदी॥ १०९१-डु दाज् दाने। १०९२-डु धाज्  
 धारणपोषणयोः। दान इत्यप्येके॥ अनुदात्तावुभयतोभाषौ॥ अथ त्रयः  
 स्वरितेतः॥ १०९३-णिजिर् शौचपोषणयोः। १०९४-विजिर् पृथग्भावे।  
 १०९५-विष्ण्व व्याप्तौ॥ णिजिरादयोऽनुदात्ताः स्वरितेत उभयतोभाषाः॥  
 अथ आगणान्ताः एकादश परस्मैपदिनश्छान्दसाश्च॥ १०९६-घृ क्षरणदीप्त्योः।  
 १०९७-ह प्रसह्यकरणे। १०९८-ऋ, १०९९-सृ गतौ॥ घृप्रभृतयोऽनुदात्ताः  
 परस्मैभाषाः॥ ११००-भस भर्त्सनदीप्त्योः॥ उदात्त उदात्तेत् परस्मैपदी॥  
 ११०१-कि ज्ञाने॥ अनुदात्तः परस्मैपदी॥ ११०२-तुर त्वरणे। ११०३-  
 धिष शब्दे। ११०४-धन धान्ये। ११०५-जन जनने। तुरादय उदात्ता  
 उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ ११०६-गा स्तुतौ॥ अनुदात्तः परस्मैभाषः॥ घृप्रभृतय  
 एकादश च्छान्दसि। इयति भाषायामपि॥ इति श्लुविकरणा जुहोत्यादयः॥३॥



## अथ दिवादिः

अथ उदात्ता झृषन्ताः परस्मैपदिनः॥ ११०७-दिवु क्रीडाविजिगीषा-  
व्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु। ११०८-षिवु तन्तुसंताने।  
११०९-स्त्रिवु गतिशोषणयोः। १११०-ष्ठिवु निरसने। केचिदिहेमं न पठन्ति॥  
११११-ष्णुसु अदने। आदान इत्येके। अदर्शन इत्यपरे॥ १११२-ष्णसु  
निरसने। १११३-क्नसु ह्वरणदीप्त्योः। १११४-व्युष दाहे। १११५-  
प्लुष च। १११६-नृती गात्रविक्षेपे॥ १११७-त्रसी उद्वेगे। १११८-कुथ  
पूतीभावे। १११९-पुथ हिंसायाम्। ११२०-गुध परिवेष्टने। ११२१-  
क्षिप प्रेरणे। ११२२-पुष्प विकसने। ११२३-तिम, ११२४-ष्टिम, ११२५-  
ष्टीम आर्द्रीभावे। ११२६-त्रीड चोदने लज्जायां च। ११२७-इष गतौ।  
११२८-षह, ११२९-षुह चक्यर्थे। ११३०-जृष्, ११३१-झृष् वयोहानौ।  
दिवादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ क्षिपिस्त्वनुदात्तः॥ अथ स्वादयः॥  
११३२-षूङ् प्राणिप्रसवे। ११३३-दूङ् परितापे। उदात्तावात्मनेभाषौ॥  
११३४-दीङ् क्षये। ११३५-डीङ् विहायसा गतौ। ११३६-धीङ् आधारे।  
११३७-मीङ् हिंसायाम्। ११३८-रीङ् श्रवणे। ११३९-लीङ् श्लेषणे।  
११४०-त्रीङ् वृणोत्यर्थे॥ वृत्॥ स्वादय ओदितः॥ ११४१-पीङ् पाने।  
११४२-माङ् माने। ११४३-ईङ् गतौ। ११४४-प्रीङ् प्रीतौ॥ दीडादय  
आत्मनेपदिनोऽनुदात्ताः॥ डीङ् तूदात्तः॥ अथ चत्वारः परस्मैपदिनः॥ ११४५-  
शो तनूकरणे। ११४६-छो छेदने। ११४७-षो अन्तकर्मणि। ११४८-दो  
अवखण्डने॥ श्यतिप्रभृतयोऽनुदात्ताः परस्मैभाषाः॥ अथ आत्मनेपदिनः  
पञ्चदश॥ ११४९-जनी प्रादुर्भावे। ११५०-दीपी दीप्तौ। ११५१-पूरी  
आप्यायने। ११५२-तूरी गतित्वरणहिंसनयोः। ११५२-धूरी, ११५४-  
गूरी हिंसागत्योः। ११५५-घूरी। ११५६-जूरी हिंसावयोहान्योः। ११५७-  
शूरी हिंसास्तम्भनयोः। ११५८-चूरी दाहे। ११५९-तप (पत) ऐश्वर्ये वा।  
११६०-वृतु वरणे। वावृतु इति केचित्॥ ११६१-क्लिश उपतापे। ११६२-  
काश्रु दीप्तौ। ११६३-वाश्रु शब्दे॥ जन्यादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः।  
तपिस्त्वनुदात्तः॥ अथ पञ्च स्वरितेतः॥ ११६४-मृष तितिक्षायाम्। ११६५-  
शुचिर् पूतीभावे॥ उदात्तौ स्वरितेतावुभयतोभाषौ॥ ११६६-णह बन्धने।  
११६७-रञ्ज रागे। ११६८-शप आक्रोशे॥ णहादयस्त्रयोऽनुदात्ताः स्वरितेत  
उभयतोभाषाः॥ अथ एकादश आत्मनेपदिनः॥ ११६९-पद गतौ। ११७०-  
खिद दैन्ये। ११७१-विद सत्तायाम्। ११७२-बुध अवगमने। ११७३-



युध संप्रहारे। ११७४-अनो रुध कामे। ११७५-अण प्राणने। अन इत्येके।।  
 ११७६-मन ज्ञाने। ११७७-युज समाधौ। ११७८-सृज विसर्गे। ११७९-  
 लिश अल्पीभावे।। पदादयोऽनुदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः।। अण् तूदात्तः।।  
 अथ आगणान्ताः परस्मैपदिनः अष्टषष्टिः।। ११८०-राधोऽकर्मकादृद्धावेव।  
 ११८१-व्यध ताडने। ११८२-पुष पुष्टौ। ११८३-शुष शोषणे। ११८४-  
 तुष प्रीतौ। ११८५-दुष वैकृत्ये। ११८६-श्लिष आलिङ्गने। ११८७-  
 शक विभाषितो मर्षणे। उभयपदी।। ११८८-ष्विदा गात्रप्रक्षरणे। जि ष्विदा  
 इत्येके।। ११८९-क्रुध क्रोधे। ११९०-क्षुध बुभुक्षायाम्। ११९१-शुध  
 शौचे। ११९२-षिधु संराद्धौ।। राधादयोऽनुदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः।।  
 वेटः।। ११९३-रध हिंसासंराद्धयोः। ११९४-णश अदर्शने। ११९५-  
 तृप प्रीणने। ११९६-दृप हर्षमोहनयोः। ११९७-द्रुह जिघांसायाम्। ११९८-  
 मुह वैचित्ये। ११९९-ष्णुह उद्गिरणे। १२००-ष्णिह प्रीतौ।। वृत्।। रधादयो  
 वेटः उदात्तेतः परस्मैभाषाः।। १२०१-शमु उपशमे। १२०२-तमु  
 काङ्क्षायाम्। १२०३-दमु उपशमे। १२०४-श्रमु तपसि खेदे च। १२०५-  
 भ्रमु अनवस्थाने। १२०६-क्षमू सहने। १२०७-क्लमु ग्लानौ। १२०८-  
 मदी हर्षे।। वृत्।। शमादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः।। क्षमू तु वेट्।।  
 १२०९-असु क्षेपणे। १२१०-यसु प्रयत्ने। १२११-जसु मोक्षणे। १२१२-  
 तसु उपक्षये। १२१३-दसु, १२१४-वसु स्तम्भे। बसु इति केचित्।।  
 १२१५-व्युष विभागे। व्युस इत्यन्ये। बसु इत्यपरे।। १२१६-प्लुष दाहे।  
 १२१७-बिस प्रेरणे। १२१८-कुस संश्लेषणे। १२१९-बुस उत्सर्गे।  
 १२२०-मुस खण्डने। १२२१-मसी परिणामे। समी इत्येके।। १२२२-  
 लुट विलोडने। १२२३-उच समवाये। १२२४-भृशु, १२२५-भ्रन्शु  
 अधःपतने। १२२६-वृश वरणे। १२२७-कृश तनूकरणे। १२२८-जि  
 तृषा पिपासायाम्। १२२९-हृष तुष्टौ। १२३०-रुष। १२३१-रिष हिंसायाम्।  
 १२३२-डिप क्षेपे। १२३३-कुप क्रोधे। १२३४-गुप व्याकुलत्वे। १२३५-  
 युप, १२३६-रुप, १२३७-लुप विमोहने। (ष्टू समुच्छ्राये)। १२३८-  
 लुभ गाध्यै (गाध्यै)। १२३९-क्षुभ संचलने। १२४०-णभ, १२४१-  
 तुभ हिंसायाम्। क्षुमिनभितुभयो द्युतादौ क्रयादौ च पठ्यन्ते।। १२४२-  
 क्लिदू आर्द्रिभावे। १२४३-जि मिदा स्नेहन। १२४४-जि क्ष्विदा  
 स्नेहनेमोचनयोः। १२४५-ऋधु वृद्धौ। १२४६-गृधु अभिकाङ्क्षायाम्।

वृत्॥ असुप्रभृतय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ दिवादिराकृतिगण इति केचित्॥ इति श्यन्विकरणा दिवादयः॥४॥

### अथ स्वादिः

१२४७-षुञ् अभिषवे। १२४८-षिञ् बन्धने। १२४९-शिञ् निशाने। १२५०-डु मिञ् प्रक्षेपणे। १२५१-चिञ् चयने। १२५२-स्तृञ् आच्छादने। १२५३-कृञ् हिंसायाम्। १२५४-वृञ् वरणे। १२५५-धुञ् कम्पने। धूञ् इत्येके। स्वादयोऽनुदात्ता उभयतोभाषाः॥ वृञ् उदात्तः॥ अथ परस्मैपदिनः अष्टौ॥ १२५६-टु दु उपतापे। १२५७-हि गतौ वृद्धौ च। १२५८-पृ प्रीतौ। १२५९-स्पृ प्रीतिपालनयोः। प्रीतिचलनयोः इत्यन्ये। 'चलनं जीवनम्' इति स्वामी। स्पृ इत्येके॥ पृणोत्यादयस्त्रयोऽपि छान्दसा इत्याहुः॥ १२६०-आप्ल व्याप्तौ। १२६१-शक्ल शक्तौ। १२६२-राध, १२६३-साध संसिद्धौ। दुनोतिप्रभृतयोऽनुदात्ताः परस्मैभाषाः॥ अथ द्वौ आत्मनेपदिनौ। १२६४-अशू व्याप्तौ संघाते च। १२६५-ष्टिघ आस्कन्दने॥ अशिस्तिघी उदात्तावनुदात्तेतावात्मनेभाषौ॥ अथ आगणान्ताः परस्मैपदिनः षोडशः॥ १२६६-तिक, १२६७-तिग गतौ च। १२६८-षध हिंसायाम्। १२६९-जि धृषा प्रागल्भ्ये। १२७०-दन्भु दम्भने। १२७१-ऋधु वृद्धौ। तृप प्रीणने इत्येके॥ छन्दसि॥ अथ आगणान्ताश्छान्दसाः॥ १२७२-अह व्याप्तौ। १२७३-दघ घातने पालने च। १२७४-चमु भक्षणे। १२७५-रि, १२७६-क्षि, १२७७-चिरि, १२७८-जिरि, १२७९-दाश, १२८०-दृ हिंसायाम्॥ क्षिर् भाषायाम् इत्येके॥ ऋक्षीत्येक एवाजादिरेके। रेफवानित्यन्ये॥ वृत्॥ तिकादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ इति श्नुविकरणाः स्वादयः॥५॥

### अथ तुदादिः

अथ षडुभयपदिनः॥ १२८१-तुद व्यथने। १२८२-णुद प्रेरणे। १२८३-दिश अतिसर्जने। १२८४-भ्रस्ज पाके। १२८५-क्षिप प्रेरणे। १२८६-कृष विलेखने॥ तुदादयोऽनुदात्ताः स्वरितेत उभयतोभाषाः। १२८७-ऋषी गतौ। उदात्त उदात्तेत्परस्मैपदी॥ अथ चत्वार आत्मनेपदिनः। १२८८-जुषी



प्रीतिसेवनयोः। १२८९-ओ विजी भयचलनयोः। १२९०-ओ लजी,  
 १२९१-ओ लस्जी व्रीडायाम्। जुषादय उदात्ता अनुदात्तेत आत्मनेभाषाः।।  
 अथ परस्मैपदिनः।। १२९२-ओ ब्रश्चू छेदने। १२९३-व्यच व्याजीकरणे।  
 १२९४-उछि उज्छे। १२९५-उछी विनासे। १२९६-ऋच्छ  
 गतीन्द्रियप्रलयमूर्तिभावेषु। १२९७-मिच्छ उत्कलेशे। १२९८-जर्ज, १२९९-  
 चर्च, १३००-झर्झ परिभाषणभर्त्सनयोः। १३०१-त्वच संवरणे। १३०२-  
 ऋच स्तुतौ। १३०३-उब्ज आर्जवे। १३०४-उज्ज उत्सर्गे। १३०५-लुभ  
 विमोहने। १३०६-रिफ कथनयुद्धीनन्दहिंसादानेषु। रिह इत्येके।। १३०७-  
 तृप, १३०८-तृन्फ तृप्तौ। द्वावपि फान्तावित्येके।। १३०९-तुप, १३१०-  
 तुन्प, १३११-तुफ, १३१२-तुन्फ हिंसायाम्। १३१३-दृप, १३१४-  
 दृन्फ उत्कलेशे। प्रथमोऽपि द्वितीयान्त इत्येके। १३१५-ऋफ, १३१६-  
 ऋन्फ हिंसायाम्। १३१७-गुफ, १३१८-गुन्फ ग्रन्थे। १३१९-उभ,  
 १३२०-उन्भ पूरणे। १३२१-शुभ, १३२२-शुन्भ शोभार्थे। १३२३-  
 दृभी ग्रन्थे। १३२४-चृती हिंसाश्रन्यनयोः। १३२५-विध विधाने। १३२६-  
 जुड गतौ। जुन इत्येके।। १३२७-मृड सुखने। १३२८-पृड च। १३२९-  
 पृण प्रीणने। १३३०-वृण च। १३३१-मृण हिंसायाम्। १३३२-तुण  
 कौटिल्ये। १३३३-पुण कर्मणि शुभे। १३३४-मुण प्रतिज्ञाने। १३३५-  
 कुण शब्दोपकरणयोः। १३३६-शुन गतौ। १३३७-द्रुण हिंसागतिकौटिल्येषु।  
 १३३८-घुण, १३३९-घूर्ण भ्रमणे। १३४०-पुर ऐश्वर्यदीप्त्योः। १३४१-  
 कुर शब्दे। १३४२-खुर छेदने। १३४३-मुर संवेष्टने। १३४४-क्षुर विलेखने।  
 १३४५-घुर भीमार्थशब्दयोः। १३४६-पुर अग्रगमने। १३४७-वृहू उद्यमने।  
 बृहू इत्यन्ये।। १३४८-तृहू, १३४९-स्तृहू। १३५०-तृन्हू हिंसार्थाः।  
 १३५१-इष इच्छायाम्। १३५२-मिष स्पर्धायाम्। १३५३-क्लि  
 श्वैत्यक्रीडनयोः। १३५४-तिल स्नेहे। १३५५-चिल वसने। १३५६-  
 चल विलसने। १३५७-इल स्वप्नक्षेपणयोः। १३५८-विल संवरणे।  
 १३५९-बिल भेदने। १३६०-णिल गहने। १३६१-हिल भावकरणे।  
 १३६२-शिल, १३६३-षिल उज्छे। १३६४-मिल श्लेषणे। १३६५-  
 लिख अक्षरविन्यासे। १३६६-कुट कौटिल्ये। १३६७-पुट संश्लेषणे।  
 १३६८-कुच संकोचने। १३६९-गुज शब्दे। १३७०-गुड रक्षायाम्।  
 १३७१-डिप क्षेपे। १३७२-छुर छेदने। १३७३-स्फुट विकसने। १३७४-



मुट आक्षेपमर्दनयोः। १३७५-त्रुट छेदने। १३७६-तुट कलहकर्मणि।  
 १३७७-चुट, १३७८-छुट छेदने। १३७९-जुट बन्धने। १३८०-कड  
 मदे। १३८१-लुट संश्लेषणे। (लुठ इत्येके। लुड इत्यन्ये)॥ १३८२-  
 कृड घनत्वे। १३८३-कुड बाल्ये। १३८४-पुड उत्सर्गे। १३८५-घुट  
 प्रतिघाते। १३८६-तुड तोडने। १३८७-थुड, १३८८-स्थुड संवरणे।  
 खुड छुड इत्येके॥ १३८९-स्फुर, १३९०-फुल संचलने। स्फुर स्फुरणे,  
 स्फुल संचलने इत्येके॥ स्फुर इत्यन्ये॥ १३९१-स्फुड, १३९२-चुड।  
 १३९३-व्रुड संवरणे। १३९४-क्रुड, १३९५-भृड निमज्जन इत्येके॥  
 व्रश्चादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ १३९६-गुरी उद्यमने॥  
 उदात्तोऽनुदात्तेदात्मनेपदी॥ अथ चत्वारः परस्मैपदिनः॥ १३९७-णू स्तवने।  
 १३९८-धू विधूने॥ उदात्तौ परस्मैभाषौ॥ १३९९-गु पुरीषोत्सर्गे। १४००-  
 ध्रु गतिस्थैर्ययोः। ध्रुव इत्येके॥ अनुदात्तौ परस्मैपदिनौ॥ १४०१-कुङ्  
 शब्दे॥ उदात्त आत्मनेपदी॥ दीर्घान्त इति कैयटादयः। ह्रस्वान्त इति न्यासः॥  
 वृत्॥ कुटादयो गताः॥ १४०२-पृङ् व्यायामे। १४०३-मृङ् प्राणत्यागे॥  
 अनुदात्तावात्मनेभाषौ॥ अथ परस्मैपदिनः सप्त॥ १४०४-रि, १४०५-  
 पि गतौ। १४०६-धि धारणे। १४०७-क्षि निवासगत्योः॥ रियत्या-  
 दयोऽनुदात्ताः परस्मैभाषाः॥ १४११-दृङ् आदरे। १४१२-धृङ् अवस्थाने॥  
 अनुदात्तावात्मनेभाषौ॥ अथ षोडश परस्मैपदिनः॥ १४१३-प्रच्छ ज्ञीप्सायाम्।  
 वृत्॥ किरादयो गताः। १४१४-सृज विसर्गे। १४१५-टु मस्जो शुद्धौ।  
 १४१६-रुजो भङ्गे। १४१७-भुजो कौटिल्ये। १४१८-छुप स्पर्शे। १४१९-  
 रुश, १४२०-रिश हिंसायाम्। १४२१-लिश गतौ। १४२२-स्पृश  
 संस्पर्शने। १४२३-विच्छ गतौ। १४२४-विश प्रवेशने। १४२५-मृश  
 आमर्शने। १४२६-णुद प्रेरणे। १४२७-षद्लु विशरणगत्यवसादनेषु।  
 १४२८-शद्लु शातने॥ पृच्छत्यादयोऽनुदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥  
 विच्छस्तूदात्तः॥ अथ षट् स्वरितेतः॥ १४२९-मिल सङ्गमे। उदात्तः  
 स्वरितेदुभयतोभाषः॥ १४३०-मुच्छ मोक्षणे। १४३१-लुप्छ छेदने।  
 १४३२-विद्ल लाभे। १४३३-लिप उपदेहे। १४३४-षिच क्षरणे।  
 मुचादयोऽनुदात्ताः स्वरितेत उभयतोभाषाः। विन्दतिस्तूदात्तः। १४३५-कृती  
 छेदने॥ उदात्त उदात्तेत्परस्मैपदी॥ १४३६-खिद परिघाते॥ अनुदात्त  
 उदात्तेत्परस्मैपदी॥ १४३७-पिश अवयवे॥ अयं दीपनायामपि॥ उदात्त  
 उदात्तेत्परस्मैपदी॥ वृत्॥ मुचादयः तुदादयश्च वृत्ताः॥ इति  
 शविकरणास्तूदादयः॥ ६॥



## अथ रुधादिः

आद्या नव स्वरितेतः॥ १४३८-रुधिर आवरणे। १४३९-भिदिर विदारणे। १४४०-छिदिर द्वैधीकरणे। १४४१-रिचिर विरेचने। १४४२-विचिर पृथग्भावे। १४४३-क्षुदिर संपेषणे। १४४४-युजिर योगे। रुधादयोऽनुदात्ताः स्वरितेत उभयतोभाषाः॥ १४४५-उ छृदिर दीप्तिदेवनयोः। १४४६-उ तृदिर हिंसाऽनादरयोः॥ उदात्तौ स्वरितेतावुभयतोभाषौ॥ १४४७-कृती वेष्टने॥ उदात्त उदात्तेत्परस्मैपदी॥ १४४८-जि इन्धी दीप्तौ॥ उदात्तोऽनुदात्ते-दात्मनेपदी॥ १४४९-खिद दैन्ये। १४५०-विद विचारणे॥ अनुदात्तावनुदात्तेता-वात्मनेपदिनौ। अथ परस्मैपदिनः॥ १४५१-शिष्ट विशेष्णे। १४५२-पिष्ट संचूर्णने। १४५३-भन्जो आमर्दने। १४५४-भुज पालनाभ्यवहारयोः॥ शिषादयोऽनुदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ १४४५-तृह, १४५६-हिसि हिंसायाम्। १४५७-उन्दी क्लेदने। १४५८-अन्जू व्यक्तिमर्षणकान्तिगतिषु। १४५९-तन्चु संकोचने। १४६०-ओ विजी भयचलनयोः। १४६१-वृजी वर्जने। १४६२-पृची संपर्के॥ तृहादय उदात्ता उदात्तेतः परस्मैपदिनः॥ वृत्॥ इति श्रम्विकरणा रुधादयः॥७॥

## अथ तनादिः

आद्या सप्त स्वरितेतः॥ १४६३-तनु विस्तारे। १४६४-षणु दाने। १४६५-क्षणु हिंसायाम्। १४६६-क्षिणु च। १४६७-ऋणु गतौ। १४६८-तृणु अदने। १४६९-घृणु दीप्तौ॥ तनादय उदात्ताः स्वरितेत उभयतोभाषाः॥ १४७०-वनु याचने। अयं चन्द्रमते परस्मैपदी॥ १४७१-मनु अवबोधने॥ उदात्तावनुदात्तेतावात्मनेभाषौ॥ १४७२-डु कृञ् करणे॥ अनुदात्त उभयतोभाषाः॥ वृत्॥ इत्युविकरणास्तनादयः॥८॥

## अथ क्र्यादिः

१४७३-डु क्रीञ् द्रव्यविनिमये। १४७४-प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च। १४७५-श्रीञ् पाके। १४७६-मीञ् हिंसायाम्। १४७७-षिञ् बन्धने। १४७८-स्कुञ् आप्रवणे। स्तन्भु स्तुन्भु स्कन्भु स्कुन्भु रोधन इत्येके। प्रथमतृतीयौ स्तम्भे इति माधवः। द्वितीयो निष्कोषणे चतुर्थो धारण इत्यन्ये। चत्वार इमे

परस्मैपदिनः सौत्राश्च॥ १४७९-युज् बन्धने॥ क्र्यादयोऽनुदात्ता उभयतोभाषाः॥  
 १४८०-कूज् शब्दे॥ १४८१-द्रूज् हिंसायाम्॥ १४८२-पूज् पवने॥ १४८३-  
 लूज् छेदने॥ १४८४-स्तृज् आच्छादने॥ १४८५-कृज् हिंसायाम्॥ १४८६-  
 वृज् वरणे॥ १४८७-धूज् कम्पने॥ कूप्रभृतय उदात्ता उभयतोभाषाः॥ अथ  
 बध्नात्यन्ताः परस्मैपदिनः॥ १४८८-शृ हिंसायाम्॥ १४८९-पृ  
 पालनपूरणयोः॥ १४९०-वृ वरणे॥ भरण इत्येके॥ १४९१-भृ भर्त्सने॥  
 भरणेऽप्येके॥ १४९२-मृ हिंसायाम्॥ १४९३-दृ विदारणे॥ १४९४-जू  
 वयोहानौ॥ झृ इत्येके॥ धृ इत्यन्ये॥ १४९५-नृ नये॥ १४९६-कृ हिंसायाम्॥  
 १४९७-ऋ गतौ॥ १४९८-गृ शब्दे॥ शृणातिप्रभृतय उदात्ता उदात्तेतः  
 परस्मैपदिनः॥ १४९९-ज्या वयोहानौ॥ १५००-री गतिरेषणयोः॥ १५०१-  
 ली श्लेषणे॥ १५०२-व्ली वरणे॥ १५०३-प्ली गतौ॥ वृत्॥ ल्वादयो  
 गताः॥ प्वादयोऽपीत्येके॥ १५०४-व्री वरणे॥ १५०५-ग्री भये॥ भर इत्येके॥  
 १५०६-क्षीष् हिंसायाम्॥ १५०७-ज्ञा अवबोधने॥ १५०८-बन्ध बन्धने॥  
 ज्यादयोऽनुदात्ता उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ १५०९-वृङ् संभक्तौ॥ उदात्त  
 आत्मनेपदी॥ १५१०-श्रन्थ विमोचनप्रतिहर्षयोः॥ १५११-मन्थ विलोडने॥  
 १५१२-श्रन्थ, १५२३-ग्रन्थ संदर्भे॥ १५१४-कुन्थ संश्लेषणे॥ संक्लेश  
 इत्येके॥ कुथ इति दुर्गः॥ १५१५-मृद क्षोदे॥ १५१६-मृड च॥ अयं  
 सुखेऽपि॥ १५२०-णभ, १५२१-तुभ हिंसायाम्॥ १५२२-क्लिशू  
 विबाधने॥ १५२३-अश भोजने॥ १५२४-उध्रस उज्छे॥ १५२५-इष  
 आभीक्ष्ये॥ १५२६-विष विप्रयोगे॥ १५२७-प्रूष, १५२८-प्लुष  
 स्नेहनसेवनपूरणेषु॥ १५२९-पुष पुष्टौ॥ १५३०-हैठ च॥ श्रन्थादय उदात्ता  
 उदात्तेतः परस्मैभाषाः॥ क्लिशिस्तु वेट्॥ विषस्त्वनुदात्तः॥ १५३३-ग्रह  
 उपादाने॥ उदात्तः स्वरितेदुभयतोभाषः॥ इति श्राविकरणाः क्र्यादयः॥१॥

### अथ चुरादिः

१५३४-चुर स्तेये॥ १५३५-चिति स्मृत्याम्॥ १५३६-यत्रि संकोचे॥  
 १५३७-स्फुडि परिहासे॥ स्फुटि इत्यपि॥ १५३८-लक्ष दर्शनाङ्कनयोः॥  
 १५३९-कुद्रि अनृतभाषणे॥ कुदृ इत्येके॥ कुडि इत्यपरे॥ १५४०-लड  
 उपसेवायाम्॥ १५४१-मिदि स्नेहने॥ अयमनिदिति क्षीरस्वामिकौशिकौ॥



१५४२-ओ लडि उत्क्षेपणे। ओकारो धात्ववयव इत्येके। नेत्यपरे। उ लडि  
 इत्यन्ये।। १४५३-जल अपवारणे। लज इत्येके।। १५४४-पीड अवगाहने।  
 १५४५-नट अवस्पन्दने। १५४६-श्रथ प्रयत्ने। प्रस्थान इत्येके। १५४७-  
 बध संयमने। बन्ध इति चान्द्राः।। १५४८-पृ पूरणे। १५४९-ऊर्ज  
 बलप्राणनयोः। १५५०- पक्ष परिग्रहे। (चूर्ण पेषणे)।। १५५१-वर्ण,  
 १५५२-चूर्ण प्रेरणे। वर्ण वर्णन इत्येके। १५५३-प्रथ प्रस्थाने। १५५४-  
 पृथ प्रक्षेपे। पथ इत्येके।। १५५५-षम्ब संबन्धने। १५५६-शम्ब च।  
 साम्ब इत्येके।। १५५७-भक्ष अदने। १५५८-कुट्ट छेदनभर्त्सनयोः। पूरण  
 इत्येके।। १५५९-पुट्ट, १५६०-चुट्ट अल्पीभावे। १५६१-अट्ट, १५६२-  
 षुट्ट अनादरे। १५६३-लुण्ट स्तेये। लुण्ट इति केचित्। १५६४-शठ,  
 १५६५-श्वठ असंस्कारगत्योः। श्वठि इत्येके।। १५६६-तुजि। १५६७-  
 पिजि हिंसाबलादाननिकेतनेषु। तुज पिज इति केचित्। लजि लुजि इत्येके।।  
 १५६८-पिस गतौ। १५६९-षान्त्व सामप्रयोगे। १५७०-श्वल्क, १५७१-  
 वल्क परिभाषणे। १५७२-ष्णिह स्नेहने। स्फिट इत्येके।। १५७३-स्मिट  
 अनादरे। ष्मिड् इत्येके। १५७४-श्लिष श्लेषणे। १५७५-पथि गतौ।  
 १५७६-पिछ कुट्टने। १५७७-छदि संवरणे। १५७८-श्रण दाने। १५७९-  
 तड आघाते। १५८०-खड, १५८१-खडि, १५८२- कडि भेदने।  
 १५८३-कुडि रक्षणे। १५८४-गुडि वेष्टने। रक्षण इत्येके। कुठि इत्यन्ये।  
 गुठि इत्यपरे।। १५८५-खुडि खण्डने। १५८६-वटि विभाजने। पडि  
 इति केचित्। (चडि कपि चण्डे)। १५८७-मडि भूषायां हर्षे च। १५८८-  
 भडि कल्याणे। १५८९-छर्द वमने। १५९०-पुस्त, १५९१-बुस्त  
 आदरानादरयोः। १५९२-चुद संचोदने। १५९३-नक्क, १५९४-धक्क  
 नाशने। १५९५-चक्क, १५९६-चुक्क व्यथने। १५९७-क्षल शौचकर्मणि।  
 १५९८-तल प्रतिष्ठायाम्। १५९९-तुल उन्माने। १६००-दुल उत्क्षेपे।  
 १६०१-पुल महत्त्वे। १६०२-चुल समुच्छ्रये। १६०३-मूल रोहणे।  
 १६०४-कल, १६०५-विल क्षेपे। १६०६-बिल भेदने। १६०७-तिल  
 स्नेहने। १६०८-चल भृतौ। १६०९-पाल रक्षणे। १६१०-लूष हिंसायाम्।  
 १६११-शुल्ब माने। १६१२-शूर्प च। १६१३-चुट छेदने। १६१४-  
 मुट संचूर्णने। १६१५-पडि, १६१६-पसि नाशने। १६१७-वज  
 मार्गसंस्कारगत्योः। १६१८-शुल्क अतिस्पर्शने। अतिसर्जन इत्येके।।



१६१९-चपि गत्याम्। १६२०-क्षपि क्षान्त्याम्। १६२१-छजि कृच्छ्रजीवने।  
 १६२२-चपि गत्याम्। १६२३-क्षभ्र च। १६२४-ज्ञप  
 ज्ञानज्ञापनमारणतोषणनिशाननिशामनेषु। मिच्चेत्यके॥ १६२५-यम च  
 परिवेषणे। चान्मित्॥ १६२६-चह परिकल्पने। चज इत्येके॥ १६२७-  
 रह त्यागे। १६२८-बल प्राणने। १६२९-चिज् चयने। नान्ये मितोऽहेतौ॥  
 १६३०-घट्ट चलने। १६३१-मुस्त संघाते। १६३२-खट्ट संवरणे।  
 १६३३-षट्ट, १६३४-स्फिट्ट, १६३५-चुबि हिंसायाम्। १६३६-पूल  
 संघाते। पूर्ण इत्येके। पूण इत्यन्ये॥ १६३७-पुंस अभिवर्धने। १६३८-  
 टकि बन्धने। (व्यप क्षेपे। व्यय विप इत्येके।) १६३९-धूस कान्तिकरणे।  
 मूर्धन्यान्त इत्येके। तालव्यान्त इत्यन्ये॥ १६४०-कीट वर्णे। १६४१-  
 चूर्ण संकोचने। १६४२-पूज पूजायाम्। १६४३-अर्क स्तवने। तपन  
 इत्येके॥ १६४४-शुठ आलस्ये। १६४५-शुठि शोषणे। १६४६-जुड  
 प्रेरणे। १६४७-गज, १६४८-मार्ज शब्दार्थौ। १६४९-मर्च च। १६५०-  
 घृ प्रस्रवणे। स्त्रावण इत्येके॥ १६५१-पचि विस्तारवचने। १६५२-तिज  
 निशातने। १६५३-कृत संशब्दने। १६५४-वर्ध छेदनपूरणयोः। १६५५-  
 कुबि आच्छादने। कुभि इत्येके॥ १६५६-लुबि, १६५७-तुबि अदर्शने।  
 अर्दन इत्येके॥ १६५८-हूप व्यक्तायां वाचि। क्लप इत्येके। हप इत्यन्ये॥  
 १६५९-चुटि छेदने। १६६०-इल प्रेरणे। १६६१-प्रक्ष म्लेच्छने। १६६२-  
 म्लेच्छ अव्यक्तायां वाचि। १६६३-ब्रूस, १६६४-बर्ह हिंसायाम्। केचिदिह  
 गर्ज गर्द शब्दे, गर्ध अभिकाङ्क्षायाम् इति पठन्ति॥ १६६५-गुर्द पूर्वनिकेतने।  
 १६६६-जसि रक्षणो। मोक्षण इति केचित्॥ १६६७-ईड स्तुतौ। १६६८-  
 जसु हिंसायाम्। १६६९-पिडि संघाते। १६७०-रुष रोषे। रुट इत्येके॥  
 १६७१-डिप क्षेपे। १६७२-धूप समुच्छ्राये। आकुस्मादात्मनेपदिनः॥  
 १६७३-चित संचेतने। १६७४-दशि दंशने। १६७५-दसि दर्शनदंशनयोः।  
 दस इत्यप्येके॥ १६७६-डप, १६७७-डिप संघाते। १६७८-तत्रि  
 कुटुम्बधारणे। कुटुम्ब धात्वन्तरमिति चान्द्राः। १६७९-मत्रि गुप्तपरिभाषणे।  
 १६८०-स्पश ग्रहणसंश्लेषणयोः। १६८१-तर्ज, १६८२-भर्त्स तर्जने।  
 १६८३-बस्त, १६८४-गन्ध अर्दने। १६८५-विष्क हिंसायाम्। हिष्क  
 इत्येके॥ १६८६-निष्क परिमाणे। १६८७-लल ईप्सायाम्। १६८८-  
 कूण संकोचे। १६८९-तूण पूरणे। १६९०-भ्रूण आशाविशङ्कयोः। १६९१-



शठ श्लाघायाम्। १६९२-यक्ष पूजायाम्। १६९३-स्यम वितर्के। १६९४-  
 गूर उद्यमने। १६९५-शम, १६९६-लक्ष आलोचने। १६९७-कुत्स  
 अवक्षेपणे। १६९८-त्रुट छेदने। कुट इत्येके। १६९९-गल स्रवणे।  
 १७००-भल आभण्डने। १७०१-कूट आप्रदाने। अवसादन इत्येके।।  
 १७०२-कुट्ट प्रतापने। १७०३-वन्चु प्रलम्भने। १७०४-वृष शक्तिबन्धने।  
 १७०५-मद तृप्तियोगे। १७०६-दिवु परिकूजने। १७०७-गृ विज्ञाने।  
 १७०८-विद चेतनाख्यानविवासेषु। १७०९-(मान) मन स्तम्भे। १७१०-  
 यु जुगुप्सायाम्। १७११-कुस्म नाम्नो वा कुत्सितस्मयने।। इत्याकुस्मीयाः।।  
 १७१२-चर्च अध्ययने। १७१३-बुक्क भाषणे। १७१४-शब्द  
 उपसर्गादाविष्कारे च। १७१५-कण निमीलने। १७१६-जभि नाशने।  
 १७१७-षूद क्षरणे। १७१८-जसु ताडने। १७१९-पश बन्धने। १७२०-  
 अम रोगे। १७२१-चट, १७२२-स्फुट भेदने। १७२३-घट संघाते।  
 हन्त्यर्थाश्च। १७२४-दिवु मर्दने। १७२५-अर्ज प्रतियत्ने। १७२६-  
 घुषिर विशब्दने। १७२७-आडः क्रन्द सातत्ये। १७२८-जस शिल्पयोगे।  
 १७२९-तसि। १७३०-भूष अलंकरणे। (घोष असने, मोक्ष आसने)।।  
 १७३१-अर्ह पूजायाम्। १७३२-ज्ञा नियोगे। १७३३-भज विश्राणने।  
 १७३४-शृधु प्रसहने। १७३५-यत निकारोपस्कारयोः। १७३६-रक,  
 १७३७-लग आस्वादने। रघ इत्येके। रग इत्यन्ये।। १७३८-अन्चु विशेषणे।  
 १७३९-लिगि चित्रीकरणे। १७४०-मुद संसर्गे। १७४१-त्रस धारणे।  
 ग्रहण इत्येके। नेत्यन्ये।। १७४३-मुच प्रमोचने मोदने च। १७४४-वस  
 स्नेहच्छेदापहरणेषु। १७४५-चर संशये। १७४६-च्यु सहने। हसने चेत्येके।  
 च्युस इत्येके।। १७४७-भुवोऽवकल्कने। चिन्तन इत्येके।। १७४८-कृपेश्च।।  
 आ स्वदः सकर्मकात्।। अतः परं स्वदिमभिव्याप्य संभवत्कर्मकेभ्य एव  
 णिच्।। १७४९-ग्रस ग्रहणे। १७५०-पुष धारणे। १७५१-दल विदारणे।  
 १७५२-पट, १७५३-पुट, १७५४-लुट, १७५५-तुजि, १७५६-  
 मिजि, १७५७-पिजि, १७५८-लुजि, १७५९- भजि, १७६०-लघि,  
 १७६१-त्रसि, १७६२-पिसि, १७६३-कुसि, १७६४-दशि, १७६५-  
 कुशि, १७६६-घट, १७६७-घटि, १७६८-बृहि, १७६९-बर्ह,  
 १७७०-बल्ह, १७७१-गुप, १७७२-धूप, १७७३-विच्छ, १७७४-  
 चीव, १७७५-पुथ, १७७६-लोकृ, १७७७-लोचृ, १७७८-णद,



१७७९-कुप। १७८०-तर्क। १७८१-वृतु। १७८२-वृधु भाषार्थाः।  
 १७८३-रुट। १७८४-लजि। १७८५-अजि। १७८६-दसि। १७८७-  
 भृशि। १७८८-रुशि। १७८९-शीक। १७९०-रुसि। १७९१-नट।  
 १७९२-पुटि। १७९३-जि। १७९४-चि (जुचि)। १७९५-रघि।  
 १७९६-लघि। १७९७-अहि। १७९८-रहि। १७९९-महि च। १८००-  
 लडि। १८०१-तुड। १८०२-नल च। १८०३-पूरी आप्यायने। १८०४-  
 रुज हिंसायाम्। १८०५-ष्वद आस्वादने। स्वाद इत्येके।। आ धृषाद्वा।।  
 इत ऊर्ध्वं धृषधातुमभिव्याप्य वैकल्पिकणिचः।। १८०६-युज, १८०७-  
 पृच संयमने। १८०८-अर्य पूजायाम्। १८०९-षह मर्षणे। १८१०-ईर  
 क्षेपे। १८११-ली द्रवीकरणे। १८१२-वृजी वर्जने। १८१३-वृजू आवरणे।  
 १८१४-जृ वयोहानौ। १८१५-ञि च। १८१६-रिच वियोजनसंपर्चनयोः।  
 १८१७-शिष असर्वोपयोगे। १८१८-तप दाहे। १८१९-तृप तृप्तौ। संदीपन  
 इत्येके।। १८२०-छृदी संदीपने। चृप छृप तृप दृप संदीपन इत्येके।।  
 १८२१-दृभी ग्रन्थे (भये) १८२२-दृभ संदर्भे। १८२३-श्रथ मोक्षणे।  
 हिंसायाम् इत्यन्ये।। १८२४-मी गतौ। १८२५-ग्रन्थ बन्धने। १८२६-  
 शीक आमर्षणे। १८२७-चीक च। १८२८-अर्द हिंसायाम्।। स्वरितेत्।।  
 १८२९-हिसि हिंसायाम्। १८३०-अर्ह पूजायाम्। १८३१-आडः षद  
 पद्यर्थे। १८३२-शुन्ध शौचकर्मणि। १८३३-छद अपवारणे।। स्वरितेत्।।  
 १८३४-प्रीज् तर्पणे। १८३७-श्रन्थ, १८३८-ग्रन्थ संदर्भे। १८३९-  
 आप्ल् लम्भने।। स्वरितेदयमित्येके।। १८४०-तनु श्रद्धोपकरणयोः। उपसर्गाच्च  
 दैर्घ्ये।। चन श्रद्धोपहननयोरित्येके।। १८४१-वद संदेशवचने।। स्वरितेत्।।  
 अनुदात्तेदित्येके।। १८४२-वच परिभाषणे। १८४३-मान पूजायाम्।  
 १८४४-भू प्राप्तावात्मनेपदी। णिच्संनियोगेनैव आत्मनेपदमित्येके।। १८४५-  
 गर्ह विनिन्दने। १८४६-मार्ग अन्वेषणे। १८४७-कठि शोके। प्रायेण  
 उत्पूर्वः उत्कण्ठावचनः।। १८४८-मृजू शौचालंकारयोः। १८४९-मृष  
 तितिक्षायाम्।। स्वरितेत्।। १८५०-धृष प्रसहने।। इत्याधृषीयाः।। अथादन्ताः।।  
 १८५१-कथा वाक्यप्रबन्धने। १८५२-वर ईप्सायाम्। १८५३-गण संख्याने।  
 १८५४-शठ, १८५५-श्वठ सम्यगवभाषणे। १८५६-पट, १८५७-वट  
 ग्रन्थे। १८५८-रह त्यागे। १८५९-स्तन, १८६०-गदी देवशब्दे। १८६१-  
 पत गतौ वा। वा अदन्त इत्येके।। १८६२-पष अनुपर्सात् (गतौ)। १८६३-



स्वर आक्षेपे। १८६४-रच प्रतियत्ने। १८६५-कल गतौ संख्याने च।  
 १८६६-चह परिकल्कने। १८६७-मह पूजायाम्। १८६८-सार, १८६९-  
 कृप, १८७०-श्रथ दौर्बल्ये। १८७१-स्पृह ईप्सायाम्। १८७२-भाम क्रोधे।  
 १८७३-सूच पैशुन्ये। १८७४-खेट भक्षणो। तृतीयान्त इत्येके। खोट  
 इत्यन्ये। १८७५-क्षोट क्षेपे। १८७६-गोम उपलेपने। १८७७-कुमार  
 क्रीडायाम्। १८७८-शील उपधारणे। १८७९-साम सान्त्वप्रयोगे। १८८०-  
 वेल कालोपदेशे। काल इति पृथग्धातुरित्येके। १८८१-पल्पूल लवनपवनयोः।  
 १८८२-वात सुखसेवनयोः। गतिसुखसेवनेष्वित्येके। १८८३-गवेष मार्गणे।  
 १८८४-वास उपसेवायाम्। १८८५-निवास आच्छादने। १८८६-भाज  
 पृथक्कर्मणि। १८८७-सभाज प्रीतिदर्शनयोः। प्रीतिसेवनयोरित्येके। १८८८-  
 ऊन परिहाणे। १८८९-ध्वन शब्दे। १८९०-कूट परितापे। परिदाह इत्यन्ये।  
 १८९१-संकेत, १८९२-ग्राम, १८९३-कुण, १८९४-गुण चामन्त्रणे।  
 चात्कूटोऽपि इति मैत्रेयः। १८९५-केतश्रावणे निमन्त्रणे च। १८९६-  
 कूण संकोचनेऽपि। १८९७-स्तेन चौये। आगर्वादात्मनेपदिनः। १८९८-  
 पद गतौ। १८९९-गृह ग्रहणे। १९००-मृग अन्वेषणे। १९०१-कुह  
 विस्मापने। १९०२-शूर, १९०३-वीर विक्रान्तौ। १९०४-स्थूल परिबृंहणे।  
 १९०५-अर्थ उपयाच्यायाम्। १९०६-सत्र संतानक्रियायाम्। १९०७-  
 गर्व माने। इत्यागर्वीयाः। १९०८-सूत्र वेष्टने। १९०९-मूत्र प्रस्रवणे।  
 १९१०-रुक्ष पारुष्ये। १९११-पार, १९१२-तीर कर्मसमाप्तौ। १९१३-  
 पुट संसर्गे। १९१४-धेक दर्शन इत्येके। १९१५-कल शैथिल्ये। कर्त  
 इत्यप्येके। 'प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे बहुलमिष्ठवच्च' (ग १८६) 'तत्करोति  
 तदाचष्टे' (ग १८७)। 'तेनातिक्रामति' (ग १८८)। 'धातुरूपं च' (ग  
 १८९)। 'आख्यानात्कृतस्तदाचष्टे कृल्लुक्प्रकृतिप्रत्यापत्तिः प्रकृतिवच्च कारकम्  
 ' (वा १७६८)। 'कर्तृकरणाद्धात्वर्थे' (ग १९)। १९१६-बष्क दर्शने।  
 १९१७-चित्र चित्रीकरणे। कदाचिद्दर्शने। १९१८-अंस समाघाते। १९१९-  
 वट विभाजने। १९२०-लज प्रकाशने। वटि लजि इत्येके। १९२१-  
 मिश्र संपर्के। १९२२-संग्राम युद्धे। अनुदात्तेत्। १९२३-स्तोम श्लाघायाम्।  
 १९२४-छिद्र कर्णभेदेने। करणभेदन इत्येके। कर्ण इति धात्वन्तरमित्यपरे।  
 १९२५-अन्ध दृष्ट्युपघाते। उपसंहार इत्यन्ये। १९२६-दण्ड दण्डनिपातने।  
 १९२७-अङ्क पदे लक्षणे च। १९२८-अङ्क च। १९२९-सुख, १९३०-

दुःख तत्क्रियायाम्। १९३१-रस आस्वादनस्नेहनयोः। १९३४-छेद द्वैधीकरणे।  
 १९३५-छद अपवारणे। १९३६-लाभ प्रेरणे। १९३७-व्रण गात्रविचूर्णने।  
 १९३८-वर्ण वर्णाक्रियाविस्तारगुणवचनेषु। बहुलमेतन्निदर्शनम् इत्येके।।  
 १९३९-पर्ण हरितभावे। १९४०-विष्क दर्शने। १९४१-क्षप प्रेरणे। १९४२-  
 वस निवासे। १९४३-तुत्य आवरणे एवं आन्दोलयति प्रेङ्खोलयति विडम्बयति  
 अवधीरयति इत्यादि। अन्ये तु दशगणपाठो बहुलमित्याहुः। तेनेह अपठिता  
 अपि सौत्रा लौकिका वैदिका अपि द्रष्टव्या इत्याहुः। इतरे तु नवगणीपठितेभ्योऽपि  
 क्वचित् स्वार्थे णिज्भवति, बहुलग्रहणात्, तेन रामो राज्यमचीकरत्  
 इत्यादिसिद्धिरित्याहुः। चुरादिभ्य एव बहुलं णिजित्यन्ये।। णिङ्ङान्निरसने।  
 श्वेताश्वाश्चतरगालोडिताह्वरकाणामश्वतरेतकलोपश्च। पुच्छादिषु प्रातिपदिकाद्वात्वर्थ  
 इत्येव सिद्धम्।। इति स्वार्थणिजन्ताश्चुरादयः।। १०।।

इति श्रीपाणिनिमुनिप्रणीतो धातुपाठः समाप्तः।।





## अथ लिङ्गानुशासनम्

१. लिङ्गम्।
२. स्त्री।
३. ऋकारान्ता मातृदुहितृस्वसृ-  
पोतृनान्तरः।
४. अन्यूप्रत्ययान्तो धातुः।
५. अशनिभरण्यरणयः पुंसि च।
६. मिन्यन्तः।
७. वह्निघृष्यग्नयः पुंसि।
८. श्रोणियोन्यूर्ययः पुंसि च।
९. क्तिन्नन्तः।
१०. ईकारान्तश्च।
११. ऊङ्ङ्याबन्तश्च।
१२. य्वन्तमेकाक्षरम्।
१३. विंशत्यादिरानवतेः।
१४. दुन्दुभिरक्षेषु।
१५. नाभिरक्षत्रिये।
१६. उभावप्यन्यत्र पुंसि।
१७. तलन्तः।
१८. भूमिविद्युत्सरिल्लतावनिताभि-  
धानानि।
१९. यादो नपुंसकम्।
२०. भाःस्नुक्स्त्रग्दिगुष्णिगुपानहः।
२१. स्थूणोर्णे नपुंसके च।
२२. गृहशशाभ्यां क्लीबे।
२३. प्रावृड्विप्रुट् रुट् तृड्विद्वत्विषः।
२४. दर्विविदिवेदिखनिशान्त्यश्रिवेशि-  
कृष्णोषधिकट्यङ्गुलयः।
२५. तिथिनाडिरुचिवीचिनालिधूलि-  
केकिकेलिच्छविनीविरात्र्यादयः।
२६. शङ्कुलिराजिकुट्यशनिवर्ति-  
भ्रुकुटिनुटिवलिपङ्क्तयः।
२७. प्रतिपदापद्विपत्संपच्छरत्सं-  
सत्परिषदुषःसंवित्क्षुत्पुन्मु-  
त्समिधयः।
२८. आशीर्धूःपूर्गोर्द्वारः।
२९. अप्सुमनस्समासिकृता वर्षाणां  
बहुत्वं च।
३०. स्रक्त्वग्जोग्वाग्यवाग्नौस्फिचः।
३१. तृटिसीमासम्बध्याः।
३२. चूल्लिवेणिखार्यश्च।
३३. ताराधाराज्योत्स्नादयश्च।
३४. शलाका स्त्रियां नित्यम्।
१. पुमान्।
२. घञबन्तः।
३. भयलिङ्गभगपदानि नपुंसके।
५. नङ्न्तः।
६. याच्ञा स्त्रियाम्।
७. क्यन्तो धुः।
८. इषुधिः स्त्री च।
९. देवासुरात्मस्वर्गगिरिसमुद्रनखकेश-  
दन्तस्तनभुजकण्ठखड्गशरपङ्काभि-  
धानानि।
१०. त्रिविष्टपत्रिभुवने नपुंसके।
११. द्यौः स्त्रियाम्।
१२. इषुबाहू स्त्रियां च।
१३. बाणकाण्डौ नपुंसके च।
१४. नान्तः।

१५. ऋतुपुरुषकपोलगुल्फमेधाभिधानानि।
१६. अश्रं नपुंसकम्।
१७. उकारान्तः।
१८. धेनुरज्जुकुहूसरयूतनुरेणुप्रियङ्गवः स्त्रियाम्।
१९. समासे रज्जुः पुंसि च।
२०. श्मश्रुजानुवसुस्वाद्धश्रुजतुत्रपुतालूनि नपुंसके।
२१. वसु चार्थवाचि।
२२. मट्टमधुसीधुशीधुसानुकमण्डलूनि नपुंसके च।
२३. रूत्वन्तः।
२४. दारूकसेरूजतुवस्तुमस्तूनि नपुंसके।
२५. सक्तुर्नपुंसके च।
२६. प्राग्रश्मेरकारान्तः।
२७. कोपधः।
२८. चिबुकशालूकप्रातिपदिकांशुकोल्मुकानि नपुंसके।
२९. कण्टकानीकसरकमोदकचषकमस्तकपुस्तकतडाकनिष्कशुष्कवर्चस्कपिनाकभाण्डकपिण्डककटकशण्डकपिटकतालकफलकपुलाकानि नपुंसके च।
३०. टोपधः।
३१. किरीटमुकुटललाटवटवितशृङ्गाटकराटलोष्ठानि नपुंसके।
३२. कुटकूटकपटकवाटकपटनटनिकटकीटकटानि नपुंसके च।
३३. णोपधः।
३४. ऋणलवणपर्णतोरणरणोष्णानि नपुंसके।
३५. कार्षापणस्वर्णसुवर्णव्रणचरणवृषविषाणचूर्णतृणानि नपुंसके च।
३६. थोपधः।
३७. काष्ठपृष्ठसिक्थोक्थानि नपुंसके।
३८. काष्ठा दिगर्थाः स्त्रियाम्।
३९. तीर्थप्रोथयूथगाथानि नपुंसके च।
४०. नोपधः।
४१. जघनाजिनतुहिनकाननवनवृजिनविपिनवेतनशासनसोपानमिथुनश्मशानरत्न-निम्नचिह्नानि नपुंसके।
४२. मानयानाभिधाननलिनपुलिनोद्यानशयनासनस्थानचन्दनालानसम्मान-भवनवसनसम्भावनविभावनविमानानि नपुंसके च।
४३. पोपधः।
४४. पापरूपोडुपतल्पाशिल्पपुष्पशष्पसमीपान्तरीपाणि नपुंसके।
४५. शूर्पकुतपकुणपद्वीपविटपानि नपुंसके च।
४६. भोपधः।
४७. तलभं नपुंसकम्।
४८. जृम्भं नपुंसके च।
४९. मोपधः।
५०. रुक्मसिध्मयुग्मेध्मगुल्माध्यात्मकुङ्कुमानि नपुंसके।
५१. संग्रामदाडिमकुसुमाश्रमक्षेमक्षौमहोमोदामानि नपुंसके च।
५२. योपधः।
५३. किसलयहृदयेन्द्रियोत्तरीयाणि नपुंसके।



५४. गोमयकषायमलयान्वयाव्ययानि नपुंसके च।  
 ५५. रोपधः।  
 ५६. द्वाराग्रस्फारतक्रवक्रवप्रक्षिप्रक्षुद्र-  
 नारतीरदूरकृच्छ्रन्नाश्रश्चप्रभीरगभीर-  
 क्रूरविचित्रकेयूरकेदारोदराजसशरीरकन्द-  
 रमन्दारपञ्जराजरजठराजिरकैचामरपुष्कर-  
 गह्वरकुहकुटीरकुलीरचत्वरकाशमीरनीराम्बर  
 शिशिरतन्त्रयंत्रनक्षत्रक्षेत्रमित्रकलत्र-  
 चित्र-मित्रसूत्रवक्रनेत्रगोत्रांगुलित्र-  
 भलत्रास्त्रशस्त्रशास्त्रवस्त्रपात्र-  
 नक्षत्राणि नपुंसके।  
 ५७. शुक्रमदेवतायाम्।  
 ५८. चक्रवज्रान्धकारसारावारपार-  
 क्षीरतोमरशृङ्गारभृङ्गारमन्दरोशीरतिमिर-  
 शिशिराणि नपुंसके च।  
 ५९. षोपधः।  
 ६०. शिरीषजीषाम्बरीषपीयूषपुरीष-  
 किल्बिषकल्माषाणि नपुंसके।  
 ६१. यूषकरीषमिषविषवर्षाणि नपुंसके  
 च।  
 ६२. सोपधः।  
 ६३. पनसबिसबुससाहसानि नपुंसके।  
 ६४. चमसांसरसनिर्यासोपवासकार्पास-  
 वासभासकासकांसमांसानि नपुंसके  
 च।  
 ६५. कंसंज्ञाप्राणिनि।  
 ६६. रश्मिदिवसाभिधानानि।  
 ६७. दीधितिः स्त्रियाम्।  
 ६८. दिनाहनी नपुंसके।  
 ६९. मानाभिधानानि।  
 ७०. द्रोणाढकौ नपुंसके।  
 ७१. खारीमानिके स्त्रियाम्।  
 ७२. दाराक्षतलाजासूनां बहुत्वं च।  
 ७३. नाड्यपजनोपपदानि व्रणाङ्गपदानि।  
 ७४. मरुद्रुदुत्तरदृत्विजः।  
 ७५. ऋषिराशिदृतिग्रन्थिक्रिमिध्वनि-  
 बहलकौलिमौलिरविकपिमुनयः।  
 ७६. ध्वजगजमुञ्जपुञ्जाः।  
 ७७. हस्तकुन्तान्तवातव्रातदूतधूर्तसूत-  
 चूतमुहूर्ताः।  
 ७८. षण्डमण्डकरण्डभरण्डवरण्ड-  
 तुण्डगण्डमुण्डपाषण्डशिखण्डाः।  
 ७९. वंशांशपुरोडाशाः।  
 ८०. हकन्दकुन्दबुद्बुदशब्दाः।  
 ८१. अर्धपथिमथ्यभुक्षिस्तम्बनितम्ब-  
 पूगाः।  
 ८२. पल्लवपल्वलकफरेफकटाह-  
 निर्य्यूहमठमणितरङ्गतुरङ्गगन्ध-  
 स्कन्धमृदङ्गसङ्गसमुद्रपुङ्खाः।  
 ८३. सारथ्यतिथिकुक्षिवस्तिपाण्यञ्ज-  
 लयः।  
 १. नपुंसकम्।  
 २. भावे ल्युङन्तः।  
 ३. निष्ठा च।  
 ४. त्वष्यजौ तद्धितौ।  
 ५. कर्मणि च ब्राह्मणादिगुणवचनेभ्यः।  
 ६. द्वन्द्वैकत्वम्।  
 ८. अभाषायां हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च।  
 ९. अनञ्कर्मधारयस्तत्तत्पुरुषः।

१०. अनल्पे छाया।  
 ११. राजामनुष्यपूर्वासभा।  
 १२. सुरा सेना च्छाया शाला निशा  
 स्त्रियां च।  
 १३. शिष्टः परवत्।  
 १४. अपथपुण्याहे नंपुसके।  
 १५. संख्यापूर्वा रात्रिः।  
 १६. द्विगुः स्त्रियां च।  
 १७. इसुसन्तः।  
 १८. अर्चिः स्त्रियां च।  
 १९. छर्दिः स्त्रियामेव।  
 २०. मुखनयनलोहवनमांसरुधिर-  
 कार्मुकविवरजलंहलधनान्नाभिधानानि।  
 २१. सीरार्थैदनाः पुंसि।  
 २२. वक्त्रनेत्रारण्यगाण्डीवानि पुंसि च।  
 २३. अटवी स्त्रियाम्।  
 २४. लोपधः।  
 २५. तुलोपलतालकुसूलतरलकम्बल-  
 देवलवृषलाः पुंसि।  
 २६. शीलमूलमङ्गलसालकमलतल-  
 मुसलकुण्डलपललमृणालवाल-  
 बालनिगलपलालबिडालखिल-  
 शूलाः पुंसि च।  
 २७. शतादिः संख्या।  
 २८. शतायुतप्रयुताः पुंसि च।  
 २९. लक्षाकोटी स्त्रियाम्।  
 ३०. सहस्रः क्वचित्।  
 ३२. मन्द्व्यच्छोऽकर्तरी।  
 ३३. ब्रह्मपुंसि च।  
 ३४. नामरोमणी नंपुसके।  
 ३५. असन्तो द्व्यच्छः।  
 ३६. अप्सराः स्त्रियाम्।  
 ३७. त्रान्तः।  
 ३८. यात्रामात्राभस्त्रादंष्ट्रावरत्राः  
 स्त्रियामेव।  
 ३९. भृत्रामित्रच्छात्रपुत्रमन्त्रवृत्रमेद्रोष्ट्राः  
 पुंसि।  
 ४०. पत्रपात्रपवित्रसूत्रच्छात्राः पुंसि च।  
 ४१. बलकुसुमशुल्कयुद्धपत्तन  
 रणाभिधानानि।  
 ४२. पद्मकमलोत्पलानि पुंसि च।  
 ४३. आहवसग्रांमौ पुंसि।  
 ४४. आजिः स्त्रियामेव।  
 ४५. फलजातिः।  
 ४६. वृक्षजातिः स्त्रियामेव।  
 ४७. वियज्जगत्सकृत्शकन्पृषच्छ-  
 कृद्यकृदुदक्षितः।  
 ४८. नवनीतावतानृतामृतनिमित्त-  
 वित्तचित्तपित्तव्रतरजतवृत्तपलितानि।  
 ४९. श्राद्धकुलिशदैवपीठकुण्डाङ्ग-  
 दधिसक्थ्यक्ष्यस्थ्यास्पदाकाशकण्व-  
 बीजानि।  
 ५०. दैवं पुंसि च।  
 ५१. धान्याज्यसस्यरूप्यपण्यवण्यवृष्य-  
 हव्यकव्यकाव्यसत्यापत्यमूल्यशिक्य-  
 कुढ्यमद्यहर्म्यतूर्यसैन्यानि।  
 ५२. द्वन्द्वबर्हदुःखबडिशपिच्छबिम्ब-  
 कुटुम्बकवचवरशरवृन्दारकाणि।  
 ५३. अक्षमिन्द्रिये।



१. स्त्रीपुंसयोः।

२. गोमणियष्टिमुष्टिपाटलिबस्ति-  
शाल्म-लित्रुटिमसिमरीच्यः।

३. मृत्युसीधुर्कन्धुकिष्कुण्डुरेणवः।

४. गुणवचनमुकारान्तं नपुंसकं च।

५. अपत्यार्थतद्धिते।

१. पुंनपुंसकयोः।

२. घृतभूतमुस्तक्ष्वेलितैरावतपुस्तक-  
बुस्तलोहिताः।

३. शृङ्गार्धनिदाधोद्यमंशल्यदृढाः।

४. व्रजकुञ्जकुथकूर्चप्रस्थदर्णार्धार्धचर्चद-  
र्भपुच्छाः।

५. कबन्धौषधायुधान्ताः।

६. दण्डमण्डखण्डशवसैन्धवपार्श्वका-  
शकुशकाशाङ्कुशकुलिशाः।

७. गृहमेहदेहपट्टपटहाष्टापदाम्बुदक-  
कुदाश्च।

१. अविशिष्टलिङ्गम्।

२. अव्ययं कतियुष्मदस्मदः।

३. षणान्ता संख्या।

४. गुणवचनं च।

५. कृत्याश्च।

६. करणाधिकरणयोर्युट्।

७. सर्वादीनि सर्वनामानि।

इति श्रीपाणिनिमुनिप्रणीतं लिङ्गानुशासनं समाप्तम्।



## सूत्रानुक्रमणी

अ

अ अ ८।४।६८।  
 अंशंहारी ५।२।६९।  
 अकः सवर्णे दीर्घः ६।१।१०१।  
 अकथितं च ४।१।५१।  
 अकर्तरि च० ३।३।१९।  
 अकर्तर्युणे पञ्चमी २।३।२४।  
 अकर्मकाच्च १।३।२६।  
 अकर्मकाच्च १।३।३५।  
 अकर्मकाच्च १।३।४५।  
 अकर्मधारये ६।२।१३०।  
 अकृच्छ्रे प्रियसुख० ८।१।१३।  
 अकृत्सार्वधातु० ७।४।२५।  
 अके जीविकार्थे ६।२।७३।  
 अकेनोर्भविष्य० २।३।७०।  
 अक्षशलाका० २।१।१०।  
 अक्षेषु ग्लहः ३।३।७०।  
 अक्षोऽन्यतरस्याम् ३।१।७५।  
 अक्ष्णोऽदर्शनात् ५।४।७६।  
 अगारान्ताड्डन् ४।४।७०।  
 अगारैकदेशे ३।३।७९।  
 अग्नीत्प्रेषणे ८।२।९२।  
 अग्नेः स्तुत्स्तोम० ८।३।८२।  
 अग्नेर्ढक् ४।२।३३।  
 अग्नौ चेः ३।२।९१।  
 अग्नौ परि० ३।१।१३१।  
 अग्राख्यायामुरसः ५।४।९३।  
 अग्राद्यत् ४।४।११६।  
 अग्रान्तशुद्ध० ५।४।१४५।  
 अङितश्च ६।४।१०३।

अङ्ग इत्यादौ च ६।१।११९।  
 अङ्गयुक्तं तिङ् ८।२।९६।  
 अङ्गस्य ६।४।१।  
 अङ्गानि मैरेये ६।२।७०।  
 अङ्गात् प्रातिलोम्ये ८।१।३३।  
 अङ्गुलेर्दारुणि ५।४।११४।  
 अङ्गुल्यादि० ५।३।१०८।  
 अ च ४।३।३१।  
 अच उपसर्गात्तः ७।४।४७।  
 अचः ६।४।१३८।  
 अचः कर्तृयकि ६।१।१९५।  
 अचः कर्मकर्तरि ३।१।६२।  
 अचः परस्मिन् १।१।५७।  
 अचतुरविचतुर० ५।४।७७।  
 अचश्च १।२।२८।  
 अचस्तास्वत्यत्य ७।२।६१।  
 अचित्तहस्तिधेनो० ४।२।४७।  
 अचित्ताददेश० ४।३।९६।  
 अचि र ऋतः ७।२।१००।  
 अचि विभाषा ८।२।२१।  
 अचि श्नुधातु० ६।४।७७।  
 अचोऽङ्गिति ७।२।११५।  
 अचोऽन्त्यादि टि १।१।६४।  
 अचो यत् ३।१।९७।  
 अचो रहाभ्यां द्वे ८।४।४६।  
 अच्कावशक्तौ ६।२।१५७।  
 अच्च घेः ७।३।११९।  
 अच्छ गत्यर्थवदेषु १।४।६९।  
 अच्छत्यन्वव० ५।४।७५।  
 अजर्ये संगतम् ३।१।१०५।



|                          |                          |
|--------------------------|--------------------------|
| अजादी गुण० ५।३।५८।       | अण्महिष्यादिभ्यः ४।४।४८। |
| अजादेद्वितीयस्य ६।१।२।   | अत आदेः ७।४।७०।          |
| अजाद्यतष्टाप् ४।१।४।     | अत इञ् ४।१।९५।           |
| अजाद्यदन्तम् २।२।३३।     | अत इनिठनौ ५।२।११५।       |
| अजाविभ्यां थ्यन् ५।१।८।  | अत उत्सार्व० ६।४।११०।    |
| अजिनान्तस्योत्तर ५।३।८२। | अत उपधायाः ७।२।११६।      |
| अजिब्रज्योश्च ७।३।६०।    | अत एकहल्० ६।४।१२०।       |
| अजेर्व्यघञपोः २।४।५६।    | अतः कृकमि० ८।३।४६।       |
| अज्झनगमां सनि ६।४।१६।    | अतश्च ४।१।१७७।           |
| अज्ञाते ५।३।७३।          | अतिग्रहाव्यथन० ५।४।४६।   |
| अञ्चेः पूजायाम् ७।२।५३।  | अतिथेर्व्यः ५।४।२६।      |
| अञ्चेर्लुक् ५।३।३०।      | अतिरतिक्रमेण च १।४।९५।   |
| अञ्चेश्छन्दस्य० ६।१।१७०। | अतिशायने ५।३।५५।         |
| अञ्चोऽनपादाने ८।२।४८।    | अतेः शुनः ५।४।९६।        |
| अञ्जेः सिचि ७।२।७१।      | अतेरकृत्पदे ६।२।१९१।     |
| अञ्नासिकायाः ५।४।११८।    | अतो गुणे ६।१।९७।         |
| अट्कुप्वाङ् ८।४।२।       | अतो दीर्घो यञि ७।३।१०१।  |
| अङ् गार्ग्य० ७।३।९९।     | अतो भिस ऐस् ७।१।९।       |
| अणञौ च ४।३।३३।           | अतोऽम् ७।१।२४।           |
| अणावकर्म० १।३।८८।        | अतो येयः ७।२।८०।         |
| अणिञोरनार्ष० ४।१।७८।     | अतो रोरप्लुताद० ६।१।११३। |
| अणि नियुक्ते ६।२।७५।     | अतो लोपः ६।४।४८।         |
| अणिनुणः ५।४।१५।          | अतो ल्रान्तस्य ७।२।२।    |
| अणुदित्सवर्णस्य० १।१।६९। | अतो हलादेर्लघोः ७।२।७।   |
| अणृगायनादिभ्यः ४।३।७३।   | अतो हेः ६।४।१०५।         |
| अणो द्व्यचः ४।१।१५६।     | अत्यन्तसंयोगे च २।१।२९।  |
| अणोऽग्रगृह्य० ८।४।५७।    | अत्र लोपोऽभ्यास० ७।४।५८। |
| अण्कर्मणि च ३।३।१२।      | अत्रानुनासिकः ८।३।२।     |
| अण्कुटिलिकायाः ४।४।१८।   | अत्रिभृगुकुत्स० २।४।६५।  |
| अण्च ५।२।१०३।            | अत्वसन्तस्य ६।४।१४।      |

अत्स्मृदृत्वरप्रथ० ७।४।९५।  
 अदः सर्वेषाम् ७।३।१००।  
 अदभ्यस्तात् ७।१।४।  
 अदर्शनं लोपः १।१।६०।  
 अदस औ सु० ७।२।१०७।  
 अदसो मात् १।१।१२।  
 अदसोऽसेर्दादु० ८।२।८०।  
 अदिप्रभृतिभ्यः २।४।७२।  
 अदूरभवश्च ४।२।७०।  
 अदेङ् गुणः १।१।२।  
 अदो जग्धिर्ल्यप्ति० २।४।३६।  
 अदोऽनन्ने ३।२।६८।  
 अदोऽनुपदेशे १।४।७०।  
 अदङ्गुतरादिभ्यः ७।१।२५।  
 अद्भिः संस्कृतम् ४।४।१३४।  
 अद्यश्चीनावष्टब्धे ५।२।१३।  
 अधः शिरसी पदे ८।३।४७।  
 अधिकम् ५।२।७३।  
 अधिकरणवाचि० २।३।६८।  
 अधिकरणवाचि० २।३।१३।  
 अधिकरणविचाले ५।३।४३।  
 अधिकरणे बन्धः ३।४।४१।  
 अधिकरणे शेतेः ३।२।१५।  
 अधिकरणैतावत्त्वे २।४।१५।  
 अधिकृत्य कृते ४।३।८७।  
 अधिपरी अनर्थकौ १।४।९३।  
 अधिरीश्वरे १।४।९७।  
 अधिशीङ्स्था० १।४।४६।  
 अधीगर्थदयेशां २।३।५२।  
 अधीष्टे च ३।३।१६६।

अधुना ५।३।१७।  
 अधेः प्रसहने १।३।३३।  
 अधेरुपरिस्थम् ६।२।१८८।  
 अध्ययनतोऽवि० २।४।५।  
 अध्यर्धपूर्व० ५।१।२८।  
 अध्यायन्यायो० ३।३।१२२।  
 अध्यायानुवाक० ५।२।६०।  
 अध्यायिन्यदेश० ४।४।७१।  
 अध्यायेष्वेवर्षेः ४।३।६९।  
 अध्वनो यत्खौ ५।२।१६।  
 अध्वर्युकषाय ६।२।१०।  
 अध्वर्युक्रतुर० २।४।४।  
 अन् ६।४।१६७।  
 अन् उपधालोपि० ४।१।२८।  
 अनङ् सौ ७।१।९३।  
 अनचि च ८।४।४७।  
 अनत्यन्तगतौ क्तात् ५।४।४।  
 अनत्याधान० १।४।७५।  
 अनद्यतने लङ् ३।२।१११।  
 अनद्यतने लुट् ३।३।१५।  
 अनद्यतनेर्हिल् ५।३।२१।  
 अनन्तावसथ० ५।४।२३।  
 अनन्त्यस्यापि ८।२।१०५।  
 अनभिहिते २।३।१।  
 अनवक्लृप्त्यमर्ष० ३।३।१४।  
 अनश्च ५।४।१०८।  
 अनसन्तान्नपुं० ५।४।१०३।  
 अनाप्यकः ७।२।११२।  
 अनिगन्तौऽञ्चतौ ६।२।५२।  
 अनितेः ८।४।१९।



|                            |                             |
|----------------------------|-----------------------------|
| अनिदितां हल० ६।४।२४।       | अनुपसर्जनात् ४।१।१४।        |
| अनुकम्पायाम् ५।३।७६।       | अनुप्रतिगृणश्च १।४।४१।      |
| अनुकरणं चानिति० १।४।६२।    | अनुप्रवचनादि० ५।१।१११।      |
| अनुकाभिका० ५।२।७४।         | अनुब्राह्मणादिनिः ४।२।६२।   |
| अनुगवमायामे ५।४।८३।        | अनुर्यत्समया २।१।१५।        |
| अनुगादिनष्ठक् ५।४।१३।      | अनुर्लक्षणे १।४।८४।         |
| अनुग्वलंगामी ५।२।१५।       | अनुवादे चरणानाम् २।४।३।     |
| अनुदातं सर्वम० ८।१।१८।     | अनुविपर्यभिनि० ८।३।७२।      |
| अनुदातडित् १।३।१२।         | अनुशक्तिकादीनां ७।३।२०।     |
| अनुदातं च ८।१।३।           | अनुस्वारस्य ८।४।५८।         |
| अनुदातं पद० ६।१।१५८।       | अनृष्यानन्तर्ये ४।१।१०४।    |
| अनुदातं प्रश्ना० ८।२।१००।  | अनेकमन्यपदार्थे २।२।२४।     |
| अनुदातस्य च ६।१।१६१।       | अनेकाल्शित० १।१।५५।         |
| अनुदातस्य चर्दुप० ६।१।५९।  | अनो नुट् ८।२।१६।            |
| अनुदात्तादेरञ् ४।२।४४।     | अनो बहुव्रीहेः ४।१।१२।      |
| अनुदात्तादेश्च ४।३।१४०।    | अनो भावकर्म० ६।२।१५०।       |
| अनुदात्ते च ६।१।१९०।       | अनोरकर्मकात् १।३।४९।        |
| अनुदात्ते च कु० ६।१।१२०।   | अनोरप्रधान० ६।२।२८९।        |
| अनुदात्तेतश्च ३।२।१४९।     | अनोश्मायः ५।४।९४।           |
| अनुदातोपदेश० ६।४।३७।       | अनौ कर्मणि ३।२।१००।         |
| अनुदातौ सुप्पितौ ३।१।४।    | अन्तः ६।२।९२।               |
| अनुनासिकस्य ६।४।१५।        | अन्तः ६।२।१४३।              |
| अनुनासिकात् ० ८।३।४।       | अन्तः ६।२।१७९।              |
| अनुपदसर्वात्राया० ५।२।९।   | अन्तः ८।४।२०।               |
| अनुपद्यन्वेष्टा ५।२।९०     | अन्तः पूर्वपदाद्वञ् ४।३।६०। |
| अनुपराभ्यां कृञः १।३।७९।   | अन्तरं बहिर्योगो १।१।३६।    |
| अनुपसर्गाज्जः १।३।७६।      | अन्तरदेशे ८।४।२४।           |
| अनुपसर्गात्फुल्ल० ८।२।५५।  | अन्तरपरिग्रहे १।४।६५।       |
| अनुपसर्गाद्वा १।३।४३।      | अन्तरान्तरेण युक्ते २।३।४।  |
| अनुपसर्गाल्लिम्प० ३।१।१३८। | अन्तर्धनो देशे ३।३।७८।      |

अन्तर्घौ येना० १।४।२८।  
 अन्तर्बहिर्भ्यां ५।४।११७।  
 अन्तर्वत्पति० ४।१।३२।  
 अन्तश्च ६।२।१८०।  
 अन्तश्च तवै ६।१।२००।  
 अन्तात्यन्ताध्व० ३।२।४८।  
 अन्तादिवच्च ६।१।८५।  
 अन्तिकबाढयोर्नेद० ५।३।६३।  
 अन्तोदात्तादु० ६।१।१६९।  
 अन्तोऽवत्याः ६।१।२२०।  
 अन्त्यात्पूर्वं बह्वचः ६।२।८३।  
 अन्नाणः ४।४।८५।  
 अत्रेन व्यञ्जनम् २।१।३४।  
 अन्यतो ङीष् ४।१।१४०।  
 अन्यथैवंकथमि० ३।४।२७।  
 अन्यपदार्थे २।१।२१।  
 अन्यारादितरर्ते २।३।२९।  
 अन्येभ्योऽपि ३।२।१७८।  
 अन्येभ्योऽपि ३।३।१३०।  
 अन्येभ्योऽपि ३।२।७५।  
 अन्येषामपि ६।३।१३७।  
 अन्येष्वपि ३।२।१०१।  
 अन्वच्यानुलोम्ये ३।४।६४।  
 अन्ववतप्ताद्रहसः ५।४।८१।  
 अपगुरो णमुलि ६।१।५३।  
 अपघनोऽङ्गम् ३।३।८१।  
 अपचितेश्च ७।२।३०।  
 अपत्यं पौत्र० ४।१।१६२।  
 अपथं नंपुसकम् २।४।३०।  
 अपदातौ साल्वात् ४।२।१३५।

अपदान्तस्य मूर्ध० ८।३।५५।  
 अपपरिबहिरञ्चवः २।१।१२।  
 अपपरी वर्जने १।४।८८।  
 अपमित्ययाचिता० ४।४।२१।  
 अपरस्पराः ६।१।१४४।  
 अपरिमाणबिस्ता० ४।१।२२।  
 अपरिहृताश्च ७।२।३२।  
 अपरोक्षे च ३।२।११९।  
 अपवर्गे तृतीया २।३।६।  
 अपस्करो रथ० ६।१।१४९।  
 अपस्पृधेयामा० ६।१।३६।  
 अपह्वे ज्ञः १।३।४४।  
 अपाच्च ६।२।१८६।  
 अपाच्यचतुष्पा० ६।१।१४२।  
 अपादाने चाहीय० ५।४।४५।  
 अपादाने पञ्चमी २।३।२८।  
 अपादाने परी० ३।४।५२।  
 अपाद्वदः १।३।७३।  
 अपिः पदार्थस० १।४।९६।  
 अपूर्वपदादन्य० ४।१।१४०।  
 अपृक्त एकाल० १।२।४१।  
 अपे क्लेशतमसोः ३।२।५०।  
 अपे च लषः ३।२।१४४।  
 अपेतापोढमुक्त २।१।३८।  
 अपोनप्त्रपांनप्त् ४।२।२७।  
 अपो भि ७।४।४८।  
 अपृन्तृच्छ्वसृ० ६।४।११।  
 अप्पूरणीप्रमा० ५।४।११६।  
 अ प्रत्ययात् ३।३।१०२।  
 अप्लुतवदप० ६।१।१२९।



|                            |                                |
|----------------------------|--------------------------------|
| अभाषितपुंस्काच्च ७।३।४८।   | अम्बार्थनद्यो० ७।३।१०७।        |
| अभिजनश्च ४।३।९०।           | अम् संबुद्धौ ७।१।९९।           |
| अभिजिद्विदभृ० ५।३।११८।     | अयःशूलदण्डा० ५।२।७६।           |
| अभिज्ञावचने ३।२।११२।       | अयङ् यि क्ङिति ७।४।२२।         |
| अभिनिविशश्च १।४।४७।        | अयनं च ८।४।२५।                 |
| अभिनिष्क्रामति ४।३।८६।     | अयस्मयादीनि १।४।२०।            |
| अभिप्रत्यतिभ्यः १।३।८०।    | अयामन्ताल्वाय्ये० ६।४।५५।      |
| अभिरभागे १।४।९१।           | अरण्यान्मनुष्ये ४।२।१२९।       |
| अभिविधौ भाव ३।३।४४।        | अरिष्टगौडपूर्वे च ६।२।१००।     |
| अभिविधौ सम्पदा ५।४।५३।     | अरुर्द्विषदजन्तस्य ६।३।६७।     |
| अभेर्मुखम् ६।२।१८५।        | अरुर्मनश्चक्षुश्चे० ५।४।५१।    |
| अभेश्चाविदूर्ये ७।२।२५।    | अर्तिपिपत्योश्च ७।४।७७।        |
| अभ्यमित्राच्छ च ५।२।१७।    | अर्तिलूधूसूखन० ७।२।१८४।        |
| अभ्यस्तस्य च ६।१।३३।       | अर्तिह्वीलीरी० ७।३।३६।         |
| अभयस्तानामा० ६।१।१८९।      | अर्थवदधातुर० १।२।४५।           |
| अभ्यासस्यासवर्णे ६।४।७८।   | अर्थे ६।२।४४।                  |
| अभ्यासाच्च ७।३।५५।         | अर्थे विभाषा ६।३।१००।          |
| अभ्यासे चर्च ८।४।५४।       | अर्देः संनिविभ्यः ७।२।२४।      |
| अभ्युत्सादयांप्रज० ३।१।४२। | अर्धं नंपुसकम् २।२।२।          |
| अमनुष्यकर्तके च ३।२।५३।    | अर्धर्चाः पुंसि च २।४।३१।      |
| अमहन्नवं नगरे० ६।२।८९।     | अर्धाच्च ५।४।१००।              |
| अमावस्यदन्य ३।१।१२२।       | अर्धात्परिमाणस्य ७।३।२६।       |
| अमावास्याया वा ४।३।३०।     | अर्धाद्यत् ४।३।४।              |
| अमि पूर्वः ६।१।१०७।        | अर्मे चावर्णं द्व्यच्० ६।२।९०। |
| अमु च च्छन्दसि ५।४।१२।     | अर्यः स्वामि० ३।१।१०३।         |
| अमूर्धमस्तका० ६।३।१२।      | अर्वणस्त्रसाव० ६।४।१२७।        |
| अमैवाव्ययेन० २।२।२०।       | अर्श आदिभ्यो० ५।२।१२७।         |
| अमो मश् ७।१।४०।            | अर्हः ३।२।१२।                  |
| अमनरुधरवरित्यु० ८।२।७०।    | अर्हः प्रंशसायाम् ३।२।१३३।     |
| अम्बाम्बगोभू० ८।३।९७।      | अर्हे कृत्यतृचश्च ३।३।१६९।     |

|                            |                            |
|----------------------------|----------------------------|
| अलंकृज्जिराकृ० ३।२।१३६।    | अवोदैधौघप्रश्रथ० ६।४।२९।   |
| अलंखत्वोः ३।४।१८।          | अवोदोनियः ३।३।२६।          |
| अलुगुत्तरपदे ६।३।१।        | अव्यक्तानुकरण० ६।१।९८।     |
| अलोऽन्त्यस्य १।१।५२।       | अव्यक्तानुकरणाद् ५।४।५७।   |
| अलोऽन्त्यात्पूर्व १।१।६५।  | अव्ययं विभक्ति० २।१।६।     |
| अल्पाख्यायाम् ५।४।१३६।     | अव्ययसर्वना० ५।३।७१।       |
| अल्पात्तरम् २।२।३४।        | अव्ययात्यप् ४।२।१०४।       |
| अल्पे ५।३।८५।              | अव्ययादाप्सुपः २।४।८२।     |
| अल्लोपोऽनः ६।४।१३४।        | अव्ययीभावः २।१।५।          |
| अवक्रयः ४।४।५०।            | अव्ययीभावश्च १।१।४१।       |
| अवक्षेपणे कन् ५।३।९५।      | अव्ययीभावश्च २।१।१८।       |
| अवङ् स्फोटा० ६।१।१२३।      | अव्ययीभावाच्च ४।३।५९।      |
| अवचक्षे च ३।४।१५।          | अव्ययीभावे चा० ६।३।८१।     |
| अवद्यपण्यवर्या ३।१।१०१।    | अव्ययीभावे शर० ५।४।१०७।    |
| अवपथासि च ६।१।१२१।         | अव्ययेऽयथाभिप्रे० ३।४।५९।  |
| अवयवादृतोः ७।३।११।         | अव्यादवद्यादव० ६।१।११६।    |
| अवयवे च ४।३।१३५।           | अशनायोदन्यध० ७।४।३४।       |
| अवयसि ठंश्च ५।१।८४।        | अशब्दे यत्खाव० ४।३।६४।     |
| अवयाः श्वेतवाः ८।२।६७।     | अशाला च २।४।२४।            |
| अवसमन्धेभ्य० ५।४।७९।       | अशनोतेश्च ७।४।७२।          |
| अवाच्चालम्बना० ८।३।६८।     | अश्वक्षीरवृषलव० ७।१।५१।    |
| अवात्कुटारच्च ५।२।३०।      | अश्वपत्यादिभ्यश्च ४।१।८४।  |
| अवाद् ग्रः १।३।५१।         | अश्वस्यैकाहगमः ५।२।१९।     |
| अवारपारात्य० ५।२।११।       | अश्वाघस्यात् ७।४।३७।       |
| अवृद्धादपि बहु० ४।२।१२५।   | अश्वादिभ्यः फञ् ४।१।११०।   |
| अवृद्धाभ्यो नदी० ४।१।११३।  | अश्विमानण् ४।४।१२६।        |
| अवेः क ५।४।२८।             | अषडक्षाशितंग्वलं० ५।४।७।   |
| अवे ग्रहो वर्ष० ३।३।५१।    | अषष्ठ्यतृतीयास्थ० ६।३।९९।  |
| अवे तृस्त्रोर्घञ् ३।३।१२०। | अष्टन आ विभक्तौ ७।२।८४।    |
| अवे यजः ३।२।७२।            | अष्टनः संज्ञायाम् ६।३।१२५। |



अष्टनो दीर्घात् ६।१।१७२।  
 अष्टाभ्य औश् ७।१।२१।  
 असंयोगाल्लिट् १।२।५।  
 असंज्ञायां तिल० ४।२।१४९।  
 असमासे निष्का० ५।२।२०।  
 अ सांप्रतिके ४।३।९।  
 असिद्धवदत्राभात् ६।४।२२।  
 असुरस्य स्वम् ४।४।१२३।  
 असूर्यललाटयोर्दृ० ३।२।३६।  
 अस्तं च १।४।६८।  
 अस्ताति च ५।३।४०।  
 अस्तिनास्ति० ४।४।६०।  
 अस्तिसिचोऽपृक्ते ७।३।९६।  
 अस्तेर्भूः २।४।५२।  
 अस्थिदधिसक्थ्य० ७।१।७५।  
 अस्मदो द्वयोश्च १।२।५९।  
 अस्मद्युत्तमः १।४।१०७।  
 अस्मायामेधा० ५।२।१२१।  
 अस्य च्चौ ७।४।३२।  
 अस्यतितृषोः ३।४।५७।  
 अस्यतिवक्तिख्या० ३।१।५२।  
 अस्यतेस्थुक् ७।४।१७।  
 अस्वाङ्गपूर्वपदाद्वा ४।१।५३।  
 अहः सर्वैकदेशः ५।४।८७।  
 अहंशुभयोर्युस् ५।२।१४०।  
 अहन् ८।२।६८।  
 अहीने द्वितीया ६।२।४७।  
 अहेतिविनियोगे च ८।१।६१।  
 अहो च ८।१।४०।  
 अह्णष्टखोरेव ६।४।१४५।

अहोऽदन्तात् ८।४।७।  
 अहोऽह एतेभ्यः ५।४।८८।  
 आ  
 आकडारादेका संज्ञा १।४।१।  
 आकर्षात्ष्ठल् ४।४।९।  
 आकर्षादिभ्यः कन् ५।२।६४।  
 आकालिकडा० ५।१।११४।  
 आक्रन्दाद्वञ्च ४।४।३८।  
 आक्रोशे च ६।२।१५८।  
 आक्रोशे नज्यनिः ३।३।११२।  
 आक्रोशेऽवन्योर्ग्रहः ३।३।४५।  
 आ क्वेस्तच्छील० ३।२।१३४।  
 आख्यातोपयोगे १।४।२९।  
 आगवीनः ५।२।१४।  
 आगस्त्यकौण्डि० २।४।७०।  
 आग्रहायण्यश्च० ४।२।२२।  
 आङ उद्गमने १।३।४०।  
 आङि चापः ७।३।१०५।  
 आङि ताच्छील्ये ३।२।११।  
 आङि युद्धे ३।३।७३।  
 आङो दोऽनास्य० १।३।२०।  
 आङो नाऽस्त्रियाम् ७।३।१२०।  
 आङोऽनुनासि० ६।१।१२६।  
 आङो यमहनः १।३।२८।  
 आङो यि ७।१।६५।  
 आङ् मर्यादाभि० २।१।१३।  
 आङ् मर्यादावचने १।४।८९।  
 आङ्माङोश्च ६।१।७४।  
 आ च त्वात् ५।१।१२०।  
 आ च हौ ६।४।११७।

आचार्योपसर्जन० ६।२।१०४।  
 आचार्योपसर्जन० ६।२।३६।  
 आच्छीनघोर्नुम् ७।१।८०।  
 आज्ञासेरसुक् ७।१।५०।  
 आज्ञायिनि च ६।३।५।  
 आटश्च ६।१।९०।  
 आडजादीनाम् ६।४।७२।  
 आडुत्तमस्य पिच्च ३।४।९२।  
 आढकाचित० ५।१।५३।  
 आढ्यसुभगस्थूल० ३।२।५६।  
 आण् नद्याः ७।३।११२।  
 आत ऐ ३।४।९५।  
 आत औ णलः ७।१।३४।  
 आतः ३।४।११०।  
 आतश्चोपसर्गे ३।१।१३६।  
 आतश्चोपसर्गे ३।३।१०६।  
 आतो ङितः ७।२।८१।  
 आतोऽटि नित्यम् ८।३।३।  
 आतो धातोः ६।४।१४०।  
 आतोऽनुपसर्गे कः ३।२।३।  
 आतो मनिन्० ३।२।७४।  
 आतो युक् चिण् ७।३।३३।  
 आतो युच् ३।३।१२८।  
 आतो लोप इटि च ६।४।६४।  
 आत्मनश्च ६।३।६।  
 आत्मनेपदेष्वनतः ७।१।५।  
 आत्मनेपदेष्व० २।४।४४।  
 आत्मनेपदेष्व० ३।१।५४।  
 आत्मन्विश्वजन० ५।१।९।  
 आत्ममाने खश्च ३।२।८३।

आत्माध्वानौ खे ६।४।१६९।  
 आथर्वणिकस्येक० ४।३।१३३।  
 आदरानादरयोः १।४।६३।  
 आदाचार्याणाम् ७।३।४९।  
 आदिः प्रत्येनसि ६।२।२७।  
 आदिः सिचो० ६।१।१८७।  
 आदिकर्मणि क्त ३।४।७१।  
 आदितश्च ७।२।१६।  
 आदिरन्त्येन १।१।७१।  
 आदिरुदात्तः ६।२।६४।  
 आदिर्जिटुङवः १।३।५।  
 आदिर्णिमुल्यन्य० ६।१।१९४।  
 आदिश्चिहणा० ६।२।२२५।  
 आदृगमहनजनः ३।२।१७१।  
 आदेः परस्य १।१।५४।  
 आदेच उपदेशे० ६।१।४५।  
 आदेशप्रत्यययोः ८।३।५९।  
 आद् गुणः ६।१।८७।  
 आद्यन्तवदेकस्मिन् १।१।२१।  
 आद्यन्तौ टकितौ १।१।४६।  
 आद्युदात्तं द्व्यच्छ० ६।२।११९।  
 आद्युदात्तश्च ३।१।३।  
 आधारोऽधिकरणम् १।४।४५।  
 आनङ्गतो द्वन्द्वे ६।३।२५।  
 आनाय्योऽनित्ये ३।१।१२७।  
 आनि लोट् ८।४।१६।  
 आने मुक् ७।२।८२।  
 आन्महतः ६।३।४६।  
 आपत्यस्य च ६।४।१५१।  
 आपो जुषाणो० ६।१।११८।



|                            |                            |
|----------------------------|----------------------------|
| आपोऽन्यतर० ७।४।१५।         | आवश्यकधम० ३।३।१७०।         |
| आप्लाप्यधामीत् ७।४।५५।     | आवसथात्छल् ४।४।७४।         |
| आप्रपदं प्राप्नोति ५।२।८।  | आशंसायां० ३।३।१३२।         |
| आबाधे च ८।१।१०।            | आशंसावचने ३।३।१३४।         |
| आभीक्ष्ये णमुल्व ३।४।२२।   | आशङ्काबाधने० ६।२।२१।       |
| आम एकान्तर० ८।१।५५।        | आशितः कर्ता ६।१।२०७।       |
| आमः २।४।८१।                | आशिते भुवः ३।२।४५।         |
| आमन्त्रितं पूर्वम० ८।१।७२। | आशिषि च ३।१।१५०।           |
| आमन्त्रितस्य च ६।१।१९८।    | आशिषि नाथः २।३।५५।         |
| आमन्त्रितस्य च ८।१।१९।     | आशिषि लिङ् ३।३।१७३।        |
| आमि सर्वनाम्नः ७।१।५२।     | आशिषि हनः ३।२।४९।          |
| आमेतः ३।४।९०।              | आश्चर्यमनित्ये ६।१।१४७।    |
| आम्प्रत्ययवत् १।३।६३।      | आश्चयुज्या वुञ् ४।३।४५।    |
| आग्नेडितं भर्त्सने ८।२।९५। | आसन्दीवदष्ठी० ८।२।१२२।     |
| आयनेयीनीयियः ७।१।२।        | आ सर्वनाम्नः ६।३।९१।       |
| आयादय आर्ध० ३।१।३१।        | आसुयुवपिरपि० ३।१।१२६।      |
| आयुक्तकुशला० २।३।४०।       | आस्पदं प्रतिष्ठा० ६।१।१४६। |
| आयुधजीविभ्य० ४।३।९१।       | आहस्थः ८।२।३५।             |
| आयुधजीवि० ५।३।११४।         | आहि च दूरे ५।३।३७।         |
| आयुधाच्छ च ४।४।१४।         | आहो उताहो ८।१।४९।          |
| आरगुदीचाम् ४।१।१३०।        | इ                          |
| आर्धधातुकं शेषः ३।४।११४।   | इकः काशे ६।३।१२३।          |
| आर्धधातुकस्ये० ७।२।३५।     | इकः सुजि ६।३।१३४।          |
| आर्धधातुके २।४।३५।         | इको गुणवृद्धी १।१।३।       |
| आर्धधातुके ६।४।४६।         | इकोऽचि विभक्तौ ७।१।७३।     |
| आर्यो ब्राह्मणकु० ६।२।५८।  | इको झल् १।२।९।             |
| आर्हादगोपुच्छ० ६।१।१९।     | इको यणचि ६।१।७७।           |
| आलजाटचौ ५।२।१२५।           | इको वहेऽपीलोः ६।३।१२१।     |
| आवट्याच्च ४।१।७५।          |                            |

|                            |                               |
|----------------------------|-------------------------------|
| इकोऽसवर्णे शाक० ६।१।१२७।   | इतराभ्योऽपि ५।३।१४।           |
| इको ह्रस्वोऽड्यो० ६।३।६१।  | इतरेतरान्योन्यो० १।३।१६।      |
| इगन्तकालकपाल० ६।२।२९।      | इतश्च ३।४।१००।                |
| इगन्ताच्च लघु० ५।१।१३१।    | इतश्च लोपः ३।४।९७।            |
| इगुपधज्ञाप्रीकिरः ३।१।१३५। | इतश्चानिजः ४।१।१२२।           |
| इग्यणः संप्रसारणम् १।१।४५। | इतोऽत्सर्वनाम० ७।१।८६।        |
| इडश्च २।४।४८।              | इतो मनुष्यजातेः ४।१।६५।       |
| इडश्च ३।३।२१।              | इत्थंभूतलक्षणे २।३।२१।        |
| इड्धार्योः ३।२।१३०।        | इत्थंभूतेन कृतः ६।२।१४९।      |
| इच एकाचोऽम्प्र० ६।३।६८।    | इदंकिमोरीशकी ६।३।९०।          |
| इक्कर्मव्यतिहारे ५।४।१२७।  | इदन्तो मसि ७।१।४६।            |
| इच्छा ३।३।१०१।             | इदम् इश् ५।३।३।               |
| इच्छार्थेभ्यो ३।३।१६०।     | इदमस्थमुः ५।३।२४।             |
| इच्छार्थेषु लिङ्० ३।३।१५७। | इदमोऽन्वादेशे० २।४।३२।        |
| इजादेः सनुमः ८।४।३२।       | इदमो मः ७।२।१०८।              |
| इजादेश्च गुरुमतो० ३।१।३६।  | इदमोर्हिल् ५।३।१६।            |
| इजः प्राचाम् २।४।६०।       | इदमो हः ५।३।११।               |
| इजश्च ४।२।११२।             | इदितो नुम् धातोः ७।१।५८।      |
| इट ईटि ८।२।२८।             | इदुदुपधस्य चा० ८।३।४१।        |
| इटोऽत् ३।४।१०६।            | इदुद्भ्याम् ६।३।११७।          |
| इट् सनि वा ७।२।४१।         | इदोऽय् पुंसि ६।२।१११।         |
| इडत्यर्तिव्ययती० ७।२।६६।   | इद् गोण्याः १।२।५०।           |
| इडाया वा ८।३।५४।           | इद्गिद्रस्य ६।४।१४४।          |
| इणः षः ८।३।३९।             | इद् वृद्धौ ६।३।२८।            |
| इणः षीध्वंलुङ्० ८।३।७८।    | इनः स्त्रियाम् ५।४।१५२।       |
| इणो गा लुङि २।४।४५।        | इनच्पिटच्चिकाचि ५।२।३३।       |
| इणो यण् ६।४।८१।            | इनण्यपत्ये ६।४।१६४।           |
| इणकोः ८।३।५७।              | इनित्रकट्यचश्च ४।२।५१।        |
| इणनशजिसर्ति० ३।२।१६३।      | इन्द्रवरुणभवशर्व० ४।१।४९।     |
| इणिष्ठायाम् ७।२।४७।        | इन्द्रियमिन्द्रलिङ्ग० ५।२।९३। |



इन्द्रे च ६।१।१२४।  
 इन्धिभवतिभ्यां च १।२।६।  
 इन्हन्पूर्वार्थ्यां ६।४।१२।  
 इरयोरे ६।४।७६।  
 इरितो वा ३।१।५७।  
 इवे प्रतिकृतौ ५।३।९६।  
 इषुगमियमां छः ७।३।७७।  
 इष्टकेषीका० ६।३।६५।  
 इष्टादिभ्यश्च ५।२।८८।  
 इष्ट्वीनमिति च ७।१।४८।  
 इष्टस्य यिट् च ६।४।१५९।  
 इसुसुक्तान्तात्कः ७।३।५१।  
 इसुसोः सामर्थ्ये ८।३।४४।  
 इस्मन्त्रन्विषु च ६।४।९७।  
 ई  
 ई भ्राध्मोः ७।४।३१।  
 ई च खनः ३।१।१११।  
 ई च गणः ७।४।९७।  
 ई च द्विवचने ७।१।७७।  
 ईडजनोर्ध्वे च ७।२।७८।  
 ईडवन्दवृशंसदु० ६।१।२१४।  
 ईदग्नेः सोमवरुण ६।३।२७।  
 ईदासः ७।२।८३।  
 ईदूतौ च सप्तम्यर्थे १।१।१९।  
 ईदूदेद् द्विवचनं १।१।११।  
 ईद्यति ६।४।६५।  
 ईयसश्च ५।४।१५६।  
 ईवत्याः ६।१।२२१।  
 ईशः से ७।२।७७।  
 ईश्वरे तोसुन्कसुनौ ३।४।१३।

ईषदकृता २।२।७।  
 ईषदन्यतरस्याम् ६।२।५४।  
 ईषदर्थे ६।३।१०५।  
 ईषदसमाप्तौ कल्प० ५।३।६७।  
 ईषदुःसुषु कृच्छ्राः ३।३।१२६।  
 ई हल्यघोः ६।४।११३।  
 ई ३ चाक्रवर्म० ६।१।१३०।

उ

उगवादिभ्यो यत् ५।१।२।  
 उगितश्च ४।१।६।  
 उगितश्च ६।३।४५।  
 उगिदचां सर्व० ७।१।७०।  
 उग्रंपश्येरमद० ३।२।३७।  
 उच्चैरुदात्तः १।२।२९।  
 उच्चैस्तरां वा १।२।३५।  
 उजः १।१।१७।  
 उजि च पदे ८।३।२१।  
 उज्छति ४।४।३२।  
 उज्छादीनां च ६।१।१६०।  
 उणादयो बहुलम् ३।३।१।  
 उतश्च प्रत्यया० ६।४।१०६।  
 उताप्योः सम० ३।३।१५२।  
 उतो वृद्धिर्लुकि ७।३।८९।  
 उत्क उन्मनाः ५।२।८०।  
 उत्करादिभ्यश्छः ४।२।९०।  
 उत्तमैकाभ्यां च ५।४।९०।  
 उत्तरपथेनाह० ५।१।७७।  
 उत्तरपदवृद्धौ ६।२।१०५।  
 उत्तरपदस्य ७।३।१०।  
 उत्तरपदादिः ६।२।१११।

उत्तरमृगपूर्वाच्च ५।४।९८।

उत्तराच्च ५।३।३८।

उत्तराधरदक्षिण० ५।३।३४।

उत्तरस्यातः ७।४।८८।

उत्सादिभ्योञ् ४।१।८६।

उद् ईत् ६।४।१३९।

उदः स्थास्तम्भोः ८।४।६१।

उदकस्योदः ६।३।५७।

उदकेऽकेवले ६।२।९६।

उदक्च विपाशः ४।२।७४।

उदङ्कोऽनुदके ३।३।१२३।

उदन्वानुदधौ च ८।२।१३।

उदराट्टगाधूने ५।२।६७।

उदराश्वेषुषु ६।२।१०७।

उदश्चरः सकर्म० १।३।५३।

उदश्चितोऽन्यतर० ४।२।१९।

उदात्तयणो० ६।१।१७४।

उदात्तस्वरित० १।२।४०।

उदात्तस्वरित० ८।२।४।

उदात्तादनुदात्त० ८।४।६६।

उदि कूले रुजि० ३।२।३१।

उदि ग्रहः ३।३।३५।

उदितो वा ७।३।५६।

उदि श्रयति यौति० ३।३।४९।

उदीचां वृद्धा० ४।१।१५७।

उदीचामातः ६।३।४६।

उदीचामिञ् ४।१।१५३।

उदीचां माडो० ३।४।१९।

उदीच्यग्रामाच्च ४।२।१०९।

उदुपधाद्वादि० १।२।२१।

उदोऽनुर्ध्वकर्मणि १।३।२४।

उदोष्ठ्यपूर्वस्य ७।१।१०२।

उदघनोऽत्याधानम् ३।३।८०।

उद्विभ्यां काकु० ५।४।१४८।

उद्विभ्यां तपः १।३।२७।

उन्नयोर्ग्रः ३।३।२९।

उपकादिभ्यो० २।४।६९।

उपघ्न आश्रये ३।३।८५।

उपजानूपकर्णो० ४।३।४०।

उपज्ञाते ४।३।११५।

उपज्ञोपक्रमं तदा० २।४।२१।

उपदंशस्तृतीया० ३।४।४७।

उपदेशोऽजनुनासि० १।३।२।

उपदेशोऽत्वतः ७।२।६२।

उपधायां च ८।२।७८।

उपधायाश्च ७।१।१०१।

उपपदमतिङ् २।२।१९।

उपपराभ्याम् १।३।३९।

उपमानं शब्दार्थ० ६।२।८०।

उपमानाच्च ५।४।१३७।

उपमानादप्राणिषु ५।४।९७।

उपमानादाचारे ३।१।१०।

उपमानानि सा० २।१।५५।

उपमाने कर्मणि च ३।४।४५।

उपमितं व्याघ्रा० २।१।५६।

उपरिस्विदा० ८।२।१०२।

उपर्यध्यधसः सा० ८।१।७।

उपर्युपरिष्ठात् ५।३।३१।

उपसंवादाशङ्कयोश्च ३।४।८।

उपसर्गप्रादुभ्यां ८।३।८७।



|                            |                            |
|----------------------------|----------------------------|
| उपसर्गव्यपेतं च ८।१।३८।    | उपोत्तमं रिति ६।१।२१७।     |
| उपसर्गस्य ६।३।१२२।         | उपोऽधिके च १।४।८७।         |
| उपसर्गस्यायतौ ८।२।१९।      | उप्ते च ४।३।४४।            |
| उपसर्गाः क्रिया० १।४।५९।   | उभयथर्षु ८।३।८।            |
| उपसर्गाच्च ५।४।११९।        | उभयप्राप्तौ कर्मणि २।३।६६। |
| उपसर्गाच्छन्द० ५।१।११८।    | उभादुदात्तौ ५।२।४४।        |
| उपसर्गात्खल्धजोः ७।१।६७।   | उभे अभ्यस्तम् ६।१।५।       |
| उपसर्गात्सुनोति० ८।३।६५।   | उभौ वनस्पत्या० ६।२।१४०।    |
| उपसर्गात्स्वाङ्गः ६।२।१७७। | उभौ साभ्यासस्य ८।४।२०।     |
| उपसर्गादध्वनः ५।४।८५।      | उमोर्णयोर्वा ४।३।१५८।      |
| उपसर्गादसमासे० ८।४।१४।     | उरः प्रभृतिभ्यः ५।४।१५१।   |
| उपसर्गादृति धातौ ६।१।९१।   | उरण् रपरः १।१।५१।          |
| उपसर्गाद्ध्रस्व ७।४।२३।    | उरत् ७।४।६६।               |
| उपसर्गाद् बहुलम् ८।४।२८।   | उरसोऽण्च ४।४।९४।           |
| उपसर्गे घोः कि३ ३।३।९२।    | उरसो यच्च ४।३।११४।         |
| उपसर्गे च सज्ञां० ३।२।९९।  | उर्कृत् ७।४।७।             |
| उपसर्गेऽदः ३।३।५९।         | उश्च १।२।१२।               |
| उपसर्गे रुवः ३।३।२२।       | उषविदजागृ० ३।१।३८।         |
| उपसर्जनं पूर्वम् २।२।३०।   | उषासोषसः ६।३।३१।           |
| उपसर्गा काल्या० ३।१।१०४।   | उष्ट्रः सादिवा० ६।२।४०।    |
| उपाच्च १।३।८४।             | उष्ट्राद् वुञ् ४।३।१५७।    |
| उपाजेऽन्वाजे १।४।७३।       | उस्यपदान्तात् ६।१।९६।      |
| उपात्प्रतियत्न० ६।१।१३९।   | ऊ                          |
| उपात्प्रशंसायाम् ७।१।६६।   | ऊँ १।१।१८                  |
| उपाद् द्वयजजि० ६।२।१९४।    | ऊकालोऽज्झस्व० १।२।२७।      |
| उपाद्यमः स्वकरणे १।३।५६।   | ऊङुतः ४।१।६६।              |
| उपाधिभ्यां त्यक० ५।२।३४।   | ऊडिदंपदाद्यप् ६।१।१७१।     |
| उपान्मन्त्रकरणे १।३।२५।    | ऊतियूतिजूतिसा० ३।३।९७।     |
| उपान्वध्याङ्वसः १।४।४८।    | ऊदनोर्देशे ६।३।९८।         |
| उपेयिवानू० ३।२।१०९।        | ऊदुपधाया० ६।४।८९।          |

ऊधसोऽनङ् ५।४।१३१।  
ऊनार्थकलह० ६।२।१५३।  
ऊरुतरपदादौपम्ये ४।१।६९।  
ऊर्णाया युस् ५।२।१२३।  
ऊर्णोतेर्विभाषा ७।२।६।  
ऊर्णोतेर्विभाषा ७।३।९०।  
ऊर्ध्वाद्विभाषा ५।४।१३०।  
ऊर्ध्वे शुषिपूरोः ३।४।४४।  
ऊर्यादिच्चिडाचश्च १।४।६१।  
ऊषसुषिमुष्क० ५।२।१०७।

**ऋ**

ऋक्पूरब्धूः पथा ५।४।७४।  
ऋचः शे ६।३।५५।  
ऋचितुनधम० ६।३।१३३।  
ऋच्छत्यृताम् ७।४।११।  
ऋणमाधमण्ये ८।२।६०।  
ऋत उत् ६।१।१११।  
ऋतश्च ७।४।९२।  
ऋतश्च संयोगादेः ७।२।४३।  
ऋतश्च संयोगा० ७।४।१०।  
ऋतश्छन्दसि ५।४।१५८।  
ऋतष्ठञ् ४।३।७८।  
ऋतेरीयङ् ३।१।२९।  
ऋतो डिसर्वना० ७।३।११०।  
ऋतोऽञ् ४।४।४९।  
ऋतो भारद्वाजस्य ७।२।६३।  
ऋतोरण् ५।१।१०५।  
ऋतो विद्यायोनि ६।३।२३।  
ऋत्यकः ६।१।१२८।  
ऋत्विग्दधृक्स्त्र० ३।२।५९।

ऋत्व्यवास्त्व्य० ६।३।१७५।  
ऋदुपधाच्चाक्लृ० ३।१।११०।  
ऋदुशनस्पुरुदं ७।१।९४।  
ऋदुशोऽङि गुणः ७।४।१६।  
ऋद्धनोः स्ये ७।२।७०।  
ऋन्नेभ्यो डीप् ४।१।५।  
ऋषभोपान हो० ५।१।१४।  
ऋष्यन्धक० ४।१।११४।  
ऋहलोर्ण्यत् ३।१।१२४।

**ऋ**

ऋत इद्धातोः ७।१।१००।  
ऋदोरप् ३।३।५७।

**ए**

एकः पूर्वपरयोः ६।१।८४।  
एकगोपूर्वाङ् ५।२।११८।  
एकतद्धिते च ६।३।६२।  
एकधुराल्लुक्च ४।४।७९।  
एकं बहुव्रीहिवत् ८।१।९।  
एकवचनं संबुद्धिः २।३।४९।  
एकवचनस्य च ७।१।३२।  
एकविभक्ति चा० १।२।४४।  
एकशालायाष्ठज० ५।३।१०९।  
एकश्रुति दूरात् १।२।३३।  
एकस्य सकृच्च ५।४।१९।  
एकहलादौ पूर० ६।३।५९।  
एकाच उपदेशे ७।२।१०।  
एकाचो द्वे प्रथमस्य ६।१।१।  
एकाचो बशो ८।२।३७।  
एकाच्च प्राचाम् ५।३।९४।  
एकाजुत्तरपदे णः ८।४।१२।



|                                |                           |
|--------------------------------|---------------------------|
| एकादाकिनिच्चास० ५।३।५२।        | एरुः ३।४।८६।              |
| एकादिश्चैकस्य ६।४।७६।          | एर्लिङि ६।४।६७।           |
| एकादेश उदात्ते ८।२।५।          | एहि मन्ये प्रहासे ८।१।४६। |
| एकाद्धो ध्यमु० ५।३।४४।         | ऐ                         |
| एकान्याभ्यां ८।१।६५।           | ऐकागारिकट्० ४।१।११३।      |
| एको गोत्रे ४।१।९३।             | ऐषमो ह्यःश्वसो ४।२।१०५।   |
| एङः पदान्ता० ६।१।१०९।          | ओ                         |
| एङि पररूपम् ६।१।९४।            | ओः पुयण्यपरे ७।४।८०।      |
| एङ् प्राचां देशे १।१।७५।       | ओः सुपि ६।४।८३।           |
| एङ् ह्रस्वात्संबुद्धेः ६।१।६९। | ओक उचः के ७।३।६४।         |
| एच इग्रस्वादेशे १।१।४८।        | ओजः सहोऽम्भसा ४।४।२७।     |
| एचोऽप्रगृह्यस्या० ८।२।१०७।     | ओजः सहोऽम्भस्त० ६।३।३।    |
| एचोऽयवायावः ६।१।७८।            | ओजसोऽहनि ४।४।१३०।         |
| एजेः खश् ३।२।२८।               | ओत् १।१।१५।               |
| एण्या ढञ् ४।३।१५९।             | ओतः श्यनि ७।३।७१।         |
| एत ईद् बहुवचने ८।२।८१।         | ओतो गार्ग्यस्य ८।३।२०।    |
| एत ऐ ३।४।९३।                   | ओदितश्च ८।२।४५।           |
| एतत्तदोः सुलो० ६।१।१३२।        | ओमभ्यादाने ८।२।८७।        |
| एतदस्त्रतसोस्त्रत० २।४।३३।     | ओमाडोश्च ६।१।९५।          |
| एतदोऽन् ५।३।५।                 | ओरञ् ४।२।७१।              |
| एति संज्ञायाम० ८।३।९९।         | ओरञ् ४।३।१३९।             |
| एतिस्तुशास्वृ० ३।१।१०९।        | ओरावश्यके ३।१।१२५।        |
| एतेतौ रथोः ५।३।४।              | ओर्गुणः ६।४।१४६।          |
| एतेर्लिङि ७।४।२४।              | ओर्देशे ठञ् ४।२।११९।      |
| एत्येधत्यूठ्सु ६।१।८९।         | ओषधेरजातौ ५।४।३७।         |
| एधाच्च ५।३।४६।                 | ओषधेश्च वि० ६।३।१३२।      |
| एनपा द्वितीया २।३।३१।          | ओसि च ७।३।१०४।            |
| एनबन्यतरस्याम् ५।३।३५।         | औ                         |
| एरच् ३।३।५६।                   | औक्षमनपत्ये ६।४।१७३।      |
| एरनेकाचोऽसं० ६।४।८२।           | औङ आपः ७।१।१८।            |
|                                | औत् ७।३।१२८।              |
|                                | औतोऽम्शसोः ६।१।९३।        |

क

कः करत्करति० ८।३।५०।  
 कंशंभ्यां बभयु० ५।२।१३८।  
 कंसमन्थशूर्प० ६।२।१२२।  
 कंसाद्विठन् ५।१।२५।  
 कंसीयपरशव्य ४।३।१६८।  
 ककुदस्यावस्था० ५।४।१४६।  
 कच्छाग्निवक्त्र० ४।२।१२६।  
 कच्छादिभ्यश्च ४।२।१३३।  
 कठचरकाल्लुक् ४।३।१०७।  
 कठिनान्तप्रस्ता० ४।४।७२।  
 कडङ्करदक्षिणा० ५।१।६९।  
 कडाराः कर्मधा० २।२।३८।  
 कणेमनसी श्रद्धा० १।४।६६।  
 कण्ठपृष्ठग्रीवा० ६।२।११४।  
 कण्ड्वादिभ्यो यक् ३।१।२७।  
 कण्वादिभ्यो० ४।२।१११।  
 कतरकतमौ कर्म० ६।२।५७।  
 कतरकतमौ जा० २।१।६३।  
 कत्र्यादिभ्यो ढ० ४।२।९५।  
 कथादिभ्यष्ठक् ४।४।१०२।  
 कद्रुकमण्डत्वो ४।१।७१।  
 कन्था च ६।२।१२४।  
 कन्थापलद० ४।२।१४२।  
 कन्थायाष्ठक् ४।२।१०२।  
 कन्थायाः क० ४।१।११६।  
 कपिज्ञात्योर्ढक् ५।१।१२७।  
 कपि पूर्वम् ६।२।१७३।  
 कपिबोधादा० ४।१।१०७।  
 कपिष्ठलो गोत्रे ८।३।९१।

कमेर्णिङ् ३।१।१०।  
 कम्बलाच्च संज्ञा० ५।१।३।  
 कम्बोजाल्लुक् ४।१।१७५।  
 करणाधिकरण० ३।३।११७।  
 करणे च स्तो० २।३।३३।  
 करणे यजः ३।२।८५।  
 करणेऽयोद्रुषु ३।३।८२।  
 करणे हनः ३।४।३७।  
 कर्कलोहितादी० ५।३।११०।  
 कर्णललाटात्क० ४।३।६५।  
 कर्णे लक्षण० ६।३।११५।  
 कर्णो वर्णलक्ष० ६।२।११२।  
 कर्तरि कर्मव्य० १।३।१४।  
 कर्तरि कृत्० ३।४।६७।  
 कर्तरि च २।२।१६।  
 कर्तरि चर्षिदे० ३।२।१८६।  
 कर्तरि भुवः ३।२।१५७।  
 कर्तरि शप् ३।१।६८।  
 कर्तर्युपमाने ३।२।७९।  
 कर्तुः क्यङ् सलो० ३।१।११।  
 कर्तुरीप्सिततमं १।४।४९।  
 कर्तृकरणयो० २।३।१८।  
 कर्तृकरणे कृता० २।१।३२।  
 कर्तृकर्मणोः कृति २।३।६५।  
 कर्तृकर्मणोश्च ३।३।१२७।  
 कर्तृस्थे चाशरीरे १।३।३७।  
 कर्त्रोर्जीवपुरुष० ३।४।४३।  
 कर्मण उक्ञ् ५।१।१०३।  
 कर्मणा यमभि० १।४।३२।  
 कर्मणि घटोऽठच् ५।२।३५।



|                             |                              |
|-----------------------------|------------------------------|
| कर्मणि च २।२।१४।            | कष्टाय क्रमणे ३।१।१४।        |
| कर्मणि च येन ३।३।११६।       | कस्कादिषु च ८।३।४८।          |
| कर्मणि दृशि० ३।४।२९।        | कस्य च दः ५।३।७२।            |
| कर्मणि द्वितीया २।३।२।      | कस्येत् ४।२।२५।              |
| कर्मणि भृतौ ३।२।२२।         | काण्डाण्डादी० ५।२।१११।       |
| कर्मणि हनः ३।२।९३।          | काण्डान्तात्क्षेत्रे ४।१।२३। |
| कर्मणीनि ३।२।९३।            | कानाम्प्रेडिते ८।३।१२।       |
| कर्मणो रोमन्थ० ३।१।१५।      | का पथ्यक्षयोः ६।२।१०४।       |
| कर्मण्यग्न्या० ३।२।९२।      | कापिश्याः ष्फक् ४।२।९९।      |
| कर्मण्यण् ३।२।१।            | कामप्रवेदने ३।३।१५३।         |
| कर्मण्यधिकरणे ३।३।९३।       | काम्यच्च ३।१।९।              |
| कर्मण्याक्रोशे ३।४।२५।      | कारकादत्त ६।२।१४८।           |
| कर्मधारयवदु० ८।१।८१।        | कारके १।४।२३।                |
| कर्मधारयेऽनिष्ठा ६।२।४६।    | करनाम्नि च ६।३।१०।           |
| कर्मन्दकृशा० ४।३।१११।       | कारस्करो वृक्षः ६।१।१५६।     |
| कर्मप्रवचनीययुक्ते २।३।८।   | कारे सत्यागदस्य ६।३।७०।      |
| कर्मप्रवचनीयाः १।४।८३।      | कार्तकौजपादप० ६।२।३७।        |
| कर्मवत्कर्मणा ३।१।८७।       | कार्मस्ताच्छील्ये ६।४।१७२।   |
| कर्मवेषाद्यत् ५।१।१००।      | कालप्रयोजनाः ५।२।८१।         |
| कर्मव्यतिहारे ३।३।४३।       | कालविभागे ३।३।१३७।           |
| कर्माध्ययने वृत्तम् ४।४।६३। | कालसमयवे० ३।३।१६७।           |
| कर्षात्वतो घ० ६।१।१५९।      | कालाः २।१।२८।                |
| कलापिनोऽण् ४।३।१०८।         | कालाः परिमा० २।२।५।          |
| कलापिवैशम्पा० ४।३।१४।       | कालाच्च ५।४।३३।              |
| कलाप्यश्चत्थय० ४।३।४८।      | कालाड्गु ४।३।११।             |
| कलेर्ढक् ४।२।८।             | कालात् ५।१।७८।               |
| कल्याण्यादी० ४।१।१२६।       | कालात्साधु पु० ४।३।४३।       |
| कवं चोष्णे ६।३।१०७।         | कालाद्यत् ५।१।१०७।           |
| कव्यध्वरपृतन० ७।४।३९।       | कालाध्वनोरत्यन्त० २।३।५।     |
| कषादिषु यथा० ३।४।४६।        | कालेभ्यो भववत् ४।२।३४।       |

|                           |                            |
|---------------------------|----------------------------|
| कालोपसर्जने च १।२।५७।     | कुण्डं वनम् ६।२।१३६।       |
| काव्यपुरीषपुरी० ३।२।६५।   | कु तिहोः ७।२।१०४।          |
| काश्यपकौशि० ४।३।१०३।      | कुत्वा डुप्च् ५।३।८९।      |
| काश्यादिभ्य० ४।२।११६।     | कुत्सने च ८।१।६९।          |
| कासूगोणीभ्यां० ५।३।९०।    | कुत्सितानि २।१।५३।         |
| कास्तीराजस्तु ६।१।१५५।    | कुत्सिते ५।३।७४।           |
| कास्प्रत्ययादाम ३।१।३५।   | कुप्पोः ऋक ऋपौ च ८।३।३७।   |
| किंकिलास्त्य० ३।३।१४६।    | कुमति च ८।४।१३।            |
| किं क्रियाप्रश्ने ८।१।४४। | कुमहद्भ्याम० ५।४।१०५।      |
| किं क्षेपे २।१।६४।        | कुमारश्रमणादि० २।१।७०।     |
| कियत्तदो निर्धा० ५।३।९२।  | कुमारशीर्षयो० ३।२।५१।      |
| किंवृत्तं च चिदु० ८।१।४८। | कुमारश्च ६।२।२६।           |
| किंवृत्ते लिङ् ३।३।१४४।   | कुमर्या वयसि ६।२।९५।       |
| किंवृत्ते लिप्सा ३।३।६।   | कुमुदनडवेतसे० ४।२।८७।      |
| किसर्वनामबहु० ५।३।२।      | कुम्भपदीषु च ५।४।१३९।      |
| कितः ६।१।१६५।             | कुरुगार्हपतरि ६।२।४२।      |
| किति च ७।२।११८।           | कुरुनादिभ्यो० ४।१।१७२।     |
| किदाशिषि ३।४।१०४।         | कुर्वादिभ्यो ण्यः ४।१।१५१। |
| किमः कः ७।२।१०३।          | कुलकुक्षिग्रीवा० ४।२।९६।   |
| किमः क्षेपे ५।४।७०।       | कुलटाया वा ४।१।१२७।        |
| किमः संख्याप० ५।२।४१।     | कुलत्थकोपधादण् ४।४।४।      |
| किमश्च ५।३।२५।            | कुलात्खः ४।१।१३९।          |
| किमिदंभ्यां वो ५।२।४०।    | कुलालादिभ्यो० ४।३।११८।     |
| किमेत्तिङव्य० ५।४।११।     | कुलिजाल्लुक्खौ ५।१।५५।     |
| किमोऽत् ५।३।१२।           | कुल्माषादण् ५।२।८३।        |
| किरतौ लवने ६।१।१४०।       | कुशाग्राच्छः ५।३।१०५।      |
| किरश्च पञ्चभ्यः ७।२।७५।   | कुषिरजोः प्राचां ३।१।९०।   |
| किसरादिभ्यः ४।४।५३।       | कुसीददशैकाद० ४।४।३१।       |
| कुगतिप्रादयः २।२।१८।      | कुसूलकूपकुम्भ० ६।२।१०२।    |
| कुटीशमीशुण्डा ५।३।८८।     | कुस्तुम्बुरुणि ६।१।१४३।    |



|                            |                             |
|----------------------------|-----------------------------|
| कुहोश्चुः ७।४।६२।          | कृसृभृवृस्तुदु० ७।२।१३।     |
| कूलतीरतूल० ६।२।१२१।        | कृ धान्ये ३।३।३०।           |
| कूलसूदस्थल० ६।२।१२९।       | केकयमित्रयुप्र० ७।३।२।      |
| कृकणपर्णाद्भार० ४।२।१४५।   | केऽणः ७।४।१३।               |
| कृच्छ्रगहनयोः ७।२।२२।      | केदाराद्यञ्च ४।२।४०।        |
| कृजः प्रतियत्ने २।३।५३।    | केवलमामक ४।१।३०।            |
| कृजः श च ३।३।१००।          | केशाद्वोऽन्यतर० ५।२।१०९।    |
| कजो द्वितीयतृ० ५।४।५८।     | केशाश्चाभ्यां प० ४।२।४८।    |
| कजो हेतुताच्छी० ३।२।२०।    | कोः कत्तत्पुरु० ६।३।१०१।    |
| कृञ्चानुप्रयुज्य० ३।१।४०।  | कोपधाच्च ४।२।७९।            |
| कृतलब्धक्रीत० ४।३।३८।      | कोपधाच्च ४।३।१३७।           |
| कृते ग्रन्थे ४।३।११६।      | कोपधादण् ४।२।१३२।           |
| कृतद्धितसमा० १।२।४६।       | कोशाड्ज् ४।३।४२।            |
| कृत्यचः ८।४।२९।            | कौपिञ्जलहास्ति० ४।३।१३२।    |
| कृत्यतुल्याख्या० २।१।६८।   | कौमारापूर्ववचने ४।२।१३।     |
| कृत्यल्युटो बहु० ३।३।११३।  | कौरव्यमाण्डूका० ४।१।१९।     |
| कृत्याः ३।१।९५।            | कौशल्यकार्मा० ४।१।११५।      |
| कृत्यानां कर्तरि २।३।७१।   | किङिति च १।१।५।             |
| कृत्यार्थे तवैके० ३।४।१४।  | क्तक्तवतू निष्ठा १।१।२६।    |
| कृत्याश्च ३।३।१७१।         | क्तस्य च वर्तमाने २।३।६७।   |
| कृत्यैरधिकार्थ० २।१।३३।    | क्तादल्पाख्यायाम् ४।१।५१।   |
| कृत्यैर्ऋणे २।१।४३।        | क्तिक्तौ च स० ३।३।१७४।      |
| कृत्योकेष्णुच्चा० ६।२।१६०। | क्ते च ६।२।४५।              |
| कृत्योर्थप्रयोगे २।३।६४।   | क्तेन च पूजायाम् २।२।१२।    |
| कृदतिङ् ३।१।९३।            | क्तेन नञ्विशि० २।१।६०।      |
| कृन्मेजन्तः १।१।३९।        | क्तेनाहोरात्रा० २।१।४५।     |
| कृपो रो लः ८।२।१८।         | क्ते नित्यार्थे ६।२।६१।     |
| कृभ्वस्तियोगे ५।४।५०।      | क्तोऽधिकरणे च ३।४।७६।       |
| कृमृदृरहिभ्यश्छ० ३।१।५९।   | क्त्रेर्मन् नित्यम् ४।४।२०। |
| कृवेश्छन्दसि ७।४।६४।       | क्त्वा च २।२।२२।            |

क्त्वापि च्छन्द ७।१।३८।  
 क्त्वि स्कन्दिस्य० ६।४।३१।  
 क्त्वो यक् ७।१।४७।  
 क्यङ्मानिनोश्च ६।३।३६।  
 क्यचि च ७।४।३३।  
 क्यच्च्योश्च ६।४।५०।  
 क्यच्छन्दसि ३।२।१७०।  
 क्रतुयज्ञेभ्यश्च ४।३।६८।  
 क्रतूक्थादिसूत्रा० ४।२।६०।  
 क्रतौ कुण्डपा० ३।१।१३०।  
 क्रत्वादयश्च ६।२।११८।  
 क्रमः परस्मैप० ७।३।७६।  
 क्रमश्च क्त्वि ६।४।१८।  
 क्रमादिभ्यो० ४।२।६१।  
 क्रय्यस्तदर्थे ६।१।८२।  
 क्रव्ये च ३।२।६९।  
 क्रियार्थोपपदस्य २।३।१४।  
 क्रियासमभिहारे ३।४।२।  
 क्रीड्जीनां णौ ६।१।४८।  
 क्रीडोऽनुसंपि १।३।२१।  
 क्रीतवत्परिमा० ४।३।१५६।  
 क्रीतात्करणपूर्वात् ४।१।५०।  
 क्रुधद्रुहेर्ष्यासू० १।४।३७।  
 क्रुधद्रुहोरुपसृष्ट० १।४।३८।  
 क्रुधमण्डार्थेभ्य० ३।१।१५१।  
 क्रौड्यादिभ्यश्च ४।१।८०।  
 क्रयादिभ्यः श्ना ३।१।८१।  
 क्लिशः क्त्वा ७।२।५०।  
 क्वणो वीणायां च ३।३।६५।  
 क्वसुश्च ३।२।१०७।

क्वाति ७।२।१०५।  
 क्विन्प्रत्ययस्य कुः ८।२।६२।  
 क्विप् च ३।२।७६।  
 क्षत्राद्भ्यः ४।१।१३८।  
 क्षयो निवासे ६।१।२०१।  
 क्षय्यजय्यौ श ६।१।८१।  
 क्षायो मः ८।२।५३।  
 क्षिप्रवचने लृट् ३।३।१३३।  
 क्षियः ६।४।५९।  
 क्षियाशीः प्रैषे ८।२।१०४।  
 क्षियो दीर्घात् ८।२।४६।  
 क्षिराङ्ग ४।२।२०।  
 क्षुद्रजन्तवः २।४।८।  
 क्षुद्राभ्यो वा ४।१।१३१।  
 क्षुद्राभ्रमरवट० ४।३।११९।  
 क्षुब्धस्वान्त० ७।२।१८।  
 क्षुभ्नादिषु च ८।४।३९।  
 क्षुल्लकश्च वैश्व० ६।२।३९।  
 क्षेत्रियच्परक्षेत्रे ५।२।९२।  
 क्षेपे २।१।४७।  
 क्षेपे ६।२।१०८।  
 क्षेमप्रियमद्रे० ३।२।४४।  
 क्सस्याचि ७।३।७२।  
 ख  
 खः सर्वधुरात् ४।४।७८।  
 ख च ४।४।१३२।  
 खचि ह्रस्वः ६।४।९४।  
 खट्वा क्षेपे २।१।२६।  
 खण्डिकादि० ४।२।४५।  
 खनो घ च ३।३।१२५।



|                            |                            |
|----------------------------|----------------------------|
| खरवसानयोर्वि० ८।३।१५।      | गर्हायां लडपि ३।३।१४२।     |
| खरि च ८।४।५५।              | गर्हायां च ३।३।१४९।        |
| खलगोरथात् ४।२।५०।          | गवाश्चप्रभृतीनि २।४।११।    |
| खलयवमाषतिल० ५।१।७।         | गवियुधिभ्यां ८।३।९५।       |
| खार्या ईकन् ५।१।३३।        | गः स्थकन् ३।१।१४६।         |
| खार्याः प्राचाम् ५।४।१०१।  | गहादिभ्यश्च ४।२।१३८।       |
| खित्यनव्ययस्य ६।३।६६।      | गाङ्कुटादिभ्यो० १।२।१।     |
| खिदेश्छन्दसि ६।१।५२।       | गाङ् लिटि २।४।४९।          |
| ख्यत्यात्परस्य ६।१।११२।    | गाण्ड्यजगात्० ५।२।११०।     |
| ग                          | गातिस्थाघुपा० २।४।७७।      |
| गतिकारकोप० ६।२।१३९।        | गाथिविदथिके० ६।४।१६५।      |
| गतिबुद्धिप्रत्यव० १।४।५२।  | गाधलवणयोः ६।२।४।           |
| गतिरनन्तरः ६।२।४९।         | गापोष्टक् ३।२।८।           |
| गतिर्गतौ ८।१।७०।           | गिरेश्च सेनक० ५।४।११२।     |
| गतिश्च १।४।६०।             | गुडादिभ्यष्ठञ् ४।४।१०३।    |
| गत्यर्थकर्मणि २।३।१२।      | गुणवचनब्राह्म० ५।१।१२४।    |
| गत्यर्थलोटा ८।१।५१।        | गुणोऽपृक्ते ७।३।९१।        |
| गत्यर्थकर्मक० ३।४।७२।      | गुणो यङ्लुकोः ७।४।८२।      |
| गत्वरश्च ३।२।१६४।          | गुणोऽर्तिसंयो० ७।४।२९।     |
| गदमदचरयम० ३।१।१००।         | गुपूधूपविच्छि० ३।१।२८।     |
| गन्तव्यपण्यं ६।२।१३।       | गुपेश्छन्दसि ३।१।५०।       |
| गन्धनावक्षेपण० १।३।३२।     | गुप्तिज्जिदभ्यः सन् ३।१।५। |
| गन्धस्येदुत्पूति० ५।४।१३५। | गुरोरनृतोऽनन्त्य० ८।२।८६।  |
| गमः क्वौ ६।४।४०।           | गुरोश्च हलः ३।३।१०३।       |
| गमश्च ३।२।४७।              | गृधिवज्ज्योः प्र० १।३।६९।  |
| गमहनजनखन० ६।४।९८।          | गृष्ट्यादिभ्यश्च ४।१।१३६।  |
| गमेरिट् परस्मै० ७।२।५८।    | गृहपतिना संयुक्ते ४।४।९०।  |
| गम्भीराञ्जः ४।३।५८।        | गेहे कः ३।१।१४४।           |
| गर्गादिभ्यो यञ् ४।१।१०५।   | गोः पादान्ते ७।१।५७।       |
| गर्तोत्तरपदा० ४।२।१३७।     | गोचरसंचरव० ३।३।११९।        |

गोतन्तियवं पाले ६।२।७८।  
 गोतो णित् ७।१।९०।  
 गोत्रक्षत्रियाख्ये ४।३।९९।  
 गोत्रचरणा० ५।१।१३४।  
 गोत्रचरणाद्गुञ् ४।३।१२६।  
 गोत्रस्त्रियाः ४।१।१४७।  
 गोत्रादङ्गवत् ४।३।८०।  
 गोत्राद्यून्यस्त्रि० ४।१।९४।  
 गोत्रान्तेवासि० ६।२।६९।  
 गोत्रावयवात् ४।१।७९।  
 गोत्रे कुञ्जादिभ्यः ४।१।९८।  
 गोत्रेऽलुगचि ४।१।८९।  
 गोत्रोक्षोष्टोरभ्र० ४।२।३९।  
 गोद्व्यचोऽसंख्या ५।१।३९।  
 गोधाया ढक् ४।१।१२९।  
 गोपयसोर्यत् ४।३।१६०।  
 गोपुच्छाद्गुञ् ४।४।६।  
 गोयवाग्वोश्च ४।२।१३६।  
 गोरतद्धितलुकि ५।४।९२।  
 गोबिडालसिंह० ६।२।७२।  
 गोश्च पुरीषे ४।३।१४५।  
 गोषदादिभ्यो० ५।२।६२।  
 गोष्ठात्खञ्भूत० ५।२।१८।  
 गोष्पदं सेविता ६।१।१४५।  
 गोस्त्रियोरुपस० १।२।४८।  
 गौः सादसादि ६।२।४१।  
 ग्रन्थान्ताधिके ६।३।७९।  
 ग्रसितस्कभित० ७।२।३४।  
 ग्रहवृद्धनिश्चिगमश्च ३।३।५८।  
 ग्रहिज्यावयिव्य० ६।१।१६।

ग्रहोऽलिटि दीर्घः ७।२।३७।  
 ग्रामः शिल्पिनि ६।२।६२।  
 ग्रामकौटाभ्यां च ५।४।९५।  
 ग्रामजनपदैकदे० ४।३।७।  
 ग्रामजनबन्धुभ्य० ४।२।४३।  
 ग्रामात्पर्यनुपूर्वात् ४।३।६१।  
 ग्रामाद्यखञौ ४।२।९४।  
 ग्रामेऽनिवसन्तः ६।२।८४।  
 ग्राम्यपशुसङ्घेष्व० १।२।७३।  
 ग्रीवाभ्योऽण्च ४।३।५७।  
 ग्रीष्मवसन्ताद० ४।३।४६।  
 ग्रीष्मावरसमाद् ४।३।४९।  
 ग्री यङि ८।२।२०।  
 ग्लाजिस्थश्च ३।२।१३९।  
 घ  
 घकालतनेषु ६।३।१७।  
 घच्छौ च ४।४।११७।  
 घञः सास्यां ४।२।५८।  
 घञपोश्च २।४।३८।  
 घञि च भाव० ६।४।२७।  
 घनिलचौ च ५।३।७९।  
 घरूपकल्पचेलङ् ६।३।४३।  
 घसिभसोर्हलि० ६।४।१००।  
 घुमास्थागापा ६।४।६६।  
 घुषिरविशब्दने ७।२।२३।  
 घोडति ७।३।१११।  
 घोर्लोपो लेटि ७।२।७०।  
 घोषादिषु च ६।२।८५।  
 घ्वसोरेद्भाव० ६।४।११९।  
 ङ  
 ङमो ह्रस्वादचि ८।३।३२।  
 ङयि च ६।१।२१२।



|                              |                            |
|------------------------------|----------------------------|
| डसिडसोश्च ६।१।११०।           | चरफलोश्च ७।४।८७।           |
| डसिड्योः स्मा० ७।१।१५।       | चरेष्टः ३।२।१६।            |
| डिच्च १।१।५३।                | चर्मणोऽज् ५।१।१५।          |
| डिति ह्रस्वश्च १।४।६।        | चर्मोदरयोः पूरेः ३।४।३१।   |
| डेप्रथमयोरम् ७।१।२८।         | चलनशब्दा० ३।२।१४८।         |
| डेराम्नद्याम्नीभ्यः ७।३।११६। | चवायोगे प्रथमा० ८।१।५९।    |
| डेर्यः ७।१।१३।               | चादयोऽसत्वे १।४।५७।        |
| ङ्णोः कुक्कुक्षरि ८।३।२८।    | चादिलोपे विभा० ८।१।६३।     |
| ङ्यापोः संज्ञा० ६।३।६३।      | चादिषु च ८।१।५८।           |
| ङ्याप्रातिपदि० ४।१।११।       | चायः की ६।१।२१।            |
| ङ्याश्छन्दसि ६।१।१७८।        | चायः की ६।१।३५।            |
| च                            | चार्थे द्वन्द्वः २।२।२९।   |
| चक्षिडः ख्याज् २।४।५४।       | चाहलोप एवे० ८।१।६२।        |
| चङि ६।१।११।                  | चिणो लुक् ६।४।१०४।         |
| चङ्यन्यतर० ६।१।२१८।          | चिण्णमुलोर्दीर्घो० ६।४।९३। |
| चजोः कु धिण्यतोः ७।३।५२।     | चिण्ते पदः ३।१।६०।         |
| चटकाया ऐरक् ४।१।१२८।         | चिण्भावकर्मणोः ३।१।६६।     |
| चतुरः शसि ६।१।१६७।           | चितः ६।१।१६३।              |
| चतुरनडुहोरा० ७।१।९८।         | चितेः कपि ६।३।१२७।         |
| चतुर्थी चाशिष्या० २।३।७३।    | चित्तवति नित्यम् ५।१।८९।   |
| चतुर्थी तदर्था० २।१।३६।      | चित्याग्निचि० ३।१।१३२।     |
| चतुर्थी तदर्थे ६।२।४३।       | चित्रीकरणे च ३।३।१५०।      |
| चतुर्थी संप्रदाने २।३।१३।    | चिदिति चोप० ८।२।१०१।       |
| चतुर्थ्यर्थे बहुलम् २।२।६२।  | चिन्तिपूजि० ३।३।१०५।       |
| चतुष्पादो गर्भि० २।१।७१।     | चिस्फुरोर्णौ ६।१।५४।       |
| चतुष्पाद्भ्यो० ४।१।१३५।      | चीरमुपमानम् ६।२।१२७।       |
| चनचिदिव० ८।१।५७।             | चुटू १।३।७।                |
| चरणे ब्रह्मचा० ६।३।८६।       | चूर्णादिनिः ४।४।२३।        |
| चरणेभ्यो धर्म० ४।२।४६।       | चूर्णादीन्यप्रा० ६।२।१३४।  |
| चरति ४।४।८।                  | चेलखेटकटुक० ६।२।१२६।       |

चेले क्रोपेः ३।४।३३।

चोः कुः ८।२।३०।

चौ ६।१।२२२।

चौ ६।३।१३८।

च्छ्वोः शूडनु० ६।४।१९।

च्चि लुङि ३।१।४३।

च्च्लेः सिच् ३।१।४४।

च्चौ च ७।४।२६।

**छ**

छगलिनो ढि० ४।३।१०९।

छ च ४।२।२८।

छत्रादिभ्यो णः ४।४।६२।

छदिरुपधिबलेर्दञ् ५।१।१३।

छन्दसि गत्यर्थे० ३।३।१२९।

छन्दसि घस् ५।१।१०६।

छन्दसि च ५।१।६७।

छन्दसि च ५।४।१४२।

छन्दसि च ६।३।१२६।

छन्दसि ठञ् ४।३।१९।

छन्दसि निष्ट० ३।१।१२३।

छन्दसि परि० ५।२।८९।

छन्दसि परेऽपि १।४।८१।

छन्दसि पुनर्व० १।२।६१।

छन्दसि लिट् ३।२।१०५।

छन्दसि लुङ्लङ् ३।४।६।

छन्दसि वनस० ३।२।२७।

छन्दसि वा प्रा० ८।३।४९।

छन्दसि शायज० ३।१।८४।

छन्दसि सहः ३।२।६३।

छन्दसीरः ८।२।१५।

छन्दसो निर्मिते ४।४।९३।

छन्दसो यदणौ ४।३।७१।

छन्दस्यनेकमपि० ८।१।३५।

छन्दस्यपि दृश्यते ६।४।७३।

छन्दस्यपि दृश्यते ७।१।७६।

छन्दस्युभयथा ३।४।११७।

छन्दस्युभयथा ६।४।५।

छन्दस्युभयथा ६।४।८६।

छन्दस्युदवग्रहात् ८।४।२६।

छन्दागौक्थि० ४।३।१२९।

छन्दोनामि च ३।३।३४।

छन्दोनामि च ८।३।९४।

छन्दोब्राह्मणानि ४।२।६६।

छात्रादयः शा० ६।२।८६।

छादेर्धेऽद्व्युपस० ६।४।९६।

छाया बाहुल्ये २।४।२२।

छे च ६।१।७३।

छेदादिभ्यो नि० ५।१।६४।

**ज**

जश्शसोः शिः ७।१।२०।

जक्षित्यादयः षट् ६।१।६।

जङ्गलधेनुवल० ७।३।२५।

जनपदतद० ४।२।१२४।

जनपदशब्दा० ४।१।१६८।

जनपदिनां ज० ४।३।१००।

जनपदे लुप् ४।२।८१।

जनसनखन० ३।२।६७।

जनसनखनां स० ६।४।४२।

जनिकर्तुः प्रकृतिः १।४।३०।

जनिता मन्त्रे ६।४।५३।



|                           |                             |
|---------------------------|-----------------------------|
| जनिवध्योश्च ७।३।३५।       | जिह्वामूलाङ्गु ४।३।६२।      |
| जपजभदहदशं ७।४।८६।         | जीर्यतेरतृन् ३।२।१०४।       |
| जम्बा वा ४।३।१६५।         | जीवति तु ४।१।१६३।           |
| जम्भासुहरितं ५।४।१२५।     | जीविकार्थे चा० ५।३।९९।      |
| जयः करणम् ६।१।२०२।        | जीविकोपनिष० १।४।७९।         |
| जराया जरस० ७।२।१०१।       | जुचङ्क्रम्यद० ३।२।१५०।      |
| जल्पभिक्षुकुट्टं ३।२।१५५। | जुष्टार्पिते च ६।१।२०९।     |
| जसः शी ७।१।१७।            | जुसि च ७।३।८३।              |
| जसि च ७।३।१०९।            | जुहोत्यादिभ्यः २।४।७५।      |
| जहातेश्च ६।४।११६।         | जृत्रश्च्योः क्त्वि ७।२।५५। |
| जहातेश्च क्त्वि ७।४।४३।   | जृस्तम्भुमुचुम्लु० ३।१।५८।  |
| जागरूकः ३।२।१६५।          | जे प्रोष्ठपदानाम् ७।३।१८।   |
| जाग्रोऽविचिण्णं ७।३।८५।   | ज्ञानोर्जा ७।३।७९।          |
| जातरूपेभ्यः ४।३।१५३।      | ज्ञाश्रुस्मृदृशां १।३।५७।   |
| जातिकालसु० ६।२।१७०।       | ज्ञोऽविदर्थस्य २।३।५१।      |
| जातिनाम्नः कन् ५।३।८१।    | ज्य च ५।३।६१।               |
| जातिरप्राणिनाम् २।४।६।    | ज्यश्च ६।१।४२।              |
| जातुयदोर्लिङ् ३।३।१४७।    | ज्यादादीयसः ६।४।१६०।        |
| जातेरस्त्रीविष० ४।१।६३।   | ज्योतिरायुषः ८।३।८३।        |
| जातेश्च ६।३।४१।           | ज्योतिर्जनपदरा० ६।३।८५।     |
| जात्यन्ताच्छ ब० ५।४।९।    | ज्योत्स्नातमि० ५।२।११४।     |
| जात्याख्याया० १।२।५८।     | ज्वरत्वरस्त्रिव्य० ६।४।२०।  |
| जात्वपूर्वम् ८।१।४७।      | ज्वलितिक० ३।१।१४०।          |
| जानपदकुण्ड० ४।१।४२।       | झ                           |
| जान्तनशां वि० ६।४।३२।     | झयः ५।४।१११।                |
| जायाया निङ् ५।४।१३४।      | झयः ८।२।१०।                 |
| जालमानायः ३।३।१२४।        | झयो होऽन्यतर० ८।४।६२।       |
| जासिनिग्रहण० २।३।५६।      | झरो झरि सवर्णे ८।४।६५।      |
| जिघ्रतेर्वा ७।४।६।        | झलां जशोऽन्ते ८।२।३९।       |
| जिदृक्षिवित्री० ३।२।१५७।  | झलो जश्झशि ८।४।५३।          |

झलो झलि ८।२।२६।

झल्युपोत्तमम् ६।१।१८०।

झषस्तथोर्धोऽधः ८।२।४०।

झस्य रन् ३।४।१०५।

झेर्जुस् ३।४।१०८।

झोऽन्तः ७।१।३।

**ञ**

जितश्च तत्प्रत्ययं ४।३।१५५।

जीतः क्तः ३।२।१८७।

जित्यादि० ६।१।१९७।

ज्यादयस्तद्रा० ५।३।११९।

**ट**

टाडसिडसामि० ७।१।१२।

टाबृचि ४।१।९।

टिड्ढाणञ्द्वयं ४।१।१५।

टित आत्मनेप० ३।४।७९।

टेः ६।४।१४३।

टेः ६।४।१५५।

टितोऽथुच् ३।३।८९।

**ठ**

ठक्छौ च ४।२।८४।

ठगायस्थानेभ्यः ४।३।७५।

ठक्वचिनश्च ४।२।४१।

ठस्येकः ७।३।५०।

ठाजादावूर्ध्वं द्वि० ५।३।८३।

**ड**

डः सि धुट् ८।३।२९।

डति च १।१।२५।

डाबुभाभ्याम० ४।१।१३।

ड्वितः क्त्रिः ३।३।८८।

**ढ**

ढकि लोपः ४।१।१३३।

ढक्च मण्डूकात् ४।१।११९।

ढश्छन्दसि ४।४।१०६।

ढे लोपोऽकद्रवाः ६।४।१४७।

ढो ढे लोपः ८।३।१३।

ढ्रलोपे पूर्वस्य० ६।३।१११।

**ण**

णचः स्त्रियामञ् ५।४।१४।

णलुत्तमो वा ७।१।९१।

णितश्च १।३।७४।

णिजां त्रयाणां ७।४।७५।

णिनि ६।२।७९।

णिश्चिद्रुसु० ३।१।४८।

णेरणौ यत्कर्म० १।३।६७।

णेरध्ययने वृत्तम् ७।२।२६।

णेरनिटि ६।४।५१।

णेर्विभाषा ८।४।३०।

णेश्छन्दसि ३।२।१३७।

णो नः ६।१।६५।

णौ गमिरबोधने २।४।४६।

णौ चङ्युपधाया० ७।४।१।

णौ च संश्रङोः २।४।५१।

णौ च संश्रङोः ६।१।३१।

ण्य आवश्यके ७।३।६५।

ण्यक्षत्रियार्ष० २।४।५८।

ण्यासश्रन्थो० ३।३।१०७।

ण्युट् च ३।३।१४७।

ण्वुल्लृचौ ३।१।१३३।



|                             |                            |
|-----------------------------|----------------------------|
| त                           | तदर्थ विकृतेः ५।१।१२।      |
| तडानावत्मने० १।४।१००।       | तदर्हति ५।१।६३।            |
| तत आगतः ४।३।७४।             | तदर्हम् ५।१।११७।           |
| तत्पुरुषः २।१।२२।           | तदशिष्यं संज्ञा० १।२।५३।   |
| तत्पुरुषः समा० १।२।४२।      | तदस्मिन्नधिक० ५।२।४५।      |
| तत्पुरुषस्याङ्गु० ५।४।८६।   | तदस्मिन्नन्नं० ५।२।८२।     |
| तत्पुरुषे कृति ६।३।१४।      | तदस्मिन्नस्ती० ४।२।६७।     |
| तत्पुरुषे तेल्यार्थ० ६।२।२। | तदस्मिन्वृ० ५।१।४७।        |
| तत्पुरुषे शाला० ६।२।१२३।    | तदस्मै दीयते ४।४।६६।       |
| तत्पुरुषोऽनञ् २।४।१९।       | तदस्य तदस्मि० ५।१।१६।      |
| तत्प्रकृतवचने ५।४।२१।       | तदस्य पण्यम् ४।४।५१।       |
| तत्प्रत्यनु० ४।४।२८।        | तदस्य परिभाणम् ५।१।५७।     |
| तत्प्रत्ययस्य ७।३।२९।       | तदस्य ब्रह्मचर्यम् ५।१।९४। |
| तत्प्रयोजको० १।४।५४।        | तदस्य संजातं ५।२।३६।       |
| तत्र २।१।४६।                | तदस्य सोढम् ४।३।५२।        |
| तत्र कुशलः ५।२।६३।          | तदस्यां प्रहरण० ४।२।५७।    |
| तत्र च दीयते ५।१।९६।        | तदस्यास्त्य० ५।२।९४।       |
| तत्र जातः ४।३।२५।           | तदोः सः सा० ७।२।१०६।       |
| तत्र तस्येव ५।१।११६।        | तदो दा च ५।३।१९।           |
| तत्र तेनेदमिति २।२।२७।      | तद् गच्छति पथि० ४।३।८५।    |
| तत्र नियुक्तः ४।४।६९।       | तद्धितश्चासर्व० १।१।३८।    |
| तत्र भवः ४।३।५३।            | तद्धितस्य ६।१।१६४।         |
| तत्र विहित इति ५।१।४३।      | तद्धिताः ४।१।७६।           |
| तत्र साधुः ४।४।९८।          | तद्धितार्थोत्तर० २।१।५१।   |
| तत्रोद्धृतममत्रे० ४।२।१४।   | तद्धितेष्वचामा० ७।२।११७।   |
| तत्रोपपदं सप्त० ३।१।९२।     | तद्युक्तात्कर्मणो० ५।४।३६। |
| तत्सर्वादिः ५।२।७।          | तद्राजस्य बहुषु० २।४।६२।   |
| तथायुक्तं चानी० १।४।५०।     | तद्वहति रथयुग० ४।४।७६।     |
| तदधीते तद्वेद ४।२।५९।       | तद्वानासामुप० ४।४।१२५।     |
| तदधीनवचने ५।४।५४।           | तनादिकृञ्च्य० ३।१।७९।      |

तनादिभ्यस्त० २।४।७९।  
तनिपत्योश्छन्दः ६।४।९९।  
तनूकरणे तक्षः० ३।१।७६।  
तनोतेर्यकि ६।४।४४।  
तनोतेर्विभाषा ६।४।१७।  
तन्त्रादचिराप० ५।२।७०।  
तपःसहस्राभ्यां ५।२।१०२।  
तपरस्तत्कालस्य १।१।७०।  
तपस्तपः कर्म० ३।१।८८।  
तपोऽनुतापे ३।१।६५।  
तप्तनप्तनथनाश्च ७।१।४५।  
तमधीष्टो भृतो ५।१।८०।  
तयोरेव कृत्य० ३।४।७०।  
तयोर्दाहिलौ च ५।३।२०।  
तयोर्वावचि ८।२।१०८।  
तरति ४।४।५।  
तरप्तमपौ घः १।१।२२।  
तवकममकावेक० ४।३।३।  
तवममौ डसि ७।२।९६।  
तवै चान्तश्च ६।२।५१।  
तव्यत्तत्वानीयरः ३।१।९६।  
तसिलादिष्वाकृ० ६।३।३५।  
तसिश्च ४।३।११३।  
तसेश्च ५।३।८।  
तसौ मत्वर्थे १।४।१९।  
तस्थस्थमिपां० ३।४।१०१।  
तस्माच्छसो नः ६।१।१०३।  
तस्मादित्युत्तरस्य १।१।६७।  
तस्मानुडचि ६।३।७४।  
तस्मानुड् द्विहलः ७।४।७१।

हस्मिन्नणि च ४।३।२।  
तस्मिन्निति १।१।६६।  
तस्मै प्रभवति ५।१।१०१।  
तस्मै हितम् २।१।५।  
तस्य च दक्षि० ५।१।९५।  
तस्य तात् ७।१।४४।  
तस्य धर्म्यम् ४।४।४७।  
तस्य निमित्तं ५।१।३८।  
तस्य निवासः ४।२।६९।  
तस्य निवासः ४।२।६९।  
तस्य परमाग्रेड० ८।१।२।  
तस्य पाकमूले ५।२।२४।  
तस्य पूरणे डट् ५।२।४८।  
तस्य भावस्त्व० ५।१।११९।  
तस्य लोपः १।३।९।  
तस्य वापः ५।१।४५।  
तस्य विकारः ४।३।१३४।  
तस्य व्याख्यान० ४।३।६६।  
तस्य समूहः ४।२।३७।  
तस्यादित उदा० १।२।३२।  
तस्यापत्यम् ४।१।९२।  
तस्येदम् ४।३।१२०।  
तस्येश्वरः ५।४।४२।  
ताच्छील्यव० ३।२।१२९।  
तादौ च निति ६।२।५०।  
तान्येकवचन० १।४।१०२।  
ताभ्यामन्यत्रो० ३।४।७५।  
तालादिभ्योऽण् ४।३।१५२।  
तावतिथं ग्रहण० ५।२।७७।  
तासस्त्योलोपः ७।४।५०।



|                            |                            |
|----------------------------|----------------------------|
| तासि च क्लृपः ७।२।६०।      | तुदादिभ्यः शः ३।१।७७।      |
| तास्यनुदात्ते० ६।१।१८६।    | तुन्दशोकयोः परि० ३।२।५।    |
| तिककितवादि० २।४।६८।        | तुन्दादिभ्य० ५।२।११७।      |
| तिकादिभ्यः ४।१।१५४।        | तुन्दिबलिवटे० ५।२।१३९।     |
| तिङश्च ५।३।५६।             | तुपश्यपश्यताहैः ८।१।३९।    |
| तिङस्त्रीणि त्री० १।४।१०१। | तुभ्यमहौ डयि ७।२।९५।       |
| तिङि चोदात्त० ८।१।७१।      | तुमर्थाच्च भावव० २।३।१५।   |
| तिङो गोत्रादी० ८।१।२७।     | तुमर्थे सेसेनसेऽसे० ३।३।९। |
| तिङ्ङतिङः ८।१।२८।          | तुमुन्ण्वुलौ क्रि० ३।३।१०। |
| तिङ्ङित्सार्व० ३।४।११३।    | तुरिष्ठेमेयः सु ६।४।१५४।   |
| ति च ७।४।८९।               | तुरुस्तुशम्यमः ७।३।९५।     |
| तितुत्रतथसिसुसर० ७।२।९।    | तुल्यार्थैरतुलो० २।३।७२।   |
| तित्तिरिवरतन्तु० ४।३।१०२।  | तुल्यास्यप्रयत्नं १।१।९।   |
| तित्स्वरितम् ६।१।१८५।      | तुश्छन्दसि ५।३।५९।         |
| तिप्तस्झिसिष्थं ३।४।७८।    | तुह्योस्तातडा० ७।१।३५।     |
| तिप्यनस्तेः ८।२।७३।        | तूदीसलातुरवर्म० ३।४।९४।    |
| तिरसस्तिर्यलोपे ६।३।९४।    | तूष्णीमि भुवः ३।४।६३।      |
| तिरसोऽन्यतर० ८।३।४२।       | तृजकाभ्यां कर्तरि २।२।१५।  |
| तिरोऽन्तर्धौ १।४।७१।       | तृज्वत्क्रोष्टुः ७।१।९५।   |
| तिर्यच्यपवर्गे ३।४।६०।     | तृणह इम् ७।३।९२।           |
| ति विंशतेर्दिति ६।४।१४२।   | तृणे च जातौ ६।३।१०३।       |
| तिष्ठतेरित् ७।४।५।         | तृतीया कर्मणि ६।२।४८।      |
| तिष्ठद्गुप्रभृतीनि २।१।१७। | तृतीया च होश्छ० २।३।३।     |
| तिष्यपुनर्वस्वो० १।२।६३।   | तृतीया तत्कृता० २।१।३०।    |
| तिसृभ्यो जसः ६।१।१६६।      | तृतीयादिषु भा० ७।१।७४।     |
| तीरूप्योत्तरप० ४।२।१०६।    | तृतीयाप्रभृती० २।२।२१।     |
| तीर्थे ये ६।३।८७।          | तृतीयार्थे १।४।८५।         |
| तीषसहलुभरुष० ७।२।४८।       | तृतीयासप्तम्यो० २।४।८४।    |
| तुग्राद्धन् ४।४।११५।       | तृतीयासमासे १।१।३०।        |
| तुजादीनां दीर्घो० ६।१।७।   | तृन् ३।२।१३५।              |

तृषिमृषिकृषेः १।२।२५।  
 तृफलभजत्रपश्च ६।४।१२२।  
 ते तद्राजाः ४।१।१७४।  
 तेन क्रीतम् ५।१।३७।  
 तेन तुल्यं क्रि० ५।१।११५।  
 तेन दीव्यति ४।४।२।  
 तेन निर्वृत्तम् ४।२।६८।  
 तेन निर्वृत्तम् ५।१।७९।  
 तेन परिज्यल० ५।१।९३।  
 तेन प्रोक्तम् ४।३।१०१।  
 तेन यथाकथा ५।१।९८।  
 तेन रक्तं रागात् ४।२।१।  
 तेन वित्तश्रु० ५।२।२६।  
 तेन सहेति तुल्य० २।२।२८।  
 तेनैकदिक् ४।३।११२।  
 ते प्राग्धातोः ४।१।८०।  
 तेमयावेकवचन० ८।१।२२।  
 तोः षि ८।४।४३।  
 तोर्लि ८।४।६०।  
 तौ सत् ३।२।१२७।  
 त्यदादिषु दृशो० ३।२।६०।  
 त्यदादीनामः ७।२।१०२।  
 त्यदादीनि च १।१।७४।  
 त्यादादीनि सर्वे० १।२।७२।  
 त्यागरागहास० ६।१।२१६।  
 त्रपुजतुनोः षुक् ४।३।१३८।  
 त्रसिगृधिधृषि० ३।२।१४०।  
 त्रिंशच्चत्वारिंश० ५।१।६२।  
 त्रिककुत्पर्वते ५।४।१४७।  
 त्रिचतुरोः स्त्रियां ७।२।९९।

त्रिप्रभृतिषु शा० ८।४।५०।  
 त्रेः संप्रसारणं च ५।२।५५।  
 त्रेस्त्रयः ६।३।४८।  
 त्रेस्त्रयः ७।१।५३।  
 त्वमाकेवचने ७।२।९७।  
 त्वामौ द्वितीयायाः ८।१।२३।  
 त्वाहौ सौ ७।२।९४।  
 त्वे च ६।३।६४।  
 थ  
 थट् च च्छन्दसि ५।२।५०।  
 थलि च सेटि ६।४।१२१।  
 थलि च सेटीड० ६।१।१९६।  
 थाथघज्जाजबि० ६।२।१४४।  
 थासः से ३।४।८०।  
 था हेतौ चच्छ० ५।३।२६।  
 थो न्यः ७।१।८७।  
 द  
 दंशसञ्जस्वञ्जां ६।४।२५।  
 दक्षिणादाच् ५।३।३६।  
 दक्षिणापश्चात्पुर० ४।२।९८।  
 दक्षिणेर्मा लुब्ध० ५।४।१२६।  
 दक्षिणोत्तराभ्या० ५।३।२८।  
 दण्डव्यवसर्गयोश्च ५।४।२।  
 दण्डादिभ्यो यत् ५।१।६६।  
 ददातिदधात्यो० ३।१।१३९।  
 दधस्तथोश्च ८।२।३८।  
 दधातेर्हिः ७।४।४२।  
 दध्नष्ठक् ४।२।१८।  
 दन्त उन्नत ५।२।१०६।  
 दन्तशिखात्सं० ५।२।११३।



|                            |                           |
|----------------------------|---------------------------|
| दम्भ इच्च ७।४।५६।          | दिवः कर्म च १।४।४३।       |
| दयतेर्दिगिलिटि ७।४।९।      | दिवसश्च पृथि० ६।३।३०।     |
| दयायासश्च ३।१।३७।          | दिवस्तदर्थस्य २।३।५८।     |
| दश्च ७।२।१०९।              | दिवादिभ्यः ३।१।६९।        |
| दश्च ८।२।७५।               | दिवाविभानि० ३।२।२१।       |
| दस्ति ६।३।१२४।             | दिवो झल् ६।१।१८३।         |
| दाणश्च सा चेच्च० १।३।५५।   | दिवो घावा ६।३।२९।         |
| दाण्डिनायन० ६।४।१७४।       | दिवोऽविजिगी० ८।२।४९।      |
| दादेर्धातोर्घः ८।२।३२।     | दिशो मद्राणाम् ७।३।१३।    |
| दाधर्तिर्दधर्तिं० ७।४।६५।  | दिष्टिवितस्त्यो० ६।२।३१।  |
| दाधाध्वदाप् १।१।२०।        | दीडो युडचि ६।४।६३।        |
| दाधेट्सिशदस० ३।२।११९।      | दीधीवेवीटाम् १।१।६।       |
| दानीं च ५।३।१८।            | दीपजनबुधपूरि० ३।१।६१।     |
| दामन्यादित्रि ५।३।११६।     | दीर्घ इणः किति ७।४।६९।    |
| दामहायनान्ताच्च ४।१।२७।    | दीर्घकाशतुषभ्रा० ६।२।८३।  |
| दाम्नीशसयुयुज० ३।२।१८२।    | दीर्घजिह्वी च ४।१।५९।     |
| दायाद्यं दायादे ६।२।५।     | दीर्घे च १।४।१२।          |
| दाशगोघ्नौ सं० ३।४।७३।      | दीर्घाच्च वरुणस्य ७।३।२३। |
| दाश्चान्त्साह्वा० ६।१।१२।  | दीर्घाज्जसि च ६।१।१०५।    |
| दिकशब्दा ग्राम० ६।२।१०३।   | दीर्घात् ६।१।७५।          |
| दिकशब्देभ्यः ५।३।२७।       | दीर्घादटि समान० ८।३।९।    |
| दिक्पूर्वपदादुञ्च ४।३।६।   | दीर्घादाचार्या० ८।४।५२।   |
| दिक्पूर्वपदाद० ४।२।१०७।    | दीर्घोऽकितः ७।४।८३।       |
| दिक्पूर्वपदान्डीप् ४।१।६०। | दीर्घो लघोः ७।४।९४।       |
| दिक्संख्ये संज्ञा० २।१।५०। | दुःखात्प्रातिलो० ५।४।६४।  |
| दिगादिभ्यो० ४।३।५४।        | दुन्योरनुपसर्गे ३।१।१४२।  |
| दिङ्नामान्यन्त० २।२।२६।    | दुरस्युर्द्रविण० ७।४।३६।  |
| दित्यदित्यादि० ४।१।८५।     | दुष्कुलाङ्गक् ४।१।१४२।    |
| दिव उत् ६।१।१३१।           | दुहः कब्धश्च ३।२।७०।      |
| दिव औत् ७।१।८४।            | दुहश्च ३।१।६३।            |

दूतस्य भागक० ४।४।१२०।  
 दूराद्भूते च ८।२।८४।  
 दूरान्तिकार्थेभ्यो ३।२।३५।  
 दूरान्तिकार्थैः २।३।३४।  
 दृक्स्ववस्त० ७।१।८३।  
 दृग्दृशवतुषु ६।३।८९।  
 दृढः स्थूलबल० ७।२।२०।  
 दृतिकुक्षिकल० ४।३।५६।  
 दृशोः क्वनिप् ३।२।९४।  
 दृशे विख्ये च ३।४।११।  
 दृष्टं साम २।३।४७।  
 देयमृणे ४।३।४७।  
 देये त्रा च ५।४।५५।  
 देवताद्वन्द्वे च ६।२।१४१।  
 देवताद्वन्द्वे च ६।३।२६।  
 देवताद्वन्द्वे च ७।३।२१।  
 देवतान्तात्ता० ५।४।२४।  
 देवपथादिभ्य० ५।३।१००।  
 देवब्रह्मणोरनु० १।२।३८।  
 देवमनुष्यपुरुष० ५।४।५६।  
 देवसुम्नयोर्यजुषि० ७।४।३८।  
 देवात्तल् ५।४।२७।  
 देविकार्शिषपा० ७।३।१।  
 देविक्रुशोश्चोप० ३।२।१४७।  
 देशे लुबिलचौ० ५।२।१०५।  
 दैवयज्ञिशौचि० ४।१।८१।  
 दो दद्धोः ७।४।४६।  
 दोषो णौ ६।४।९०।  
 घतिस्पतिमा० ७।४।४०।  
 घावापृथिवीशु० ४।२।३२।

द्युतिस्वाप्योः ७।४।६७।  
 द्युद्भ्यो लुङि १।३।९१।  
 द्युद्भ्यां मः ५।२।१०८।  
 द्युप्रागपागुदक्प्र० ४।२।१०१।  
 द्रवमूर्तिस्पर्शयोः ६।१।२४।  
 द्रव्यं च भव्ये ५।३।१०४।  
 द्रोणपर्वतजीव० ४।१।१०३।  
 द्रोश्च ४।३।१६१।  
 द्वन्द्वं रहस्यम० ८।१।१५।  
 द्वन्द्वमनोज्ञा० ५।१।१३३।  
 द्वन्द्वश्च प्राणितूर्य० २।४।२।  
 द्वन्द्वाच्चुदषहा० ५।४।१०६।  
 द्वन्द्वाच्छः ४।२।६।  
 द्वन्द्वाद्भुन् वैर० ४।३।१२५।  
 द्वन्द्वे धि २।२।३२।  
 द्वन्द्वे च १।१।३१।  
 द्वन्द्वोपतापगर्हा० ५।२।१२८।  
 द्वारादीनां च ७।३।४।  
 द्विगुरेकवचनम् २।४।१।  
 द्विगुश्च २।१।२३।  
 द्विगोः ४।१।२१।  
 द्विगोः ४।१।२१।  
 द्विगोष्ठंश्च ५।१।५४।  
 द्विगोर्यप् ५।१।८२।  
 द्विगोर्लुगनपत्ये ४।१।८८।  
 द्विगोर्वा ५।१।८६।  
 द्विगौ क्रतौ ६।२।९७।  
 द्विगौ प्रमाणे ६।२।१२।  
 द्वितीयतृतीयच. २।२।३।  
 द्वितीयाटौस्वेनः २।४।३४।



द्वितीया ब्राह्मणे २।३।६०।  
 द्वितीयायां च ३।४।५३।  
 द्वितीयायां च ७।२।८७।  
 द्वितीयाश्रिता० २।१।२४।  
 द्वितीये चानुपाख्ये ६।३।८०।  
 द्वित्रिचतुर्भ्यः ५।४।१८।  
 द्वित्रिपूर्वात्रि० ५।१।३०।  
 द्वित्रिभ्यां ५।४।११५।  
 द्वित्रिभ्यां तय० ५।२।४३।  
 द्वित्रिभ्यामञ्जलेः ५।४।१०२।  
 द्वित्रिभ्यां पाद् ६।२।१९७।  
 द्विन्योश्च धमुञ् ५।३।४५।  
 द्विदण्ड्यादिभ्य० ५।४।१२८।  
 द्विर्वचनेऽचि १।१।५९।  
 द्विवचनविभ० ५।३।५७।  
 द्विषत्परयोस्ता० ३।२।३९।  
 द्विषश्च ३।४।११२।  
 द्विषोऽमित्रे ३।२।१३१।  
 द्विस्तावा त्रि० ५।४।८४।  
 द्विस्त्रिश्चतुरि० ८।३।४३।  
 द्वीपादनुसमुद्रं ४।३।१०।  
 द्वेस्तीयः ५।२।५४।  
 द्वैपवैयाघ्रादञ् ४।२।१२।  
 द्व्यचः ४।१।१२१।  
 द्व्यचश्छन्दसि ४।३।१५०।  
 द्व्यचोऽतस्तिङः ६।३।१३५।  
 द्व्यजृदूब्राह्मण० ४।३।७२।  
 द्व्यञ्मगधकलि० ४।१।१७०।  
 द्व्यष्टनः संख्याया० ६।३।४७।  
 द्व्येकयोर्द्विवचनै० १।४।२२।

ध

धः कर्मणि घृन् ३।२।१८१।  
 धनगणं लब्धा ४।४।८४।  
 धनहिरण्यात्कामे ५।२।६५।  
 धनुषश्च ५।४।१३२।  
 धन्वयोपधाद्गुञ् ४।२।१२१।  
 धर्मं चरति ४।४।४१।  
 धर्मपथ्यर्थन्या० ४।४।९२।  
 धर्मशीलवर्णा० ५।२।१३२।  
 धर्मादिनिच्चेव० ५।४।१२४।  
 धातुसबन्धे प्रत्य० ३।४।१।  
 धातोः ३।१।९१।  
 धातोः ६।१।१६२।  
 धातोः कर्मणः ३।१।७।  
 धातोरेकाचो० ३।१।२२।  
 धातोस्तन्निमि० ६।१।८०।  
 धात्वादेः षः सः ६।१।६४।  
 धान्यानां भवने ५।२।१।  
 धारेरुत्तमर्णः १।४।३५।  
 धि च ८।२।२५।  
 धिन्विकृण्व्योर० ३।१।८०।  
 धुरो यङ्कौ ४।४।७७।  
 धूमादिभ्यश्च ४।२।१२७।  
 धृषिशसी वैया० ७।२।१९।  
 ध्रुवमपायेऽपा० १।४।२४।  
 ध्वमो ध्वात् ७।१।४२।  
 ध्वाङ्क्षेण क्षेपे २।१।४२।  
 न  
 नः क्ये १।४।१५।  
 न कपि ७।४।१४।

न कर्मव्यतिहारे ७।३।६।  
 न कवतेर्यङि ७।४।६३।  
 न कोपधायाः ६।३।३७।  
 न क्तिचि दीर्घश्च ६।४।३९।  
 न क्त्वा सेट् १।२।१८।  
 न क्रोडादिबह्वचः ४।१।५६।  
 न क्वादेः ७।३।५९।  
 नक्षत्राद्भ्यः ४।४।१४१।  
 नक्षत्राद्वा ८।३।१००।  
 नक्षत्रे च लुपि २।३।४५।  
 नक्षत्रेण युक्तः ४।२।३।  
 नक्षत्रेभ्यो बहु० ४।३।३७।  
 नखमुखात्संज्ञा० ४।१।५८।  
 न गतिहिंसार्थे० १।३।१५।  
 नगरात्कुत्सन० ४।२।१२८।  
 न गुणादयोऽव० ६।२।७६।  
 न गोपवनादि० २।४।६७।  
 नगोऽप्राणिष्व० ६।३।७७।  
 न गोश्वन्सा० ६।१।१८२।  
 न डिसंबुद्धयोः ८।१।२४।  
 न च वाहाहैव युक्ते ८।१।२४।  
 न च्छन्दस्य ७।४।३५।  
 नञ् २।२।६।  
 नञः शुचीश्वर० ७।३।३०।  
 नञस्तत्पुरुषात् ५।४।७१।  
 नञो गुणप्रतिषे० ६।२।१५५।  
 नञो जरमरमि० ६।२।११६।  
 नञ्दुःसुभ्यो ५।४।१२१।  
 नञ्सुभ्याम् ३।२।१७२।  
 नडशादादडव० ४।२।८८।

नडादिभ्यः फक् ४।१।१९।  
 नडादीनां कुक्च ४।२।१९१।  
 न तिसृचतसृ ६।४।४।  
 नते नासिकायाः ५।२।३१।  
 न तौल्वलिभ्यः २।४।६१।  
 न दण्डमाणवा० ४।३।१३०।  
 न दधिपयआदीनि २।४।१४।  
 नदीपौर्णमास्या० ५।४।११०।  
 नदी बन्धुनि ६।२।१०९।  
 नदीभिश्च २।१।२०।  
 न दुहस्नुनमां ३।१।८९।  
 न दृशः ३।१।४७।  
 नद्याः शेषस्या० ६।३।४४।  
 नद्यादिभ्या ठक् ४।२।९७।  
 नद्यां मतुप् ४।२।८५।  
 नद्यतश्च ५।४।१५३।  
 न द्व्यचः प्राच्यः ४।२।११३।  
 न धातुलोप आर्ध० १।१।४।  
 न ध्याख्यापृमू० ८।२।५७।  
 न नञ्पूर्वात्तत्पु० ५।१।१२१।  
 न निर्धारणे २।२।१०।  
 न निविभ्याम् ६।२।१८१।  
 ननौ पृष्टप्रति० ३।२।१२१।  
 नन्दिग्रहिपचा० ३।१।१३४।  
 नन्द्रा संयोगादयः ६।१।३।  
 नन्वित्यनुज्ञैष० ८।१।४३।  
 नन्वोर्विभाषा ३।२।१२१।  
 न पदान्तद्विव० १।१।५८।  
 न पदान्ताद्द्वोर० ८।४।४२।  
 नपरे नः ८।३।२७।  
 न पादम्याङ्य १।३।८९।



|                           |                              |
|---------------------------|------------------------------|
| नपुंसकमनपुंसके १।२।६९।    | न लुट् ८।१।२९।               |
| नपुंसकस्य झलचः ७।१।७२।    | नलुमताङ्गस्य १।१।६३।         |
| नपुंसकाच्च ७।१।१९।        | न लोकाव्यय० २।३।६९।          |
| नपुंसकादन्यत ५।४।१०९।     | नलोपः प्रातिपदि० ८।२।७।      |
| नपुंसके भावे ३।३।११४।     | नलोपः सुप्स्वर० ८।२।२।       |
| न पूजनात् ५।४।६९।         | नलोपो नञः ६।३।७३।            |
| न प्राच्यभर्गा० ४।१।१७८।  | न ल्यपि ६।४।६९।              |
| न बहुव्रीहौ १।१।२९।       | न वशः ६।१।२०।                |
| न भकुर्छुराम् ८।२।७९।     | न विभक्तौ तुस्माः १।३।४।     |
| न भाभूपूकमि० ८।४।३४।      | नवृद्ध्यश्चतुर्थ्यः ७।२।५९।  |
| न भूताधिकसं० ६।२।९१।      | न वेति विभाषा १।१।४४।        |
| न भूवाक्चि० ६।२।१९।       | न व्यो लिटि ६।१।४६।          |
| न भूसुधियोः ६।४।८५।       | न शब्दश्लोक० ३।२।२३।         |
| न भ्राणनपान्न० ६।३।७५।    | नशसददवादि० ६।४।१२६।          |
| नमः स्वस्तिस्वा० २।३।१६।  | नशोः षान्तस्य ८।४।३६।        |
| न मपूर्वोऽपत्ये० ६।४।१७०। | नशोर्वा ८।२।६३।              |
| नमस्पुरसोर्गत्योः ८।३।४०। | नश्च ८।३।३०।                 |
| न माङ्यागे ६।४।७४।        | नश्च धातुस्थो० ८।४।२७।       |
| नमिकम्पिस्य० ३।२।१६७।     | नश्चापदान्तस्य ८।३।२४।       |
| न मुने ८।२।३।             | नश्छव्यप्रशान् ८।३।७।        |
| नमोवरिवश्चित्र० ३।१।१९।   | न षट्स्वस्त्रादिभ्यः ४।१।१०। |
| न यः ३।२।१५२।             | न संयोगाद्धम० ६।४।१३७।       |
| न यदि ३।२।११३।            | न संख्यादेः ५।४।८९।          |
| न यद्यनाकाङ्क्षे ३।४।२३।  | न संज्ञायाम् ५।४।१५५।        |
| न यासयोः ७।३।४५।          | नसत्तनिषत्तानु० ८।२।६१।      |
| न व्याभ्यां पदा० ७।३।३।   | न संप्रसारणे सं० ६।१।३७।     |
| न रपरसृपिसृ० ८।३।११०।     | न सामि वचने ५।४।५।           |
| न रुधः ३।१।६४।            | न सुदुर्भ्यो केव० ७।१।६८।    |
| नरे संज्ञायाम् ६।३।१२९।   | न सुब्रह्मण्यायां १।२।३७।    |
| न लिङि ७।२।३९।            | नस्तद्धिते ६।४।१४४।          |

|                            |                           |
|----------------------------|---------------------------|
| नह प्रत्यारम्भे ८।१।३१।    | निकटे वसति ४।४।।७३।       |
| न हास्तिनफ० ६।२।१०१।       | नगरणचलना० १।३।८७।         |
| नहिवृतिवृषि० ६।३।११६।      | निगृह्यानुयोगे च ८।२।९४।  |
| नहो धः ८।२।३४।             | निघो निमित्तम् ३।३।८७।    |
| नाग्लोपिशास्वृ० ७।४।२।     | नित्यं करोतेः ६।४।१०८।    |
| नाचार्यराजर्त्वि० ६।२।१३३। | नित्यं कौटिल्ये ३।१।२३।   |
| नाञ्जलौ १।१।१०।            | नित्यं क्रीडाजी० २।२।१७।  |
| नाञ्चेः पूजायाम् ६।४।३०।   | नित्यं डितः ३।४।९९।       |
| नाडीतन्त्र्योः ५।४।१५९।    | नित्यं छन्दसि ४।१।४६।     |
| नाडीमुष्ट्योश्च ३।२।३०।    | नित्यं छन्दसि ७।४।८।      |
| नातः परस्य ७।३।२७।         | नित्यं पणः परि० ३।३।६६।   |
| नादिचि ६।१।१०४।            | नित्यं मन्त्रे ६।१।२१०।   |
| नादिन्याक्रोशे ८।४।४८।     | नित्यं वृद्धशरा० ४।३।१४४। |
| नाद्धस्य ८।२।१७।           | नित्यं शतादिमा० ५।२।५७।   |
| नाधार्थप्रत्यये ३।४।६२।    | नित्यं संज्ञाछन्द ४।१।२९। |
| नानद्यतनवत् ३।३।१३५।       | नित्यं सपत्न्या० ४।१।३५।  |
| नानोर्ज्ञः १।३।५८।         | नित्यं समासे० ८।३।४५।     |
| नान्तादसंख्या० ५।२।४९।     | नित्यं स्मयतेः ६।१।५७।    |
| नाभ्यस्तस्याचि० ७।३।८७।    | नित्यं हस्ते पा० १।४।७७।  |
| नाभ्यस्ताच्छतुः ७।१।७८।    | नित्यमसिच्च० ५।४।१२२।     |
| नामन्त्रिते समा० ८।१।७३।   | नित्यवीप्सयोः ८।१।४।      |
| नामन्यतरस्याम् ६।१।१७७।    | निनदीभ्यां ८।३।८९।        |
| नामि ६।४।३।                | निन्दहिंसक्लि० ३।२।१४६।   |
| नाम्यादिशि० ३।४।५८।        | निपात एकाजनाङ् १।१।१४।    |
| नाप्रेडितस्या० ६।१।९९।     | निपातस्य च ६।३।१३६।       |
| नावो द्विगोः ५।४।९९।       | निपातैर्यद्यदिह० ८।१।३०।  |
| नाव्ययदिक्० ६।२।१६८।       | निपानमाहावः ३।३।७४।       |
| नाव्ययीभावाद् २।४।८३।      | निमूलसमूलयोः ३।४।३४।      |
| नासिकास्त० ३।२।२९।         | निरः कुषः ७।२।४६।         |
| नासिकोदरौ० ४।१।५५।         | निरभ्योः पूत्वोः ३।३।२८।  |



|                             |                            |
|-----------------------------|----------------------------|
| निरुदकादीनि ६।२।१८४।        | नेड्वशि कृति ७।२।८।        |
| निर्वाणोऽवाते ८।२।५०।       | नेतराच्छन्दसि ७।१।२६।      |
| निर्वृत्तेऽक्षधूता० ४।४।१९। | नेदमदसोरकोः ७।१।११।        |
| निवाते वातत्राणे ६।२।८।     | नेन्द्रस्य परस्य ७।३।२२।   |
| निवासचितिशरी० ३।३।४१।       | नेन्सिद्धबध्नाति० ६।३।१९।  |
| निव्यभिभ्यो० ८।३।११९।       | नेयडुवड्स्थाना० १।४।४।     |
| निशाप्रदोषाभ्यां ४।३।१४।    | नेरनिधाने ६।२।१९२।         |
| निष्कुलान्निष्को० ५।४।६२।   | नेर्गदनदपतपद० ८।४।१७।      |
| निष्ठा २।२।३६।              | नेर्बिडज्जिरीस० ५।२।३२।    |
| निष्ठा ३।२।१०२।             | नेर्विशः १।३।१७।           |
| निष्ठा च द्वयज० ६।१।२०५।    | नोड् धात्वोः ६।१।१७५।      |
| निष्ठायां सेटि ६।४।५२।      | नोत्तरपदेऽनु० ६।२।१४२।     |
| निष्ठायामण्यदर्थे ६।४।६०।   | नोत्वद्वर्ध्निबि० ४।३।१५१। |
| निष्ठा शीङ्स्वि० १।२।२९।    | नोदात्तस्वरितो० ८।४।६७।    |
| निष्ठोपमानाद० ६।२।१६९।      | नोदात्तोपदेश० ७।३।३४।      |
| निष्ठोपसर्गपूर्व० ६।२।११०।  | नोनयतिध्वनय० ३।१।५१।       |
| निष्प्रवाणिश्च ५।४।१६०।     | नोपधात्थाफा० १।२।२३।       |
| निसमुपविभ्यो० १।३।३०।       | नोपधायाः ६।४।७।            |
| निसस्तपताव० ८।३।१०२।        | नौ गदनदपठस्वनः ३।३।६४।     |
| नीगबञ्चुमंसुः ७।४।८४।       | नौ ण च ३।३।६०।             |
| नीचैरनुदात्तः १।२।३०।       | नौद्वयचष्ठन् ४।४।७।        |
| नीतौ च तद्युक्तात् ५।३।७७।  | नौवयोधर्मविष० ४।४।९१।      |
| नुगतोऽननासि० ७।४।८५।        | नौ वृ धान्ये ३।३।४८।       |
| नुदविदोन्द्रा० ८।२।५६।      | न्यग्रोधस्य च ७।३।५।       |
| नुम्विसर्जनीय० ८।३।५८।      | न्यङ्क्वादीनां च ७।३।५३।   |
| नृ च ६।४।६।                 | न्यधी च ६।२।५३।            |
| नृ चान्यतर० ६।१।१८४।        | प                          |
| नृत्ये ८।३।१०।              | पक्षात्तिः ५।२।२५।         |
| नेटि ७।२।४।                 | पक्षिमत्स्यमृगा० ४।४।३५।   |
| नेट्यलिटि रथेः ७।१।६२।      | पङ्क्तिर्विंशति० ५।१।५९।   |

पङ्गोश्च ४।१।६८।  
 पचो वः ८।२।५२।  
 पञ्चदशतौ वर्गे ५।१।६०।  
 पञ्चमी भयेन २।१।३७।  
 पञ्चमी विभक्ते २।३।४२।  
 पञ्चम्यपाङ्परिभिः २।३।१०।  
 पञ्चम्याः अत् ७।१।३१।  
 पञ्चम्याः पराव० ८।३।५१।  
 पञ्चम्याः स्तोका० ६।३।२।  
 पञ्चम्यामजातौ ३।२।९८।  
 पञ्चम्यास्तसिल् ५।३।७।  
 पणपादमाषशता० ५।१।३४।  
 पतः पुम् ७।४।१९।  
 पतिः समास एव १।४।८।  
 पत्यन्तपुरोहि० ५।१।१२८।  
 पत्यावैश्वर्ये ६।२।१८।  
 पत्युर्नो यज्ञसं० ४।१।३३।  
 पत्रपूर्वादञ् ४।३।१२२।  
 पत्राध्वर्युपरि० ४।३।२९।  
 पथः ष्कन् ५।१।७५।  
 पथि च छन्दसि ६।३।१०८।  
 पथिमथोः सर्व० ६।१।१९९।  
 पथिमथ्यभुक्षा० ७।१।८५।  
 पथो विभाषा ५।४।७२।  
 पथ्यतिथिवस० ४।४।१०४।  
 पदमस्मिन्दृश्यम् ४।४।८७।  
 पदरुजविशस्पृ० ३।३।१६।  
 पदव्यवायेऽपि ८।४।३८।  
 पदस्य ८।१।१६।  
 पदात् ८।१।१७।

पदान्तस्य ८।४।३७।  
 पदान्तस्यान्यतर० ७।३।९।  
 पदान्ताद्वा ६।१।७६।  
 पदास्वैरिबा० ३।१।११९।  
 पदेऽपदेशे ६।२।७।  
 पदोत्तरपदं गृह्णाति ४।४।३९।  
 पदत्रोमासह० ६।१।६३।  
 पद्यत्यतदर्थे ६।३।५३।  
 पन्थो ण नित्यम् ५।१।७६।  
 परः सन्निकर्षः १।४।१०९।  
 परवल्लिङ्गं द्वन्द्व० २।४।२६।  
 परश्च ३।१।२।  
 परश्चधाठुञ्च ४।४।५८।  
 परस्मिन्विभाषा ३।३।१३८।  
 परस्मैपदानां ३।४।८२।  
 परस्य च ६।३।८।  
 पराजेरसोढः १।४।२६।  
 परादिश्छन्दसि ६।२।१९९।  
 परावनुपात्यय ३।३।३८।  
 परावरयोगे च ३।४।२०।  
 परावराधमोत्तम० ४।३।५।  
 परिक्रयणे संप्र० १।४।४४।  
 परिक्लिश्यमाने ३।४।५५।  
 परिरवाया ढञ् ५।१।१७।  
 परनिविभ्यः ८।३।७०।  
 परिन्योर्नोणोर्घू० ३।३।३७।  
 परिपन्थं च तिष्ठति ४।४।३६।  
 परिप्रत्युपापा० ६।२।३३।  
 परिमाणाख्यायां ३।३।२०।  
 परिमाणान्तस्या० ७।३।१७।



|                             |                             |
|-----------------------------|-----------------------------|
| परिमाणे पचः ३।२।३३।         | पान्नाध्मास्था० ७।३।७८।     |
| परिमुखं च ४।४।२९।           | पाणिघताडघौ ३।२।५५।          |
| परिवृतो रथः ४।२।१०।         | पाण्डुकम्बला० ४।२।११।       |
| परिव्यवेभ्यः क्रियः १।३।१८। | पातौ च बहुलम् ८।३।५२।       |
| परिषदो ण्यः ४।४।४४।         | पात्रात्ष्ठन् ५।१।४६।       |
| परिषदो ण्यः ४।४।१०१।        | पात्राद् घंश्च ५।१।६८।      |
| परिष्कन्दः प्राचा० ८।३।७५।  | पात्रेसमितादयश्च २।१।४८।    |
| परेरभितो भावि० ६।२।१८२।     | पाथोनदीभ्यां ४।४।१११।       |
| परेर्मृषः १।३।८२।           | पादः पत् ६।४।१३०।           |
| परेर्वर्जने ८।१।५।          | पादशतस्य ५।४।१।             |
| परेश्च ८।३।७४।              | पादस्य पदाज्या० ६।३।५२।     |
| परेश्च घाङ्कयोः ८।२।२२।     | पादस्य लोपो० ५।४।१३८।       |
| परोक्षे लिट् ३।२।११५।       | पादार्धाभ्यां च ५।४।२५।     |
| परोवरपरंपर० ५।२।१०।         | पादोऽन्यतर० ४।१।८।          |
| परौ घः ३।३।८४।              | पानं देशे ८।४।९।            |
| परौ भुवोऽवज्ञाने ३।३।५५।    | पापं च शिल्पिनि ६।२।६८।     |
| परौ यज्ञे ३।३।४७।           | पापाणके कुत्सितैः २।१।५४।   |
| पर्यादिभ्यः छन् ४।४।१०।     | पाय्यसांनाय्य० ३।१।१२९।     |
| पर्याभिभ्यां च ५।३।९।       | पारस्करप्रभृ० ६।१।१५७।      |
| पर्याप्तिवचनेष्व० ३।४।६६।   | पारायणतुराय० ५।१।७२।        |
| पर्यायार्हणोत्प० ३।३।१११।   | पाराशर्यशि० ४।३।११०।        |
| पर्वताच्च ४।२।१४३।          | पारेमध्ये षष्ठ्या० २।१।१८।  |
| पश्चादियौधेया० ५।३।११७।     | पार्श्वेनान्विच्छति ५।२।७५। |
| पललसूपशाकं ६।२।१२८।         | पाशादिभ्यो यः ४।२।४९।       |
| पलाशादिभ्यो ४।३।१४१।        | पितरामातरा च ६।३।३३।        |
| पञ्चपश्चा च ५।३।३३।         | पिता मात्रा १।२।७०।         |
| पश्चात् ५।३।३२।             | पितुर्यच्च ४।३।७९।          |
| पश्यार्थैश्चाना० ८।१।२५।    | पितृव्यमातुल० ४।२।३६।       |
| पाककर्णपर्णपुष्प० ४।१।६४।   | पितृष्वसुश्छण् ४।१।१३२।     |
| पान्नाध्माधेट्० ३।१।१३७।    | पिष्टाच्च ४।३।१४६।          |

|                            |                            |
|----------------------------|----------------------------|
| पीलाया वा ४।१।११८।         | पूतनात्पूजित० ८।१।६७।      |
| पुंयोगादाख्यायाम् ४।१।४८।  | पूजायां नान० ८।१।३७।       |
| पुंवत्कर्मधारय० ६।३।४२।    | पूतक्रतोरै च ४।१।३६।       |
| पुंसि संज्ञायां ३।३।११८।   | पूरणगुणसुहि० २।२।११।       |
| पुंसोऽसुङ् ७।१।८९।         | पूरणाद्भागे ५।३।४८।        |
| पुगन्तलघपधस्य ७।३।८६।      | पूरणार्धाठुन् ५।१।४८।      |
| पुच्छभाण्डचीव० ३।१।२०।     | पूर्णाद्विभाषा ५।४।१४९।    |
| पुत्रः पुम्भ्यः ६।२।१३२।   | पूर्वं तु भाषायाम् ८।२।९८। |
| पुत्राच्छ च ५।१।४०।        | पूर्वकालैकसर्व० २।१।४९।    |
| पुत्रान्तादन्य ४।१।१५९।    | पूर्वत्रासिद्धम् ८।२।१।    |
| पुत्रेऽन्यतरस्याम् ६।३।२२। | पूर्वपदात् ८।३।१०६।        |
| पुमः खय्यम्परे ८।३।६।      | पूर्वपदात्संज्ञाया० ८।४।३। |
| पुमान्स्त्रिया १।२।६७।     | पूर्वपरावरदक्षि० १।१।३४।   |
| पुरा च परीप्सा० ८।१।४२।    | पूर्ववत्सनः १।३।६२।        |
| पुराणप्रोक्तेषु ४।३।१०५।   | पूर्ववदश्ववडवौ २।४।२७।     |
| पुरि लुङ् चास्मे ३।२।१२२।  | पूर्वसदृशसमो० २।१।३१।      |
| पुरुषात्प्रमाणे० ४।१।२४।   | पूर्वादिनिः ५।२।८६।        |
| पुरे प्राचाम् ६।२।९९।      | पूर्वादिभ्यो नव० ७।१।१६।   |
| पुरोऽग्रतोऽग्रेषु ३।२।१८।  | पूर्वाधरावराणा० ५।३।३९।    |
| पुरोऽव्ययम् १।४।६७।        | पूर्वापरप्रथमचरम० २।१।५८।  |
| पुवः संज्ञायाम् ३।२।१८५।   | पूर्वापराधरोत्तर० २।२।१।   |
| पुषादिद्युता० ३।१।५५।      | पूर्वाहणापराहणा० ४।३।२८।   |
| पुष्करादिभ्यो ५।२।१३५।     | पूर्वे कर्तरि ३।२।१९।      |
| पुष्यसिद्धयौ ३।१।११६।      | पूर्वे भूतपूर्वे ६।२।२२।   |
| पूःसर्वयोर्दरि० ३।२।४१।    | पूर्वैः कृतमिनयौ ४।४।१३३।  |
| पूगाञ्च्योऽग्रा० ५।३।११२।  | पूर्वोऽभ्यासः ६।१।४।       |
| पूगेष्वन्यतर० ६।२।२८।      | पृथग्विनाना० २।२।३२।       |
| पूडः क्त्वा च १।२।२२।      | पृथ्वादिभ्य० ५।१।१२२।      |
| पूडश्च ७।२।५१।             | पृषोदरादीनि ६।३।१०९।       |
| पूड्यजोः शानन् ३।२।१२८।    | पेषंवासवाहन० ६।३।५८।       |



|                              |                               |
|------------------------------|-------------------------------|
| पैलादिभ्यश्च २।४।५९।         | प्रतिस्तब्धनिस्त० ८।३।११४।    |
| पोटायुवतिस्तो० २।१।६५।       | प्रतेरंश्चादयस्त० ६।२।१९३।    |
| पोरदुपधात् ३।१।९८।           | प्रतेरुरसः सप्तमी० ५।४।८२।    |
| पौरोडाशपुरो० ४।३।७०।         | प्रतेश्च ६।१।२५।              |
| प्यायः पी ६।१।२८।            | प्रत्नपूर्वविश्वे० ५।३।१११।   |
| प्रकारवचने जाती० ५।३।६९।     | प्रत्यपिभ्यां ग्रहेः ३।१।११८। |
| प्रकारवचने थाल् ५।३।२३।      | प्रत्यभिवादे० ८।२।८३।         |
| प्रकारे गुणवचनस्य ८।१।१२।    | प्रत्ययः ३।१।१।               |
| प्रकाशनस्थेया० १।३।२३।       | प्रत्ययलोपे प्रत्य० १।१।६२।   |
| प्रकृत्यान्तः० ६।१।११५।      | प्रत्ययस्थात्का० ७।३।४४।      |
| प्रकृत्या भगा० ६।२।१३७।      | प्रत्ययस्य लुक् १।१।६१।       |
| प्रकृत्याशिषि ६।३।८३।        | प्रत्ययोत्तरपद० ७।२।९८।       |
| प्रकृत्यैकाच् ६।३।१६३।       | प्रत्याङ्भ्यां १।३।५९।        |
| प्रकृष्टे ठञ् ५।१।१०८।       | प्रत्याङ्भ्यां १।४।४०।        |
| प्रजने वीयतेः ६।१।५५।        | प्रथने वावशब्दे ३।३।३३।       |
| प्रजने सतेः ३।३।७१।          | प्रथमचरम० १।१।३३।             |
| प्रजोरिनिः ३।२।१५६।          | प्रथमयोः पूर्व० ६।१।१०२।      |
| प्रज्ञादिभ्यश्च ५।४।३८।      | प्रथमानिर्दिष्टं १।२।४३।      |
| प्रज्ञाश्रद्धार्चा० ५।२।१०१। | प्रथमायाश्च ७।२।८८।           |
| प्रणवष्टेः ८।२।८९।           | प्रथमोऽचिरोप० ६।२।५६।         |
| प्रणाय्यो ३।१।१२८।           | प्रधानप्रत्ययार्थ० १।२।५६।    |
| प्रतिः प्रतिनि० १।४।९२।      | प्रतिरन्तःशरेक्षु० ८।४।५।     |
| प्रतिकण्ठार्थल० ४।४।४०।      | प्रभवति ४।३।८३।               |
| प्रतिजनादिभ्यः ४।४।९९।       | प्रभौ परिवृढः ७।२।२१।         |
| प्रतिनिधिप्रति० २।३।११।      | प्रमदसंमदौ ३।३।६८।            |
| प्रतिपथमेति ४।४।४२।          | प्रमाणे च ३।४।५१।             |
| प्रतिवन्धि चिर० ६।२।६।       | प्रमाणे द्वयस० ५।२।३७।        |
| प्रतियोगे पञ्चम्याः ५।४।४४।  | प्रयच्छति गर्हाम् ४।४।३०।     |
| प्रतिश्रवणे च ८।२।९९।        | प्रयाजानुयाजौ ७।३।६२।         |
| प्रतिष्कशश्च ६।१।१५२।        | प्रयै रोहिष्यै ३।४।१०।        |

प्रयोजनम् ५।१।१०९।  
 प्रयोज्यनियो० ७।३।६८।  
 प्रवाहणस्य ढे ७।३।२८।  
 प्रवृद्धादीनां च ६।२।१४७।  
 प्रशंसायां रूपम् ५।३।६६।  
 प्रशंसावचनैश्च २।१।६६।  
 प्रशस्यस्य श्रः ५।३।६०।  
 प्रश्ने चासन्न० ३।२।११७।  
 प्रष्टोऽग्रगामिनि ८।३।९२।  
 प्रसमुपोदः पाद० ८।१।६।  
 प्रसंभ्यां जानु० ५।४।१२९।  
 प्रसितोत्सुकाभ्यां २।३।४४।  
 प्रस्कण्वहरि० ६।१।१५३।  
 प्रस्त्योऽन्यतर० ८।२।५४।  
 प्रस्थपुरवहा० ४।२।१२२।  
 प्रस्थेऽवृद्धमक० ६।२।८७।  
 प्रस्थोत्तरपद० ४।२।११०।  
 प्रहरणम् ४।४।५७।  
 प्रहासे च मन्यो० १।४।१०६।  
 प्राक्कडारात् २।१।३।  
 प्राक्क्रीताच्छः ५।१।१।  
 प्राक्खितादङ् ८।३।६३।  
 प्रागिवात्कः ५।३।७०।  
 प्रागेकादशभ्यो० ५।३।४९।  
 प्राग्विताद्यत् ४।४।७५।  
 प्राग्विदशो विभक्तिः ५।३।११।  
 प्राग्विदशोऽण् ४।१।८३।  
 प्रागीश्वरान्निपाताः १।४।५६।  
 प्राग्वतेष्ठञ् ५।१।१८।  
 प्राग्वहतेष्ठक् ४।४।१।

प्राचां कटादेः ४।२।१३९।  
 प्राचां क्रीडायाम् ६।२।७४।  
 प्राचां ग्रामनगरा० ७।३।१४।  
 प्राचां नगरान्ते ७।३।२४।  
 प्राचां ष्फतद्धितः ४।१।१७।  
 प्राचामवृद्धा० ४।१।१६०।  
 प्राचामुपादेरङ् ५।३।८०।  
 प्राणभृज्जाति० ५।१।१२९।  
 प्राणिरजतादि० ४।३।१५४।  
 प्राणिस्थादातो ५।२।९६।  
 प्रातिपदिकान्त० ८।४।११।  
 प्रातिपदिकार्थ० २।३।४६।  
 प्रादयः १।४।५८।  
 प्रादस्वाङ् संज्ञा० ६।२।१८३।  
 प्राद्वहः १।३।८१।  
 प्राध्वं बन्धने १।४।७८।  
 प्राप्तापन्ने च द्विती० २।२।४।  
 प्रायभवः ४।३।३९।  
 प्रावृट्शरत्काला० ६।३।१५।  
 प्रावृष एण्यः ४।३।१७।  
 प्रावृष्टप् ४।३।२६।  
 प्रियवशे वदः ३।२।३८।  
 प्रियस्थिरस्फि० ६।४।१५७।  
 प्रीतौ च ६।२।१६।  
 प्रसृत्वः सम० ३।१।१४९।  
 प्रे दाज्ञः ३।२।६।  
 प्रे द्रुस्तुस्रवः ३।३।२७।  
 प्रे वणिजाम् ३।३।५२।  
 प्रे लपसृद्रुमथ० ३।२।१४५।  
 प्रे लिप्सायाम् ३।३।४६।



प्रेष्यब्रुवोर्हविषो २।३।६१।  
 प्रे खोऽयज्ञे ३।३।३२।  
 प्रैषातिसर्गप्राप्तं ३।३।१६३।  
 प्रोक्ताल्लुक् ४।२।६४।  
 प्रोपाभ्यां यूजे० १।३।६४।  
 प्रोपाभ्यां समर्था० १।३।४२।  
 प्लक्षादिभ्योऽण् ४।३।१६४।  
 प्लुतप्रगृह्या० ६।१।१२५।  
 प्लुतावैच इदुतौ ८।२।१०६।  
 प्वादीनां ह्रस्वः ७।३।८०।

**फ**

फक्फिजोरन्य० ४।१।९१।  
 फणां च सप्ता० ६।४।१२५।  
 फलेग्रहिरात्मं ३।२।२६।  
 फले लुक् ४।३।१६३।  
 फल्गुनीप्रोष्ठ० १।२।६०।  
 फाण्टांहतिमि० ४।१।१५०।  
 फेनादिलच्च ५।२।९९।  
 फेश्छ च ४।१।१४९।

**ब**

बन्धने चषौ ४।४।९६।  
 बन्धुनि बहुव्रीहौ ६।१।१४।  
 बन्धे च विभाषा ६।३।१३।  
 बभूव्याततन्व्य० ७।२।६४।  
 बर्हिषि दत्तम् ४।४।११९।  
 बलादिभ्यो० ५।२।१३६।  
 बहुगणवतुडति १।१।२३।  
 बहुपूगण० ५।२।५२।  
 बहुप्रजाश्छ० ५।४।१२३।  
 बहुलं छन्दसि २।४।३९।

बहुलं छन्दसि २।४।७३।  
 बहुलं छन्दसि २।४।७६।  
 बहुलं छन्दसि ३।२।८८।  
 बहुलं छन्दसि ५।२।१२२।  
 बहुलं छन्दसि ६।१।३४।  
 बहुलं छन्दसि ७।१।८।  
 बहुलं छन्दसि ७।१।१०।  
 बहुलं छन्दसि ७।१।१०३।  
 बहुलं छन्दसि ७।३।९७।  
 बहुलं छन्दसि ७।४।७८।  
 बहुलं छन्दस्य० ६।४।७५।  
 बहुलमाभीक्ष्ये ३।२।८१।  
 बहुवचनस्य ८।१।२१।  
 बहुवचने झल्येत् ७।३।१०३।  
 बहुव्रीहाविद० ६।२।१६२।  
 बहुव्रीहेश्वान्तो० ४।१।५२।  
 बहुव्रीहौ प्रकृत्या ६।२।१।  
 बहुव्रीहौ विश्वं ६।२।१०६।  
 बहुव्रीहौ सक्थ्य० ५।४।११३।  
 बहुव्रीहौ संख्ये० ५।४।७३।  
 बहुषु बहुवचनम् १।४।२१।  
 बहोर्नञ्वदुत्तर० ६।२।१७५।  
 बहोर्लोपो भू च० ६।४।१५८।  
 बह्वच इजः २।४।६६।  
 बह्वचः कूपेषु ४।२।७३।  
 बह्वचोऽन्तो० ४।३।६७।  
 बह्वचो मनुष्य० ५।३।७८।  
 बह्वचपूर्वपदा० ४।४।६४।  
 बह्वन्यतरस्याम् ६।२।३०।  
 बह्वल्पार्थाच्छ० ५।४।४२।

|                             |                              |
|-----------------------------|------------------------------|
| बह्वादिभ्यश्च ४।१।४५।       | भय्यप्रवय्ये च ६।१।८३।       |
| बाष्पोष्मभ्या० ३।१।१६।      | भर्गात्त्रैगर्ते ४।१।१११।    |
| बाह्वन्तात्संज्ञा० ४।१।६७।  | भवतष्ठक्छसौ ४।२।११५।         |
| बाह्वादिभ्यश्च ४।१।९६।      | भवतेरः ७।४।७३।               |
| बिभेतेहेतुभये ६।१।५६।       | भाविष्यति गम्यादयः ३।३।३।    |
| बिल्वकादिभ्य० ६।४।१५३।      | भाविष्यति मर्यादां ३।३।१३६।  |
| बिल्वादिभ्यो० ४।३।१३६।      | भवे छन्दसि ४।४।११०।          |
| बिस्ताच्च ५।१।३१।           | भव्यगेयप्रवचनी० ३।४।६८।      |
| बृहत्या आच्छा० ५।४।६।       | भस्त्रादिभ्यः छन् ४।४।१६।    |
| बुधयुधनशज० १।३।८६।          | भस्त्रैषाजाज्ञा० ७।३।४७।     |
| ब्रह्मणस्त्वः ५।१।१३६।      | भस्य ६।४।१२९।                |
| ब्रह्मणो जान० ५।४।१०४।      | भस्य टेलोपः ७।१।८८।          |
| ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु ३।२।८७। | भागाद्यच्च ५।१।४९।           |
| ब्रह्महस्तिभ्यां ५।४।७८।    | भावकर्मणोः १।३।१३।           |
| ब्राह्मणकोष्णिके ५।२।७१।    | भावलक्षणे ३।४।१६।            |
| ब्राह्मणमाणव० ४।२।४२।       | भाववचनाच्च ३।३।११।           |
| ब्राह्मोऽजातौ ६।४।१७१।      | भावे ३।३।१८।                 |
| ब्रुव ईट् ७।३।९३।           | भावे च ४।४।१४४।              |
| ब्रुवः पञ्चाना० ३।४।८४।     | भावेऽनुपसर्गस्य ३।३।७५।      |
| ब्रुवो वचिः २।४।५३।         | भाषायां सदव० ३।२।१०८।        |
| ब्रूहिप्रेष्यश्रौष० ८।२।९१। | भासनोपसंभा० १।३।४७।          |
| <b>भ</b>                    | भिक्षादिभ्योऽण् ४।२।३८।      |
| भक्ताख्यास्त० ६।२।७१।       | भिक्षासेनादायेषु ३।२।१७।     |
| भक्ताण्णः ४।४।१००।          | भित्तं शकलम् ८।२।५९।         |
| भक्तादन्य० ४।४।६८।          | भिद्योद्भ्यौ नदे ३।१।११५।    |
| भक्तिः ४।३।९५।              | भियः कुक्कुलुकनौ ३।२।१७४।    |
| भक्ष्येण मिश्री० २।१।३५।    | भियोऽन्यतर० ६।४।११५।         |
| भजो ण्विः ३।२।६२।           | भियो हेतुभये ७।३।४०।         |
| भञ्जभासमिदो ३।२।१६१।        | भीत्रार्थानां भयहेतु १।४।२५। |
| भञ्जेश्च चिणि ६।४।३३।       | भीमादयोऽपा० ३।४।७४।          |



भीरोः स्थानम् ८।३।८१।  
 भीस्म्योर्हेतुभये १।३।६८।  
 भीहीभृहुमदं ६।१।१९२।  
 भीहीभृहुवां ३।१।३९।  
 भुजन्युब्जौ ७।३।६१।  
 भुजोऽनवने १।३।६६।  
 भुवः प्रभवः १।४।३१।  
 भुव संज्ञान्तः ३।२।१७९।  
 भुवश्च ३।२।१३८।  
 भुवश्च ४।१।४७।  
 भुवश्च महा० ८।२।७१।  
 भुवो भावे ३।१।१०७।  
 भुवो वुग्लुङ् ६।४।८८।  
 भूतपूर्वे चरट् ५।३।५३।  
 भूते ३।२।८४।  
 भूते च ३।३।१४०।  
 भूतेऽपि दृश्यन्ते ३।३।२।  
 भूवादयो धातवः १।३।१।  
 भूषणेऽलम् १।४।६४।  
 भूसुवोस्तिङि ७।३।८८।  
 भृजामित् ७।४।७६।  
 भृजोऽसंज्ञायाम् ३।१।११२।  
 भृशादिभ्यो ३।१।१२।  
 भोज्यं भक्ष्ये ७।३।६९।  
 भोभृगोअघो० ८।३।१७।  
 भौरिक्याद्यैषु० ४।२।५४।  
 भ्यसो भ्यम् ७।१।३०।  
 भ्रस्जो रोपध० ६।४।४७।  
 भ्राजभासधु० ३।२।१७७।  
 भ्राजभासभाष० ७।४।३।  
 भ्रातरि च ४।१।१६४।

भ्रातुर्यच्च ४।१।१४४।  
 भ्रातृपुत्रौ स्वसृ० १।२।६८।  
 भ्रुवो वुक्च ४।१।१२५।  
 म  
 मघवा बहुलम् ६।४।१२८।  
 मङ्कुङ्गर्शराद० ४।४।५६।  
 मतजनहलात् ४।४।९७।  
 मतिबुद्धिपूजा० ३।२।१८८।  
 मतुवसो रु संबुद्धौ ८।३।१।  
 मतोः पूर्व० ६।१।२१९।  
 मतोश्च बह्वजङ्गात् ४।२।७२।  
 मतौ च ४।४।१३६।  
 मतौ छः सूक्त ५।२।५९।  
 मतौ बह्वचो० ६।३।११९।  
 मत्वर्थे मास० ४।४।१२८।  
 मदोऽनुपसर्गे ३।३।६७।  
 मद्रवृज्योः कन् ४।२।१३१।  
 मद्रात्परिवापणे ५।४।६७।  
 मद्रेभ्योऽञ् ४।२।१०८।  
 मधुबभ्रवोर्ब्राह्म० ४।१।१०६।  
 मधोः ४।४।१३९।  
 मधोर्ज च ४।४।१२९।  
 मध्याद् गुरौ ६।३।११।  
 मध्यान्मः ४।३।८।  
 मध्ये पदे निवचने १।४।७६।  
 मध्वादिभ्यश्च ४।२।८६।  
 मनः ३।२।८२।  
 मनः ४।१।११।  
 मनसः संज्ञायाम् ६।३।४।  
 मनुष्यतत्स्थ० ४।२।१३४।

|                             |                            |
|-----------------------------|----------------------------|
| मनोरौ वा ४।१।३८।            | मातृष्वसुश्च ४।१।१३४।      |
| मनोर्जाताव० ४।१।१६१।        | मात्रोपज्ञोपक्रम० ६।२।१४।  |
| मन्कितन्व्याख्या० ६।२।१५१।  | माथोत्तरपद० ४।४।३७।        |
| मन्त्रे घसह्वर० २।४।८०।     | मादुपधायाश्च ८।२।९।        |
| मन्त्रे वृषेषपच० ३।३।९६।    | मानपञ्चङ्गयोः ५।३।५१।      |
| मन्त्रे श्वेतवहो० ३।२।७१।   | माने वयः ४।३।१६२।          |
| मन्त्रेष्वाड्यादे० ६।४।१४१। | मान्बधदानशान० ३।१।६।       |
| मन्त्रे सोमा० ६।३।१३१।      | मायायामण् ४।४।१२४।         |
| मन्थौदनसक्तु० ६।३।६०।       | मालादीनां च ६।२।८८।        |
| मन्यकर्मण्यना० २।३।१७।      | मासाद्वयसि ५।१।८१।         |
| मपर्यन्तस्य ७।२।९१।         | मितनखे च ३।२।३४।           |
| मय उजो वो वा ८।३।३३।        | मितां ह्रस्वः ६।४।९२।      |
| मयट् च ४।३।८२।              | मित्रे चषौ ६।३।१३०।        |
| मयड्वैतयो० ४।३।१४३।         | मिथ्योपपदा० १।३।७१।        |
| मयतेरिदन्य० ६।४।७०।         | मिदचोऽन्त्या० १।१।४७।      |
| मयूरव्यंसकाद० २।१।७२।       | मिदेर्गुणः ७।३।८२।         |
| मये च ४।४।१३८।              | मिश्रं चानुपसर्ग० ६।२।१५४। |
| मस्करमस्क० ६।१।१५४।         | मीनातिमिनो० ६।१।५०।        |
| मस्जिनशोर्झिलि ७।१।६०।      | मीनातेर्निगमे ७।३।८१।      |
| महाकुलाद० ४।१।१४१।          | मुखं स्वाङ्गम् ६।२।१६७।    |
| महान्त्रीह्यप० ६।२।३८।      | मुखनासिकावच० १।१।८।        |
| महाराजप्रोष्ठ० ४।२।३५।      | मुचोऽकर्मकस्य ७।४।५७।      |
| महाराजाद्वज् ४।३।९७।        | मुण्डमिश्रश्ल० ४।४।२५।     |
| महेन्द्रादघाणौ च ४।२।२।     | मूर्तौ घनः ३।३।७७।         |
| माडि लुङ् ३।३।१७५।          | मूलमस्याबर्हि ४।४।८८।      |
| माणवचरकाभ्यां ५।१।११।       | मृजेर्विभाषा ३।१।११३।      |
| मातरपितरा० ६।३।३२।          | मृजेर्वृद्धिः ७।२।११४।     |
| मातुःपितुर्भ्याम० ८।३।८५।   | मृडमृदगुध० १।२।७।          |
| मातुरुत्संख्या० ४।१।११५।    | मृदस्तिकन् ५।४।३९।         |
| मातृपितृभ्यां ८।३।८४।       |                            |



मृषस्ति० १।२।२०।  
 मेघर्तिभयेषु कृजः ३।२।४३।  
 मेर्निः ३।४।८९।  
 मोऽनुस्वारः ८।३।२३।  
 मो नो धातोः ८।२।६४।  
 मो राजि समः ० ८।३।२५।  
 म्रियतेर्लुङ्लि० १।३।६१।  
 म्वोश्च ८।२।६५।  
 य  
 यः सौ ७।२।११०।  
 यङ्श्चाप् ४।१।७४।  
 यङि च ७।४।३०।  
 यङोऽचि च २।४।७४।  
 यङो वा ७।३।९४।  
 यचि भम् १।४।१८।  
 यच्चयत्रयोः ३।३।१४८।  
 यजजपदशां यङः ३।२।१६६।  
 यजध्वैनमिति च ७।१।४३।  
 यजयाचयत० ३।३।९०।  
 याजयाचरुचप्रव० ७।३।६६।  
 यजुष्युरः ६।१।११७।  
 यजुष्येकेषाम् ८।३।१०४।  
 यजेश्च करणे २।३।६३।  
 यज्ञकर्मण्यजप १।२।३४।  
 यज्ञात्विग्भ्यां ५।१।७१।  
 यज्ञे समि स्तुवः ३।३।३१।  
 यजजोश्च २।४।६४।  
 यजश्च ४।१।१६।  
 यजिजोश्च ४।१।१०१।  
 यतश्च निर्धारणम् २।३।४१।

यतोऽनावः ६।१।२१३।  
 यत्तदेतेभ्यः परि० ५।१।३९।  
 यथातथयथापुर० ७।३।३१।  
 यथातथयोरसू० ३।४।२८।  
 यथामुखसंमु० ५।२।६।  
 यथाविध्यनु० ३।४।४।  
 यथासंख्यमनु० १।३।१०।  
 यथासादृश्ये २।१।७।  
 यथास्वे यथा ८।१।१४।  
 यद्धितुपरं छन्दसि ८।१।५६।  
 यद्वृत्तान्नित्यम् ८।१।६६।  
 यमः समुपनिविषु ३।३।६३।  
 यमरसनमातां ७।२।७३।  
 यमो गन्धने १।२।१५।  
 ययतोश्चातदर्थे ६।२।१५६।  
 यरोऽनुनासिकेः ८।४।४५।  
 यवांयवकषष्टिका० ५।२।३।  
 यश्च यङः ३।२।१७६।  
 यसोऽनुपसर्गात् ३।१।७१।  
 यस्कादिभ्यो गोत्रे २।४।६३।  
 यस्मात्प्रत्ययवि० १।४।१३।  
 यस्मादिधिकं यस्य २।३।९।  
 यस्य च भावेन २।३।३७।  
 यस्य चायामः २।१।१६।  
 यस्य विभाषा ७।२।१५।  
 यस्य हलः ६।४।४९।  
 यस्येति च ६।४।१४८।  
 याजकादिभिश्च २।२।९।  
 याज्यान्तः ८।२।९०।  
 याडापः ७।३।११३।

याप्ये पाशप् ५।३।४७।  
यावति विन्द ३।४।३०।  
यावत्पुरानिपात० ३।३।४।  
यावदवधारणे २।१।८।  
यावद्यथाभ्याम् ८।१।३६।  
यावादिभ्यः कन् ५।४।२९।  
यासुट् परस्मै० ३।४।१०३।  
यीवर्णयोर्दीधीवे० ७।४।५३।  
युक्तारोह्यादयश्च ६।२।८१।  
युक्ते च ६।२।६६।  
युग्यं च पत्रे ३।१।१२१।  
यजेरसमासे ७।१।७१।  
युप्लुवोर्दीर्घ० ६।४।५८।  
युवा खलतिप० २।१।६७।  
युवाल्पयोः कन् ५।३।६४।  
युवावौ द्विव० ७।२।९२।  
युवोरनाकौ ७।१।१।  
युष्मत्तक्षु ८।३।१०३।  
युष्मदस्मदोः ८।१।२०।  
युष्मदस्मदोरना० ७।२।८६।  
युष्मदस्मदोरन्य० ४।३।१।  
युष्मदस्मदोर्दसि ६।१।२११।  
युष्मदस्मद्भ्यां ७।१।२७।  
युष्मद्युपपदे स० १।४।१०५।  
यूनस्तिः ४।१।७७।  
यूनि लुक् ४।१।९०।  
यूयवयो जसि ७।२।९३।  
यूस्त्र्याख्यौ नदी १।४।३।  
ये च ६।४।१०९।  
ये च तद्धिते ६।१।६१।  
ये चाभावकर्मणोः ६।४।१६८।  
येन विधिस्तदन्त० १।१।७२।  
येनाङ्गविकारः २।३।२०।  
ये यज्ञकर्मणि ८।२।८८।  
ये विभाषा ६।४।४३।  
येषां च विरोधः २।४।९।

योगप्रमाणे च १।२।५५।  
योगाद्यच्च ५।१।१०२।  
योऽचि ७।२।८९।  
योजनं गच्छति ५।१।७४।  
योपधादगुरू० ५।१।१३२।  
र  
र ऋतो हलादे० ६।४।१६१।  
रक्ते ५।४।३२।  
रक्षति ४।४।३३।  
रक्षोयातूनां ह० ४।४।१२१।  
रङ्गोरमनुष्ये ४।२।१००।  
रजःकृष्यासु ५।२।११२।  
रञ्जेश्च ६।४।२६।  
रथवधयोश्च ६।३।१०२।  
रथाद्यत् ४।३।१२१।  
रदाभ्यां निष्ठातो ८।२।४२।  
रधादिभ्यश्च ७।२।४५।  
रधिजभोरचि ७।१।६१।  
रभेरशब्बिलोः ७।१।६३।  
रलो व्युपधाद्ध० १।२।२६।  
रश्मौ च ३।३।५३।  
रषाभ्यां नो णः ८।४।१।  
रसादिभ्यश्च ५।२।९५।  
राजदन्तादिषु २।२।३१।  
राजनि युधि ३।२।९५।  
राजन्यबहुवचन० ६।२।३४।  
राजन्यादिभ्यो ४।२।५३।  
राजन्यान्सौराज्ये ८।२।१४।  
राजश्चशुराद्यत् ४।१।१३७।  
राजसूयसूर्य० ३।१।११४।  
राजा च ६।२।५९।  
राजा च प्रशंसा० ६।२।६३।  
राजानःसखि ५।४। ९१।  
राज्ञः क च ४।२।१४०।  
रात्राहाहाः पुं २।४।२९।  
रात्रेः कृति वि० ६।३।७२।



रात्रेश्चाजसौ ४।१।३१।  
 रात्र्यहःसंवत्स० ५।१।८७।  
 रात्सस्य ८।२।२४।  
 राधीक्षोर्यस्य० १।४।३९।  
 राधो हिंसायाम् ६।४।१२३।  
 रायो हलि ७।२।८५।  
 राल्लोपः ६।४।२१।  
 राष्ट्रावारपारा० ४।२।९३।  
 रिक्ते विभाषा ६।१।२०८।  
 रिङ् शयग्लिङ्बु ७।४।२८।  
 रि च ७।४।५१।  
 रीगृदुपधस्य च ७।४।९०।  
 रीङृतः ७।४।२७।  
 रुग्रिकौ च लुकि ७।४।९१।  
 रुच्यर्थानां प्रीय० १।४।३३।  
 रुजार्थानां भाव० २।३।५४।  
 रुदविदमुषग्रहि० १।२।८।  
 रुदश्च पञ्चभ्यः ७।३।७८।  
 रुदादिभ्यः सार्व० ७।२।७६।  
 रुधादिभ्यः शनम् ३।१।७८।  
 रुष्यमत्वरसंधु० ७।२।२८।  
 रुहः पोऽन्यतर० ७।३।४३।  
 रूपादाहतप्र० ५।१।१२०।  
 रेवतीजगती ४।४।१२२।  
 रेवत्यादिभ्य० ४।१।१४६।  
 रैवतिकादिभ्य० ४।३।१३१।  
 रोः सुपि ८।३।१६।  
 रोगाख्यायां ३।३।१०८।  
 रोगाच्चापनयने ५।४।४९।  
 रोणी ४।२।७८।  
 रोपधेतोः प्राचां ४।२।१२३।  
 रो रि ८।३।१४।  
 रोऽसुपि ८।२।६९।  
 रौरुपधायाः ८।२।७६।  
 ल  
 लः कर्मणि च ३।४।६९।

लः परस्मैपदम् १।४।९९।  
 लक्षणहेत्वोः ३।२।१२६।  
 लक्षणे जायाप० ३।२।५२।  
 लक्षणेत्थंभूता० १।४।९०।  
 लक्षणेनाभिप्रती० २।१।१४।  
 लङः शाकटायन० ३।४।१११।  
 लटः शतृशान० ३।२।१२४।  
 लट् स्मे ३।२।११८।  
 लभेश्च ७।१।६४।  
 लवणाङ्ग ४।४।५२।  
 लवणाल्लुक् ४।४।२४।  
 लशक्वतद्धिते १।३।८।  
 लषपतपदस्था० ३।२।१५४।  
 लस्य ३।४।७७।  
 लाक्षारोचनाङ्क् ४।२।२।  
 लिङः सलोपोऽन० ७।२।७९।  
 लिङः सीयुट् ३।४।१०२।  
 लिङर्थे लेट् ३।४।७।  
 लिङाशिषि ३।४।११६।  
 लिङ् च ३।३।१५९।  
 लिङ् चोर्ध्वमौहू० ३।३।९।  
 लिङ् चोर्ध्वमौहू० ३।३।१६४।  
 लिङ्निमित्ते ३।३।१३९।  
 लिङ् यदि ३।३।१६८।  
 लिङ्याशिष्यङ् ३।१।८६।  
 लिङ्सिवात्म १।२।११।  
 लिङ्सिचोरात्म ७।२।४२।  
 लिटः कानज्वा ३।३।१०६।  
 लिटस्तझयोरेशि० ३।४।८१।  
 लिटि धातोरनभ्या० ६।१।८।  
 लिटि वयो यः ६।१।३८।  
 लिट् च ३।४।११५।  
 लिट्यन्यतरस्याम् २।४।४०।  
 लिट्यभ्यासस्यो० ६।१।१७।  
 लिङ्यङोश्च ६।१।२९।  
 लिति ६।१।१९३।

लिपिसिचिह्नश्च ३।१।५३।  
 लिप्स्यमानसि० ३।३।७।  
 लियः संमानन० १।३।७०।  
 लीलोनृग्लुकाव० ७।३।३९।  
 लुक्तद्धितलुकि १।२।४९।  
 लुक् स्त्रियाम् ४।१।१०९।  
 लुग्वा दुहदिह ७।३।७३।  
 लुङ् ३।२।११०।  
 लुङि च २।४।४३।  
 लुङ्लङ्लुङ् ६।४।७१।  
 लुङ्सनोर्धस्लृ २।४।३७।  
 लुटः प्रथमस्य २।४।८५।  
 लुटि च क्लृपः १।३।९३।  
 लुपसदचरजप० ३।१।२४।  
 लुपि युक्तवद्ध्य० १।२।५१।  
 लुप् च ४।३।१६६।  
 लुबविशेषे ४।२।४।  
 लुब्धोगाप्रख्या० १।२।५४।  
 लुभो विमोहने ७।२।५४।  
 लुम्भनुष्ये ५।३।९८।  
 लृटः सद्वा ३।३।१४।  
 लृट् शेषे च ३।३।१३।  
 लोटोऽडाटौ ३।४।९४।  
 लोकसर्वलोका ५।१।४४।  
 लोटो लङ्वत् ३।४।८५।  
 लोट् च ३।३।१६२।  
 लोट् च ८।१।५२।  
 लोट्थलक्षणे च ३।३।८।  
 लोपः पिबतेरी० ७।४।४।  
 लोपः शाकल्यस्य ८।३।१९।  
 लोपश्चास्यान्य० ६।४।१०७।  
 लोपस्त आत्मने० ७।१।४१।  
 लोपे विभाषा ८।१।४५।  
 लोपो यि ६।४।११८।  
 लोपो व्योर्वलि ६।१।६६।  
 लोमादिपामा० ५।२।१००।

लोहितादिडा० ३।१।१३।  
 लोहितान्मणौ ५।४।३०।  
 ल्यपि च ६।१।४१।  
 ल्यपि लघुपूर्णात् ६।४।५६।  
 ल्युट् च ३।३।११५।  
 ल्वादिभ्यः ८।२।४४।  
 व  
 वच उम् ७।४।२०।  
 वचिस्वपियजादी ६।१।१५।  
 वचोऽशब्दसंज्ञा ७।३।६७।  
 वञ्चिलुञ्ज्युतश्च १।२।२४।  
 वञ्चेर्गतौ ७।३।६३।  
 वतण्डाच्च ४।१।१०८।  
 वतोरिङ् वा ५।१।२३।  
 वचोरिथुक् ५।२।५३।  
 वत्सरान्ताच्छ ५।१।९१।  
 वत्सशालाभि० ४।३।३६।  
 वत्सांसाभ्यां ५।२।९८।  
 वत्सोक्षाश्चर्षभे० ५।३।९१।  
 वदः सुपि क्यप् ३।१।१०६।  
 वदब्रजहलन्तस्या० ७।२।३।  
 वनं समासे ६।१।१७८।  
 वनगिर्योः संज्ञा० ६।३।११७।  
 वनं पुरगामिश्रका० ८।४।४।  
 वनो र च ४।१।७।  
 वन्दिते भ्रातुः ५।४।१५७।  
 वमोर्वा ८।४।२३।  
 वयसि च ३।२।१०।  
 वयसि दन्तस्य ५।४।१४१।  
 वयसि पूरणात् ५।२।१३०।  
 वयसि प्रथमे ४।१।२०।  
 वयस्यासु मूर्ध्नो ४।४।१२७।  
 वरणादिभ्यश्च ४।२।८२।  
 वर्गान्ताच्च ४।३।६३।  
 वर्ग्यादयश्च ६।२।१३१।  
 वर्चस्वेऽवस्करः ६।१।१४८।



|                             |                            |
|-----------------------------|----------------------------|
| वर्णदृढादिभ्यः ५।१।१२३।     | वा घोषमिश्रं ६।३।५६।       |
| वर्णादिनुदात्तातो० ४।१।३९।  | वाचंयमपुरं ६।३।६९।         |
| वर्णाद् ब्रह्मचा० ५।२।१३४।  | वा चित्तविरागे ६।४।९१।     |
| वर्णे चानित्ये ५।४।३१।      | वाचि यमोव्रते ३।२।४०।      |
| वर्णो वर्णेन २।१।६९।        | वाचो ग्मिनिः ५।२।१२४।      |
| वर्णो वर्णेष्वनेते ६।२।३।   | वाचो व्याहृता० ५।४।३५।     |
| वर्णो वृक् ४।२।१०३।         | वा छन्दसि ३।४।८८।          |
| वर्तमानसामीप्ये ३।३।१३१।    | वा छन्दसि ६।१।१०६।         |
| वर्तमाने लट् ३।२।१२३।       | वा जाते ६।२।१७१।           |
| वर्षप्रमाण ऊलोप० ३।४।३२।    | वा जृभ्रमुत्रसाम् ६।४।१२४। |
| वर्षस्याभविष्यति ७।३।१६।    | वातातीसारा० ५।२।१२९।       |
| वर्षाभ्यष्टक् ४।३।१८।       | वा दान्तशान्त० ७।२।२७।     |
| वर्षाभ्वश्च ६।४।८४।         | वा द्रुहमुहष्णुह० ८।२।३२।  |
| वर्षाल्लुक्च ५।१।८८।        | वा नपुंसकस्य ७।१।७९।       |
| वले ६।३।११८।                | वा निसनिक्षिनि० ८।४।३३।    |
| वशं गतः ४।४।८६।             | वान्तो यि प्रत्यये ६।१।७९। |
| वश्वास्यान्यतर० ६।१।३९।     | वान्यस्मिन्स० ४।१।१६५।     |
| वसतिक्षुधोरिट् ७।२।५२।      | वान्यस्य संयोगादेः ६।४।६८। |
| वसन्ताच्च ४।३।२०।           | वा पदान्तस्य ८।४।५९।       |
| वसन्तादिभ्यष्टक् ४।२।६३।    | वा बहूनां जाति० ५।३।९३।    |
| वसुसं सुध्वंस्वन० ८।२।७२।   | वा भावकरणयोः ८।४।१०।       |
| वसोः समूहे च ४।४।१४०।       | वा भुवनम् ६।२।२०।          |
| वसोः संप्रसार० ६।४।१३१।     | वा भ्राशभ्लाश० ३।१।७०।     |
| वस्तेर्ढञ् ५।३।१०१।         | वामदेवाङ्गुयङ्ङ्यौ ४।२।९।  |
| वस्नक्रयविक्रया० ४।४।१३।    | वामि १।४।५।                |
| वस्नद्रव्याभ्यां ५।१।५१।    | वाम्शसोः ६।४।८०।           |
| वस्वेकाजाद्धसाम् ७।२।६७।    | वा यौ २।४।५७।              |
| वहश्च ३।२।६४।               | वाय्वृतुपित्रुषसो ४।२।३१।  |
| वहाग्रे लिहः ३।२।३२।        | वारणार्थानामो० १।४।२७।     |
| वह्यं करणम् ३।१।१०२।        | वा लिटि २।४।५५।            |
| वाकिनादीनां ४।१।१५८।        | वा ल्यपि ६।४।३८।           |
| वा क्यषः १।३।९०।            | वावसाने ८।४।५६।            |
| वाक्यस्य टेः प्लुत० ८।२।८२। | वा शरि ८।३।३६।             |
| वाक्यादेरामन्त्रि० ८।१।८।   | वा शोकष्यज्वरोगेषु ६।३।५१। |
| वा क्रोशदैत्ययोः ६।४।६१।    | वा षपूर्वस्य निगमे ६।४।९।  |
| वा गमः १।२।१३।              | वा संज्ञायाम् ५।४।१३३।     |

वासरूपोऽस्त्रि० ३।१।९४।  
 वासुदेवार्जुनाभ्यां ४।३।९८।  
 वा सुप्यापिशलेः ६।१।९२।  
 वाह ऊट् ६।४।१३२।  
 वाहः ४।१।६१।  
 वा ह च छन्दसि ५।३।१३।  
 वाहनमाहितात् ८।४।८।  
 वाहिताग्न्यादिषु २।२।३७।  
 वाहीकग्रामेभ्यश्च ४।२।११७।  
 विंशतिकात्खः ५।१।३२।  
 विंशतित्रिंशद्भ्यां० ५।१।२४।  
 विंशत्यादिभ्य० ५।२।५६।  
 विकर्णकुषीतका० ४।१।१२४।  
 विकर्णशुङ्गच्छ० ४।१।११७।  
 विकुशमिपरिभ्यः ८।३।९६।  
 विचार्यमाणानाम् ८।२।९७।  
 विज इट् १।२।२।  
 विजुपे छन्दसि ३।२।७३।  
 विङ्वनोरनुनासि० ६।४।४१।  
 वित्तो भोगप्रत्य० ८।२।५८।  
 विदांकुर्वन्त्वित्य० ३।१।४१।  
 विदिभिदिच्छि० ३।२।१६२।  
 विदूराञ्ज्यः ४।३।८४।  
 विदेः शतुर्वसुः ७।१।३६।  
 विदो लटो वा ३।४।८३।  
 विद्यायोनिर्संब० ४।३।७७।  
 विधिनिमन्त्र० ३।३।१६१।  
 विध्यत्यधनुषा ४।४।८३।  
 विध्वरुषोस्तुदः ३।२।३५।  
 विनञ्भ्यां नाना० ५।२।२७।  
 विनयादिभ्यष्टक् ५।४।३४।  
 विन्दुरिच्छुः ३।२।१६९।  
 विन्मतोर्लुक् ५।३।६५।  
 विपराभ्यां जेः १।३।१९।  
 विपूयविनीयजि० ३।१।११७।  
 विप्रतिषिद्धं चान० २।४।१३।

विप्रतिषेधे परं कार्यम् १।४।२।  
 विप्रसंभ्यो ड्वसं० ३।२।१८०।  
 विभक्तिश्च १।४।१०४।  
 विभाषजोश्छ० ६।४।१६२।  
 विभाषा २।१।११।  
 विभाषा कथमि ३।३।१४३।  
 विभाषा कदाकह्योः ३।३।५।  
 विभाषाऽकर्मकात् १।३।८५।  
 विभाषा कार्षाप० ५।१।२९।  
 विभाषा कुरुयुग ४।२।१३०।  
 विभाषा कृजि १।४।७२।  
 विभाषा कृवृषोः ३।१।१२०।  
 विभाषाख्यान ३।३।११०।  
 विभाषा गमहन० ७।२।६८।  
 विभाषा गुणे २।३।२५।  
 विभाषा ग्रहः ३।१।१४३।  
 विभाषाऽग्रे प्रथम० ३।४।२४।  
 विभाषा घ्राधे २।४।७८।  
 विभाषा छि रुप्लु० ३।३।५०।  
 विभाषा छिश्योः ६।४।१३६।  
 विभाषा चत्वारि० ६।३।४९।  
 विभाषा चिण्ण० ७।१।६९।  
 विभाषा चेः ७।३।५८।  
 विभाषा छन्दसि १।२।३६।  
 विभाषा छन्दसि ६।२।१६४।  
 विभाषा छन्दसि ७।४।४४।  
 विभाषा जसि १।१।३२।  
 विभाषाञ्जेरादिविस्त्र० ५।४।८।  
 विभाषा तिलमा० ५।२।४।  
 विभाषा तृतीया० ७।१।९७।  
 विभाषा तृत्र० ६।२।१६१।  
 विभाषा दिक्स० १।१।२८।  
 विभाषा द्वितीया० ७।३।११५।  
 विभाषा धातौ ३।३।१५५।  
 विभाषा धेट्श्वयोः ३।१।४९।  
 विभाषाध्यक्षे ६।२।६७।



विभाषापः ६।४।५७।  
 विभाषा परावरा ५।३।२९।  
 विभाषा परेः ६।१।४४।  
 विभाषा पुरुषे ६।३।१०६।  
 विभाषा पूर्वाह्णा ४।३।२४।  
 विभाषा पृष्टप्रति ८।२।९३।  
 विभाषा फाल्गु ४।२।२३।  
 विभाषा बहोर्धा ५।४।२०।  
 विभाषा भावा ७।२।१७।  
 विभाषा भाषा ६।१।१८१।  
 विभाषभ्यवपूर्व ६।१।२६।  
 विभाषा मनुष्ये ४।२।१४४।  
 विभाषा रोगा ४।३।१३।  
 विभाषा लीयतेः ६।१।५१।  
 विभाषा लुङ्लट्ठोः २।४।५०।  
 विभाषावरस्य ५।३।४१।  
 विभाषा वर्षक्षर ६।३।१६।  
 विभाषा विप्रलापे १।३।५०।  
 विभाषा विवधात् ४।४।१७।  
 विभाषा वृक्षमृ २।४।१२।  
 विभाषा वेणिव ६।१।२१५।  
 विभाषा वेष्टिचे ७।४।९६।  
 विभाषा श्यावा ५।४।११४।  
 विभाषा श्वेः ६।१।३०।  
 विभाषा सपूर्वस्य ४।१।३४।  
 विभाषा समीपे २।४।१६।  
 विभाषासाका ३।२।११४।  
 विभाषा साति ५।४।५२।  
 विभाषा सुपो ५।३।६८।  
 विभाषासृजिदृशोः ७।२।६५।  
 विभाषा सेनासु २।४।२५।  
 विभाषा स्वसृप ६।३।२४।  
 विभाषा हविरपू ५।१।४।  
 विभाषितं विशे ८।१।७४।  
 विभाषितं सोप ८।१।५३।  
 विभाषेटः ८।३।७९।

विभाषोत्पुच्छे ६।२।१९६।  
 विभाषोदरे ६।३।८८।  
 विभाषोपपदेन १।३।७७।  
 विभाषोपयमने १।२।१६।  
 विभाषोपसर्गे २।३।५९।  
 विभाषोर्णोः १।२।३।  
 विभाषोशीनरेषु ४।२।११८।  
 विभाषौषधिवन ८।४।६।  
 विमुक्तादिभ्योऽण ५।२।६१।  
 विरामोऽवसानम् १।४।११०।  
 विशाखयोश्च १।२।६२।  
 विशाखाषाढा ५।१।१००।  
 विशिपतिपदि ३।४।५६।  
 विशिष्टलिङ्गो नदी २।४।७।  
 विशेषणं विशेष्ये २।१।५७।  
 विशेषणानां चा १।२।५२।  
 विश्वस्य वसुरा ६।३।१२८।  
 विषयो देशे ४।२।५२।  
 विष्किरः शकुनौ ६।१।१५०।  
 विष्वग्देवयोश्च ६।३।९२।  
 विसर्जनीयस्य ८।३।३४।  
 विसारिणो मत्स्ये ५।४।१६।  
 विस्पष्टादीनि ६।२।२४।  
 वीरवीर्यौ च ६।२।१२०।  
 वुञ्छणकठजिलसे ४।२।८०।  
 वृकज्येष्ठाभ्यां ५।४।४१।  
 वृकाद्वेण्यण् ५।३।११५।  
 वृक्षासनयोर्विष्टरः ८।३।९३।  
 वृणोतेराच्छादने ३।३।५४।  
 वृत्तिसर्गतायनेषु १।३।३८।  
 वृद्धस्य च ५।३।६२।  
 वृद्धस्य च पू ४।१।१६५।  
 वृद्धाच्छः ४।२।११४।  
 वृद्धाद्वक्सौवीरे ४।१।१४८।  
 वृद्धात्प्राचाम् ४।२।१२०।  
 वृद्धादकेकान्त ४।२।१४१।

वृद्धिनिमित्तस्य ६।३।३९।  
 वृद्धिरादैच् १।१।१।  
 वृद्धिरेचि ६।१।८८।  
 वृद्धिर्यस्याचामा० १।४।७३।  
 वृद्धेत्कोसलाजा० ४।१।१७१।  
 वृद्धो यूना तल्लक्ष० १।२।६५।  
 वृद्धयः स्यसनोः १।३।९२।  
 वृन्दारकनाग० २।१।६२।  
 वृषाकप्यग्निकु० ४।१।३७।  
 वृषादीनां च ६।१।२०३।  
 वृतोवा ७।२।३८।  
 वेः पादविहरणे १।३।४१।  
 वेः शब्दकर्मणः १।३।३४।  
 वेः शालच्छङ्कटचौ ५।२।२८।  
 वेः स्कन्देरनिष्ठा० ८।३।७३।  
 वेः स्कभ्नातेर्नि० ८।३।७७।  
 वेजः ६।१।४०।  
 वेजो वयिः २।४।४१।  
 वेतनादिभ्यो ४।४।१२।  
 वेत्तेर्विभाषा ७।१।७।  
 वेरपृक्तस्य ६।१।६७।  
 वेशन्तहिमव० ४।४।११२।  
 वेशोयशआदेर्भ० ४।४।१३१।  
 वेश्व स्वनो भोजने ८।३।६९।  
 वैतोऽन्यत्र ३।४।९६।  
 वैयाकरणाख्यायां ६।३।७।  
 वैवावेति च ८।१।६४।  
 वोताप्योः ३।३।१४१।  
 वोतो गुणवचनात् ४।१।४४।  
 वोपसर्जनस्य ६।३।८२।  
 वो विधूनने जुक् ७।३।३८।  
 वौ कषलसकत्थ० ३।२।१४३।  
 वौ क्षुश्रुवः ३।३।२५।  
 व्यक्तवाचां समु० १।३।४८।  
 व्यञ्जनैरुपसिक्ते ४।४।२६।  
 व्यत्ययो बहुलम् ३।१।८५।

व्यथो लिटि ७।४।६८।  
 व्यधजपोरनुप० ३।३।६१।  
 व्यन्सपत्ने ४।१।१४५।  
 व्यवहिताच्च १।४।८२।  
 व्यवहपणोः सम० २।३।५७।  
 व्यवायिनोऽन्त० ६।२।१६६।  
 व्यश्च ६।१।४३।  
 व्याङ्परिभ्यो १।३।८३।  
 व्याहरति मृगः ४।३।५१।  
 व्युपयोः शेतेः ३।३।३९।  
 व्युष्टादिभ्योऽण् ५।१।९७।  
 व्योर्लघुप्रयत्नतरः ८।३।१८।  
 व्रजयजोर्भावे ३।३।९८।  
 व्रते ३।२।८०।  
 व्रश्चभ्रस्जसृजमृ० ८।२।३६।  
 व्रातचक्रोर० ५।३।११३।  
 व्रातेन जीवति ५।२।२१।  
 व्रीहिशाल्योर्ढक् ५।२।२।  
 व्रीहेः पुरोडाशे ४।३।१४८।  
 व्रीह्यादिभ्यश्च ५।२।११६।  
**श**  
 शकटादण् ४।४।८०।  
 शकधृषज्ञाग्ला० ३।४।६५।  
 शकि णमुल्कमुलौ ३।४।१२।  
 शकि लिङ् च ३।३।१७२।  
 शकिसहोश्च ३।१।९९।  
 शक्तियष्ट्योरीकक् ४।४।५९।  
 शक्तौ हस्तिक० ३।२।५४।  
 शण्डिकादिभ्यो० ४।३।९२।  
 शतमानविंशति० ५।२।२६।  
 शतसहस्रान्ता० ५।२।११९।  
 शताच्च ठन्यता० ५।१।२१।  
 शतुरनुमो नद्य० ६।१।१७३।  
 शदन्तविंशतेश्च ५।२।४६।  
 शदेः शितः १।३।६०।  
 शदेरगतौ तः ७।३।४२।



|                            |                              |
|----------------------------|------------------------------|
| शप्श्यनोर्नित्यम् ७।१।८१।  | शितेर्नित्याबह् ६।२।१३८।     |
| शब्ददर्दुरं करोति ४।४।३४।  | शिलाया ढः ५।३।१०२।           |
| शब्दवैरकलहा० ३।१।१७।       | शिल्पम् ४।४।५५।              |
| शमामष्टानां दीर्घः ७।३।७४। | शिल्पिनि चा० ६।२।७६।         |
| शमिता यो ६।४।५४।           | शिल्पिनि ष्वन् ३।१।१४५।      |
| शमित्यष्टाभ्यो ३।२।१४१।    | शिवशमरिष्टस्य ४।४।१४३।       |
| शमि धातोः ३।२।१४।          | शिवादिभ्योऽण् ४।१।११२।       |
| शम्याः प्लज् ४।३।१४२।      | शिशुक्रन्दयम० ४।३।८८।        |
| शयवासवासि० ६।३।१८।         | शि सर्वनामस्था० १।१।४२।      |
| शरद्वच्छुनकद० ४।१।१०२।     | शीङः सार्वधातु० ७।४।२१।      |
| शरादीनां च ६।३।१२०।        | शीङो रुट् ७।१।६।             |
| शरीरावयवाच्च ४।३।५५।       | शीतोष्णाभ्यां ५।२।७२।        |
| शरीरावयवाद्यत् ५।१।६।      | शीर्षश्छन्दसि ६।१।६०।        |
| शरोऽचि ८।४।४९।             | शीर्षच्छेदाद्यच्च ५।१।६५।    |
| शर्करादिभ्योऽण् ५।३।१०७।   | शीलम् ४।४।६१।                |
| शर्कराया वा ४।२।८३।        | शुक्राद् घन् ४।२।२६।         |
| शर्पे विसर्जनीयः ८।३।३५।   | शुण्डिकादि० ४।३।७६।          |
| शर्पूवाः खयः ७।४।६१।       | शुभ्रादिभ्यश्च ४।१।१२३।      |
| शल इगुपधादनि० ३।१।४५।      | शुषः कः ८।२।५१।              |
| शलालुनोऽन्यतर० ४।४।५४।     | शुष्कचूर्णरूक्षेषु ३।४।३५।   |
| शश्छोऽटि ८।४।६३।           | शुष्कधृष्टौ ६।१।२०६।         |
| शसो न ७।१।२९।              | शूद्राणामनिर० २।४।१०।        |
| शाकलाद्वा ४।३।१२८।         | शूर्पादजन्यतर० ५।१।२६।       |
| शाखादिभ्यो यः ५।३।१०३।     | शूलात्पाके ५।४।६५।           |
| शाच्छासाह्वाव्या० ७।३।३७।  | शूलोखाद्यत् ४।२।१७।          |
| शाच्छोरन्यतर० ७।४।४१।      | शृङ्खलमस्य ५।२।७९।           |
| शाणाद्वा ५।१।३५।           | शृङ्गमवस्थायां च ६।२।११५।    |
| शात् ८।४।४४।               | शृतं पाके ६।१।२७।            |
| शारदेऽनार्तवे ६।२।९।       | शृदृग्नां ह्रस्वो वा ७।४।१२। |
| शार्ङ्गवाद्यजो ४।१।७३।     | शृवन्धोरारुः ३।२।१७३।        |
| शालीनकौपीने ५।२।२०।        | शो १।१।१३।                   |
| शास इदङ्हलोः ६।४।३४।       | शो मुचादीनाम् ६।१।५९।        |
| शासिवसिघसीनां ८।३।६०।      | शेवलसुपरिवि० ५।३।८४।         |
| शा हौ ६।४।३५।              | शेश्छन्दसि बहु० ६।१।७०।      |
| शिखाया वलच् ४।२।८९।        | शेषात्कर्तरि पर० १।३।७८।     |
| शितुक ८।३।३१।              | शेषाद्विभाषा ५।४।१५४।        |

शेषे ४।२।९२।  
 शेषे प्रथमः १।४।१०८।  
 शेषे लृडयदौ ३।३।१५१।  
 शेषे लोपः ७।२।९०।  
 शेषे विभाषा ८।१।४१।  
 शेषे विभाषा ८।१।५०।  
 शेषे विभाषाकखा० ८।४।१८।  
 शेषो ध्यसखि १।४।७।  
 शेषो बहुव्रीहिः २।२।२३।  
 शोणात्प्राचाम् ४।१।४३।  
 शौनकादिभ्य० ४।३।१०६।  
 शनसोरल्लोपः ६।४।१११।  
 शनान्नलोपः ६।४।२३।  
 शनाभ्यस्तयो० ६।४।११२।  
 श्येनतिलस्य पाते ६।३।७१।  
 श्योऽस्पर्शे ८।२।४७।  
 श्रज्यावमकन् ६।२।२५।  
 श्रविष्ठाफल्गु० ४।३।३४।  
 श्राणामांसौदना० ४।४।६७।  
 श्राद्धमनेन भुक्त० ५।२।८५।  
 श्राद्धे शरदः ४।३।१२।  
 श्रिणीभुवोऽनु० ३।३।२४।  
 श्रीग्रामण्योश्छ० ३।१।७४।  
 श्रुवः शृ च ३।१।७४।  
 श्रुशृणुपृकृव० ६।४।१०२।  
 श्रेण्यादयः कृता० २।१।५९।  
 श्रोत्रियंश्छन्दा० ५।२।८४।  
 श्र्युकः किति ७।४।११।  
 श्लाघहनुडस्था० १।४।३४।  
 श्लिष आलिङ्गने ३।१।४६।  
 श्लौ ६।१।१०।  
 श्वगणाडुञ्च ४।४।११।  
 श्वयतेरः ७।४।१८।  
 श्वयुवमघोना० ६।४।१३३।  
 श्वशुरः श्वश्वा १।२।७१।  
 श्वसस्तुट् च ४।३।१५।

श्वसोवसीयः ५।४।८०।  
 श्वादेरिञि ७।३।८।  
 श्वीदितो निष्ठा० ७।२।१४।  
 ष  
 षः प्रत्ययस्य १।३।६।  
 षट्कतिकतिपय० ५।२।५१।  
 षटच् काण्डा० ६।२।१३५।  
 षट्चतुर्भ्यश्च ७।१।५५।  
 षट्त्रिचतुर्भ्यो० ६।१।१७९।  
 षड्भ्यो लुक् ७।१।२२।  
 षढोः कः सि ८।२।४१।  
 षणमासाण्यच्च ५।१।८३।  
 षत्वतुकोरसिद्ध० ६।१।८६।  
 षपूर्वहन्धृत० ६।४।१३५।  
 षष्टिकाः षष्टिरा० ५।१।९०।  
 षष्ट्यादेशासंख्या० ५।२।५८।  
 षष्ठाष्टमाभ्यां ज ५।३।५०।  
 षष्ठी २।२।८।  
 षष्ठी चानादरे २।३।३८।  
 षष्ठी प्रत्येनसि ६।२।६०।  
 षष्ठीयुक्तश्छन्दसि १।४।९।  
 षष्ठी शेषे २।३।५०।  
 षष्ठी स्थानेयोगा १।१।४९।  
 षष्ठी हेतुप्रयोगे २।३।२६।  
 षष्ठ्यतसर्थ० २।३।३०।  
 षष्ठ्या आक्रोशे ६।३।२१।  
 षष्ठ्याः पतिपुत्र० ८।३।५३।  
 षष्ठ्या रूप्य च ५।३।५४।  
 षष्ठ्या व्याश्रये ५।४।४८।  
 षात्पदान्तात् ८।४।३५।  
 षिद्वौरादिभ्यश्च ४।१।४१।  
 षिद्धिदादिभ्यो ३।३।१०४।  
 षुना षुः ८।४।४१।  
 ष्विवुक्लमुचमां ७।३।७५।  
 षणान्ता षट् १।१।२४।  
 ष्यङः संप्रसार० ६।१।१३।



स  
 स उत्तमस्य ३।४।९८।  
 स एषां ग्रामणीः ५।२।७८।  
 सः स्यार्धधातुके ७।४।४९।  
 सः स्वदिस्वदि ८।३।६२।  
 संयसश्च ३।१।७२।  
 संयोगादिश्च ६।४।१६६।  
 संयोगादेरातो ८।२।४३।  
 संयोगान्तस्य ८।२।२३।  
 संयोगे गुरु १।४।११।  
 संवत्सराग्रहा ० ४।३।५०।  
 संशयमापन्नः ५।१।७३।  
 संसृष्टे ४।४।२२।  
 संस्कृतम् ४।४।३।  
 संस्कृतं भक्षाः ४।२।१६।  
 संहितशफल ० ४।१।७०।  
 संहितायाम् ६।१।७२।  
 संहितायाम् ६।३।११४।  
 सक्थं चाक्रां ० ६।२।१९८।  
 सख्यशिक्षीति ० ४।१।६२।  
 सख्युरसंबुद्धौ ७।१।९२।  
 सख्युर्यः ५।१।१२६।  
 सगतिरपितिङ् ८।१।६८।  
 सगर्भसमूथस ० ४।४।११४।  
 संकलादिभ्यश्च ४।२।७५।  
 संख्ययाव्ययास २।२।२५।  
 संख्या ६।२।३५।  
 संख्यापूर्वो द्विगुः २।१।५२।  
 संख्याया अति ० ५।१।२२।  
 संख्याया अवयवे ० ५।२।४२।  
 संख्यायाः क्रिया ० ५।४।१७।  
 संख्यायाः संवत् ७।३।१५।  
 संख्यायाः संज्ञा ० ५।१।५८।  
 संख्यायाः स्तनः ६।२।१६३।  
 संख्याया गुणस्य ५।२।४७।  
 संख्याया विधार्थे ५।३।४२।

संख्यायाश्च गुणा ० ५।४।५९।  
 संख्या वंश्येन २।१।१९।  
 संख्याविसाय ० ६।३।११०।  
 संख्याऽव्ययादे ० ४।१।२६।  
 संख्यासुपूर्वस्य ५।४।१४०।  
 संख्यैकवचना ० ५।४।४३।  
 संग्रामे प्रयोजन ० ४।२।५६।  
 संघाङ्गलक्षण ० ४।३।१२७।  
 संघे चानौत्तरा ० ३।३।४२।  
 संघौद्धौ गणप्र ० ३।३।८६।  
 संज्ञापूरण्योश्च ६।३।३८।  
 संज्ञायाम् २।१।४४।  
 संज्ञायाम् ३।३।१०९।  
 संज्ञायाम् ३।४।४२।  
 संज्ञायाम् ४।१।७२।  
 संज्ञायाम् ४।३।११७।  
 संज्ञायाम् ६।२।१५९।  
 संज्ञायाम् ८।२।११।  
 संज्ञायां लला ० ४।४।४६।  
 संज्ञायां शरदो ० ४।३।२७।  
 संज्ञायां श्रवणा ० ४।२।५।  
 संज्ञायां समज ० ३।३।९९।  
 संज्ञायां कन् ४।३।१४७।  
 संज्ञायां कन् ५।३।७५।  
 संज्ञायां कन् ५।३।८७।  
 संज्ञायां कन्थोशी ० २।४।२०।  
 संज्ञायां गिरि ६।२।९४।  
 संज्ञायां च ५।३।९७।  
 संज्ञायां च ६।२।७७।  
 संज्ञायां जन्या ४।४।८२।  
 संज्ञायां धेनुष्या ४।४।८९।  
 संज्ञायां भृतृवृजि ० ३।२।४६।  
 संज्ञायां मन्मा ० ५।२।१३७।  
 संज्ञायामना ० ६।१।१४६।  
 संज्ञायामुपमा ० ६।१।२०४।  
 संज्ञायां मित्रा ० ६।२।१६५।

संज्ञोऽन्यतरं २।३।२२।  
 संज्ञौपम्ययोश्च ६।३।११३।  
 सत्यं प्रश्ने ८।१।३२।  
 सत्यादशपथे ५।४।६६।  
 सत्यापपाशरूपवी० ३।१।२५।  
 सत्सूद्विषदुह० ३।२।६१।  
 सदिरप्रतेः ८।३।६६।  
 सदृशप्रतिरूपोः ६।२।११।  
 सदेः परस्य लिटि ८।३।११८।  
 सद्यः परुत्परार्यैषमः ५।३।२२।  
 सध मादस्थयो० ६।३।९६।  
 सनः क्तिचि लो० ६।४।४५।  
 स नुपुंसकम् २।४।१७।  
 सनाद्यन्ता धातवः ३।१।३२।  
 सनाशंसभिक्ष उः ३।२।१६८।  
 सनिंससनिवांसम् ६।२।६९।  
 सनि ग्रहगुहोश्च ७।२।१२।  
 सनि च २।४।४७।  
 सनि मीमाधुर० ७।४।५४।  
 सनीवन्तर्धभ्रस्ज० ७।२।४९।  
 सनोतेरनः ८।३।१०८।  
 सन्धिवेलाद्युतुनक्ष० ४।३।१६।  
 सन्महत्परमात्त० २।१।६१।  
 सन्यडोः ६।१।९।  
 सन्यतः ७।४।७९।  
 सन्लिटोर्जः ७।३।५७।  
 सन्वल्लघुनिचड० ७।४।९३।  
 सपत्रनिष्पत्रा० ५।४।६१।  
 स पूर्वाच्च ५।२।८७।  
 सपूर्वायाः प्रथमा० ८।१।२६।  
 सप्तनोऽञ्छन्दसि ५।१।६१।  
 सप्तमीपञ्चम्यौ २।३।७।  
 सप्तमीविशेषणे २।२।३५।  
 सप्तमी शौण्डैः २।१।४०।  
 सप्तमी सिद्धशु० ६।२।३२।  
 सप्तमी हारिणौ ६।२।६५।

सप्तम्यधिकरणे च २।३।३६।  
 सप्तम्याः पुण्यम् ६।२।१५२।  
 सप्तम्यां चोप० ३।४।४९।  
 सप्तम्यां जनेर्दः ३।२।९७।  
 सप्तम्यास्त्रल् ५।३।१०।  
 सभायां नपुंसके ६।२।९८।  
 सभाया यः ४।४।१०५।  
 सभा राजामनु० २।४।२३।  
 समः क्षुण्वः १।३।६५।  
 समः प्रतिज्ञाने १।३।५२।  
 समः समि ६।३।९३।  
 समः सुटि ८।३।५।  
 समयस्तदस्य० ५।१।१०४।  
 समयाच्च यापना० ५।४।६०।  
 समर्थः पदविधिः २।१।१।  
 समर्थानां प्रथ० ४।१।८२।  
 समवप्रविभ्यः १।३।२२।  
 समवायान्समवै० ४।४।४३।  
 समवाये च ६।१।१३८।  
 समस्तृतीया० १।३।५४।  
 समांसमा विजा० ५।२।१२।  
 समानकर्तृकयोः ३।४।२१।  
 समानकर्तृकेषु ३।३।१५८।  
 समानतीर्थेवासी ४।४।१०७।  
 समानस्य छन्द० ६।३।८४।  
 समानोदरे श० ४।४।१०८।  
 समापनात्स० ५।१।११२।  
 समायाः खः ५।१।८५।  
 समासतौ ३।४।५०।  
 समासस्य ६।१।२२३।  
 समासाच्च तद्धि० ५।३।१०६।  
 समासान्ता० ५।४।६८।  
 समासेऽनञ्पूर्वे० ७।१।३७।  
 समाहारः स्वरितः १।२।३१।  
 समि ख्यः ३।२।७।  
 समि मुष्टौ ३।३।३६।



समि यद्गुदुवः ३।३।२३।  
 समुच्चये सामान्य० ३।४।५।  
 समुदाङ्भ्यो० १।३।७५।  
 समुदासजः पशुषु ३।३।६९।  
 समुद्राभ्राद् घः ४।४।११८।  
 समूलाकृतजीवे० ३।४।३६।  
 समूहवच्च बहुषु ५।४।२२।  
 समो गम्युच्छि० १।३।२९।  
 संपरिपूर्वात्ख च ५।१।९२।  
 संपरिभ्यां करोतौ ६।१।१३७।  
 संपादिनि ५।१।९९।  
 संपृचानुरुधा० ३।२।१४२।  
 संप्रतिभ्यामना० १।३।४६।  
 संप्रसारणस्य ६।३।१३९।  
 संप्रसारणाच्च ६।१।१०८।  
 संप्रोदश्च कटच् ५।२।२९।  
 संबुद्धौ च ७।३।१०६।  
 संबुद्धौ शाक० १।१।१६।  
 संबोधने च २।३।४७।  
 संबोधने च ३।२।१२५।  
 संभवत्यवहर० ५।१।५२।  
 संभावनेऽलमि० ३।३।१५४।  
 संभूते ४।३।४१।  
 संमाननोत्संजना० १।३।३६।  
 सरूपाणामेकशे० ३।१।५६।  
 सर्तिशास्त्यति० ३।१।५६।  
 सर्वकूलाभ्रकरीषे० ३।२।४२।  
 सर्वङ्गुणकात्स्न्ये ६।२।९३।  
 सर्वचर्मणः कृतः ५।२।५।  
 सर्वत्र लोहितादि० ४।१।१८।  
 सर्वत्र विभाषा ६।१।१२२।  
 सर्वत्र शाकल्यस्य ८।४।५१।  
 सर्वत्राण् च ४।३।२२।  
 सर्वदेवात्तातिल् ४।४।१४२।  
 सर्वनामस्थाने ६।४।८।  
 सर्वनाम्नः स्मै ७।१।१४।

सर्वनाम्नः स्याड० ७।३।११४।  
 सर्वनाम्नस्तृती० २।३।२७।  
 सर्वपुरुषाभ्यां ५।१।१०।  
 सर्वभूमिपृथि० ५।१।४१।  
 सर्वस्य द्वे ८।१।१।  
 सर्वस्य सुपि ६।१।१९१।  
 सर्वस्य सोऽन्यत० ५।३।६।  
 सर्वादीनि सर्वना० १।१।२७।  
 सर्वैकान्यकिंय० ५।३।१५।  
 सवाभ्यां वामौ ३।४।९१।  
 सविधुसनीडस० ६।२।२३।  
 ससजुषो रुः ८।२।६६।  
 ससूवेति निगमे ७।४।७४।  
 सस्यौ प्रशंसायाम् ५।४।४०।  
 सस्येन परिजातः ५।२।६८।  
 सहनज्विघमान० ४।१।५७।  
 सहयुक्तेऽप्रधाने २।३।१९।  
 सह सुपा २।१।४।  
 सहस्य सः संज्ञा० ६।३।७८।  
 सहस्य सध्रिः ६।३।९५।  
 सहस्रेण संमितौ ४।४।१३५।  
 सहिवहोरोदव० ६।३।११२।  
 सहेः पृतनती० ८।३।१०९।  
 सहेः साढः सः ८।३।५६।  
 सहे च ३।२।९६।  
 साक्षात्प्रभृतीनि १।४।७४।  
 साक्षाद् द्रष्टरि ५।२।९१।  
 साढ्यै साढ्वा ६।३।११३।  
 सात्पदाद्योः ८।३।१११।  
 साधकतमं करणम् १।४।४२।  
 साधुनिपुणाभ्या० २।३।४३।  
 सान्तमहतः संयो० ६।४।१०।  
 साप्तपदीनं सख्यम् ५।२।२२।  
 साम आकम् ७।१।३३।  
 सामन्त्रितम् २।३।४८।  
 सामि २।१।२७।

सायंचिरं प्राहणेप्रगे० ४।३।२३।  
 सार्वधातुकमपित् १।२।४।  
 सार्वधातुकार्धधा० ७।३।८४।  
 सार्वधातुके यक् ३।१।६७।  
 साल्वावयवप्र० ४।१।१७३।  
 साल्वेयगान्धा० ४।१।१६९।  
 सावनडुहः ७।१।८२।  
 सावेकाचस्तृती० ६।१।१६८।  
 सास्मिन्पौर्णमा० ४।२।२१।  
 सिकताशर्करा० ५।२।१०४।  
 सिचि च परस्मैप० ७।२।४०।  
 सिचि वृद्धिः परस्मै० ७।२।१।  
 सिचो यङि ८।३।११२।  
 सिजभ्यस्तवि० ३।४।१०९।  
 सिति च १।४।१६।  
 सिद्धशुष्कपक्व० २।१।४१।  
 सिध्मादिभ्यश्च ५।२।९७।  
 सिध्यतेरपारलौ० ६।१।४९।  
 सिन्धुतक्षशिला० ४।३।९३।  
 सिन्ध्वपकराभ्यां ४।३।३२।  
 सिपि धातो रुर्वा ८।२।७४।  
 सिब्बहुलं लेटि ३।१।३४।  
 सिवादिनां वाङ् ८।३।७१।  
 सुः पूजायाम् १।४।९४।  
 सुकर्मपापमन्त्र० ३।२।८९।  
 सुखप्रिययोर्हिते ६।२।१५।  
 सुखप्रियादानुलो० ५।४।६३।  
 सुदादिभ्यः कर्तृ० ३।१।१८।  
 सुखादिभ्यश्च ५।२।१३१।  
 सुजः ८।३।१०७।  
 सुजो यज्ञसंयोगे ३।२।१३२।  
 सुट् कात्पूर्वः ६।१।१३५।  
 सुट् तिथोः ३।४।१०७।  
 सुडनपुंसकस्य १।१।४३।  
 सुधातुरकङ् च ४।१।९७।  
 सुधितवसुधितने० ७।४।४५।

सुनोतेः स्यसनोः ८।३।११७।  
 सुप आत्मनः क्यच् ३।१।८।  
 सुपः १।४।१०३।  
 सुपां सुलुक्पूर्वसं ७।१।३९।  
 सुपि च ७।३।१०२।  
 सुपि स्थः ३।२।४।  
 सुपो धातुप्रातिप० २।४।७१।  
 सुप्तिङन्तं पदम् १।४।१४।  
 सुप्प्रतिना मात्रार्थे २।१।९।  
 सुप्यजातौ णिनि० ३।२।७८।  
 सुप्रातसुश्वसुदि० ५।४।१२०।  
 सुबामन्त्रिते परा० २।१।२।  
 सुयजोर्द्वनिप् ३।२।१०३।  
 सुवास्त्वादिभ्यां ४।२।७७।  
 सुविनिदुर्भ्यः सुपि० ८।३।८८।  
 सुषामादिषु च ८।३।९८।  
 सुसर्वाधाज्जनपद० ७।३।१२।  
 सुहृद् दुर्हृदौ ५।४।१५०।  
 सूत्रं प्रतिष्ठातम् ८।३।९०।  
 सूत्राच्च कोपधात् ४।२।६५।  
 सूददीपदीक्षश्च ३।२।१५३।  
 सूपमानात् क्तः ६।२।१४५।  
 सूर्यतिष्याग० ६।४।१४९।  
 सृघस्यदः क्मरच् ३।२।१६०।  
 सृजिदृशोर्ज्ञल्य० ६।१।५८।  
 सृपितृदोः कसुन् ३।४।१७।  
 सृ स्थिरे ३।३।१७।  
 संधतेर्गतौ ८।३।११३।  
 सेनान्तलक्षण० ४।१।१५२।  
 सेनाया वा ४।४।४५।  
 सेर्हापिच्च ३।४।८७।  
 सेऽसिचि कृतचृत् ७।२।५७।  
 सोऽचि लोपे ६।१।१३४।  
 सोढः ८।३।११५।  
 सोदराद्यः ४।४।१०९।  
 सोऽपदादौ ८।३।३८।



सोममहंति यः ४।४।१३७।  
 सोमावृण् ४।२।३०।  
 सोमे सुजः ३।२।९०।  
 सोमे हरितः ७।२।३३।  
 सोरवक्षेपणे ६।२।१९५।  
 सोर्मनसी अलो ६।२।११७।  
 सोऽस्य निवासः ४।३।८९।  
 सोऽस्यां शवस्नभृ ५।१।५६।  
 सोऽस्यादिरिति ४।२।५५।  
 सौ च ६।४।१३।  
 स्कोः संयोगाद्यो ८।२।२९।  
 स्तम्भुस्तम्भुस्क ३।१।८२।  
 स्तम्बकर्णयोरमि ३।२।१३।  
 स्तम्बशकृतोरिन् ३।२।२४।  
 स्तम्बे क च ३।३।८३।  
 स्तम्भुसिवुसहां ८।३।११६।  
 स्तम्भेः ८।३।६७।  
 स्तुतस्तोभयो ८।३।१०५।  
 स्तुसुधूज्यः पर ७।२।७२।  
 स्तोनाद्यन्नलोपश्च ५।१।१२५।  
 स्तोः श्रुना श्रुः ८।४।४०।  
 स्तोकान्तिकदूरा २।१।३९।  
 स्तौतिण्योरेव ष ८।३।६१।  
 स्त्यः प्रपूर्वस्य ६।१।२३।  
 स्त्रियाः ६।४।७९।  
 स्त्रियाः पुवंद्वाषि ६।३।३४।  
 स्त्रियाम् ४।१।३।  
 स्त्रियां संज्ञानाम् ५।४।१४३।  
 स्त्रियां क्तिन् ३।३।९४।  
 स्त्रियां च ७।१।९६।  
 स्त्रियामवन्तिकु ४।१।१७६।  
 स्त्री पुंवच्च १।२।६६।  
 स्त्रीपुंसाभ्यां नञ् ४।१।८७।  
 स्त्रीभ्यो ढक् ४।१।१२०।  
 स्त्रीषु सोवीरसा ४।२।७६।  
 स्थः क च ३।२।७७।

स्थण्डिलाच्छयि ४।२।१५।  
 स्थागापापचो ३।३।९५।  
 स्थाध्वोरिच्च १।२।२७।  
 स्थादिष्वभ्यासेन ८।३।६४।  
 स्थनान्तगोशाल ४।३।३५।  
 स्थानान्ताद्विभा ५।४।१०।  
 स्थानिवदादेशो १।१।५६।  
 स्थानेऽन्तरतमः १।१।५०।  
 स्थालीबिलात् ५।१।७०।  
 स्थूलदूरयुवह ६।४।१५६।  
 स्थूलादिभ्यः प्रका ५।४।३।  
 स्थे च भाषायाम् ६।३।२०।  
 स्थेशभासपिस ३।२।१७५।  
 स्नात्यादयश्च ७।१।४९।  
 स्नुक्रमोरनात्म ७।२।२६।  
 स्नेहने पिषः ३।४।३८।  
 स्पर्धायामाडः १।३।३१।  
 स्पृशोऽनुदके क्विन् ३।२।५८।  
 स्पृहृगृहिपतिद ३।२।१५८।  
 स्पृहेरीप्सितः १।४।३६।  
 स्फायः स्फी वि ६।१।२२।  
 स्फायो वः ७।३।४१।  
 स्फिगपूत वीणा ६।२।१८७।  
 स्फुरतिस्फुलत्यो ८।३।७६।  
 स्मिपूङ्स्ज्वशां ७।२।७४।  
 स्मे लोट् ३।३।१६५।  
 स्मोत्तरे लङ् च ३।३।१६५।  
 स्यतासी लुलृटोः ३।१।३३।  
 स्यदो जवे ६।४।२८।  
 स्यश्छन्दसि बहु ६।१।१३३।  
 स्यसिच्सीयुट्ता ६।४।६२।  
 स्रवतिशृणितद्र ७।४।८१।  
 स्रोतसो वि ४।४।११३।  
 स्वं रूपं शब्दस्या १।१।६८।  
 स्वं स्वामिनि ६।२।१७।  
 स्वतन्त्रः कर्ता १।४।५४।



स्वतवान् पायौ ८।३।११।  
 स्वनहसोर्वा ३।३।६२।  
 स्वपादिर्हि० ६।१।१८८।  
 स्वपितृषोर्नजि ३।२।१७२।  
 स्वपिस्यमिव्येजां ६।१।१९।  
 स्वपो नन् ३।३।९१।  
 स्वमज्ञातिध० १।१।३५।  
 स्वमोर्नपुंसकात् ७।१।३३।  
 स्वयं केन २।१।२५।  
 स्वरतिसूतिसू० ७।२।४४।  
 स्वरादिनिपात० १।१।३७।  
 स्वरितजितः कर्त्र० १।३।७२।  
 स्वरितमाग्रेडिते ८।२।१०३।  
 स्वरितात्संहिता० १।२।३९।  
 स्वरितेनाधिकारः १।३।११।  
 स्वरितो वानुदात्ते ८।२।६।  
 स्वसुश्लः ४।१।१४३।  
 स्वागतादीनां च ७।३।७।  
 स्वाङ्गाच्चेतः ६।३।४०।  
 स्वाङ्गाच्चोपस ४।१।५४।  
 स्वाङ्गे तस्प्रत्यये ३।४।६१।  
 स्वाङ्गेऽध्रुवे ३।४।५४।  
 स्वाङ्गेभ्यः प्रसिते ५।२।६६।  
 स्वादिभ्यः श्नु ३।१।७३।  
 स्वादिष्वसर्व० १।४।१७।  
 स्वादुमि णमुल् ३।३।२६।  
 स्वापेश्चडि ६।१।१८।  
 स्वामिन्त्रैश्वर्ये ५।२।१२६।  
 स्वामीश्वराधि० २।३।३९।  
 स्वे पुषः ३।४।४०।  
 स्वौजसमौट्छष्टा० ४।१।२।  
 ह  
 ह एति ७।४।५२।  
 हनः सिच् १।२।१४।  
 हनश्च वधः ३।३।७६।  
 हनस्त च ३।१।१०८।

हनस्तोऽचिण्णलोः ७।३।३२।  
 हनो वध लिङि २।४।४२।  
 हन्त च ८।१।५४।  
 हन्तेरत्पूर्वस्य ८।४।२२।  
 हन्तेर्जः ६।४।३६।  
 हरतेरनघमनेऽच् ३।२।९।  
 हरतेर्दृतिनाययोः ३।२।२५।  
 हरत्युत्सङ्गादिभ्यः ४।४।१५।  
 हरितादिभ्योऽजः ४।१।१००।  
 हरीतक्यादिभ्यश्च ४।३।१६७।  
 हलः ६।४।२।  
 हलः श्नः शानज्झौ ३।१।८३।  
 हलदन्तात्सप्त० ६।३।९।  
 हलन्ताच्च १।२।१०।  
 हलन्त्यम् १।३।३।  
 हलश्च ३।३।१२१।  
 हलश्चेजुपधात् ८।४।३१।  
 हलसीराड्क् ४।३।१२४।  
 हलसीराड्क् ४।४।८१।  
 हलसूकरयोः पु० ३।२।१८३।  
 हलस्तद्धितस्य ६।४।१५०।  
 हलादिः शेषः ७।४।६०।  
 हलि च ८।२।७७।  
 हलि लोपः ७।२।११३।  
 हलि सर्वेषाम् ८।३।२२।  
 हलोऽनन्तराः स० १।१।७।  
 हलो यमां यमि ८।४।६४।  
 हल्ङ्याभ्यो दीर्घा० ६।१।६८।  
 हव्येऽन्तः पादम् ३।२।६६।  
 हशश्वतोर्लङ् च ३।२।११६।  
 हशि च ६।१।११४।  
 हश्च व्रीहिका० ३।१।१४८।  
 हस्ताज्जातो ५।२।१३३।  
 हस्तादाने चेर० ३।३।४०।  
 हस्ते वर्तिग्रहोः ३।४।३९।  
 हायनान्तयुवा० ५।१।१३०।



|                               |                              |
|-------------------------------|------------------------------|
| हिंसायां प्रतेश्च ६।१।१४१।    | हेरचडि ७।३।५६।               |
| हिंसार्थानां च स० ३।४।४८।     | हैयङ्गवीनं संज्ञा० ५।२।२३।   |
| हि च ८।१।३४।                  | हैहेप्रयोगे हैहयोः ८।२।८५।   |
| हितं भक्षाः ४।४।६५।           | हो ङः ८।२।३१।                |
| हिनु मीना ८।४।१५।             | होत्राभ्यश्छः ५।१।१३५।       |
| हिमकाषिहतिषु च ६।३।५४।        | होहन्तेरिज्जन्त्रेषु ७।३।५४। |
| हिरण्यपरिमाणं ध ६।२।५५।       | हम्यन्तक्षणश्चसजा० ७।२।५।    |
| हीने १।४।८६।                  | हस्वः ७।४।५९।                |
| हीयमानपापयो० ५।४।४७।          | हस्वं लघु १।४।१०।            |
| हुझल्भ्यो हेर्धिः ६।४।१०१।    | हस्वनद्यापो नुट् ७।१।५४।     |
| हुश्नुवोः सार्वधा० ६।४।८७।    | हस्वनुङ्भ्यां म० ६।१।१७६।    |
| हक्रोरन्यतरस्याम् १।४।५३।     | हस्वस्य गुणः ७।३।१०८।        |
| हृदयस्य प्रियः ४।४।९५।        | हस्वस्य पिति कृ० ६।१।७१।     |
| हृदयस्य हल्ले० ६।३।५०।        | हस्वाच्चन्द्रोत्तर० ६।१।१५१। |
| ह्रद्गसिन्ध्वन्ते पू० ७।३।१९। | हस्वात्तादौ त० ८।३।१०१।      |
| ह्रषेलोमसु ७।२।२९।            | हस्वादङ्गात् ८।२।२७।         |
| हेति क्षियायाम् ८।१।६०।       | हस्वान्तोऽन्त्या० ६।२।१७४।   |
| हेतुमति च ३।१।२६।             | हस्वे ५।३।८६।                |
| हेतुमनुष्येभ्यो० ४।३।८१।      | हस्वो नपुंसके० १।२।४७।       |
| हेतुहेतुमतोर्लिङ् ३।३।१५६।    | हुहरेश्छन्दसि ७।२।३१।        |
| हेतो २।३।२३।                  | ह्लादो निष्ठायाम् ६।४।९५।    |
| हेमन्तशिशिराव० २।४।२८।        | ह्रः संप्रसारणम् ६।१।३२।     |
| हेमन्ताच्च ४।३।२१।            | ह्रः संप्रसारणं च ३।३।७२।    |
| हे.मपरे वा ८।३।२६।            | ह्रावामश्च ३।२।२।            |







